VIDYA UNIVERSITY PRESS

TOUCH n PASS

सर्वश्रेष्ठ परीक्षा पथ-प्रदर्शक

B.A.
द्वितीय वर्ष
(डिप्लोमा कोर्स)
सेमेस्टर-IV

इतिहास

आधुनिक विश्व का इतिहास
(1453-1950 ई० तक)

SYLLABUS

UNIT-I

Renaissance : Its Causes, Feature and Impact.

Reformation Movement in Europe and Role of Martin Luther.

UNIT-II

Glorious Revolution, Industrial Revolution in 18th Century.

UNIT-III

American Revolution, French Revolution : Causes, Significance and Impact on world.

UNIT-IV

Napoleon Bonaparte : Reforms, Continental System and his Foreign Policy.

UNIT-V

Unification of Germany and Italy.

UNIT-VI

Causes leading to First World War. Paris Peace Convention and treaty of Versailles.

UNIT-VII

The Bolshevik Revolution.

UNIT-VIII

Factor leading for Second World War, U.N.O. : Organisation, Achievements and Failure.

TOUCH 'n' PASS

VIDYA®
UNIVERSITY PRESS

पंजीकृत कार्यालय
विद्या एम्पायर, बागपत रोड,
मेरठ, उत्तर प्रदेश (NCR) 250 002
www.vidyauniversitypress.com

© प्रकाशक

लेखन एवं सम्पादन
शोध एवं अनुसन्धान प्रकोष्ठ

मुद्रक
विद्या यूनिवर्सिटी प्रेस

TOUCH 'n' PASS

विषय-सूची

UNIT-I : पुनर्जागरण काल ...3
UNIT-II : 18वीं शताब्दी की गौरवपूर्ण और औद्योगिक क्रांति ...22
UNIT-III : अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांति ...35
UNIT-IV : नेपोलियन बोनापार्ट ...64
UNIT-V : जर्मनी और इटली का एकीकरण ...86
UNIT-VI : प्रथम विश्व युद्ध के लिए अग्रणी कारक ...106
UNIT-VII : बोल्शेविक क्रांति ...122
UNIT-VIII : द्वितीय विश्व युद्ध के लिए अग्रणी कारक ...140

UNIT-I

पुनर्जागरण काल
Renaissance

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. मार्टिन लूथर कौन था? जर्मनी में धर्म सुधार की सफलता के कारण लिखिए।
Who was Martin Luther? Write the causes for the success of religious reformation in Germany.

उत्तर मार्टिन लूथर (1438-1546) किसान पृष्ठभूमि से थे। उनका धर्म की ओर रुझान था और 1505 में उन्होंने एक भिक्षु बनने का फैसला किया। वह विटेनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर थे। लूथर रिफॉर्मेशन सरल प्रश्न से शुरू हुआ—'ईश्वर की क्षमा पाने के लिए क्या करना चाहिए।'

प्र.2. पुनर्जागरण का क्या अर्थ है?
What is the meaning of renaissance?

उत्तर पुनर्जागरण (Renaissance in Europe) का शाब्दिक अर्थ होता है, "फिर से जागना"। 14वीं और 17वीं सदी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक व धार्मिक प्रगति, आन्दोलन तथा युद्ध हुए उन्हें ही पुनर्जागरण कहा जाता है। इसके फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन चेतना आई।

प्र.3. पुनर्जागरण काल का दूसरा नाम क्या है?
What is the second name of renaissance?

उत्तर प्राचीन यूनानी साहित्य में जीवन के प्रति एक विशेष रुचि झलकती है क्योंकि यूनानी लोग उस संसार में गहरी रुचि रखते थे, जिसमें वे लोग जी रहे थे। पुनर्जागरण काल में जो विद्वान मानव एवं प्रकृति की रुचियों का विवेचन करके उसमें रुचि लेने लगे थे, उन्हें 'मानववादी' के नाम से पुकारा जाता है।

प्र.4. यूरोप में पुनर्जागरण के क्या कारण थे?
What were the causes of renaissance in Europe?

उत्तर अन्त में, इतिहासकारों ने यूरोप में पुनर्जागरण के कई कारणों की पहचान की है, जिनमें शामिल हैं—विभिन्न संस्कृतियों के बीच बढ़ी हुई बातचीत, प्राचीन ग्रीक और रोमन ग्रंथों की दोबारा खोज, मानवतावाद का उदय, विभिन्न कलात्मक और तकनीकी नवाचार और संघर्ष और मृत्यु के प्रभाव।

प्र.5. पुनर्जागरण के कारण समाज में किसका प्रभाव कम हो गया?
Whose influence in the society decreased due to renaissance?

उत्तर पुनर्जागरण किसी एक व्यक्ति, स्थान, विचारधारा अथवा आन्दोलन के कारण सम्भव नहीं हो पाया था। इसके उदय एवं विकास में असंख्य व्यक्तियों के सामूहिक ज्ञान एवं विविध देशों की विभिन्न परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

प्र.6. इटली तथा इंग्लैण्ड के पुनर्जागरण में अन्तर बताइए।
Differentiate between Italian and English renaissance.

उत्तर इटली तथा इंग्लैण्ड के पुनर्जागरण के नेताओं में पर्याप्त अन्तर है। इटली के नेताओं ने धर्मशास्त्र में रुचि नहीं ली। उन्होंने इसे समाप्त होने वाले युग का अन्धविश्वास समझकर ठुकरा दिया तथा मैकियावेली जैसे राजनीतिक चिन्तक ने (जिसकी

TOUCH n PASS

'द प्रिंस' नामक पुस्तक 1509 ई० में प्रकाशित हुई) किसी काल्पनिक आदर्श राज्य का सपना नहीं देखा वरन् युद्ध और कपट के जिन साधनों से सत्ता प्राप्त की जा सकती है तथा प्राप्त सत्ता की रक्षा की जा सकती है, उसका अत्यन्त व्यावहारिक अध्ययन किया, किन्तु इंग्लैण्ड में आलोचना के प्रमुख विषय चर्च के भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास तथा राज्य की क्रूरता थे। अत: पुनर्जागरण ने जो कार्य इटली में नहीं किया उसे इंग्लैण्ड में किया। इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण ने धर्म-सुधार का रास्ता तैयार किया।

प्र.7. लूथर एवं काल्विन के सिद्धान्तों की तुलना कीजिए।
Compare the principles of Luther and Colvin.

उत्तर लूथर एवं काल्विन के सिद्धान्तों में अनेक समानताएँ होने पर भी कुछ अन्तर थे, जिनमें से प्रमुख निम्नवत् हैं—

1. लूथर के सिद्धान्त राष्ट्रीय, किन्तु काल्विन के अन्तर्राष्ट्रीय थे।
2. काल्विनवाद में व्यक्ति की चारित्रिक पवित्रता पर विशेष बल दिया गया था, लूथरवाद में नहीं।
3. लूथर ने कैथोलिकों के सात संस्कारों में से केवल जन्म, ईसामसीह के भोज व प्रमाणीकरण को स्वीकार किया, किन्तु कॉल्विन ने केवल जन्म व भोज को ही स्वीकार किया।
4. लूथर ने ईश्वर के प्रति भक्ति व श्रद्धा को ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग माना, किन्तु काल्विन भाग्यवादी था। उसके अनुसार प्रत्येक को उसके भाग्य के अनुरूप ही फल मिलता है।

प्र.8. धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति लिखिए।
Write the nature of religious reform movement.

उत्तर इंग्लैण्ड में हुए धर्म-सुधार आन्दोलन एवं यूरोप के अन्य राष्ट्रों के धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति में पर्याप्त अन्तर था। इंग्लैण्ड में हुआ आन्दोलन, यूरोप के राष्ट्रों के आन्दोलनों के समान, मात्र धार्मिक न था, वरन् इसके राजनीतिक एवं सामाजिक पहलू भी थे। यूरोप के अन्य देशों में धर्म-सुधार की मूल भावना का जन्म जनता में हुआ था जबकि इंग्लैण्ड में यह राजाओं से प्रारम्भ हुआ। इंग्लैण्ड में हेनरी अष्टम पोप के प्रभाव को समाप्त कर चर्च को अपने अधीन लाना चाहता था। उसका उद्देश्य कैथोलिक धर्म में सुधार करना न था। इस प्रकार, जर्मनी तथा यूरोप के अन्य देशों में यह एक धार्मिक आन्दोलन था, किन्तु इंग्लैण्ड में हुआ आन्दोलन प्रमुखत: हेनरी अष्टम तथा पोप की पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता का परिणाम था।

प्र.9. यूरोप में धर्म सुधार आन्दोलन का संस्थापक कौन था?
Who was the founder of the religious reform movement in Europe?

उत्तर जर्मनी में धर्मसुधार आन्दोलन का प्रणेता मार्टिन लूथर (1483-1546 ई०) था।

प्र.10. धर्म सुधार आन्दोलन के प्रमुख प्रभाव क्या हुए?
What were the main effects of the religious reform movement?

उत्तर धर्म-सुधार आन्दोलन के प्रमुख परिणाम—

1. कैथोलिक धर्म में सुधार
2. प्रोटेस्टेण्ट धर्म का उदय
3. इंग्लैण्ड का विकास
4. शासक वर्ग की शक्ति में वृद्धि
5. पोप की शक्ति का पतन
6. राजकीय सम्पत्ति एवं शक्ति में वृद्धि
7. गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास।

प्र.11. यूरोप में धर्म सुधार आन्दोलन क्या था?
What was the religious reform movement in Europe?

उत्तर धर्म सुधार आन्दोलन सोलहवीं सदी में प्रारम्भ हुए। मार्टिन लूथर को धर्म सुधार आन्दोलन का प्रणेता माना जाता है। पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप यूरोप के धार्मिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों की माँग होनें लगी। धार्मिक क्षेत्रों में परिवर्तनों की माँग को ही धर्म सुधार आन्दोलन कहा जाता है।

TOUCH 'n PASS

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. पुनर्जागरण की प्रगति के कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the causes for the progress of renaissance.

उत्तर

पुनर्जागरण की प्रगति के कारण
(Causes for the Progress of Renaissance)

एक दृष्टिकोण से 'पुनर्जागरण' शब्द अत्यन्त भ्रामक है क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होता है कि मध्य काल में बौद्धिकता थी ही नहीं, जो कि असत्य है। इसी प्रकार यह मानना कि पुनर्जागरण एकाएक 1453 ई० में हो गया सम्भव नहीं है। पुनर्जागरण वास्तव में मध्य काल में ही प्रारम्भ हो गया। व्यक्तियों की विचारधारा में चौदहवीं शताब्दी में ही परिवर्तन होने लगा था। पन्द्रहवीं शताब्दी में तो यूनानी साहित्य के अध्ययन के उत्साह ने इस आन्दोलन को एक विशिष्ट दिशा प्रदान की और इसके महत्त्वपूर्ण परिणामों का कारण यह था कि इस विकास के कारण लोग इस बात को समझने लगे थे कि यूनानी साहित्य का उनके समाज के लिए क्या महत्त्व है। पुनर्जागरण की प्रगति के निम्नलिखित कारण थे—

1. **आविष्कारों एवं खोज का प्रभाव** (Effect of Inventions and Discoveries)—इस पुनर्जागरण की प्रगति में तत्कालीन आविष्कारों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इस काल में हुए विभिन्न आविष्कार व नवीन खोजें इस प्रकार थीं—
   (i) **छापाखाना** (Press)—1453 ई० से पूर्व आविष्कारों के अभाव में पुनर्जागरण इतना सफल नहीं हो सका था जितना कि तत्पश्चात् हुआ। इन आविष्कारों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आविष्कार छापाखाने का था। 1460 ई० में गुटनबर्ग (Guttenburg) नामक व्यक्ति ने सर्वप्रथम इसको जर्मनी में बनाया था। 1476 ई० में कैक्सटन (Caxton) ने इंग्लैण्ड में छापेखाने के प्रयोग को प्रचलित किया। छापेखाने से विद्या-प्रसार में अत्यन्त सहायता मिली क्योंकि इससे पुस्तकों का अभाव दूर हो गया। इससे पूर्व पुस्तकों को हाथ से ही लिखना पड़ता था। अत: पुस्तकों की संख्या बहुत कम ही रहती थी तथा उनका मूल्य बहुत अधिक होता था।
   (ii) **कागज** (Paper)—आधुनिक युग से पूर्व जानवरों की खालों तथा पेड़ की छालों का प्रयोग लिखने के लिए करना पड़ता था, किन्तु अब एक प्रकार की विशिष्ट घास की खोज की गई जिससे कागज बनाया जाने लगा जो कि खाल की तुलना में अत्यन्त सस्ती थी। अत: छापेखाने एवं कागज के आविष्कार ने पुनर्जागरण के प्रचार एवं प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
   (iii) **बारूद** (Gunpowder)—यद्यपि बारूद का प्रचलन यूरोप में पहले से ही था, किन्तु इस समय बारूद का प्रयोग तोप तथा बन्दूक के द्वारा होने लगा, जिससे इंग्लैण्ड के राजाओं ने शक्तिशाली सेना तैयार कर सामन्तों की शक्ति का दमन किया तथा देश में राजनीतिक चेतना का प्रसार किया।
   (iv) **कुतुबनुमा** (Mariner's Compass)—कुतुबनुमा का आविष्कारक इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो था जिसकी सहायता से एशिया के निवासियों ने दूर-दूर देशों की यात्रा एवं व्यापार किया। अब इस कुतुबनुमा का प्रयोग यूरोप में भी प्रारम्भ हो गया जिसने सामुद्रिक यात्रा को सरल बना दिया; जिससे व्यापार के अतिरिक्त नवीन विचारों का आदान-प्रदान भी सम्भव हो सका।
2. **नवीन भौगोलिक खोजें** (New Geographical Discoveries)—मार्कोपोलो द्वारा कुतुबनुमा के आविष्कार तथा उसकी यात्राओं के विषय में जानकर अनेक व्यक्तियों में यात्रा करने का उत्साह संचारित हुआ। कोलम्बस, वास्कोडिगामा आदि ने दूर-दूर तक यात्राएँ कर अनुभव प्राप्त किया तथा नवीन ज्ञान एवं विचारों के प्रसारण में सहायता दी।
3. **अरबी अंक** (Arabic Numerals)—यूरोप में पहले रोमन अंकों (I, II, III, IV, V) का प्रयोग होता था, किन्तु अरबों के सम्पर्क में आने से अब अरबी अंकों (1, 2, 3, 4, 5) का प्रयोग हाने लगा जिससे गुणा-भाग आदि करना सरल हो गया।

उपर्युक्त समस्त कारणों के अतिरिक्त इंग्लैण्ड में मध्य युग में कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं जिसके कारण जनता ने मध्यकालीन विचारों को त्यागकर आधुनिक विचारधारा को स्वीकार किया। ये प्रभावशाली घटनाएँ—अकाल, सौ वर्षीय युद्ध, किसानों का विद्रोह तथा गुलाब के फूलों का युद्ध—थीं। इन घटनाओं ने इंग्लैण्ड में जमींदारी प्रथा, सामन्तीय व्यवस्था तथा अन्य मध्ययुगीन कुप्रथाओं को समाप्त करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया तथा पुनर्जागरण के रास्ते को साफ किया।

TOUCH 'n PASS

प्र.2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए—
Write short note on the following :

1. **मार्कोपोलो (Marcopolo)**
2. **हेनरी और डियाज (Henry and Diaz)**
3. **कोलम्बस (Columbus)**

उत्तर

1. मार्कोपोलो
(Marcopolo)

आधुनिक युग के नाविकों को समुद्री यात्राओं के लिए मध्ययुगीन यात्री मार्कोपोलो के यात्रा-वृत्तान्तों ने बहुत प्रेरित किया। मार्कोपोलो इटली का निवासी था जो विभिन्न देशों से व्यापार करता था। मार्कोपोलो ने चीन, जापान तथा पूर्वी द्वीपसमूहों की यात्रा की थी। मार्कोपोलो ने अपनी यात्रा 1271 ई० में इटली के वेनिस नगर से प्रारम्भ की। वह थलमार्ग से गोबी मरुस्थल होता हुआ चीन पहुँचा। चीन से वह जापान तथा पूर्वी द्वीपसमूह होते हुए समुद्री मार्ग से इटली लौटा। वेनिस पहुँचकर उसने अपना यात्रा-वृत्तान्त लिखा। उसके यात्रा-वृत्तान्तों को पढ़कर अनेक यूरोपवासियों ने भी, पूर्वी द्वीपसमूह की यात्रा कर धर्म प्रचार व धन कमाने की योजना बनायी। इससे समुद्री यात्राओं को बहुत प्रोत्साहन मिला।

2. हेनरी व डियाज
(Henry and Diaz)

मार्कोपोलो के पश्चात् पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी ने भी समुद्री यात्राएँ कीं। उसने अपनी सामुद्रिक यात्राओं के द्वारा पश्चिमी अफ्रीका के तटीय मार्ग का पता लगाया। उसके जहाजों ने समुद्र में दक्षिण की ओर दो हजार मील की यात्रा की थी। हेनरी ने पश्चिम अफ्रीका के तटीय मार्ग का पता लगाया। उसके जहाजों ने समुद्र में दक्षिण की ओर दो हजार मील की यात्रा की थी। हेनरी ने पश्चिम अफ्रीका के तट पर दो टापुओं पर अधिकार करके उन्हें पुर्तगाल का उपनिवेश बनाया। हेनरी ने अफ्रीका के अन्य प्रदेशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध भी कायम किए। इस प्रकार हेनरी ने समुद्री यात्रा के साथ-साथ उपनिवेश स्थापित करने की प्रणाली को प्रारम्भ किया। राजकुमार हेनरी ने 1442 ई० में अपने यात्रा वृत्तान्तों को लिखा, जिन्हें पढ़कर अन्य नाविक भी समुद्री यात्रा के लिए प्रेरित हुए। हेनरी की यात्राओं के विषय में जानकर पुर्तगाल के ही एक अन्य नाविक वारथोलोम्यु डियाज ने 1486 ई० में पूरे पश्चिम अफ्रीका के तट की यात्रा की। दक्षिण अफ्रीका के अन्तरीप तक पहुँचने में उसने सफलता प्राप्त की। उसने इस अन्तरीप का नाम 'उत्तमाशा अन्तरीप' रखा।

3. कोलम्बस
(Columbus)

पुर्तगाल के नाविकों की सफलताओं व कुतुबनुमा के आविष्कार ने स्पेन के नाविकों को भी समुद्री यात्राओं के लिए प्रेरित किया। स्पेन के राजा फर्डिनेण्ड व रानी ईसाबेला ने भी अपने देश के नाविकों को समुद्री यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया। स्पेन के एक साहसी नाविक ने भारत के लिए जल मार्ग का पता लगाने के लिए 1492 ई० में जल यात्रा प्रारम्भ की। उसकी इस यात्रा में राजा फर्डिनेण्ड व रानी ईसाबेला ने उसकी बहुत सहायता की। उस समय तक यह प्रमाणित हो चुका था कि दुनिया गोल है, अत: कोलम्बस ने पश्चिम की ओर से सीधे भारत की यात्रा प्रारम्भ की। कोलम्बस ने तीन जहाजों के साथ यात्रा प्रारम्भ की व 33 दिन की समुद्री यात्रा के पश्चात् वह एक नयी धरती पर पहुँचने में सफल रहा। कोलम्बस का विचार था कि वह भारत खोजने में सफल हो गया है, किन्तु वास्तव में वह 'नई दुनिया' ही थी, भारत नहीं। कोलम्बस द्वारा नई दुनिया की खोज के कुछ समय पश्चात् ही इटली का एक नाविक अमेरिगो भी नयी दुनिया पहुँचा। उसी के नाम पर इस नयी दुनिया का नाम 'अमेरिका' (America) पड़ा।
कोलम्बस व अमेरिगो की यात्राओं व खोज से प्रेरित होकर अन्य यूरोपीय नाविकों ने भी समुद्री यात्राएँ कीं। इंग्लैण्ड के राजा हेनरी-VII ने 1497 ई० में इटली के ही एक नाविक जान कावेट (John Covet) को आर्थिक व राजनीतिक सहायता प्रदान कर पश्चिम समुद्र की ओर भेजा। जॉन कावेट उत्तरी अटलाण्टिक महासागर को पार करके लेब्रोडोर के समुद्रतट के किनारे-किनारे अपना जहाज ले गया। इस प्रकार वह कनाडा के समुद्रतट पर पहुँचने में सफल रहा।

TOUCH 'n' PASS

प्र.3. धर्म सुधार आन्दोलन से आपका क्या तात्पर्य है?
What do you mean by religious reform movement?

उत्तर

धर्म सुधार आन्दोलन
(Religious Reform Movement)

जिस समय इंग्लैण्ड में **हेनरी अष्टम** और **वूल्जे** यूरोप की राजनीति में सक्रिय भाग लेने के लिए निरर्थक प्रयास कर रहे थे, उसी समय धार्मिक क्षेत्र में एक महान् परिवर्तन हो रहा था जिसे धर्म-सुधार आन्दोलन कहा जाता है। यह एक धार्मिक आन्दोलन था जिसे इतिहासकारों ने '**धर्म-सुधार**' (Protestant reformation) कहा है। मध्ययुग में यूरोप की बर्बर जातियों के आक्रमणों से सुरक्षा करने के उद्देश्य से निमित्त तथा धार्मिक जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए **रोमन कैथोलिक चर्च** की स्थापना की गई थी। इस चर्च ने मध्ययुग में सभ्यता के प्रसार के लिए सराहनीय कार्य किए, किन्तु सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक यूरोप की स्थिति में गम्भीर परिवर्तन हुआ। मध्यकाल के अन्त तक चर्च में अनेक दोष उत्पन्न हो गए थे। गिरजाघर अब भ्रष्टाचार तथा विलासिता के स्थान बनने लगे थे। पोप, जिसकी आज्ञा धार्मिक क्षेत्र में सर्वोपरि होती थी, स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझने लगे। पोप किसी भी राजा को पदच्युत, किसी भी देश के गिरजाघरों को बन्द तथा किसी भी व्यक्ति को ईसाई धर्म से बहिष्कृत कर सकता था। पोप ने अपनी शक्ति से लाभ उठाना प्रारम्भ कर दिया था तथा वे धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करने लगे थे। इस प्रकार तत्कालीन चर्च एवं पोप में व्याप्त बुराईयों के विरोध में सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड तथा यूरोप में जो आन्दोलन हुआ, उसे धर्म-सुधार के नाम से जाना जाता है। वास्तव में, यह आन्दोलन यूरोप की धार्मिक प्राचीन रूढ़िवादिता के विरुद्ध था। यद्यपि तेरहवीं शताब्दी से चर्च में कुछ परिवर्तन हुए थे, किन्तु यह परिवर्तन आधुनिक युग की आवश्यकताओं के समान न थे। आधुनिक युग के आगमन से तथा पुनर्जागरण के कारण यूरोप की जनता तर्कवादी हो चुकी थी तथा अन्धविश्वासों को मानने के लिए तैयार न थी। इसी समय कुछ विद्वानों ने पोप की आचारहीनता, भ्रष्टता एवं विलासिता को देखकर जनता को अपने भाषणों एवं लेखों से पोप एवं अन्य पादरियों की वास्तविक स्थिति से परिचित कराया। परिणामस्वरूप जनसाधारण इस बात के लिए अब तैयार न था कि वह अपने धार्मिक कार्यों को इतने भ्रष्ट व्यक्तियों एवं कलुषित तरीकों से कराएँ। अत: धर्म-सुधार आन्दोलन शक्तिशाली होता गया और शनै:-शनै: यूरोप के समस्त देशों में इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। इस आन्दोलन को सफल बनाने में जर्मनी के लूथर का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उसने पोप का घोर विरोध किया तथा एक नवीन सम्प्रदाय को जन्म दिया जिसे 'प्रोटेस्टेण्ट' कहते हैं। लूथर के प्रयत्नों से पोप तथा तत्कालीन धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध एक तीव्र आन्दोलन उत्पन्न हुआ, जिसके समक्ष पोप की शक्ति स्थिर न रह सकी। इस सन्दर्भ में वार्नर-मार्टिन ने लिखा है, "धर्म सुधार आन्दोलन पोप पद की सांसारिकता व भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक नैतिक विद्रोह था।"

प्र.4. धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामों का उल्लेख कीजिए।
Mention the results of the religious reform movement.

उत्तर

धर्म सुधार आन्दोलन के परिणाम
(Results of the Religious Reform Movement)

धर्म-सुधार आन्दोलन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। इसके यूरोप पर निम्नलिखित प्रभाव हुए—

1. **प्रोटेस्टैण्ट धर्म का जन्म एवं प्रभाव** (Birth and effects of Protestant religion)—धर्म-सुधार आन्दोलन का यूरोप पर व्यापक प्रभाव पड़ा। धर्म-सुधार आन्दोलन सफल होने से पूर्व यूरोप में केवल एक कैथोलिक धर्म था, किन्तु इसके पश्चात् प्रोटेस्टैण्ट धर्म का प्रादुर्भाव हुआ और दोनों धर्मों के संघर्ष के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड को तीस वर्षीय युद्ध का सामना करना पड़ा। यही नहीं, यूरोप धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप दो धार्मिक गुटों में विभाजित हो गया। धार्मिक आन्दोलन के कारण ही इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट शासक और उनकी संसद के सम्बन्ध मधुर न रह सके।
2. **इंग्लैण्ड का विकास** (Development of England)—धर्म-सुधार आन्दोलन ने इंग्लैण्ड के विकास में सहयोग दिया। इसके पूर्व पोप न केवल धार्मिक अपितु राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करता था, जिसके कारण विकास में बाधा पड़ती थी, पोप अमेरिका में, पुर्तगाल एवं स्पेन को ही व्यापार प्रदान करने की अनुमति प्रदान करता था। इंग्लैण्ड ने भी धर्म-सुधार आन्दोलन के पश्चात् अमेरिका में अपने उपनिवेश स्थापित किए तथा यूरोप में स्वेच्छा से सम्बन्ध स्थापित किए।

TOUCH 'n' PASS

3. **राजा की शक्ति में वृद्धि** (Increase in the powers of the King)—धर्म-सुधार आन्दोलन के संवैधानिक परिणाम भी हुए। सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव चर्च का पूर्ण रूप से राजा के अधीन हो जाना था जिससे राजा के सम्मान तथा पद की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इससे राजा की व्यक्तिगत शक्ति में वृद्धि हुई तथा राष्ट्रीय भावना प्रबल हुई। गिरजाघरों का प्रशासन, जिसमें विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति, झगड़ों का फैसला आदि सम्मिलित थे, राजा के अधिकार में हो गए। गिरजाघर के अधिकारी अब राजा का विरोध नहीं कर सकते थे। लार्ड सभा पर भी धर्म-सुधार का प्रभाव पड़ा। मठों के समाप्त होने से मठों के अध्यक्षों का लार्ड सभा में स्थान स्वत: समाप्त हो गया। राजा की शक्ति में वृद्धि होने का स्पष्ट उदाहरण हेनरी अष्टम के शासनकाल में उत्तरी विद्रोहों को दबाने के लिए विभिन्न परिषदों की स्थापना किया जाना है। एलिजाबेथ के शासन में हाई कमीशन न्यायालय की स्थापना की गई, जो धार्मिक विद्रोहों के मामलों में दण्ड देता था। यह ट्यूडर शक्ति को बढ़ाने का ही एक अंश था। धर्म-सुधार आन्दोलन एवं उससे सम्बन्धित विद्रोहों ने, अपनी शक्ति बढ़ाने में ट्यूडर शासकों को पूर्ण सहयोग दिया।
4. **संसद पर प्रभाव** (Effects upon Parliament)—धर्म-सुधार आन्दोलन का इंग्लैण्ड की संसद पर भी प्रभाव पड़ा। ट्यूडर शासकों ने संसद को साझेदारी में प्रयोग करते हुए, अपनी शक्ति में निरन्तर वृद्धि की। इस साझेदारी, जिसके द्वारा संसद को धर्म-सुधार आन्दोलन का यन्त्र बनाया गया था, का प्रभाव संसद पर भी हुआ। संसद को राज्य के प्रमुख कार्य करने का अनुभव प्राप्त हुआ जिससे उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हुई। संसद को अपनी शक्ति व अधिकारों का भी अनुभव हुआ जिसका प्रमाण, एलिजाबेथ के शासनकाल में संसद की जागरूकता व स्टुअर्ट-शासक जेम्स को चुनौती के रूप में मिलता है। धर्म-सुधार आन्दोलन का संसद पर एक अन्य प्रभाव लॉर्ड सभा में मठाधीशों (Abbots) की संस्था का कम होना था जिससे लॉर्ड सभा में धार्मिक मत का प्रभाव भी कम हुआ।
5. **सामाजिक प्रभाव** (Social Effects)—इसने सामाजिक गुटों के सन्तुलन में परिवर्तन किया। एक ओर चर्च के अधिकारियों के धन व प्रभाव में कमी आयी, दूसरी ओर भूपति (Gentry) वर्ग का उत्थान हुआ जिसने सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। धर्म-सुधार आन्दोलन का एक अन्य प्रमुख प्रभाव भिखारियों व चोरों की संख्या में वृद्धि होना था। मठों के समाप्त होने से ऐसा हुआ था, क्योंकि मठ गरीबों के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। मठों में गरीबों को शरण एवं शिक्षा दी जाती थी, किन्तु मठों के समाप्त होने से ये गरीब असहाय हो गए, जिनसे अपराधों में वृद्धि हुई।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. यूरोप में पुनर्जागरण की प्रगति पर एक निबन्ध लिखिए।
Write an essay on the progress of renaissance in Europe.

उत्तर

यूरोप में पुनर्जागरण
(Renaissance in Europe)

यूरोप में पुनर्जागरण इटली से प्रारम्भ हुआ जो कि एक धनी देश था। तत्पश्चात् इसकी लहर यूरोप में तीव्रता से फैली। इटली तथा इंग्लैण्ड में इसका विशेष रूप से प्रभाव पड़ा, जो कि इस प्रकार है—

(I) इटली में पुनर्जागरण (Renaissance in Italy)

क्रूर तुर्कों द्वारा कुस्तुन्तुनियाँ पर अधिकार करने तथा यूनानियों पर अमानुषिक अत्याचारों के परिणामस्वरूप कुस्तुन्तुनियाँ से बहुत से व्यक्ति भागने पर विवश हुए। ये लोग भागकर इटली में बसने लगे, जहाँ इनका सम्मान किया गया क्योंकि कुस्तुन्तुनियाँ यूनानियों का शिक्षा का केन्द्र था वहाँ का साहित्य, कला, ज्योतिष विद्या, आध्यात्मिक ज्ञान यूरोप में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे। इटली, यूरोप का एक धनी देश था, अत: यूनानियों को वहाँ बसने तथा अपने विचारों का प्रचार करने में सहायता मिली। लैटिन तथा यूनानी भाषा के अनेक विद्यालय खोले गए तथा यूनानियों की अनेक पुस्तकों जिनमें अरस्तू (Aristotle) तथा अनेक यूनानी कवियों की रचनाएँ सम्मिलित थीं का अनुवाद पहले ही लैटिन भाषा में किया जा चुका था।

दान्ते (Dante, 1265-1321 ई०) इटली का एक प्रसिद्ध कवि था, जिसकी यूनानी एवं लैटिन साहित्य में विशेष रुचि थी। अपनी विश्व-प्रसिद्ध कविता **'डिवाइन कामेडी'** (Divine Comedy) में उसने यूनानी साहित्य के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है।

TOUCH 'n PASS

पेट्रार्क (Petrarch, 1304-1374 ई०) इटली का एक प्रसिद्ध विद्वान था। उसने सम्पूर्ण इटली, फ्रांस तथा अनेक देशों की यात्राएँ कर यूनानी तथा लैटिन पुस्तकों की हस्तलिपियाँ एकत्रित कीं और उनकी अनेक प्रतियाँ तैयार करवायीं।
बोकासियो (Boccacio, 1313-1375 ई०), यह पेट्रार्क का शिष्य था। इसने यूनानी भाषा की प्रमुख पुस्तकें **'इलियड'** तथा **'ओडेसी'** (Illiad and Odessey) को खोजकर उनका अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त उसने **डेकामेरन** (Decameron) नामक पुस्तक की रचना की जिससे चॉसर (Chaucer) भी अत्यधिक प्रभावित हुआ था और उसकी विचारधारा इसी पुस्तक पर आधारित थी।
इन विद्वानों के कार्यों ने इटली में जनता को आकर्षित किया था। इसी समय यूनानी विद्वानों के भी इटली में आकर बसने से यूनानी तथा लैटिन साहित्य की प्रगति में तीव्रता आ गई। इस प्रकार इटली यूरोप में शिक्षा का केन्द्र बन गया।
इटली में दो राज्यों में विशेष रूप से उन्नति हुई थी। ये राज्य थे—**फ्लोरेंस** तथा **रोम**। कुस्तुन्तुनियाँ से भागे हुए यूनानियों ने फ्लोरेंस में बड़ी संख्या में बसना प्रारम्भ किया था। यूनानियों के प्रयत्न से वहाँ विद्यालयों की स्थापना की गई। **क्रिसोलोर्स** (Chrysolores) ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में यूनानी साहित्य पर व्याख्यान देने प्रारम्भ किए तथा अन्य विश्वविद्यालयों में भी यूनानी भाषा की शिक्षा दी। क्रिसोलोर्स ने यूनानी भाषा का व्याकरण भी तैयार किया जिससे यूनानी भाषा का अध्ययन सुगम हो गया। **मेडिसी** (Medici) वंश के शासकों ने भी यूनानी भाषा की उन्नति के लिए प्रयत्न किए तथा फ्लोरेंस में एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना करवायी। लोरेन्जो-डी-मेडिसी (Lorenzo-de-Medici) ने अनेक यूनानी विद्वानों को आश्रय दिया तथा दो सौ से अधिक पुस्तकें मेडिसी पुस्तकालय में एकत्रित कीं। लिओनार्डो अत्यन्त विद्या-प्रेमी था, प्रतिवर्ष वह साठ हजार पौंड पुस्तकों पर व्यय करता था। इस प्रकार उसके प्रयत्नों से फ्लोरेंस शिक्षा का एक महान् केन्द्र बन गया।
फ्लोरेंस के अतिरिक्त रोम भी इस समय शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। फ्लोरेंस के समान रोम में अभी अनेक यूनानी विद्वानों ने आकर शरण ली थी। रोम में इन विद्वानों को पोप निकोलस पंचम ने संरक्षणता प्रदान की। फ्लोरेंस के समान रोम में भी पुस्तकालय की स्थापना की गई जिसका श्रेय तत्कालीन पोप को है। इस पुस्तकालय का नाम वेटिकन (Vatican) रखा गया। लिओ दसवाँ भी विद्या-प्रेमी था। उसने रोम के विश्वविद्यालय में सौ अध्यापकों की नियुक्ति की। वह रोम को विश्व की राजधानी मानता था, क्योंकि उसका विचार था कि साहित्यिक क्षेत्र में कोई भी नगर विश्व में रोम की तुलना में नहीं है।
इटली तथा यूनानी विद्वानों की विद्वता उनकी राजकीय एवं पोप से संरक्षण एवं उनके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप पुनर्जागरण की लहर तीव्र गति से फैली। इसी कारण इटली में प्रचलित था कि 'यूनान का पतन नहीं हुआ वरन् उसका इटली में देशान्तरण हो गया है।' यहाँ पर यह जानना आवश्यक है कि सर्वप्रथम पुनर्जागरण इटली में ही क्यों हुआ? इसके निम्नलिखित प्रमुख कारण थे—

1. वैदेशिक व्यापार के कारण इटली एक समृद्ध देश था। अत: धनी व्यापारियों ने विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय दिया, जिससे पुनर्जागरण में सहायता मिली।
2. व्यापार बढ़ने से शहरों का विकास हुआ, जहाँ शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करने की बेहतर सुविधाएँ थीं।
3. नगरों के विकास के कारण अनेक व्यापारी वहाँ आते थे। इसके अतिरिक्त धर्मयुद्धों से लौटने वाले सैनिक भी इन शहरों में आकर रुकते थे जिनसे विचारों का आदान-प्रदान सम्भव हुआ।
4. शक्तिशाली एवं धनी व्यापारी वर्ग ने सामन्तों को महत्त्व देना बन्द कर दिया।
5. इटली में समृद्धि होने से वहाँ धीरे-धीरे मध्य वर्ग का उदय हुआ। मध्य वर्ग के विचारशील होने के कारण पुनर्जागरण में सहायता मिली।
6. इटली विश्व प्रसिद्ध रोमन सभ्यता का देश था। इटली के निवासी पुन: इटली को उसी स्थिति में देखना चाहते थे।
7. पोप इटली में ही रहता था। अत: उससे मिलने विश्व के प्रमुख व्यक्ति आते थे, जिनमें अनेक विद्वान भी थे, अत: उनके विचारों का जनता पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

(II) इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण (Renaissance in England)

यद्यपि इटली में हुए पुनर्जागरण का प्रभाव इंग्लैण्ड में एडवर्ड चतुर्थ के राज्यकाल में प्रकट होने लगा था, परन्तु हेनरी सप्तम के समय में पुनर्जागरण ने अपनी जड़ों को मजबूत बनाया। इंग्लैण्ड में उस समय दो प्रसिद्ध विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज थे। ये विश्वविद्यालय ही इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण के केन्द्र बने। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के कुछ छात्र इटली अध्ययन हेतु गए। 1465 ई० में **विलियम सैलिंग** प्रथम व्यक्ति था जिसने यूनानी लिपि का अध्ययन किया। **सैलिंग का शिष्य थॉमस लिनेकर** भी इटली गया तथा यूनानी भाषा के अध्ययन के साथ-साथ उसने ज्ञान की प्रत्येक शाखा का अध्ययन किया। उसने अपनी विशिष्ट

TOUCH 'n PASS

रुचि औषधि-विज्ञान में प्रदर्शित की तथा चिकित्सक बनकर वह वापस इंग्लैण्ड आया। शीघ्र ही लिनेकर ट्यूडर शासकों का राजकीय चिकित्सक नियुक्त हो गया। लिनेकर ने लन्दन में चिकित्सकों का एक विद्यालय (Royal College of Physicians) स्थापित किया। इसके अतिरिक्त यूनानी साहित्य के विद्वान **ग्रोसिन** तथा **लाइनाक्रे** भी इटली गए तथा लौटकर विश्वविद्यालयों में यूनानी साहित्य पर व्याख्यान दिए। इनके अतिरिक्त कुछ विद्वान जिन्होंने पुनर्जागरण के लिए कार्य किया। इस प्रकार थे—**जॉन कोलेट** (John Colet) लन्दन के अमीर व्यापारी का पुत्र था। अध्ययन करने के लिए वह इटली गया तथा महान् आलोचक बनकर 1497 ई० में इंग्लैण्ड लौटा। वह सेण्टपॉल विद्यालय में अध्यापक बन गया तथा पोप एवं पादरियों क कटु आलोचना की। उसने अपने व्याख्यानों में परम्परागत विचारों के मूल में जाने का प्रयास किया। उसने अनेक विद्यालयों की भी स्थापना की जिनसे नवीन् विचारों के प्रसारण में सहायता मिली। **इरैस्मस** (Erasmus) **एक फ्रांसीसी विद्वान** था तथा अपने समय के प्रकाण्ड पण्डितों में से एक था। इरैस्मस ने भी इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण को गति प्रदान की। इरैस्मस ब्रह्मज्ञान (Divinity) के विद्वान के रूप में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में कार्यरत था। उसके व्याख्यानों ने जनता में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। छापेखाने के द्वारा सम्पूर्ण यूरोप में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला वह प्रथम व्यक्ति था। उसने एक पुस्तक **'प्रेज ऑफ फौली'** (Praise of Folly) की रचना की जिसमें उसने चर्च की बुराइयों का वर्णन किया। अपनी एक अन्य रचना **'ग्रीक टेस्टामेण्ट'** (Greek Testament) में भी इरैस्मस ने पोप तथा चर्च की आलोचना की तथा धार्मिक रूढ़िवादिता पर गहरा आघात किया।

इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण को सर्वाधिक शक्ति प्रदान करने वाला व्यक्ति टॉमस मूर था। टॉमस मूर, कॉलेट तथा इरैस्मस का मित्र था। टॉमस मूर ने राजनीति के क्षेत्र में मुक्त आलोचना की, नयी चेतना का प्रयोग किया तथा 1516 ई० में प्रकाशित अपनी कृति 'Utopia' (काल्पनिक आदर्श राज्य) में एक ऐसे समाज का चित्र खींचा जिसमें सम्पत्ति का अच्छा फैलाव था, प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित था, कोई निर्धन अथवा पीड़ित न था। कोई क्रूर मालिक न था। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार ईश्वर की आराधना का अधिकार था यह पुस्तक इंग्लैण्ड के धनी वर्ग एवं चर्च पर व्यंग्य था। जनता पर इस पुस्तक का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस पुस्तक ने जनता को तत्कालीन इंग्लैण्ड में व्याप्त बुराईयों के विषय में सोचने पर बाध्य किया तथा आधुनिक युग के समाज का आदर्श प्रस्तुत किया। रैम्जे म्योर के शब्दों में, "यूटोपिया एक पवित्र प्रजातन्त्र है जहाँ व्यवहारत: न तो कोई सरकार है, न कर-व्यवस्था है और न कोई अपराध ही होता है।"

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के समान ही कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के विद्वानों ने भी पुनर्जागरण का प्रसार किया। इन विद्वानों ने, जिनमें रिचर्ड क्रोक, थामस स्माइट, चेके तथा गजा प्रमुख हैं, अनेक पुस्तकों की रचनाएँ की तथा अन्य साहित्यिक कार्य कर पुनर्जागरण को शक्ति प्रदान की।

इन विद्वानों के अतिरिक्त पुनर्जागरण की सफलता का श्रेय **ट्यूडर शासकों** को भी है। हेनरी सप्तम, हेनरी अष्टम ने अपना सम्पूर्ण सहयोग पुनर्जागरण की प्रगति के लिए दिया। महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में पुनर्जागरण अपनी सफलता की चरम सीमा तक पहुँच गया। उसके शासनकाल में विशिष्ट सांस्कृतिक उन्नति इस बात का द्योतक है।

प्र.2. पुनर्जागरण के प्रभावों एवं महत्त्व का वर्णन कीजिए।
Describe the impacts and importance of the renaissance.

उत्तर

पुनर्जागरण के प्रभाव
(Impacts of the Renaissance)

प्राय: यह माना जाता है कि पुनर्जागरण एक साहित्यिक क्रान्ति था, परन्तु यह उचित नहीं है। पुनर्जागरण ने जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया। मानव जीवन की श्रेष्ठता एवं उसका महत्त्व बढ़ गया। लोग आशावादी होने लगे। भौतिक सुखों एवं मनोरंजनों को भी मानव जीवन के लिए परम आवश्यक माना गया। तत्कालीन कला एवं साहित्य ने मानव जीवन की कठिनाइयों तथा उनको दूर करने के उपायों को प्रस्तुत किया। संक्षेप में, पुनर्जागरण के परिणामों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है—

1. **वाणिज्यवादी क्रान्ति** (Commercial Revolution)—पुनर्जागरण का महत्त्वपूर्ण परिणाम वाणिज्यवादी क्रान्ति के रूप में सामने आया। मध्य युग में सामन्तों ने कृषि को ही अर्थव्यवस्था का आधार मान लिया था। अत: स्थानीय उद्योग-धन्धे आवश्यकतानुसार सीमित उत्पादन ही करते थे। आदान-प्रदान का आधार भी वस्तु विनिमय था, किन्तु यह स्थिति अधिक समय तक यथावत् नहीं बनी रही। पुनर्जागरण काल में हुए नवीन परिवर्तनों ने व्यापारिक विचारधारा को ही परिवर्तित कर दिया। 16वीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप के अनेक देशों एवं संयुक्त अमेरिका के कतिपय भागों में सोने व चाँदी की खानों का पता चल जाने से आदान-प्रदान के आधार मुद्रा विनिमय को अधिक प्रोत्साहन मिलना प्रारम्भ हो गया।

TOUCH 'n' PASS

मध्ययुगीन वस्तु विनिमय प्रथा अब व्यापार में बाधक मानी जाने लगी। इस स्थिति में व्यापार एवं उद्योग को नियमित करके सोना एवं चाँदी प्राप्त करने की विचारधारा वाले एक वर्ग का उद्भव हुआ। इसे इतिहास में वाणिज्यवादी वर्ग एवं उनकी विचारधारा को वाणिज्यवादी विचारधारा के नाम से जाना जाता है। वाणिज्यवादियों ने नारा दिया 'अधिक सोना, अधिक धन एवं अधिक शक्ति।'

अपने उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वाणिज्यवादियों ने विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करने की बात कही। निर्यात में वृद्धि एवं आयात में कमी की नीति का मार्ग बताया। कृषि को कच्चे माल का स्रोत मानने पर बल दिया। उनकी इस नीति का इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन एवं जर्मनी में अवलम्बन किया गया। फलत: इन देशों के व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई। यह स्पष्ट हो गया कि मुद्रा केवल विनिमय का माध्यम ही नहीं है अपितु धन-संचय का साधन भी है। "इस प्रकार जो व्यापारिक एवं व्यावसायिक परिवर्तन सामने आए उन्हें ही इतिहास में व्यावसायिक/व्यापारिक क्रान्ति (Commercial Revolution) के नाम से जाना जाता है।"

2. **पूँजीवाद के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन** (Social and Economic changes of capitalism)—16वीं शताब्दी में यूरोप में पूँजीवाद का जन्म एवं विकास एक ऐसी महत्त्वपूर्ण घटना थी जिसने आधुनिक युग को पूर्णत: प्रभावित किया। पूँजीवादी व्यवस्था के परिणामस्वरूप 16वीं सदी में यूरोप के सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। यूरोप में पूँजीवादी कृषि का आरम्भ हुआ। अब सामन्तों ने आधुनिक कृषि पद्धति को स्वीकार किया। सामन्तों द्वारा ही प्रताड़ित अर्द्धदास कृषक सामन्तों के नियन्त्रण से मुक्त हुए तथा मध्यम वर्ग का उत्थान हुआ। अब समाज दो वर्गों में विभक्त हो गया। प्रथम, धन-सम्पन्न एवं द्वितीय, निर्धन। पूँजीवाद के विकास ने एक ओर औपनिवेशिक पद्धति को तो जन्म दिया, परन्तु साथ ही दास व्यापार का प्रारम्भ भी हो गया जो कि मानव इतिहास को पूँजीवाद की सर्वाधिक घृणित देन है। पूँजीपति वर्ग एवं मजदूर वर्ग में पारस्परिक संघर्ष ने कालान्तर में समाजवाद को जन्म दिया।

राष्ट्रीय व्यापार तथा उद्योग-धन्धों के विकास के लिए अब राज्यों की ओर से विधान प्रस्तुत किए जाने लगे। व्यापारियों के हितों की सुरक्षा के लिए राज्यों द्वारा नियम बनाए जाने लगे। अब पूँजीपति वर्ग राज्य की ओर संरक्षण प्राप्त करने के उद्देश्य से आकर्षित हुए। दूसरी ओर श्रमिक वर्ग भी अपने संरक्षण के लिए राज्य से माँग करने लगा। व्यापार के द्रुतगति से विकास ने यूरोपीय देशों में उपनिवेशों की स्थापना को लेकर भयंकर संघर्ष आरम्भ कर दिया।

3. **साहित्य एवं विज्ञान पर प्रभाव** (It Enriched Literature and Science)—मध्यकालीन जनता को विज्ञान तथा राजनीतिक सिद्धान्तों का विशेष ज्ञान था। पुनर्जागरण के समय अनेक विद्वानों के कारण साहित्य में वृद्धि हुई। अनेक पुस्तकें साहित्य एवं विज्ञान पर लिखे जाने तथा पढ़ने का विचार जनता में जाग्रत हुआ तथा अनेक वैज्ञानिक उपकरणों का आविष्कार हुआ।
4. **बौद्धिक प्रभाव** (Intellectual Effect)—इस आन्दोलन का सर्वाधिक प्रभाव जनसाधारण पर पड़ा। जनता में तर्कवादिता ने जन्म लिया। बिना किसी आधार एवं प्रमाण के अब जनता किसी बात को स्वीकार नहीं करती थी। अन्धविश्वास तथा रूढ़िवादिता का अन्त होने लगा।
5. **राष्ट्रीयता की भावना** (National Feeling)—यूनानी एवं लैटिन भाषाओं से प्रभावित होकर प्रत्येक राष्ट्र एवं उसके समाज में स्वयं को उन्नत करने की भावना जाग्रत हुई। यूनानियों के समान अपनी भाषा को विकसित करने का प्रयास प्रत्येक राष्ट्र चाहने लगा। इंग्लैण्ड के लेखकों ने भी पुनर्जागरण से प्रेरित होकर अनेक रचनाएँ कीं तथा जातीयता एवं राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित किया।
6. **इतिहास पर प्रभाव** (Effects on History)—गोथों तथा हूणों के आक्रमणों ने प्राचीन तथा मध्यकालीन इतिहास के मध्य एक खाई बना दी थी। पुनर्जागरण के प्रभाव से जनता में पुन: इतिहास लिखने तथा पढ़ने की भावना उत्पन्न हुई। इस प्रकार पुनर्जागरण ने उपयुक्त खाई को पाट दिया। इतिहासकारों ने पुन: वैज्ञानिक ढंग से इतिहास-लेखन का कार्य किया।
7. **नवीन उपनिवेशों की स्थापना** (Establishment of New Colonies)—पुनर्जागरण के प्रभाव से लोग साहसी हो गए तथा दूर-देशों की समुद्री यात्रा अनेक नाविकों ने की। पुर्तगाल में समुद्री यात्रा के प्रोत्साहन हेतु एक 'नाविक विद्यालय' की स्थापना की गई। विभिन्न नाविकों द्वारा अपनी समुद्री यात्रा के समय नए-नए प्रदेशों की खोज की गई। इन नाविकों में कोलम्बस, वास्कोडिगामा, जॉन कैवर, मैगलेन प्रमुख हैं।

TOUCH 'n' PASS

8. **कला पर प्रभाव** (Rebirth of Art)—पुनर्जागरण से जहाँ एक ओर साहित्यिक क्रान्ति हुई, दूसरी ओर कला के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण विकास हुआ। **इसका प्रभाव सर्वप्रथम इटली में तथा तत्पश्चात् यूरोप के अन्य राष्ट्रों पर पड़ा।** लोगों का ध्यान पुनर्जागरण के पश्चात्, लैटिन और यूनानी कला तथा भवन-निर्माण की ओर आकर्षित हुआ। उससे प्रभावित होकर यूरोप के अन्य राष्ट्रों ने भी यूनानी कला के नमूने देखकर नवीन कलाकृतियों का निर्माण किया। उस समय का प्रसिद्ध कलाकार **माइकल ऐंजलो** (Michelangelo) था, जिसने मोसेज तथा डेविड की मूर्तियों का निर्माण किया जो कला की दृष्टि से उच्च श्रेणी की मानी जाती हैं। माइकल ऐंजलो ने चित्रकला में भी प्रसिद्धि प्राप्त की। उसने '**लास्ट जजमेण्ट**' नामक चित्र बनाया। माइकल ऐंजलो के अतिरिक्त लिओनार्डो दा विन्सी, सीटियन आदि प्रसिद्ध चित्रकार उस समय हुए। स्थापत्य चित्रकला के अतिरिक्त संगीत कला में भी विशिष्ट उन्नति हुई।
9. **धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रारम्भ** (Paved way for Reformation)—पुनर्जागरण के धार्मिक क्षेत्र में भी गम्भीर प्रभाव हुए। तर्क तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण से जनता के समक्ष पोप तथा चर्च की अनियमितताएँ तथा बुराइयाँ स्पष्ट हो गईं। विद्वानों ने पोप तथा चर्च पर अपनी लेखनी से प्रहार किया तथा धार्मिक आन्दोलन के मार्ग को साफ बनाया। इसी कारण कहा जाता है—"**पुनर्जागरण के विद्वानों ने धार्मिक आन्दोलन रूपी आँधी को जन्म दिया जिसे बाद में धार्मिक आन्दोलन के पिता लूथर ने शक्ति प्रदान की।**

पुनर्जागरण का महत्त्व
(Importance of Renaissance)

इस प्रकार पुनर्जागरण होना यूरोप की एक महान् घटना थी। **पुनर्जागरण का विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा सम्पूर्ण समाज पर स्वास्थ्यप्रद प्रभाव पड़ा।** कोलेट ने 'सेंट पॉल्ज स्कूल' को एक नवीन शिक्षण प्रणाली के आदर्श के रूप में स्थापित किया और उसका प्रभाव पुरानी संस्थाओं पर भी पड़ा। ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में नए कॉलेज खोले गए। उच्च वर्ग में शिक्षा-संस्कृति का प्रचलन हो गया। हेनरी अष्टम के दरबार में भी अनेक विद्वान थे। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप पन्द्रहवीं सदी के **अन्तिम पच्चीस वर्षों में काव्य के महान् पुष्प खिले।** एक ऐसे युग का प्रादुर्भाव हुआ जिसमें पृथ्वी के नए क्षेत्र, चेतना के नवीन आयाम एक साथ उद्घटित हुए। वास्तव में यह एक महान् युग का प्रारम्भ था और उस सुप्रभात में जीवन स्वर्गीय वरदान ही था।

यद्यपि पुनर्जागरण ने उपर्युक्त समस्त लाभ तत्कालीन समाज को दिए, किन्तु इसका दूसरा पहलू भी था। **पुनर्जागरण के सभी परिणाम अच्छे न थे।** हर परिवर्तन समाज को उच्चता की ओर ले जाने वाला नहीं था। इटली में तो यह काल राजनीति, धर्म, आचरण संहिता और व्यक्तिगत चरित्र सभी में अन्तर्विरोधों का आभास देता है। सारे समाज और प्रत्येक व्यक्ति में जहाँ आधुनिक भावनाओं का प्रभाव था वहाँ मध्यकालीन परम्पराएँ भी उस पर अपना प्रभाव बनाए हुए थीं। पुनर्जागरण ने लोगों के मन में यह भावना उत्पन्न की कि वे नैतिकता के प्रतिरोध को दूर कर दें। **मैकियावेली का 'राजकुमार'** (The Prince) पुनर्जागरण का ही प्रतीक है जहाँ वह शासक के लिए नैतिकता के आदेशों का पालन करना आवश्यक नहीं कहता है।' किन्तु उपर्युक्त सभी दुर्गुणों के पश्चात् भी पुनर्जागरण के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता।

प्र.3. धर्म सुधार आन्दोलन के कारणों का वर्णन कीजिए।
Describe the causes of the religious reform movement.

उत्तर

धर्म सुधार आन्दोलन के कारण
(Causes of the Religious Reform Movement)

तत्कालीन यूरोपीय समाज द्वारा, लूथर के द्वारा स्थापित मत को, तुरन्त स्वीकार कर लेना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि धर्म-सुधार के अनेक कारण थे क्योंकि किसी एक कारण अथवा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किसी मत को एकाएक इतना शक्तिशाली समर्थन प्राप्त होना असम्भव है। अत: धर्म-सुधार आन्दोलन के कारणों को जानने के लिए उस युग की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन आवश्यक है; जो कि इस प्रकार है—

1. **चर्च की बुराइयाँ** (Abuses in the Church)—धर्म-सुधार आन्दोलन का सर्वाधिक प्रमुख कारण तत्कालीन चर्च में व्याप्त बुराइयाँ थीं। **पोप तथा पादरी, धनी होने तथा किसी प्रकार का प्रतिबन्ध स्वयं पर होने के कारण विलासी एवं भ्रष्ट हो गए थे।** उनके भ्रष्ट होने से गिरजाघर भी, जो पवित्र स्थल माने जाते थे, अब भ्रष्टाचार एवं विलासिता के केन्द्र बन गए थे। पहले पादरियों को विवाह करने की अनुमति नहीं थी, किन्तु अब उन पर ऐसा कोई प्रतिबन्ध न होने से वे

TOUCH 'n' PASS

सांसारिकता के मोहजाल में फंस गए थे। जनता को पादरियों का इस प्रकार का नैतिक पतन पसन्द न था। इसके अतिरिक्त पादरियों पर देश का कानून मान्य न था। उन पर राजा किसी प्रकार से भी मुकदमा नहीं चला सकता था चाहे उन्होंने कोई भी अपराध क्यों न किया हो? उन पर ऐसे न्यायालयों में भी मुकदमा चल सकता था जहाँ न्यायाधीश पादरी ही हो। उनको दण्ड भी जनसाधारण की तुलना में बहुत कम मिलता था।

तत्कालीन चर्च में व्याप्त एक अन्य बुराई **प्लूरेलिटीज की रीति थी,** जिसके द्वारा एक पादरी अनेक गिरजाघरों का अध्यक्ष तथा अनेक पदों पर कार्य कर सकता था। इस रीति के कारण गिरजाघरों की व्यवस्था उचित नहीं हो पाती थी तथा पादरियों की अधिक आय होने के कारण उनकी विलासिता में वृद्धि होती थी।

चर्च में व्याप्त उपर्युक्त बुराइयों के अतिरिक्त **एक प्रमुख समस्या पोप की थी।** पोप ईसाई जगत् का अनधिकृत सम्राट समझा जाता था तथा वह स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझता था। पोप समस्त ईसाई राज्यों का संरक्षक होता था तथा प्रत्येक देश में उसने अपने प्रतिनिधि **लिगेट** एवं **ननसियस** (Legate and Nuncious) नियुक्त किए थे जो पोप के अतिरिक्त किसी की आज्ञा को स्वीकार करने को तैयार न थे। अपनी शक्तियों को और अधिक निरंकुश बनाने के लिए **पोप के पास दो विशेषाधिकार थे,** जिनका प्रयोग कर वह समय-समय पर अपनी निरंकुशवादिता को प्रमाणित करता रहता था। इन विशेषाधिकारों में से **एक अधिकार इण्टरडिक्ट** (Interdict) **था।** जिसके द्वारा वह किसी भी देश के एक अथवा समस्त गिरजाघरों को बन्द करने का आदेश दे सकता था। ये एक महत्त्वपूर्ण अधिकार था क्योंकि गिरजाघरों के बन्द हो जाने से उस देश में जन्म, विवाह, मृत्यु आदि के अवसरों पर होने वाले समस्त धार्मिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लग जाता और जनता को इस प्रकार अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। **दूसरा विशेषाधिकार 'एक्सकम्यूनिकेशन'** (Ex-communication) **कहलाता था।** इस अधिकार के प्रयोग से वह किसी भी देश के राजा को ईसाई धर्म से च्युत कर सकता था और इस प्रकार उसे उसके पद से हटा सकता था क्योंकि किसी अन्य धर्म का राजा ईसाई देश का शासक नहीं हो सकता था, इन विशेषाधिकारों के कारण प्रत्येक ईसाई देश का राजा तथा जनता, पोप से भयभीत रहती थी तथा उसका विरोध करने का साहस नहीं कर पाती थी। पोप ने इन अधिकारों का प्रयोग इंग्लैण्ड के राजा हेनरी द्वितीय पर किया था। पोप को इन अधिकारों ने निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी बना दिया था। आधुनिक काल के प्रारम्भ होते ही यूरोप के ईसाई देशों में से अनेक देशों की जनता पोप की इस निरंकुशवादिता को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो गई।

पोप ने स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हुए धन अर्जित करने का भी उपाय ढूँढ निकाला था। उसने **क्षमा-पत्र** (Indulgence) देने प्रारम्भ किए। कोई भी व्यक्ति अपने आप से मुक्त होने के लिए धन देकर पोप से क्षमा-पत्र प्राप्त कर सकता था। इस प्रकार धनी-वर्ग स्वेच्छा से अत्याचार करता था और अपने आप के परिणामों से परलोक से बचने के लिए पोप से क्षमा-पत्र प्राप्त कर लेता था क्योंकि पोप ने यह प्रचार कर दिया था कि जो व्यक्ति मृत्यु से पूर्व उससे क्षमा-पत्र प्राप्त कर लेगा, वह मरणोपरान्त स्वर्ग प्राप्त करेगा। इसके अतिरिक्त धन अर्जित करने के लिए पोप प्रत्येक ईसाई राष्ट्र से उसकी वार्षिक आय का एक अंश जिसे **ऐनेट्स या फर्स्ट फ्रूट** (Annates or First Fruit) कहते थे, प्राप्त करता था तथा गिरजाघरों में विभिन्न पदों को बेचा जाता था। इस प्रकार पोप ने तथा विभिन्न गिरजाघरों ने अपार सम्पत्ति एकत्रित कर ली थी। आधुनिक युगीन नेता गिरजाघरों एवं पोप में व्याप्त विभिन्न बुराइयों को समाप्त करना चाहते थे।

2. **यूरोप के राजाओं की लालसा** (Greed of European Princes)—गिरजाघरों की सम्पत्ति, भूमि तेजी से बढ़ रही थी अत: यूरोप के शासकों की गिरजाघरों एवं पोप की सम्पत्ति पर नजर लगी हुई थी तथा उस पर वे अधिकार करना चाहते थे, क्योंकि मध्यकालीन यूरोप के राष्ट्रों के राजाओं को धन की भारी आवश्यकता रहती थी। अत: वे अवसर की प्रतीक्षा में थे। रैम्जे म्योर ने भी धार्मिक आन्दोलन के प्रमुख कारणों में, चर्च में व्याप्त अनियमितताएँ तथा यूरोप के राष्ट्रों के राजाओं की गिरजाघरों की सम्पत्ति पर अधिकार करने की लालसा को ही माना है।
3. **पोप से घृणा** (Hatred against Pope)—1309 ई० में पोप ने अपनी राजधानी रोम के स्थान पर एयुग्नेन (Ayugnen) बनायी। यह एयुग्नेन फ्रांस की सीमा पर स्थित था। एयुग्नेन, पोप की राजधानी 1378 ई० तक रही, किन्तु इस लगभग सत्तर वर्ष के समय का तत्कालीन धार्मिक एवं राजनीतिक स्थिति पर व्यापक प्रभाव पड़ा। **पोप के एयुग्नेन रहने से पोप पर फ्रांस के राजा का प्रभाव बढ़ गया जिससे यूरोप के ईसाई राष्ट्र जो फ्रांस के शत्रु थे पोप से नाराज हो गए तथा उससे घृणा करने लगे।** इसी कारणवश इंग्लैण्ड के शासक एडवर्ड तृतीय ने पोप एवं गिरजाघरों के अधिकारों

को इंग्लैण्ड में कम करने का प्रयत्न किया। 1378 ई० में पोप के सम्मान को गम्भीर आघात लगा क्योंकि उस समय दो पोप हो गए तथा एक-दूसरे को नास्तिक कहने लगे। यह स्थिति 1417 ई० तक रही, जिससे पोप का आत्मसम्मान यूरोप में कम हो गया तथा उसकी शक्ति में पतन होने के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

4. **राष्ट्रीय भावना का प्रभाव** (Influence of National Spirit)—पोप के प्रभाव के कारण लोगों को अपने देश के नियम के स्थान पर पोप के आदेशों को स्वीकार करना पड़ता था। आधुनिक युग के उदय के साथ ही प्रत्येक देश में राष्ट्रीय भावना का जन्म हुआ और **जनता में यह भावना जाग्रत होने लगी थी कि पोप एक विदेशी था, अत: पोप के प्रभाव को समाप्त करने का प्रत्येक देश का कर्त्तव्य हो गया।** जनता अपने देश के प्रति वफादार रहना चाहती थी। जनता देश को धर्म एवं गिरजाघरों से अधिक महत्त्वपूर्ण समझने लगी थी।
5. **पवित्र धर्म की आवश्यकता** (Need of a Pious Religion)—प्रारम्भ में ईसाई धर्म एक सुन्दर और पवित्र धर्म था। उसमें किसी प्रकार की अपवित्रता व्याप्त नहीं थी, किन्तु शनैः-शनैः उसमें बुराइयाँ तथा अन्धविश्वास बढ़ने लगा। अत; आधुनिक युग के आगमन तथा पुनर्जागरण के प्रभाव से अब लोग ऐसे धर्म को अस्वीकार करने का तैयार न थे तथा एक नवीन धर्म की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे।
6. **पुनर्जागरण का प्रभाव** (Impact of Renaissance)—पुनर्जागरण के कारण **लोग तर्कवादी** हो गए थे। अत: वे पर्याप्त प्रमाण के अभाव में किसी सिद्धान्त अथवा बात को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। पुनर्जागरण का इस कारण धार्मिक क्षेत्र में गम्भीर प्रभाव पड़ा। बाइबिल का अनुवाद राष्ट्रीय भाषाओं में किया गया तथा छापेखाने के आविष्कार के कारण बाइबिल का पढ़ना सुगम हो गया। यूरोप के अनेक धर्म-सुधारक इटली गए तथा अपने देश लौटकर पोप एवं धर्म में व्याप्त बुराइयों से जनता को अवगत कराया। इस प्रकार पुनर्जागरण ने धर्म-सुधार आन्दोलन को रास्ता दिखाया।
7. **धर्म-सुधारकों द्वारा पोप का विरोध** (Oppose of Pope by Reformers)—यूरोप में समय-समय पर अनेक धर्म-सुधारक हुए जिन्होंनें तत्कालीन पोप एवं गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को जनता के समक्ष रखा। **इन धर्म-सुधारकों में एक प्रसिद्ध नाम वाइक्लिफ** (Wycliff) **का है।** वाइक्लिफ इंग्लैण्ड में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। एडवर्ड तृतीय के समय उसने गिरजाघरों के विरुद्ध आवाज उठाई तथा जनता के समक्ष धर्म पर व्याप्त राजनीतिक प्रभाव तथा उसके दुष्परिणाम रखे। वाइक्लिफ ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जिससे लोग उसका वास्तविक अर्थ समझ सके तथा पादरियों द्वारा गुमराह होने से बच गए। **वाइक्लिफ ने राजा को गिरजाघरों में व्याप्त भ्रष्टाचार का कारण धन बताया** तथा उसे सुझाव दिया कि गिरजाघरों एवं धर्म को पुन: पवित्र बनाने के लिए उनके धन एवं सम्पत्ति पर अधिकार कर ले।

   वाइक्लिफ (Wycliff) के पश्चात् उसके अनुयायी उसके सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे। **दूसरा प्रमुख धर्म-सुधारक वोहेमिया में जान हुस हुआ।** हुस, प्राग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। उसने नवीन विचारों का प्रचार किया, जिसके परिणामस्वरूप 1415 ई० में उसे जीवित जला दिया गया। यद्यपि जान हुस की मृत्यु हो गई, किन्तु उसके सिद्धान्त जीवित रहे। तीसरा धर्म-सुधारक सेवोनैरोला इटली में हुआ, उसे भी मृत्यु-दण्ड दिया गया।

प्र.4. जर्मनी में हुए धर्म सुधार आन्दोलनों का वर्णन कीजिए।

Describe the religious reform movements in Germany.

***अथवा* एक धर्म सुधारक के रूप में मार्टिन लूथर के योगदान का वर्णन कीजिए।**

***Or* Describe the contribution of Martin Luther as a religious reformer.**

उत्तर

जर्मनी में धर्म सुधार आन्दोलन
(Religious Reform Movements in Germany)

धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रणेता मार्टिन लूथर था। उसके विचारों एवं कार्यों ने जर्मनी में धार्मिक क्रान्ति को जन्म दिया।

मार्टिन लूथर (Martin Luther)—जर्मनी में धर्म सुधार आन्दोलन के प्रणेता मार्टिन लूथर का जन्म 10 नवम्बर, 1483 ई० को आइबेन नामक गाँव में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। उसके पिता का नाम हान्स तथा माता का नाम मार्गरिथी जैंगलर था। मार्टिन लूथर के पिता की इच्छा थी कि उनका पुत्र वकील बने। इरफर्ट विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् उसने अपने पिता की इच्छानुसार कानून का अध्ययन प्रारम्भ किया, किन्तु वह वकील बनने के स्थान पर 1508 ई० में विटनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्म एवं दर्शनशास्त्र का शिक्षक नियुक्त हो गया। इस पद पर कार्य करते हुए उसने धर्म शास्त्र का गहन अध्ययन

TOUCH 'n PASS

किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मानव की मुक्ति ईश्वर की भक्ति से ही सम्भव थी। लूथर स्वयं कैथोलिक धर्म का अनुयायी था तथा पोप के प्रति भी उसे अपार श्रद्धा थी।

1511 ई० में उसे रोम जाने का अवसर मिला। रोम की यात्रा के प्रति उसमें अपार उत्साह था, किन्तु रोम पहुँचने पर पोप के विलासमयी जीवन-शैली को देखकर उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। रोम में व्याप्त आडम्बर व भ्रष्टाचार को देखकर वह हतप्रभ हो गया। रोम में उसने देखा कि वहाँ धर्म अधिकारी किस प्रकार विभिन्न तरीकों से धन कमा कर सुखद जीवन व्यतीत कर रहे थे। इसी कारण उसने कहा, **''ईसाई धर्म रोम के जितना निकट है उतना ही दोषयुक्त है।''** रोम की यात्रा से निराश होकर लौटने के पश्चात् भी उल्लेखनीय है कि लूथर ने रोम के पोप का विरोध नहीं किया वरन् चर्च में सुधार किए जाने के विषय में वह सोचने लगा।

लूथर द्वारा क्षमा-पत्रों का विरोध—इसी समय घटित कुछ घटनाओं ने लूथर को पोप विरोधी बना दिया तथा उसने खुलकर पोप का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। इसका मुख्य कारण उसके द्वारा क्षमा-पत्रों (Indulgence) का विरोध करना था। क्षमा-पत्र एक ऐसा 'मुक्ति-पत्र' होता था जिसको कोई भी व्यक्ति धन देकर पोप अथवा उसके प्रतिनिधियों से खरीद सकता था। पोप का कहना था कि इस पत्र को खरीदने से खरीदने वाले व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाएँगे।

1517 ई० में पोप के प्रतिनिधि के रूप में टेटजेल क्षमा-पत्रों को बेचने के लिए विटनबर्ग पहुँचा। टेटजेल ने यह तक घोषणा की कि यदि कोई भविष्य में भी पाप करना चाहता है तो भी यदि वह क्षमा-पत्रों को खरीद लेगा तो वह पाप से मुक्त माना जाएगा। उसने कहा, **''जैसे ही क्षमा-पत्रों के लिए दिए गए सिक्कों की खनक गूँजती है तो उस आदमी की आत्मा सीधे स्वर्ग में प्रवेश कर जाती है।''** लूथर ने क्षमा-पत्रों को बेचे जाने का घोर विरोध किया व जर्मनी की जनता को समझाया कि यह धन प्राप्त करने का एक साधन मात्र है। उसने यह भी कहा कि यह धर्म विरोधी है। अपनी बात को जनता तक पहुँचाने के लिए उसने अपनी बातें '95 **बिन्दुओं**' में लिखकर 31 अक्टूबर, 1517 ई० को विटनबर्ग के गिरजाघर के प्रवेश द्वार पर चिपका दी। इसमें चर्च द्वारा इस तरीके से धन एकत्र करने की आलोचना की गई थी तथा जनता को समझाया गया था कि पाप पश्चाताप करने से दूर होता है न कि क्षमा-पत्र खरीदने से। इस सन्दर्भ में सेवाइन ने लिखा है, **''क्षमा-पत्रों के विषय में बड़ी भ्रान्तियाँ थीं। इस प्रथा को टेटजेल ने अधिक धन प्राप्ति के लिए और अधिक भ्रष्ट बना दिया। लूथर ने इस प्रथा की भर्त्सना की और क्षमा-पत्रों की प्रथा को चुनौती दी।''**

मार्टिन लूथर के विचारों का जर्मनी में स्वागत हुआ व शीघ्र ही वह जर्मनी में धार्मिक नेता बन गया। लूथर के बढ़ते हुए प्रभाव से पोप लिओ दशम् चिन्तित हो गया तथा उसने अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए डॉ० जॉन नामक एक धर्मशास्त्री को जर्मनी भेजा। डॉ० जॉन से लूथर ने लिपजिग में वाद-विवाद किया व मनुष्य और ईश्वर के मध्य पोप को निरर्थक बताया। इसके साथ ही लूथर ने तीन पुस्तकें प्रकाशित कर पोप का विरोध किया व जनसाधारण को सत्य से अवगत कराया। ये पुस्तकें निम्नलिखित थीं—

(i) **एन एड्रेस टू द नोबिलिटी ऑफ द जर्मन नेशन** (An Address to the Nobility of the German Nation)
(ii) **ऑन द लिबर्टी ऑफ द क्रिश्चियन मैन** (On the Liberty of the Christian man)
(iii) **ऑन द बेबिलोनिश कैप्टिविटी ऑफ द चर्च** (On the Babylonish Captivity of the Church)

उल्लेखनीय है कि इन पुस्तकों में वर्णित सिद्धान्त ही भविष्य में प्रोटेस्टैण्ट धर्म के प्रमुख सिद्धान्त बने।

लूथर के विरुद्ध पोप की कार्यवाही—लूथर के इन कार्यों से पोप अत्यधिक क्रोधित हुआ तथा उसने 1520 ई० में लूथर को आदेश दिया कि वह दो माह के अन्दर अपने विचार वापस ले अन्यथा उसके विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। लूथर द्वारा ऐसा न करने पर पोप ने लूथर को धर्म से निष्कासित कर दिया, किन्तु लूथर ने निष्कासन के आदेश को जला दिया। उस समय पवित्र रोमन सम्राट चार्ल्स पंचम पोप का अनन्य अनुयायी था, अत: उसने इस समस्या का निराकरण करने के लिए '**वर्म्स की सभा**' आमन्त्रित की। इस सभा में लूथर से पोप का विरोध त्यागने को कहा गया, किन्तु लूथर ने कहा, ''जब तक मुझे बाईबिल अथवा तर्क द्वारा गलत प्रमाणित न कर दें मैं कुछ भी त्यागने के लिए तैयार नहीं हूँ क्योंकि अन्त:करण के विरुद्ध आचरण करना न तो पवित्र है और न ही उचित।'' परिणामस्वरूप, लूथर एवं चार्ल्स पंचम में कोई समझौता न हो सका तथा चार्ल्स पंचम ने उसकी समस्त पुस्तकों को प्रतिबन्धित कर दिया व उससे कानूनी सुरक्षा का अधिकार भी छीन लिया। ऐसी स्थिति में सैक्सनी के शासक फ्रेडरिक ने लूथर को संरक्षण दिया। उसके संरक्षण में लूथर को लगभग एक वर्ष तक रहना पड़ा, किन्तु इस समय का सदुपयोग लूथर ने बाईबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद करके किया।

प्रोटेस्टैण्ट धर्म का जन्म—जर्मनी में लूथर के द्वारा पोप का विरोध किए जाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए धार्मिक विवाद का हल ढूँढ़ने के लिए पवित्र रोमन साम्राज्य की एक सभा स्पीयर (Speyer) में 1526 ई० में आमन्त्रित की गई। इस सभा में लम्बा वाद-विवाद तो हुआ, किन्तु यह किसी निष्कर्ष पर न पहुँच सकी। अत: 1529 ई० में स्पीयर में ही दूसरी धार्मिक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में लूथर के सुधारवाद का विरोध किया गया व उसके विरुद्ध कठोर आदेश जारी किए गए। इस सभा द्वारा इस प्रकार एक-पक्षीय निर्णय दिए जाने का लूथर के समर्थकों ने घोर विरोध किया तथा पोप एवं स्पीयर की द्वितीय सभा के आदेशों को मानने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार चूँकि लूथर के समर्थकों ने पोप के आदेशों का विरोध (प्रोटेस्ट) किया था, अत: उसके समर्थकों द्वारा चलाया गया आन्दोलन **'प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलन'** कहलाया। इस प्रकार प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलनकारियों ने परम्परागत कैथोलिक धर्म का विरोध कर नए धर्म का प्रतिपादन किया। इस धर्म की विधिवत् स्थापना 1530 ई० में हुई जिसमें लूथर के सिद्धान्तों का पालन किया गया। इस प्रकार जर्मनी में प्रोटेस्टैण्ट धर्म की स्थापना हो गई।

लूथर के सिद्धान्त—मार्टिन लूथर के द्वारा प्रतिपादित प्रमुख सिद्धान्त निम्नवत् थे—

1. पोप अथवा चर्च के स्थान पर ईसा एवं बाईबिल को सर्वोच्च घोषित करते हुए पोप की सत्ता को नकारा गया।
2. ईश्वर की भक्ति व उसके प्रति श्रद्धा ही मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। अत: मुक्ति प्राप्त करने के लिए चर्च एवं पोप द्वारा निर्धारित कार्यों (क्षमा-पत्र आदि खरीदने) के स्थान पर ईश्वर की भक्ति पर जोर दिया गया।
3. चर्च द्वारा निर्धारित **सात संस्कारों** में से उसने केवल तीन को मान्यता दी। ये थे—नामकरण, प्रायश्चित एवं प्रसाद।
4. लूथर ने चर्च की अपार शक्तियों व चमत्कारों को मानने से इन्कार कर दिया।
5. सभी के लिए समान न्याय-व्यवस्था मानी गई चाहे वह पोप ही क्यों न हो।
6. रोम के चर्च के प्रभुत्व को समाप्त करके राष्ट्रीय चर्च की शक्ति को मान्यता दी गई।
7. धर्म ग्रन्थ सबके अध्ययन के लिए हैं, किसी को उनका अध्ययन किए जाने से रोका नहीं जाना चाहिए।
8. चर्च में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए पादरियों को भी विवाह करने की अनुमति दी गई।

लूथर के ये सिद्धान्त जर्मनी में अत्यधिक लोकप्रिय हो गए। अत: प्रोटेस्टैण्ट धर्म का तीव्र विकास व कैथोलिक धर्म का विरोध होने लगा। लूथर की शिक्षाओं ने जन-साधारण, सदाचारी ईसाइयों व राष्ट्रवादियों को विशेष रूप से प्रभावित किया। अत: उसके समर्थकों ने कैथोलिक चर्च के विरुद्ध विद्रोह कर दिया व चर्च की सम्पत्ति को छीन लिया।

ऑग्सबर्ग की सन्धि—लूथरवाद के बढ़ते प्रभाव से सम्राट चार्ल्स पंचम चिन्तित हो गया तथा उसने लूथरवादियों का दमन करना प्रारम्भ कर दिया। चार्ल्स पंचम ने अन्तत: इस समस्या का निदान करने के लिए ऑग्सबर्ग में एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायियों द्वारा अपने सिद्धान्त सम्राट के समक्ष रखे गए, किन्तु उन्हें मानने से चार्ल्स पंचम ने इन्कार कर दिया। 1546 ई० के पश्चात् प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलन और तीव्र हो गया तथा उसने गृह-युद्ध का रूप धारण कर लिया। यह गृह-युद्ध 1555 ई० तक चलता रहा, अन्तत: 1555 ई० में प्रिंस फर्डिनेण्ड ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायियों के साथ ऑग्सबर्ग की सन्धि की। इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित थीं—

1. प्रत्येक शासक को 'उल्लेखनीय है कि जनता को नहीं) अपना व अपनी प्रजा का धर्म चुनने का अधिकार प्रदान किया गया।
2. प्रोटेस्टैण्ट धर्मनुयायियों द्वारा चर्च से छीनी गई जागीर व सम्पत्ति उन्हीं की मान ली गई।
3. किसी को भी धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।
4. साम्राज्य की परिषद् में कैथोलिकों व प्रोटेस्टैण्टों को एक समान प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।
5. लूथरवाद (प्रोटेस्टैण्ट) के अतिरिक्त किसी अन्य धार्मिक सम्प्रदाय को मान्यता नहीं दी गई।

इस प्रकार इस सन्धि से प्रोटेस्टैण्ट आन्दोलन जर्मनी में समाप्त हो गया। उल्लेखनीय है कि इस सन्धि से पूर्व 1546 ई० में ही लूथर की मृत्यु हो चुकी थी, किन्तु उसके सिद्धान्त जीवित थे जिन्हें अन्तत: 1555 ई० की ऑग्सबर्ग की सन्धि से मान्यता प्राप्त हो गई। इसी कारण इस सन्धि का विशेष महत्त्व है। ऑग्सबर्ग की इस सन्धि में कुछ दोष भी थे जिनके कारण कुछ समय पश्चात् प्रोटेस्टैण्ट व कैथोलिकों में पुन: संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इस सन्धि के प्रमुख दोष निम्नलिखित थे—

1. काल्विनवादी व ज्विंग्लीवादी विचारधाराओं को मान्यता नहीं दी गई थी।
2. इस सन्धि में सम्पत्ति पर अधिकार वाली धारा ने प्रोटेस्टैण्ट व कैथोलिकों के झगड़े को और बढ़ाया।

TOUCH 'n PASS

इन दोषों के कारण जर्मनी में पुन: धार्मिक संघर्ष प्रारम्भ हो गया जो अन्तत: तीस वर्षीय युद्ध के पश्चात् वेस्टफेलिया की सन्धि से समाप्त हो गया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि धर्म-सुधार आन्दोलन का वास्तविक जन्मदाता लूथर ही था जिसने पोप एवं चर्च की व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों की ओर सर्वप्रथम जनता का ध्यान आकर्षित किया व उसके विरुद्ध आवाज उठाई। उसके ये विचार न केवल जर्मनी ही नहीं वरन् यूरोप के अनेक देशों में भी गूँजे। इसी कारण इतिहासकारों ने उसकी अत्यन्त प्रशंसा की है। फिशर ने लूथर के विषय में लिखा है—"मार्टिन लूथर को दुनिया में अद्वितीय स्थान इसलिए नहीं मिला कि वह मौलिक था बल्कि इसलिए मिला कि वह सच्चा प्रतिनिधि था।" इसी प्रकार टौट ने लूथर के प्रभाव के विषय में लिखा है, "सैक्सनी के इस विचारक ने जोश के कारण वह सब कुछ प्राप्त कर लिया जो उसके पूर्वगामी अपनी भीरू नीति के कारण नहीं कर सके थे।"

प्र.5. इंग्लैण्ड में हुए धर्म सुधार आन्दोलनों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
Describe in detail the religious reform movements in England.

उत्तर

इंग्लैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन : 'एंग्लिकनवाद'
(Religious Reform Movements in England : 'Anglicanism')

'एंग्लिकनवाद' प्रोटेस्टैण्ट सम्प्रदाय का वह स्वरूप है जिसे 16वीं सदी के इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय चर्च के लिए राज्य धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और कालान्तर में अमेरिका में 'एपिसकोपल चर्च' के नाम से जाना गया। सोलहवीं सदी के आरम्भ में कैथोलिक धर्म का ही प्रचलन था, किन्तु इंग्लैण्ड में उदीयमान शक्तिशाली राष्ट्रीयता की भावना कैथोलिक धर्म के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप से कब तक कदम मिलाकर चलती। अत: सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ से ही इंग्लैण्ड में धार्मिक उथल-पुथल आरम्भ हो गई।

इंग्लैण्ड के शासकों ने काफी समय पूर्व से पोप का विरोध करना प्रारम्भ किया था। सर्वप्रथम विलियम ने पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से समाप्त करने का प्रयास किया यद्यपि वह स्वयं कैथोलिक विचारधारा का था। विलियम के पुत्र, विलियम रूफस ने भी पोप की शक्ति को सीमित करना चाहा। हेनरी द्वितीय ने भी **'क्लेरेण्डन कोड'** (Clarendon Code) पारित करके पोप की इंग्लैण्ड से सत्ता समाप्त करनी चाही, किन्तु असफल रहा। हेनरी द्वितीय के पुत्र जॉन भी अपने प्रयत्नों में असफल रहा और पोप का प्रभाव पूर्ववत् इंग्लैण्ड में विद्यमान रहा। चौदहवीं शताब्दी में वाइक्लिफ (Wycliff) ने इंग्लैण्ड में पोप तथा गिरजाघरों की बुराइयों का प्रचार किया तथा एडवर्ड तृतीय ने भी पोप का प्रभुत्व समाप्त करना चाहा, किन्तु असफल रहा। हेनरी सप्तम तथा प्रारम्भ में हेनरी अष्टम पोप के समर्थक थें अत: 1529 ई० तक पोप का प्रभाव इंग्लैण्ड में पूर्ववत् रहा, तथापि अनेक धर्म-सुधारकों ने वाइक्लिफ के सिद्धान्तों को अपनाया। ऐसे सुधारकों में ग्रोसीन जॉन कोलेट तथा टॉमस मूर प्रमुख थे, किन्तु सर्वाधिक प्रभाव फ्रांस के इरैस्मस का हुआ। उसने अपनी पुस्तक न्यू **टेस्टामेण्ट** (New Testament) तथा **'दि प्रेज ऑफ फौली'** (The Praise of Folly) द्वारा क्रान्ति उत्पन्न कर दी। न्यू टेस्टामेण्ट का लूथर ने जर्मन भाषा तथा टाइनेडल ने अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया, किन्तु फिर भी इंग्लैण्ड के हेनरी अष्टम के शासन काल के पूर्व कैथोलिक धर्म के स्थान पर किसी नवीन धर्म का प्रचलन न हो सका।

धर्म सुधार आन्दोलन के प्रति इंग्लैण्ड के विभिन्न शासकों की नीति का वर्णन निम्न है—

1. **धर्म सुधार आन्दोलन एवं हेनरी अष्टम** (Reformation Revolution and Henry VIII)—हेनरी अष्टम के शासन प्रारम्भ होने से पूर्व ही इंग्लैण्ड में कुछ विद्वानों ने धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ करने का प्रयत्न किया था। इन विद्वानों में जॉन वाइक्लिफ, जॉन कोलेट, टॉमस मूर, इरैस्मस आदि प्रमुख हैं, किन्तु इन विद्वानों के प्रयत्नों का इंग्लैण्ड पर विशेष प्रभाव न हुआ। अपने शासन के प्रारम्भ में हेनरी अष्टम भी पोप का समर्थक एवं धर्म-सुधार आन्दोलन का विरोधी था। उसने इरैस्मस की पुस्तक **'न्यू टेस्टामेण्ट'** (New Testament) के अंग्रेजी संस्करणों को जलवा दिया। पोप ने प्रसन्न होकर हेनरी अष्टम को **'धर्म रक्षक'** (Defender of the Faith) की उपाधि प्रदान की थी।

   किन्तु, कैथराइन से तलाक लेने के प्रश्न पर हेनरी अष्टम तथा पोप में विरोधाभास उत्पन्न हो गया। हेनरी अष्टम कैथराइन से तलाक लेना चाहता था, किन्तु पोप ऐसा करने के पक्ष में नहीं था। अनेक इतिहासकारों का विचार है कि कैथराइन से तलाक लेने का प्रश्न ही इंग्लैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन का कारण था, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। कैथराइन से तलाक लेने के प्रश्न ने धर्म-सुधार आन्दोलन के लिए अवसर प्रदान किया, किन्तु वह इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार आन्दोलन का कोई एकमात्र कारण नहीं था।

TOUCH 'n PASS

हेनरी अष्टम ने पोप से नाराज होने के पश्चात् उसके विरुद्ध कार्य प्रारम्भ किया। अनेक नियम पारित करके हेनरी अष्टम इंग्लैण्ड के चर्च का सर्वोच्च अधिकारी बन गया तथा पोप से पूर्णत: सम्बन्ध समाप्त कर लिए। पोप के इंग्लैण्ड में प्रमुख अड्डे मठ थे, जिनको हेनरी अष्टम ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक बन्द कराया व उनकी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार यद्यपि हेनरी अष्टम ने धर्म-सुधार आन्दोलन में भाग लिया, किन्तु लूथर द्वारा संचालित आन्दोलन व हेनरी अष्टम की नीतियों में पर्याप्त अन्तर था। लूथर का उद्देश्य कैथोलिक धर्म में व्याप्त कुरीतियों एवं बुराइयों को दूर करना था, जबकि हेनरी अष्टम का मुख्य उद्देश्य इंग्लैण्ड में पोप के प्रभाव को समाप्त करना था। इस प्रकार लूथर द्वारा संचालित आन्दोलन का स्वरूप धार्मिक व हेनरी अष्टम का राजनीतिक था।

2. **धर्म-सुधार आन्दोलन एवं एडवर्ड षष्टम** (Reformation and Edward VI)—हेनरी अष्टम की 1547 ई० में मृत्यु हो गई। हेनरी अष्टम के उपरान्त उसका पुत्र एडवर्ड षष्टम इंग्लैण्ड का शासक बना। राजगद्दी पर आसीन होते समय वह अल्पवयस्क था, अत: 1547 ई० से 1549 ई० तक उसके मामा ड्यूक ऑफ सोमरसेट तथा 1549 ई० से एडवर्ड की मृत्यु (1553 ई०) तक ड्यूक ऑफ नार्थम्बरलैण्ड ने उसके संरक्षक के रूप में कार्य किया।
   (i) **सोमरसेट की नीति**—सोमरसेट प्रोटेस्टैण्ट मत का समर्थक था, किन्तु प्रारम्भ में उसने धार्मिक स्वतन्त्रता की नीति का पालन किया। उसने राजद्रोह नियम व हेनरी अष्टम के शासनकाल में पारित छह धाराओं वाला कानून समाप्त कर दिया। अत: यूरोप से अनेक धर्म-प्रचारक इंग्लैण्ड आए। सोमरसेट ने क्रैनमर की सहायता से गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। गिरजाघरों से चित्रों, मूर्तियों तथा स्मारकों को हटाया गया। कैथोलिकों के प्रार्थना भवनों (Chantries) को नष्ट किया गया। 1549 ई० में क्रैनमर ने एक नयी प्रार्थना पुस्तक 'English Book of Common Prayer' तैयार की। यह पूर्णत: प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुरूप व अंग्रेजी में लिखी गई। एकरूपता अधिनियम (Act of Uniformity) के द्वारा उसे प्रत्येक पादरी के लिए अनिवार्य बनाया गया।
   (ii) **नार्थम्बरलैण्ड की नीति**—नार्थम्बरलैण्ड भी प्रोटेस्टैण्ट था। उसने 1552 ई० में द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक निकाली जो पहली प्रार्थना-पुस्तक से भी अधिक प्रोटेस्टैण्ट सिद्धान्तों पर आधारित थी। नार्थम्बरलैण्ड ने 42 धाराओं वाला एक कानून पारित किया जो पूर्णत: प्रोटेस्टैण्ट धर्म के पक्ष में था।

   इस प्रकार एडवर्ड षष्टम के शासनकाल (1547-53 ई०) में धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रगति हुई।

3. **धर्म-सुधार आन्दोलन एंव मैरी ट्यूडर** (Reformation Revolution and Mary Tudor)—मैरी ट्यूडर कट्टर कैथोलिक थी, अत: उसने अपने शासनकाल में धर्म-सुधार आन्दोलन का विरोध किया व इंग्लैण्ड में पुन: पोप की खोई हुई प्रभुसत्ता एवं कैथोलिक धर्म को प्रतिस्थापित करने का प्रयत्न किया। मैरी ने कैथोलिक एवं पोप को प्रसन्न करने के लिए, हेनरी अष्टम तथा एडवर्ड षष्टम के शासनकाल में पारित समस्त धर्म सम्बन्धी नियमों को समाप्त कर दिया। इतना ही नहीं, मेरी ने प्रोटेस्टैण्ट लोगों पर अत्यधिक अत्याचार किए। अनेक व्यक्ति भयभीत होकर प्रोटेस्टैण्ट धर्म को त्यागने पर विवश हुए। प्रोटेस्टैण्ट नेताओं क्रेनमर, रिडले, लेटीमर आदि को जिन्दा जला दिया गया। प्रोटेस्टैण्टों पर किए गए अत्याचारों के कारण मैरी ट्यूडर को 'खूनी मेरी' (Bloody Mary) कहा गया है।

   इस प्रकार मेरी के शासनकाल (1553-1558 ई०) में 'धर्म-सुधार आन्दोलन' (Religion Reformation Revolution) को इंग्लैण्ड में गम्भीर क्षति पहुँची।

4. **धर्म-सुधार आन्दोलन एवं एलिजाबेथ** (Reformation and Elizabeth)—मैरी की मृत्यु के पश्चात् 1558 ई० में ऐन बोलेन की पुत्री **एलिजाबेथ** इंग्लैण्ड की शासिका बनी। एलिजाबेथ अत्यन्त व्यवहार-कुशल व बुद्धिमान स्त्री थी। एलिजाबेथ को धार्मिक मामलों में विशेष रुचि नहीं थी उसने कैथोलिक व प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायियों को अत्याचार करते देखा था। एलिजाबेथ व्यक्तिगत कारणों से पोप की विरोधी थी क्योंकि पोप ने उसे हेनरी अष्टम की अवैध सन्तान घोषित किया था। इसके अतिरिक्त पोप व उसके कैथोलिक समर्थक एलिजाबेथ के स्थान पर मेरी स्काट को इंग्लैण्ड की शासिका बनाना चाहते थे। अत: एलिजाबेथ का झुकाव प्रोटेस्टैण्ट धर्म की ओर था।

   एलिजाबेथ एक कुशल शासिका थी, अत: देश को धार्मिक विवादों से बचाने के लिए उसने मध्यम मार्ग को अपनाया। एलिजाबेथ ने इंग्लैण्ड को पोप के प्रभुत्व से बचाने हेतु **सर्वोच्चता नियम** (Act of Supremacy) पारित कराया। इस अधिनियम के द्वारा पोप का प्रभाव इंग्लैण्ड से समाप्त हुआ तथा एलिजाबेथ चर्च की सर्वोच्च अधिकारी बन गई। उसने

TOUCH 'n PASS

कैथोलिकों को प्रसन्न करने के लिए 'चर्च के प्रधान' के स्थान पर **'चर्च की शासिका'** की उपाधि धारण की। एलिजाबेथ ने एडवर्ड षष्टमकालीन द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक में से कैथोलिकों को अत्यधिक चुभने वाली धाराएँ भी निकाल दीं। रविवार को प्रत्येक व्यक्ति के लिए चर्च में प्रार्थना करना आवश्यक था। ऐसा न करने वाले को प्रति रविवार एक शिलिंग दण्ड देना पड़ता था।

इस प्रकार एलिजाबेथ ने प्रोटेस्टैण्ट एवं कैथोलिक धर्म के मध्य का मार्ग अपनाते हुए इंग्लैण्ड में शान्ति स्थापित करने का प्रयास किया। एलिजाबेथ का यह धार्मिक समझौता अत्यधिक उदार था। एलिजाबेथ ने इस धार्मिक समझौते के आधार पर एक नया चर्च बनाया जिसे **'एंग्लिकन चर्च'** (Anglican Church) कहा गया। यह एंग्लिकन चर्च प्रोटेस्टैण्ट व कैथोलिक विचारधाराओं का सम्मिश्रण था। अत: इससे अधिकांश लोग सन्तुष्ट हो गए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. मार्टिन लूथर किस देश के थे?
(a) जापान (b) जर्मनी (c) आस्ट्रिया (d) पुर्तगाल

प्र.2. मार्टिन लूथन ने कब भिक्षु बनने का फैसला किया?
(a) 1503 (b) 1504 (c) 1505 (d) 1506

प्र.3. पुनर्जागरण का काल रहा–
(a) 13वीं से 15वीं सदी (b) 14वीं से 16वीं सदी
(c) 14वीं से 17वीं सदी (d) 14वीं से 18वीं सदी

प्र.4. मैकियावली की पुस्तक 'द प्रिंस' कब प्रकाशित हुई?
(a) 1509 (b) 1510 (c) 1511 (d) 1512

प्र.5. इंग्लैण्ड में आलोचना का प्रमुख विषय था–
(a) चर्च के भ्रष्टाचार (b) अंधविश्वास
(c) राज्य की क्रूरता (d) ये सभी

प्र.6. धर्म सुधार आन्दोलन का कौन-सा प्रभाव नहीं हुआ?
(a) कैथोलिक धर्म में सुधार (b) शासक वर्ग की शक्ति में कमी
(c) पोप की शक्ति का पतन (d) प्रोटेस्टेण्ट धर्म का उदय

प्र.7. किस देश धर्म सुधार आन्दोलन हेनरी अष्टम और पोप के मध्य प्रतिद्वन्द्विता का परिणाम था?
(a) जर्मनी (b) इटली
(c) स्पेन (d) इंग्लैण्ड

प्र.8. प्रोटेस्टेंट सुधार जर्मनी के विटनबर्ग में कब शुरू हुआ?
(a) 29 अक्टूबर, 1517 (b) 30 अक्टूबर, 1517
(c) 31 अक्टूबर, 1517 (d) 1 नवम्बर, 1517

प्र.9. छापेखाने का आविष्कार जर्मनी गुटनबर्ग ने कब किया?
(a) 1460 (b) 1461 (c) 1462 (d) 1463

प्र.10. कैक्सटन ने कब इंग्लैण्ड में छापेखाने का प्रयोग प्रचलित किया?
(a) 1473 (b) 1474 (c) 1475 (d) 1476

प्र.11. कुतुबनुमा का आविष्कारक कौन था?
(a) कोलम्बस (b) वास्कोडिगामा (c) मार्कोपोलो (d) इनमें से कोई नहीं

प्र.12. इटली निवासी मार्कोपोलो ने अपनी पहली यात्रा वेनिस से कब प्रारम्भ की?
(a) 1270 (b) 1271 (c) 1272 (d) 1273

TOUCH 'n' PASS

प्र.13. पुर्तगाली नाविक वारथोलोम्यु डियाज ने कब पूरे पश्चिमी तट की यात्रा की उसने इस अन्तरीप का नाम उत्तमाशा अन्तरीप रखा?
(a) 1484 (b) 1485 (c) 1486 (d) 1487

प्र.14. कोलम्बस और अमेरिगो अपनी यात्रा में किसकी खोज कर बैठे?
(a) भारत (b) दक्षिण अफ्रीका (c) अमेरिका (d) वेस्टइण्डीज

प्र.15. कनाडा की खोज किसने की?
(a) कोलम्बस (b) जान कोवेट (c) वास्कोडिगामा (d) हेंनरी

प्र.16. प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय किसके प्रयास का परिणाम था?
(a) काल्विन (b) जिंग्वगली (c) मार्टिन लूथर (d) सुकरात

प्र.17. कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के मध्य संघर्ष के परिणामस्वरूप कितने वर्षीय युद्ध हुआ?
(a) 20 वर्षीय (b) 25 वर्षीय (c) 30 वर्षीय (d) 35 वर्षीय

प्र.18. निम्न में कौन-सा धर्म सुधार का प्रभाव था?
(a) चर्च की सम्पत्ति पर राज्य का अधिकार (b) बाईबिल का अनेक भाषाओं में अनुवाद
(c) पोप द्वारा चर्च की बुराइयों को दूर करना (d) ये सभी

प्र.19. पुनर्जागरण ने क्या समाप्त नहीं किया?
(a) आडम्बर (b) भौतिकवाद (c) अंधविश्वास (d) प्रथाएँ

प्र.20. 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक मानववादी आन्दोलन का प्रबल ज्वार किस देश में था?
(a) फ्रांस (b) इंग्लैण्ड (c) इटली (d) स्पेन

प्र.21. निम्न में कौन-सा युग्म सही नहीं है?
(a) स्थापत्य कला का जनक — फिलिप्पो ब्रूनेलेस्की
(b) रेनेसा मूर्तिकला पथप्रदर्शक — दोनातेलो
(c) संगीत कला — माइकल ऐंजिलो
(d) चित्रकला — लियोनार्डो द विंसी

प्र.22. सिस्टाइन मेडोना एवं मेडोना ऑफ दी चेयर नामक चित्रों का चितेरा कौन था?
(a) माइकल ऐंजलो (b) रैफेल
(c) मजासिओ (d) जान बुल

प्र.23. निम्न में किस ग्रंथ का रचयिता मैकियावली था?
(a) डिस्कोर्सिस ऑफ लिवि (b) हिस्ट्री ऑफ फ्लोरेंस
(c) द प्रिंस (d) ये सभी

प्र.24. कुस्तुन्तुनिया पर अरबों का अधिकार कब हुआ?
(a) 1451 (b) 1452 (c) 1453 (d) 1454

प्र.25. सूची 'A' को सूची 'B' से मिलाइए–
A रोजर बेकन — 1. पैण्डुलम के नियमों की खोज
B कैपलर — 2. सूक्ष्मदर्शी का आविष्कार
C गैलीलियो — 3. ग्रह गति के नियम
D कॉपरनिकस — 4. सौरमण्डल का केन्द्र सूर्य है
(a) A–1, B–2, C–3, D–4 (b) A–2, B–3, C–1, D–4
(c) A–3, B–2, C–1, D–4 (d) A–4, B–3, C–1, D–2

TOUCH 'n' PASS

प्र.26. निम्न में कौन-सा युग्म सही है?
(a) देकार्ते—बीजगणित के ज्यामिति में प्रयोग करने का तरीका
(b) एडियन बेसालियस—अनेक औषधियों की खोज
(c) हारवे—मानव शरीर में रक्त प्रवाह की खोज
(d) उपर्युक्त सभी

प्र.27. प्रेज ऑफ फौली ग्रंथ का रचयिता कौन था?
(a) दांते (b) चौसर (c) शेक्सपियर (d) इरस्मस

प्र.28. टॉमस मूर की पुस्तक यूटोपिया (काल्पनिक आदर्श राज्य) कब प्रकाशिता हुई?
(a) 1515 (b) 1516 (c) 1517 (d) 1518

प्र.29. लास्ट जजमेंट नामक चित्र का चितेरा था–
(a) लियोनार्डो द विंसी (b) रैफेल (c) माइकल ऐंजलो (d) सीटियन

प्र.30. निम्न में कौन-सा कथन पोप के संदर्भ में सही नहीं है?
(a) पोप का जीवन सादा था
(b) पोप का जीवन विलासी था
(c) पोप किसी भी देश के राजा को ईसाई धर्म से च्युत कर सकता था
(d) पोप क्षमा पत्र बेचता था

प्र.31. वाइक्लिक के अनुयायी जान हुस को कब जिंदा जला दिया गया?
(a) 1413 (b) 1414 (c) 1415 (d) 1416

प्र.32. किसने क्षमा पत्रों की बिक्री के विरोध में अपनी बातें '95' बिन्दुओं में लिखकर गिरजाघर के प्रवेश द्वार पर चिपका दी?
(a) जिंग्वली (b) काल्विन (c) वाइक्लिफ (d) मार्टिन लूथन

प्र.33. प्रोटेस्टेंट धर्म की विधिवत स्थापना कब हुई?
(a) 1529 (b) 1530 (c) 1531 (d) 1532

प्र.34. प्रिंस फर्डिनेण्ड ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायियों से ऑग्सबर्ग की संधि कब की?
(a) 1552 (b) 1553 (c) 1554 (d) 1555

प्र.35. एंग्लिकन चर्च की स्थापना सर्वप्रथम कहाँ हुई?
(a) इटली (b) इंग्लैण्ड (c) फ्रांस (d) पुर्तगाल

उत्तरमाला

1. (b)	**2.** (c)	**3.** (c)	**4.** (a)	**5.** (d)	**6.** (b)	**7.** (d)	**8.** (c)	**9.** (a)	**10.** (d)
11. (c)	**12.** (b)	**13.** (c)	**14.** (c)	**15.** (b)	**16.** (c)	**17.** (c)	**18.** (d)	**19.** (b)	**20.** (c)
21. (c)	**22.** (b)	**23.** (d)	**24.** (c)	**25.** (b)	**26.** (d)	**27.** (d)	**28.** (b)	**29.** (c)	**30.** (a)
31. (c)	**32.** (d)	**33.** (b)	**34.** (c)	**35.** (b)					

TOUCH 'n' PASS

UNIT-II

18वीं शताब्दी की गौरवपूर्ण और औद्योगिक क्रांति
Glorious and Industrial Revolution of 18th Century

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम कब और कहाँ हुई?
When and where did the industrial revolution first take place?

उत्तर 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में कुछ पश्चिमी देशों के तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में काफी बड़ा बदलाव आया इसे ही औद्योगिक क्रांति के नाम से जाना जाता है—(1) औद्योगिक क्रांति की शुरुआत इंग्लैंड में हुई।

प्र.2. औद्योगिक क्रांति की मुख्य विशेषताएँ क्या थी?
What were the main features of industrial revolution?

उत्तर औद्योगिक क्रांति से यूरोप एवं विश्व के अन्य देशों में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस क्रांति से उत्पादन के साधनों, विधियों, मात्राओं एवं गुणों में अत्यधिक परिवर्तन हुआ। जिससे व्यक्तियों, समाजों एवं राष्ट्रों के जीवन स्तर, रहन-सहन, खान-पान एवं विचारों में परिवर्तन हुआ।

प्र.3. औद्योगिक क्रांति के क्या कारण थे?
What were the causes of industrial revolution?

उत्तर औद्योगिक क्रांति में नवीन आविष्कारों के कारण खदानों की खोज हुई, कारखानों की आवश्यकता हुई तथा इनके लिए बड़ी मात्रा में कच्चे माल की आवश्यकता हुई। इसके कारण उपनिवेशों का तथा श्रमिकों का शोषण भी होने लगा। हजारों श्रमिक मशीनों के कारण बेकार होने लगे, श्रमिकों की आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न होने लगी। अनेक बैंकों की स्थापना हुई।

प्र.4. औद्योगिक क्रांति से क्या लाभ हुए?
What were the benefits of the industrial revolution?

उत्तर
1. उत्पादन क्षमता में वृद्धि-नवीन खोजों के परिणामस्वरूप उत्पादन की नवीन तकनीकों का विकास हुआ, जिससे उत्पादन क्षमता में निरंतर वृद्धि होती रही।
2. यातायात में विशेष सुविधा—औद्योगिक क्रांति से यातायात के साधनों का तेजी से विकास हुआ।

प्र.5. औद्योगिक क्रांति का क्या आर्थिक प्रभाव हुआ?
What was the economic impact of the industrial revolution?

उत्तर उत्पादन में वृद्धि से निर्यात में वृद्धि हुई। स्वतंत्र कारीगर कारखानों से प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सके, फलत: कुटीर उद्योग समाप्त हो गए। बड़े-बड़े कृषि फार्मों की स्थापना के कारण छोटे किसानों को रोजगार की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर जाना पड़ा। औद्योगिक केंद्रों के आस-पास नवीन नगरों का विकास हुआ।

TOUCH 'n' PASS

प्र.6. गौरवशाली क्रांति से आप क्या समझते हैं?
What do you understand by glorious revolution?

उत्तर गौरवशाली क्रांति, जिसे "1688 की क्रांति" और "रक्तहीन क्रांति" भी कहा जाता है, इंग्लैंड में 1688 से 1689 तक हुई। इसमें कैथोलिक राजा जेम्स द्वितीय को उखाड़ फेंका गया था, जिसे उनकी प्रोटेस्टेंट बेटी मैरी और उनके डच पति विलियम ऑफ ऑरेंज द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था।

प्र.7. जॉन लोके ने गौरवशाली क्रांति के लिए क्या किया?
What did John Locke do for the glorious revolution?

उत्तर दार्शनिक जॉन लोके ने सरकार पर अपनी दो संधियों (1689) में शानदार क्रांति की प्रशंसा करते हुए तर्क दिया कि अगर कोई सरकार अपने लोगों के प्राकृतिक अधिकारों, अर्थात् जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति की रक्षा नहीं करती है, तो उसे सही और कानूनी रूप से उखाड़ फेंका जा सकता है।

प्र.8. गौरवशाली क्रांति के क्या प्रभाव थे?
What were the effects of the Glorious revolution?

उत्तर गौरवशाली क्रांति ने एक अंग्रेजी राष्ट्र की स्थापना का नेतृत्व किया जिसने राजा की शक्ति को सीमित कर दिया और अंग्रेजी विषयों के लिए सुरक्षा प्रदान की। अक्टूबर, 1689 में, उसी वर्ष जब विलियम और मैरी ने गद्दी संभाली, 1689 के बिल ऑफ राइट्स ने एक संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना की।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. गौरवशाली क्रांति पर टिप्पणी लिखिए।
Write a note on Glorious revolution.

उत्तर

गौरवशाली क्रांति
(Glorious Revolution)

गौरवशाली क्रांति सन् 1688 में इंग्लैंड राज्य में हुई। एक धार्मिक-राजनैतिक क्रांति थी। इस क्रांति को रक्तहीन क्रांति के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह शांतिपूर्वक संपन्न हुई थी। इसके कारण इंग्लैंड का राजा बदला, इंग्लैंड की शासन व्यवस्था बदली, लेकिन कहीं खून का एक कतरा भी न गिरा। इंग्लैंड के जेम्स द्वितीय द्वारा संसदीय संप्रभुता को चुनौती देने के फलस्वरूप ही इंग्लैंड राज्य में 1688 ईस्वी में क्रांति हुई थी। राजा जेम्स द्वितीय को अपनी पत्नी ऐनी समेत अपने निरकुंश शासन संसद की अवहेलना करने तथा प्रोटेस्टैंट धर्म विरोधी नीति के कारण गद्दी छोड़नी पड़ी थी। इस क्रांति के बाद विलियम तृतीय और मैरी द्वितीय को इंग्लैंड के सह-शासक के रूप में राजा और रानी बनाया गया।

गौरवशाली क्रांति के फलस्वरूप इंग्लैंड में स्वछंद राजतंत्र का काल पूर्णत: समाप्त हो गया था। संसदीय शासन पद्धति की स्थापना हो जाने से जनसाधारण के अधिकार सुरक्षित हो गए थे। राजनीतिक एवं धार्मिक अत्याचार के भय से मुक्ति पाकर लोग आर्थिक विकास की ओर अग्रसर होने लगे थे।

1685 ई० में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के बाद उसका लघुभ्राता इंग्लैंड के राजसिंहासन पर जेम्स द्वितीय के नाम से आसीन हुआ। जेम्स द्वितीय ने राजा बनने के बाद कैथोलिक धर्म का प्रचार व प्रसार किया। इसमें उनकी पत्नी ऐनी हाईड की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी जो स्वयं कैथोलिक थीं। उसने अपनी नीति को सफल बनाने के लिए सेना और लुई चौदहवें से प्राप्त धन को आधार बनाया। जब 1685 ई० से ही फ्रांस में आतंक का वातावरण प्रारंभ हो गया था।

तत्पश्चात फ्रांस में असंतोष शारणार्थी आतंक के दमन से बचने के लिए इंग्लैंड आने लगे। इससे इंग्लैंड में असंतोष फैला। जेम्स ने विश्वविद्यालय और सरकारी नौकरियों में भी कैथोलिक मतावलम्बियों को रखा। जेम्स के अन्य अनुचित और अवैध कार्यों से इंग्लैंड में तीव्र रोष और विरोध फैल गया। अंत में जेम्स द्वितीय को इंग्लैंड छोड़ना पड़ा और संसद ने उसकी पुत्री मैरी और उसके पति विलियम को इंग्लैंड में आमंत्रित किया और मैरी को इंग्लैंड की शासिका बनाया। इस घटना को इंग्लैंड में महान क्रांति या वैभवपूर्ण क्रांति कहते हैं। इस क्रांति में रक्त की एक बूंद भी नहीं बही और परिवर्तन हो गए। इसलिए इस क्रांति को गौरवशाली क्रांति भी कहते हैं।

TOUCH 'n' PASS

प्र.2. गौरवशाली क्रांति के महत्त्व और परिणामों का उल्लेख कीजिए।
Mention the importance and results of glorious revolution.

उत्तर

गौरवशाली क्रांति के महत्त्व और परिणाम
(Importance and Results of Glorious Revolution)

इस क्रांति द्वारा 1688 ई० में इंग्लैण्ड में शासकों का परिवर्तन "बिना रक्त की बूंद बहाए" संपन्न हो गया, इसलिए इस घटना को "वैभवपूर्ण महान शानदार क्रांति" कहते हैं। इस रक्तहीन राज्य क्रांति का महत्त्व उसके गर्जन-तर्जन में नहीं, अपितु उसके उद्देश्यों की विवेकशीलता और उपलब्धियों की दूरगामिता में है। यह एक युग निर्माणकारी घटना है। इससे इंग्लैंड में लोकप्रिय सरकार का युग प्रारंभ हुआ और सत्ता निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी राजाओं के हाथ से निकलकर संसद के हाथों में आ गयी।

इस क्रांति से स्टुअर्ट राजाओं और संसद के बीच दीर्घकाल से चले आ रहे संघर्ष का अंत हो गया। इस संघर्ष में संसद की विजय हुई। अब इंग्लैंड में वास्तविक शासक संसद बन गयी। क्रांति के समय संसद ने "बिल ऑफ राइट्स" पारित कर उस पर विलियम और मैरी की स्वीकृति ले ली। इससे संसद की सम्प्रभुता स्वीकार कर ली गयी और राजा की निरंकुश राजसत्ता समाप्त कर दी गई। जनता की सत्ता सर्वोपरि मान ली गयी। राजा सिद्धांत में प्रभुता सम्पन्न रहा पर व्यवहार में संसद सर्वोपरि हो गयी। इस क्रांति ने राजा के दैवी अधिकारों को अमान्य कर दिया। संसद द्वारा पारित किसी भी कानून को निरस्त करने का संप्रभु का अधिकार समाप्त हो गया। राजा, संसद की स्वीकृति के बिना कोई कर नहीं लगा सकता।

इस क्रांति ने यह स्पष्ट कर दिया कि नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा करना, कानून बनाना और कर लगाना संसद के अधिकारों के अंतर्गत है। राजा संसद के अधिकारों में किसी भी प्रकार से हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। क्रांति से पूर्व राजा सर्वोपरि था, पर इसके बाद राजा संसद के अधिनियम के अंतर्गत एक सामान्य व्यक्ति रह गया। अब राजा की स्वेच्छाचारिता समाप्त हो गयी। उसके अधिकार संसद द्वारा प्रतिबंधित नियंत्रित और सीमित कर दिए गए। अब इंग्लैण्ड में वैधानिक राजतंत्र का युग प्रारंभ हुआ और संसदीय प्रणाली का शासन प्रारंभ हुआ। अब तक सेना और उसके अधिकार राजा के अधीन थे। अब संसद ने विद्रोह अधिनियम पारित कर सेना पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया। इससे राजा की सैन्य शक्ति समाप्त हो गयी और सेना में व्याप्त अव्यवस्था भी दूर हो गयी।

बिल ऑफ राइट्स में यह तथ्य स्पष्ट कर दिया गया कि कोई कैथोलिक राजा या वह व्यक्ति जिसका विवाह कैथोलिक से हुआ हो इंग्लैण्ड के राज सिंहासन पर आसीन नहीं हो सकेगा। इस प्रकार इंग्लैण्ड सदा के लिए कैथोलिक खतरे से मुक्त हो गया। धार्मिक क्षेत्र में भी यह स्पष्ट कर दिया गया कि एंग्लिकन धर्म इंग्लैण्ड का वास्तविक धर्म है। चर्च पर से राजा के अधिकारों का अंत कर दिया गया। धर्म के मामलों में भी संसद का उत्तरदायित्व हो गया। इससे कालांतर में इंग्लैण्ड में धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण निर्मित हुआ। अब तक राजा देश की गृह और विदेश नीतियों का स्वयं संचालन करता था। वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रेरित रहता था। देश के हितों की उपेक्षा की जाती थी। इससे अनेक बार राजा द्वारा अपनायी गयी विदेश नीति निष्फल ही रही। किन्तु क्रांति के बाद गृह और विदेश नीति का निर्धारण संसद के परामर्श और स्वीकृति से किया जाने लगा।

इससे इंग्लैण्ड की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई और उसके औपनिवेशक साम्राज्य का विस्तार हुआ। इंग्लैण्ड की इस शानदार क्रांति का प्रभाव यूरोप के अन्य देशों पर पड़ा। अब तक यूरोप में निरंकुश स्वेच्छाचारी राजसत्ता ही आदर्श राजसत्ता मानी जाती थी। पर इस क्रांति के प्रभाव और परिणामस्वरूप यूरोप में भी वैज्ञानिक राजतंत्र और लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली के लिए आंदोलन प्रारंभ हुए।

प्र.3. गौरवशाली क्रांति की प्रमुख घटनाओं को लिखिए।
Write the main events of glorious revolution.

उत्तर

गौरवशाली क्रांति की प्रमुख घटनाएँ
(Main Events of Glorious Revolution)

गौरवशाली क्रांति की प्रमुख घटनाओं का कालक्रम इस प्रकार है—

1. **जेम्स द्वितीय के पुत्र का जन्म**—जेम्स द्वितीय की पहली पत्नी की मैरी नामक पुत्री हुई थी। वह प्रोटेस्टेंट मतावलंबी थी और हालैण्ड में ऑरेंज के राजकुमार विलियम को ब्याही गयी थी। वह भी प्रोटेस्टेंट था।
   इंग्लैण्ड वासियों को विश्वास था कि वही इंग्लैण्ड की शासिका बनेगी, इसलिए वे जेम्स के अनाचार और अनुचित कार्यों को सहन करते रहे। जेम्स की दूसरी पत्नी कट्टर कैथोलिक थी। जब 10 जून, 1688 को उसका पुत्र हुआ तो लोगों की यह धारणा बन गयी कि उसका लालन-पालन और शिक्षा कैथोलिक धर्म के अनुसार होगी और जेम्स की मृत्यु के बाद वही कैथोलिक राजा बनेगा। इससे उनमें भय और आतंक छा गया।

TOUCH 'n PASS

2. **हालैण्ड के विलियम और मैरी को निमंत्रण**—टोरी और व्हिग दल के सदस्यों और पादरियों ने एक जनसभा आयोजित कर यह निर्णय लिया कि जेम्स द्वितीय के दामाद विलियम और पुत्री मैरी को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन होने के लिए आमंत्रित किया जाए। फलत: कुछ प्रभावशाली लोगों ने दूत भेजकर विलियम और मैरी को इंग्लैण्ड आमंत्रित किया। इस समय विलियम फ्रांस के साथ युद्ध में व्यस्त था। वह जानता था कि फ्रांस और वहाँ का राजा लुई चौदहवाँ हालैण्ड से कहीं अधिक शक्तिशाली है। वह इंग्लैण्ड की समन्वित शक्ति का सामना नहीं कर सकेगा, इसलिए उसने निमंत्रण स्वीकार कर लिया।
3. **विलियम का इंग्लैण्ड में आगमन और जेम्स का पलायन**—विलियम ऑफ ऑरेंज पंद्रह हजार सैनिकों के साथ 5 नवम्बर, 1688 को इंग्लैण्ड के टोरबे बंदरगाह पर उतरा। जेम्स द्वितीय ने अपनी सेना से उसका सामना करने का प्रयास किया, पर उसके सहयोगी व सेनापति जान चर्चिल ने उसका साथ छोड़ दिया और वे तथा उसकी पुत्री एन भी, विलियम से जा मिले। निराश होकर 23 दिसम्बर, 1688 को जेम्स राजमुद्रा को टेम्स नदी में फेंककर फ्रांस पलायन कर गया।
4. **विलियम और मैरी इंग्लैण्ड के शासक**—22 जनवरी, 1689 ई० को संसद की बैठक हुई, जिसमें बिल ऑफ राइट्स पारित हुआ। इसमें विलियम के सम्मुख कुछ शर्तें रखी गयी थीं, जिनको उसने स्वीकार कर लिया। इसके बाद विलियम तथा मैरी 13 फरवरी, 1689 को इंग्लैण्ड के राज सिंहासन पर आसीन हुए। विलियम और मैरी संयुक्त शासक स्वीकार किए गए।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. गौरवशाली क्रांति के राजनीतिक व धार्मिक कारणों का वर्णन कीजिए तथा इसका विरासत पर क्या प्रभाव पड़ा? बताइए।

Describe the political and religious causes of the glorious revolution and what was its impact on the legacy?

उत्तर

गौरवशाली क्रांति के राजनीतिक कारण
(Political Causes of the Glorious Revolution)

जेम्स द्वितीय निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी शासक था। उसने अपनी सेना में वृद्धि की, जिससे कि वह जनता को आतंकित कर सके। निरंकुश शासन और शासन का कटु अनुभव जनता को पहले ही था। फलत: जनता द्वारा जेम्स का विरोध होना स्वाभाविक था। संसद अपने विशिष्ट अधिकारों का उपयोग चाहती थी। वह राजा के अधिकारों को सीमित और नियंत्रित करना चाहती थी। फलत: राजा और संसद के मध्य संघर्ष प्रारंभ हो गया। इस संघर्ष का अंत शानदार क्रांति के रूप में हुआ और अंत में संसद ने राजा पर विजय प्राप्त की।

चार्ल्स द्वितीय के अवैध पुत्र मन्मथ (Monmouth) ने सिंहासन प्राप्ति के लिए जेम्स के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और स्वयं को चार्ल्स द्वितीय का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। जेम्स द्वितीय ने मन्मथ को युद्ध में परास्त कर बंदी बना लिया और उसे तथा उसके साथियों को न्यायालय द्वारा मृत्यु दण्ड दिया गया। इस न्यायालय को खूनी न्यायालय कहा गया। स्काटलैण्ड में भी अर्ल ऑफ अरगिल ने विद्रोह किया। इस विद्रोह का भी कठोरता से दमन किया गया। तीन सौ व्यक्तियों को मृत्यु दण्ड दिया गया और 800 व्यक्तियों को दास बनाकर वेस्टइंडीज द्वीपों में भेजकर बेच दिया गया। स्त्रियों और बच्चों को भी क्षमा नहीं किया गया। इस क्रूरता और निर्दयता से जनता उससे रुष्ट हो गयी।

जेम्स द्वितीय फ्रांस के कैथोलिक राजा लुई चतुर्दश से आर्थिक और सैनिक सहायता प्राप्त कर इंग्लैण्ड में अपना निरंकुश एवं स्वेच्छाकारी शासन स्थापित करना चाहता था। वह लुई चौदहवें के धन और सैनिक सहायता के आधार पर राज करना चाहता था। लुई कैथोलिक था और फ्रांस में प्रोटेस्टेंटों पर अत्याचार कर रहा था। इससे ये प्रोटेस्टेंट इंग्लैण्ड में आकर शरण ले रहे थे। ऐसी दशा में इंग्लैण्डवासी और संसद सदस्य नहीं चाहते थे कि जेम्स लुई से मित्रता रखे और उससे सहायता प्राप्त करे। अत: वे जेम्स के विरोधी हो गए।

गौरवशाली क्रांति के धार्मिक कारण (Religious Causes of the Glorious Revolution)

राजा जेम्स कैथोलिक मत का अनुयायी था, जबकि इंग्लैण्ड की अधिकांश जनता एंग्लिकन मत की अनुयायी थी। जेम्स कैथोलिकों को अधिकाधिक सुविधाएँ प्रदान करना चाहता था। जेम्स ने पोप को इंग्लैण्ड में आमंत्रित किया और उसका अत्यधिक सम्मान किया। उसने लंदन में कैथोलिक कलीसिया भी स्थापित किया। इससे इंग्लैण्ड के प्युरीटन और प्रोटेस्टैण्ट उसके विरोधी हो गए।

TOUCH'n PASS

टेस्ट अधिनियम के अंतर्गत केवल एंग्लिकन कलीसिया के अनुयायी ही सरकारी पद पर रह सकते थे। जेम्स ने इस अधिनियम को स्थगित कर अनेक कैथोलिकों को राजकीय पदों पर प्रतिष्ठित किया। मंत्री, न्यायाधीश, नगर निगम के सदस्य तथा सेना में ऊँचे पदों पर कैथोलिक नियुक्त किए गए। अत: सांसद इससे रुष्ट हो गए। कैथोलिक मतावलंबी होने से जेम्स ने विश्वविद्यालयों में भी ऊँचे पदों पर कैथोलिक नियुक्त कर दिए। क्राइस्ट चर्च कॉलेज में अधिष्ठाता के पद पर और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर एक कैथोलिक को नियुक्त किया। मेकडॉनल्ड विद्यालय के भी शिक्षा अधिकारियों को पृथक् कर दिया गया, क्योंकि उन्होंने एक कैथोलिक को सभापति बनाने से इंकार कर दिया था। इससे प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय के लोग जेम्स विरोधी हो गए। जेम्स द्वितीय ने इंग्लैण्ड को कैथोलिक देश बनाने के लिए 1687 ई० और 1688 ई० में दो बार धार्मिक अनुग्रह की घोषणा की। प्रथम घोषणा से कैथोलिकों तथा अन्य मतावलम्बियों पर लगे प्रतिबंधों और नियंत्रणों को समाप्त कर दिया गया और द्वितीय घोषणा में वर्ग व धर्म का पक्षपात किए बिना सभी लोगों के लिए राजकीय पदों पर नियुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया साथ ही कैथोलिकों को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान कर दी गई। इससे संसद में भारी असंतोष व्याप्त हो गया एवं सांसद उसके घोर विरोधी हो गए। जेम्स ने यह आदेश दिया कि प्रत्येक रविवार को उसकी द्वितीय धार्मिक घोषणा पादरियों द्वारा कलीसिया में प्रार्थना के अवसर पर पढ़ी जाए। इसका यह परिणाम होता कि या तो पादरी अपने धर्म व मत के विरुद्ध इस घोषणा को पढ़ें, अथवा राजा की आज्ञा का उल्लंघन करें। इस पर कैंटरबरी के आर्चबिशप सेनक्राफ्ट ने अपने 6 साथियों सहित जेम्स को एक आवेदन पत्र प्रस्तुत किया। जिसमें जेम्स से निवेदन किया था कि वह अपनी आज्ञा को निरस्त कर दे और पुराने नियमों को भंग करने की नीति को त्याग दें। इससे जेम्स ने कुपित होकर इन पादरियों को बंदी बनाकर उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया, पर न्यायाधीशों ने उनको दोष मुक्त कर दिया। इससे जनता और सेना ने पादरियों की मुक्ति पर हर्ष और जेम्स के प्रति विरोध व्यक्त किया।

1686 ई० में जेम्स ने गिरजाघरों पर राजकीय श्रेष्ठता पूर्ण रूप से स्थापित करने के लिए *कोर्ट ऑफ हाई कमीशन* को पुन: स्थापित कर लिया। इसमें कैथोलिक धर्म की अवहेलना करने वालों पर मुकदमा चलाकर उनको दण्डित किया जाता था। जेम्स ने कैथोलिक धर्म के अधिक प्रचार और प्रसार के लिए लंदन में एक नवीन कैथोलिक कलीसिया स्थापित किया। जेम्स ने धार्मिक न्यायालयों की स्थापना करके कानून को भंग किया, गिरजाघरों, विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों पर आक्रमण कर पादरियों और टोरियों को रुष्ट किया। जेम्स के इन अनुचित और अवैध कार्यों से देश में विरोध और क्रांति की भावनाएँ फैल गयीं।

गौरवशाली क्रांति का विरासत पर प्रभाव
(Impact on the Legacy of the Glorious Revolution)

1688 ई० में इंग्लैण्ड में हुई इस रक्तहीन क्रांति ने अमेरिका (इंग्लैण्ड का उपनिवेश) में भी स्वतंत्रता की माँग बुलंद की। अमेरिका में शासन ब्रिटिश संसद द्वारा चलाया जाता था जो अमेरिकावासियों को सहन न था। वे स्वतंत्र रूप से शासन करना चाहते थे। अत: अमेरिकी उपनिवेश ने अपनी स्वतंत्रता के लिए जो संघर्ष किया वही अमेरिकी क्रांति कहलाता है। ये क्रांति 1776 ई० में हुई। उपर्युक्त दो क्रांतियों के परिणाम एवं प्रभाव स्वरूप यूरोप में भी क्रांति का दौर प्रारंभ हुआ।

18वीं सदी में यूरोपीय देशों में फ्रांस की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अत्यंत जर-जर थी। शासक कुलीन तथा पादरी वर्ण केवल अपनी विलासिता पर ही ध्यान देते थे। जनता एवं जनहित के कार्यों तथा प्रशासन में उनकी कोई रुचि नहीं थी। वे केवल महाटोपा एवं कृषकों का शोषण करते थे। ऐसी परिस्थिति में फ्रांस में बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुआ जिन्होंने जनता को उनके अधिकारों से परिचित कराया। इस प्रकार शासक, कुलीन तथा चर्च के विरुद्ध कृषकों, श्रमिकों तथा बुद्धिजीवियों के द्वारा फ्रांस में जो क्रांति हुई वही 1789 की फ्रांसीसी क्रांति कहलाती है। इसके प्रभाव दूरगामी हुए। यहाँ तक की भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी इस क्रांति का महत्त्व है।

प्र.2. औद्योगिक क्रांति का वर्णन कीजिए तथा औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए नवीन् और प्रौद्योगिकी परिवर्तन की विवेचना कीजिए।

Describe the industrial revolution and discuss the innovations and technological changes that took place during the industrial revolution.

उत्तर

औद्योगिक क्रांति
(Industrial Revolution)

18वीं सदी में औद्योगिक क्रांति हुई। इससे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए। यह बदलाव एक स्थायी कृषि और व्यापारिक समाज के आधुनिक औद्योगिक समाज बनने को चिंहित करता है। ऐतिहासिक तौर पर 1750 से 1850 की अवधि ब्रिटेन के इतिहास के सदंर्भ में है। सामाजिक और आर्थिक साँचे में आये नाटकीय परिवर्तनों से इनका स्थान आविष्कार के रूप में जगह आविष्कारों और नई

तकनीकी द्वारा मशीनों के तैयार बड़े-पैमाने के उत्पादन की फैक्टरी व्यवस्था और वृहत आर्थिक विशिष्टता ने ले लिया। जो जनसंख्या पहले कृषि में कार्यरत थी अब शहरी कारखानों की ओर बढ़ने लगी। पहले के व्यापारी परिवारों को कच्चा माल देते और उनसे तैयार उत्पादन एकत्र करते थे। इस व्यवस्था से बाजार की बढ़ती माँगों को लम्बे समय तक पूरा नहीं किया जा सकता था। इसलिए 18वीं सदी के अंत तक, अमीर व्यापारियों के द्वारा कारखानों की स्थापना की गई। उन्होंने नई मशीनें लगाई, कच्चे माल से और निश्चित वेतन पर काम करने वाले श्रमिकों से मशीनों में बनी वस्तुएँ बनवाई। इस प्रकार कारखाना प्रणाली का जन्म हुआ।

औद्योगिक क्रांति की शुरुआत ब्रिटेन में भाप की शक्ति के उपयोग से शुरू हुई। वह 1769 में जेम्स वाट के भाप इंजन के आविष्कार के बाद संभव हुआ। 1733 में जॉन केयस ने उड़ती तूरी का अविष्कार किया जिससे कपड़े बुनने की प्रक्रिया को आसान कर दिया और उत्पादन चार गुणा बढ़ा दिया। जेम्स हरग्रीवस ने एक हाथ संचालित चरखा, स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया, इस स्पिनिंग जेनी (कताई चरखे) से एक बार में ही कई गुणा धागे बनने लगे। कताई चरखा स्पिनिंग जेनी के आविष्कार के बाद, सूती वस्त्र इस अवधि का प्रमुख उद्योग बन गया था। कोयले और लोहे की बड़ी मात्रा में उपस्थिति ब्रिटेन के तेजी से औद्योगिक विकास में एक निर्णायक कारक साबित हुआ। नहरों और सड़कों के निर्माण, इसी तरह से रेल और जहाज के आगमन थे, निर्मित वस्तुओं के लिए बाजारों को फैलाया। पेट्रोल इंजन और बिजली के साथ विकास का नया काल आया। इनके पास वे सभी संसाधन थे जो उसे एक औद्योगिक शक्ति बना सकते थे। औद्योगिक क्रांति का असर दुनिया भर में महसूस किया गया। 1830 के बाद फ्रांस में 1850 के बाद जर्मनी और गृह युद्ध के बाद अमेरिका में औद्योगीकरण शुरू हो गया।

प्रमुख आविष्कार और सुधारों ने इंग्लैंड में कृषि को बढ़ावा दिया। महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों नवाचारों जेथ्रो टुल बीज रोपण ड्रिल से बीजों के समान अंतराल और गहराई पर बिना बर्बाद किए बीज बोने में कृषि में अपनी जगह बना ली है। 1760 से 1830 के बीच, ब्रिटिश संसद ने लगभग 1000 संलग्नक अधिनियमों के द्वारा भूमि को जो पहले उस जिस समुदाय की थी उनको बड़े क्षेत्रों से जोड़ दिया गया। हालाँकि इन सब से लिए कृषि उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली। लेकिन उसी समय इसने भूमिहीन लोगों की एक बड़ी संख्या प्रदान की। अब केवल कुछ ही लोगों की खेतों पर काम करने की जरूरत थी। इसलिए की एक बड़ी संख्या में लोगों ने रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन शुरू कर दिया। इसने कारखानों में काम करने के लिए सस्ते और अधिक मजदूर प्रदान किए।

इंग्लैण्ड में अनुकूल राजनीतिक परिस्थितियों ने भी औद्योगिक क्रांति के विकास में मदद की। व्यापारिक प्रतिबंध हटाने जैसे एक्ट/अधिनियमों और सामूहिक बाजार व्यापारियों के लिए अनुदान था। इंग्लैंड मुख्य रूप से अपने परिवहन में विकास के कारण विदेशी बाजारों पर कब्जा करने में सक्षम था। कई यूरोपीय देशों ने अब वाणिज्यवाद की नीति का पालन शुरू कर दिया था। इस नीति के तहत उद्योगों और व्यापार में सरकारी नियंत्रण प्रयोग किया गया था। यह सिद्धान्त इस पर आधारित है कि राष्ट्रीय शक्ति अधिक निर्यात और कम आयात की ओर संकेत देता है। यह सिद्धांत इस पर भी विश्वास रखता है कि एक राष्ट्र की सम्पत्ति का स्वामित्व उसके सोने और चांदी पर निर्भर करता है तथा सरकार का व्यापार में हस्तक्षेप सीमित होना चाहिए।

इंग्लैंड के अन्य देशों में अधिक भौगोलिक लाभ का भरपूर उपयोग किया। सुरक्षित स्थान के साथ-साथ यह द्वीप समुद्रतट के नजदीक है। परन्तु इसने यूरोप के अन्य देशों से अलग होकर निर्बाध प्रगति की है। जलमार्गों जैसे नहरों, नदियों और समुद्र ने इंग्लैंड को बिना कर और रुकावट के विशाल मुक्त व्यापार क्षेत्र प्रदान किया। इन सभी लाभों ने इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के लिए उचित स्थिति तैयार की।

औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए नवीन और प्रौद्योगिकी परिवर्तन
(Innovative and Technological Changes During the Industrial Revolution)

कई नवीन आविष्कार और प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों के इस अवधि के दौरान जगह ले ली। इसने औद्योगिक देशों को और अधिक शक्तिशाली और कुशल बनाने में मदद की। अब उत्पादन बड़ी मात्रा में, सस्ता और बहुत तेजी से किया जा सकता था। इन आविष्कारों का कपड़ा और परिवहन उद्योगों पर बहुत प्रभाव पड़ा।

वस्त्र उद्योग (Clothing Industry)—कपड़ा उद्योग में तकनीकी प्रगति ने लोहा और इस्पात उत्पादन में आविष्कारों की एक शृंखला शुरू कर दी। अन्य देशों ने इंग्लैंड के उस उदाहरण से प्ररेणा ली जिसमें इंग्लैंड में निर्मित वस्तुओं की दुनिया के बाजार में बाढ़ आ गई। ब्रिटेन ने अपने हितों की रक्षा के लिए एक कानून पारित किया जिसमें कपड़ा मजदूरों को दूसरे देशों की यात्रा करने और औद्योगिक तकनीकी की जानकारी बाहर न खोलने पर प्रतिबंध लगा दिया। परन्तु 1789 में, सैमुएल स्लेटर इंग्लैंड से बाहर निकल कर अमेरिका पहुँचा। वह अपने साथ ब्रिटिश कपड़ा उद्योग का ज्ञान ले गया जिससे अमेरिका में औद्योगिक क्रांति प्रारंभ

हुई। अमेरिका में कपास वृक्षारोपण के लिए विशाल क्षेत्रों को दासों के बढ़ते भाग के तहत लाया गया। फ्रांस और जर्मनी में औद्योगिक क्रांति समान घटनाओं से शुरू हुई।

आर्क राइट को कारखाने प्रणाली का पिता कहा जाता था। उसने पहला कारखाना मुख्य रूप से घरेलू मशीनों से तैयार किया था, जहाँ काम के घंटे तय थे और लोगों को वास्तव में अनुबंध के आधार पर रखा गया था। 1779 में, शमूएल क्रॉम्पटन ने स्पिनिंग म्यूल का आविष्कार किया जबकि एडमंड कार्टराईट ने पहले पानी संचालित करघे का आविष्कार किया।

भाप का इंजन (Steam Engine)

औद्योगिक क्रांति की एक और बड़ी उपलब्धि भाप की शक्ति का विकास और प्रयोग था। पहले के उपकरणों का सुधार किया गया और मशीनों के विकसित रूप में उद्योगों की संख्या को बढ़ाया गया था। इसलिए उत्पादन के लिए अत्यधिक शक्ति की जरूरत थी। 1705 में, थॉमस न्यूकॉमन कोयला खानों से पानी निकालने के लिए एक इंजन का निर्माण किया। 1761 में, जेम्स वाट डिजाइन ने न्यूकॉमन के इंजन के डिजाइन और दक्षता में चौगुना सुधार किया। उसने भाप और निर्वात गाढ़ा करने के लिए ठंडे पानी की एक जेट के साथ एक कक्ष की शुरुआत की। यह भी एक दूसरे से प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण की अवधि थी। वाट ने जॉन विल्किनसन के ड्रिल के बंदूक का इस्तेमाल करने के लिए अपने इंजन के लिए बड़े सिलेंडर बोर किया। भाप इंजन ने जल्द ही पहले लोकोमोटिव कोयला इंजन की जगह ले ली। इससे रेलवे लाइनों की माँग में वृद्धि हुई। प्रौद्योगिकी ने भाप इंजन को हल्का किया। जिससे अन्य उद्योगों इसकी माँग बढ़ी। अब नदियों या किसी भी झीलों के साथ कारखानों का लगाने की जरूरत नहीं थी।

कोयला और लौह (Coal and Iron)

भाप इंजन ने कोयला और लोहे के साथ आधुनिक उद्योगों की नींव रखी। उनका यह मानना था कि जिन लोगों की मौत की इच्छा हो वही खान में काम कर सकते थे। कोयला क्षैतिज सुरंगों के साथ टोकरी में ले जाया गया था और फिर सीधा घसीट कर सतह तक लाया जाता था। खानों से कोयले का ढकेलना जानवर, आदमी औरत और बच्चों ताकत पर पूरी तरह से निर्भर था। कोयला खानों में काम करने की स्थिति खतरनाक थी। दुर्भाग्य इस काम के लिए बच्चों को उनके छोटे आकार की वजह से पसंद किया जाता था।

भाप शक्ति के उपयोग में वृद्धि के कारण कोयले की माँग बढ़ने लगी। कोयला खानों में कई सुधार किए गए जैसे सुरंगों को हवादार बनाया गया, विस्फोट के लिए बारूद का इस्तेमाल किया गया। लेकिन कोयला खनिज कई तरह के खतरों और स्वास्थ्य समस्याओं और फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित करते थे।

लोहे उद्योग में इस समय के दौरान महत्त्वपूर्ण सुधार किए गए। 1709 में, इब्राहीम डर्बी कोक के साथ ढलवाँ लोहे का उत्पादन किया। इससे पहले ढलवा लोहा लकड़ी के कोयला से प्राप्त किया जाता था जिससे कि तेजी से इंग्लैंड के जंगलों में लकड़ी की कमी हुई। 1784 में, हेनरी कर्ट जो एक आयरन मास्टर थे उन्होंने एक कम भंगुर लोहे के उत्पादन के लिए एक प्रक्रिया विकसित की। यहाँ लोहे लवनहीज को बुलाया गया था। यह औद्योगिक प्रक्रियाओं में एक बहुत ही उपयोगी धातु साबित हुई। 1774 में, जॉन विल्किनसन ने एक ड्रिलिंग मशीन का आविष्कार किया है जिससे सटीकता के साथ छेद किया जा सकता था। 1788 और 1806 के बीच, लोहे के उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई है और लोहे का उपयोग कृषि मशीनरी, हार्डवेयर, जाहज निर्माण, आदि में फैल गया।

लोहा और कपड़ा उद्योग के विकास में यह आवश्यक था कि सस्ती वस्तुएँ और उनकी तेजी से ढुलाई के लिए बेहतर परिवहन सुविधाओं का आविष्कार किया जाए। घरेलू और विदेशी बाजारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए ऐसा जल्द-से-जल्द करना आवश्यक था।

परिवहन और संचार के साधन (Recourses of Transportation and Communication)—परिवहन और संचार के साधनों में सुधार ने औद्योगिक क्रांति को बहुत प्रोत्साहित किया। कच्चे माल, तैयार उत्पादों को, भेजना और लोगों को परिवहन की एक विश्वसनीय प्रणाली की जरूरत थी। 1700 में पुल और सड़क निर्माण में सुधार शुरू में किए गए थे। वे उनके गंतव्यों परिवहनों से कच्चे और कारखानों में तैयार माल को अपने गंतव्य तक पहुँचाने में मदद करते थे। 1814 में, जॉर्ज स्टीवेंसन ने पहले भाप लोकोमोटिव इंजन का निर्माण किया जो रेलवे ट्रैक पर चला। भाप के इंजन और रेलवे पटरियों से जल्दी इंग्लैंड में माल लाने ले जाने के लिए नहर परिवहन को समर्थन मिला। डार्लिंगटन से स्टॉकटन के लिए पहली रेलवे लोकोमोटिव कर्षण का उपयोग करने के लिए यात्रियों के रूप में माल ले जाने के रूप में अच्छी तरह से लाइन वर्ष 1825 था।

मध्य 19वीं शताब्दी के दौरान लकड़ी चालित जहाज की जगह भाप चालित जहाज ने ले ली। इसके तुरंत बाद लोहा जहाज समुद्र के पार यात्रा के लिए इस्तेमाल किया गया था। यद्यपि औद्योगिक क्रांति का पहला चरण भाप पर निर्भर करता है, तो दूसरा चरण बिजली पर निर्भर था। बिजली अब व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हो गयी और कारखानों को चलाने के लिए इस्तेमाल की जाने

लगी थी। परिवहन, व्यापारिक लेन-देन और संचार की तेजी से मतलब है, सैनिक इकाइयों, कालोनियों, देशों और यहाँ तक कि आम लोगों के बीच तेजी से संपर्क बढ़ना। टेलीग्राफ और टेलीफोन के आविष्कार ने दुनिया में कहीं भी तुरंत संवाद संभव बनाया है।

प्र.4. औद्योगिक क्रांति के सामाजिक व राजनीतिक प्रभावों का वर्णन कीजिए।

Describe the social and political effects of industrial revolution.

उत्तर

औद्योगिक क्रांति के सामाजिक प्रभाव
(Social Effects of Industrial Revolution)

औद्योगिक क्रांति ने नये सामाजिक वर्गों को जन्म दिया तथा सामाजिक सम्बन्धों को निर्वैयक्तिक एवं अर्थ-सापेक्ष बना दिया। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों के आधार-सूत्र बदल गए। सम्बन्धों के परम्परागत, भावनात्मक, कुलपरक, जातिमूलक आधार टूटने लगे। आर्थिक मापदण्ड सम्बन्धों का मुख्य सूत्र बन गया। इस औद्योगिक क्रांति का एक अंधकारपूर्ण पक्ष यह है कि उससे उत्पन्न समृद्धि का अधिकांश लाभ पूँजीपतियों के हिस्से में चला गया और उत्पादन प्रक्रिया में बराबर के भागीदार श्रमिकों को इसका लाभ नहीं मिल पाया। आर्थिक असमानता के आधार पर इन दो वर्गों—पूँजीपति वर्ग एवं श्रमिक वर्ग—की पहचान की जाने लगी। **अर्नोल्ड टॉयनबी** के अनुसार, "औद्योगिक क्रांति के प्रभाव यह सिद्ध करते हैं कि खुली प्रतियोगिता, जनकल्याण में वृद्धि के बिना ही समृद्धि को उत्पन्न कर सकती है।" सम्बन्धों के अर्थ-आधारित होने से समाज में आर्थिक असुरक्षा की भावना बढ़ गई। **ए.ई०आर० बोक** (द ग्रोथ ऑफ वेस्टर्न सिविलाइजेशन) के अनुसार, "औद्योगिक क्रांति के आरम्भ से ही अशांति एवं असुरक्षा, मनुष्य के जीवन की आधारभूत विशेषताएँ बन गयीं। पुरातन व्यवस्था में और कुछ नहीं तो कम-से-कम सापेक्षिक स्थिरता का गुण था।"

आधुनिक युग के आरम्भ में यूरोप में हुए पुनर्जागरण ने समाज में मध्यम वर्गीय मूल्यों की स्थापना करके एक नये युग का आरम्भ किया था लेकिन लम्बे समय तक मध्यम वर्ग की शक्ति उजागर नहीं हो पायी थी। औद्योगिक क्रांति ने इस वर्ग की शक्ति को अभिव्यक्त किया। अब वैज्ञानिकों, कुशल शिल्पियों, प्रबन्धकों आदि का प्रभाव बढ़ गया। यदि फ्रांस की राज्य क्रांति ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं समानता का पाठ पढ़ाया, तो इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता का क्रियात्मक उपयोग सम्भव बना दिया। औद्योगिक क्रांति के बाद श्रमिकों की बढ़ती हुई शक्ति ने एक ऐसी सामाजिक चेतना को जन्म दिया, जिसने व्यक्ति के सम्मान एवं उसके मूलभूत अधिकारों की सफलतापूर्वक माँग की।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप संयुक्त परिवार प्रणाली को काफी आघात पहुँचा। उत्पादन की घरेलू व कुटीर प्रणाली के स्थान पर फैक्ट्री प्रणाली आने से मालिक व मजदूरों के परस्पर संघर्ष, श्रमिकों के शोषण, श्रमिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता के ह्रास, औद्योगिक नगरों व केन्द्रों की जनसंख्या बढ़ने से उनमें स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गईं।

औद्योगिक क्रांति ने मजदूरों की संख्या में भारी वृद्धि की। मजदूरों के पास मजदूरी के अतिरिक्त आजीविका का कोई अन्य साधन न था और उद्योगपति उनका शोषण करने में नहीं हिचकते थे। श्रमिकों को अमानुषिक एवं निराशाजनक परिस्थितियों में काम करना पड़ता था। उन्हें दुर्गन्ध भरे वातावरण में रहना पड़ता था। 1833 ई० की इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट रिपोर्ट में यह बताया गया कि अस्वास्थ्यप्रद वातावरण में रहने एवं काम करने के कारण ही श्रमिकों के स्वास्थ्य में गिरावट हुई थी। श्रमिकों को सप्ताह में कोई छुट्टी का दिन नहीं मिलता था। उनको 14 से 16 घण्टे प्रतिदिन काम करना पड़ता था। इतना काम करने के बाद भी उन्हें जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी करने लायक पारिश्रमिक भी नहीं मिलता था। स्त्रियों एवं बच्चों से भी पूरा काम लिया जाता था, जबकि उन्हें पारिश्रमिक पुरुषों से कम मिलता था। कारखानों में अकुशल श्रमिक भरती करना नियम-सा बन गया था। बच्चों और औरतों को प्राथमिकता दी जाती थी क्योंकि वे सस्ते तथा आसानी से उपलब्ध हो जाते थे। बच्चों को दिन में सोलह घण्टे तक काम करना पड़ता था। गरीब अपने बच्चों को कारखाना मालिकों को सौंप देते थे ताकि उनकी परवरिश के बोझ से मुक्त हो जाएँ। बच्चों को मशीनों से जंजीरों द्वारा बाँधने से भी वे नहीं चूकते थे ताकि वे भाग न सकें। बच्चों से अमानुषिक स्तर पर काम लिया जाता था। दुर्भाग्य से आज भी दुनिया के कई देशों में बाल श्रमिकों का शोषण हो रहा है। यदि मशीनों पर कार्य के दौरान किसी मजदूर को चोट पहुँचती या मृत्यु हो जाती थी, तो कारखाना मालिक कोई दायित्व स्वीकार नहीं करते थे। इस प्रकार नवोदित श्रमिक वर्ग की दशा दयनीय बनी हुई थी। परन्तु आधुनिक इतिहासकारों ने यह बताने की चेष्टा की है कि मजदूरों की दुर्दशा उन परिस्थितियों का परिणाम थी, जिनका इस क्रांति के आगमन से कोई सम्बन्ध न था। श्रमिकों की बिगड़ती दशा का कारण जनसंख्या में वृद्धि था। जनसंख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति क्रांति से पूर्व ही परिलक्षित होने लगी थी। इसके अतिरिक्त औद्योगिक क्रांति का समय निरन्तर युद्धों का समय था, जिसके कारण वैज्ञानिक तथा आर्थिक विकास के लाभ सामने नहीं आ पाये। अठारहवीं सदी के

अन्तिम तीन दशकों और उन्नीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों में इंग्लैण्ड में फसल अच्छी नहीं हुई थी, जिससे व्यापार में मन्दी आ गयी, वेतन कम हो गए, बेरोजगारी बढ़ी, साथ ही जनता के कष्ट भी बढ़ गए। इन सभी तथ्यों को मद्देनजर रखते हुए भी इस सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि औद्योगिक क्रांति के प्रारम्भिक वर्षों में श्रमिकों की दशा शोचनीय थी। प्रोफेसर शार्प ने ठीक ही लिखा है कि, "अब श्रमिक सम्पत्तिहीन, मुद्राहीन और गृहविहीन प्रतिहारी मात्र रह गए थे।"

औद्योगिक क्रांति के अन्तर्गत मालिक एवं श्रमिक के व्यक्तिगत सम्बन्ध समाप्त हो गए। अब उनका रिश्ता एक नकदीय अंतर्बन्धन (कैश नैक्स्स) पर आधारित हो गया। जबकि पुरानी संघीय एवं घरेलू व्यवस्था के अन्तर्गत मालिक एवं व्यक्ति के सम्बन्ध अनेक प्रकार के एवं व्यक्तिगत थे। वे दोनों एक-दूसरे को भली-भाँति जानते थे साथ-साथ काम करते थे, साथ खाते थे, साथ खेलते थे, एवं प्राय: साथ रहते थे। **अर्नोल्ड टॉयनबी** (द इण्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन ऑफ द एटीन्थ सेन्चुरी इन इंग्लैण्ड) के अनुसार, "बड़े पूँजीपति मालिकों के नये वर्ग ने यद्यपि अत्यधिक समृद्धि प्राप्त की, लेकिन उन्होंने अपने कारखानों के कार्य में व्यक्तिगत रूप से कोई रुचि नहीं ली या बहुत कम रुचि ली, उनके यहाँ काम करने वाले सैकड़ों व्यक्तियों से वे अपरिचित थे; इसके परिणामस्वरूप मालिकों एवं मनुष्यों के प्राचीन सम्बन्ध समाप्त हो गए, एवं एक मानवीय सम्बन्ध का स्थान "नकदीय अन्तर्बन्धन ने ले लिया।"

अठारहवीं शताब्दी के मध्य से उन्नीसवीं सदी के अन्त तक यूरोप की जनसंख्या में तीन गुनी वृद्धि हुई। जनसंख्या में हुई इस वृद्धि को औद्योगिक क्रांति का परिणाम कहा जा सकता है। चिकित्सा क्षेत्र में हुई महत्त्वपूर्ण खोजों के कारण मृत्यु दर में कमी होने से भी जनसंख्या में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त उन्नीसवीं सदी के आरम्भ तक इंग्लैण्ड में और फिर यूरोप में जो कृषि क्रांति हुई थी उसके कारण अधिकांश लोगों को पर्याप्त मात्रा में भोजन मिलने लगा और वे अधिक स्वस्थ रहने लगे। इस तथ्य पर इतिहासकार डेविड थॉमसन ने प्रकाश डाला है। जनसंख्या में वृद्धि से अनेक नई सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुईं। जनसंख्या के नगरों में केन्द्रित होने से आवास समस्या बढ़ी। बेरोजगारी में वृद्धि हुई। जनस्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न हुई। प्रदूषित वातावरण, गन्दी बस्तियों तथा शुद्ध पेयजल की व्यवस्था न होने से अनेक रोगों का प्रकोप बढ़ा।

इतिहासकार **सी०डी०एम कैटलबी** ने लिखा है कि "औद्योगिक क्रांति से न तो विशेषाधिकारयुक्त वर्ग उत्पन्न हुआ, न इससे गरीबी आयी और न इससे वर्ग विभेदों को ही प्रश्रय मिला। किन्तु औद्योगिक क्रांति ने निश्चित रूप से ऐसे साधन उत्पन्न कर दिए थे, जिनसे कुछ विशेषाधिकार और शक्तियाँ एक वर्ग के हाथों में केन्द्रित हो गयीं। दूसरी ओर ऐसे मनुष्यों का वर्ग था, जो पैसे पर अपना श्रम बेचता था, जो अपनी जीविका और अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अथवा पूँजी, लालसाओं, साहस और औद्योगिक प्रशिक्षण के अभाव के कारण दूसरों की आर्थिक अधीनता में रहने के लिए मजबूर था।" श्रमिकों की बिगड़ती हुई हालत ने उन्हें ट्रेड यूनियन अथवा मजदूर संघ बनाने के लिए बाध्य किया। मजदूरों के ऊपर जो अत्याचार हो रहे थे, उन अत्याचारों से मुक्ति पाने का यही एकमेव उपाय था। मजदूरों ने समझ लिया था कि एकता में शक्ति है और व्यक्तिगत प्रयत्न की अपेक्षा सामूहिक रूप से काम करना अधिक प्रभावशाली होगा। एक ही व्यवसाय में लगे हुए मजदूरों का संगठन बनाना आसान भी था।

औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप जिन नये वर्गों का जन्म हुआ, वे अपने अधिकारों की माँग करने लगे। श्रमिक वर्ग के साथ-साथ स्त्रियों की ओर से भी नयी माँगें आने लगीं और इन दोनों वर्गों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण ही बदल गया। अठारहवीं सदी के अन्तिम चरण से लेकर उन्नीसवीं सदी के मध्य तक के सुधारकों एवं विचारकों ने लगातार सिफारिश की कि स्त्रियों को अधिक राजनीतिक एवं व्यावसायिक सुविधाएँ दी जाएँ ताकि वे स्वतंत्र जीवन अनुभव कर सकें। इन सुधारकों एवं विचारकों में अठारहवीं सदी की मेरी वुल्स्टोनक्रेफ्ट थी तथा उन्नीसवीं सदी का जॉन स्टुअर्ट मिल। प्रथम विश्व युद्ध से पहले स्त्रियों के लिए अनेक नये स्कूल और कॉलेज खुले धीरे-धीरे सभी व्यापार एवं व्यवसाय के द्वारा भी स्त्रियों के लिए खुल गए। विवाहित स्त्रियों को अधिकार मिल गया कि वे अपने स्वतंत्र व्यवसाय से सम्पत्ति अर्जित कर सकती हैं। इस प्रकार एक सामान्य स्त्री भी अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तनों से लाभ उठा सकती थी। परन्तु यह महिला स्वतंत्रता सम्पत्तिहीन श्रमिक महिलाओं के लिए बेमानी थी।

औद्योगिक क्रांति के राजनीतिक प्रभाव
(Political Effects of Industrial Revolution)

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप जो नवीन सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हुईं, उनके समाधान हेतु यूरोपीय राज्यों के प्रशासकीय कार्यों में वृद्धि हुई। उदाहरणार्थ, उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में जब इंग्लैण्ड की सरकार का ध्यान मजदूरों की दशा और विशेष रूप से बाल श्रमिकों पर होने वाले अत्याचार की ओर आकर्षित हुआ, तो शासन ने श्रमिकों की दशा सुधारने और बाल श्रमिकों के काम के घण्टे कम करने के लिए कानून बनाए। उन्नीसवीं सदी में केवल इंग्लैण्ड में ही चालीस से अधिक फैक्ट्री अधिनियम बने, जिनके अधीन काम के घण्टे, न्यूनतम मजदूरी एवं अन्य बातों की व्यवस्था हुई। यद्यपि एडम स्मिथ, डेविड

रिकॉर्डों आदि अर्थशास्त्रियों ने उद्योगों में शासन के हस्तक्षेप का विरोध किया किन्तु औद्योगिक क्षेत्र में राजकीय क्रिया-कलापों में वृद्धि होती गयी। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से औद्योगिक क्षेत्र की प्रत्येक शाखा में राज्य का हस्तक्षेप होने लगा।

अठारहवीं सदी के मध्य तक ब्रिटिश संसद में केवल भूमिपतियों का ही प्रभाव था। औद्योगिक क्रांति ने जिस नये वर्ग को जन्म दिया, वह यह सहन नहीं कर पाया कि राजनीति या संसद में भूमिपतियों का ही वर्चस्व रहे। फलस्वरूप नये नगरों द्वारा संसद में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिलाने की माँग बढ़ने लगी। यह स्मरणीय है कि इंग्लैण्ड में औद्योगिक केन्द्रों, जिनका विकास कारखाना प्रणाली के साथ हुआ था, का संसद में प्रतिनिधित्व न था। आरम्भ में उभरते मध्यमवर्ग की संसदीय सुधार की माँग का विरोध किया। किन्तु आगे चलकर यह माँग इतनी प्रबल हो गयी कि उसकी उपेक्षा न की जा सकी। उन्नीसवीं सदी में इंग्लैण्ड में अनेक संसदीय सुधार किए गए। 1867 ई० में सरकार को नगरीय मजदूरों को मताधिकार देना पड़ा और फिर 1884 ई० में ग्रामीण मजदूरों को भी यह अधिकार मिला। इस प्रकार औद्योगिक क्रांति से पनपे वर्गों के प्रभाव के फलस्वरूप राजनीतिक सत्ता भूमिपतियों के हाथ से मुक्त हुई और इंग्लैण्ड में जनतंत्र का विकास हुआ। इतिहासकार ऐंसर का मत है कि इंग्लैण्ड में उन्नीसवीं शताब्दी में होने वाले संसदीय सुधार औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप सम्भव हुए थे।

औद्योगिक क्रांति ने उपनिवेश स्थापित करने अथवा अविकसित देशों पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। उन्नीसवीं सदी में इंग्लैण्ड, फ्रांस, हॉलैण्ड, बेल्जियम आदि देशों ने अपने-अपने औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार किया, जिससे यूरोपीय राज्यों में औपनिवेशिक एवं व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता शुरू हो गयी। जर्मनी एवं इटली काफी पीछे रह गए क्योंकि वे एक राष्ट्रीय शक्ति के रूप में 1870 ई० के बाद ही अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर प्रकट हो पाए थे। ये दोनों राष्ट्र भी अन्य यूरोपीय राज्यों की भाँति विशाल औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना करना चाहते थे। अत: उनका अन्य राष्ट्रों में मनमुटाव स्वाभाविक था। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में साम्राज्यवादी लिप्सा ने उन्माद का रूप धारण कर लिया। ऐसी स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ने लगा, जिसके कारण प्रथम महायुद्ध को जन्म देने वाली परिस्थितियों को बढ़ावा मिला।

प्र.5. जीवन पर औद्योगिक क्रांति के आर्थिक प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

Explain the economic effects of the industrial revolution on the life.

उत्तर

औद्योगिक क्रांति का आर्थिक प्रभाव
(Economic Effects of Industrial Revolution)

मानव समाज को जितना औद्योगिक क्रांति ने प्रभावित किया, उतना अन्य किसी परिवर्तन ने नहीं। प्रसिद्ध इतिहासकार विल ड्यूरा के अनुसार मानव समाज के इतिहास में दो प्रसिद्ध क्रांतियाँ हुईं, जिन्होंने मानव इतिहास को सर्वाधिक प्रभावित किया है। एक क्रांति उस समय हुई, जबकि उत्तर-पाषाण युग में मनुष्य ने आखेट छोड़कर कृषि एवं पशुपालन का पेशा अपनाया और दूसरी क्रांति वह है, जबकि आधुनिक युग में कृषि छोड़कर व्यवसाय को प्रधानता दी। वस्तुत: औद्योगिक परिवर्तन एक मौन किन्तु महान् क्रांति के रूप में था। सम्पूर्ण आधुनिक इतिहास में किसी घटना के द्वारा मानव जीवन में इससे अधिक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं लाए गए। इसके अतिरिक्त इसने देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में गम्भीर परिवर्तन करके उस पर उल्लेखनीय प्रभाव छोड़े। विभिन्न विद्वानों ने औद्योगिक क्रांति के प्रभावों का अध्ययन जनसंख्या, जीवन-स्तर, श्रमिकों की आर्थिक दशा, आर्थिक विकास की दर, विदेशी व्यापार आदि के संदर्भ में किया है, जिससे पता चलता है कि औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था का झुकाव गाँव से शहर की ओर, कृषि से उद्योग की ओर, गतिहीनता से प्रगति की ओर, छोटे पैमाने से बड़े पैमाने की ओर तथा राष्ट्रीय सीमाओं से अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं की ओर हुआ। **प्रो० नोबेल्स** के अनुसार, "क्रांति का परिणाम था—नई जनता, नये वर्ग, नई नीतियाँ, नयी समस्याएँ और नये साम्राज्य।"

औद्योगिक क्रांति का प्रभाव इस मत से भी प्रकट होता है कि "उन्नीसवीं शताब्दी फ्रांसीसी विचारों एवं ब्रिटिश तकनीक का परिणाम थी।" औद्योगिक क्रांति के कारण मानव समाज की विचारधारा एवं दृष्टिकोण में भी आमूल परिवर्तन हो गया।

औद्योगिक क्रांति का प्रथम प्रभाव उत्पादन पर पड़ा। यन्त्रों के द्वारा कम समय में अधिक वस्तुओं का निर्माण होने लगा। इंग्लैण्ड में औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि निम्न तालिका से स्पष्ट है—

क्र०सं०	वस्तुएँ	अवधि	उत्पादन वृद्धि	स्तर वृद्धि
1.	कच्चा लोहा	1788-1851	68 हजार टन से बढ़कर 25 लाख टन	37 गुणा
2.	कोयला	1780-1854	64 हजार टन से बढ़कर 646 लाख टन	10 गुणा

3.	कपास-खपत	1760-1830	8 हजार टन से बढ़कर 3.2 लाख टन	40 गुणा
4.	कच्चे ऊन का आयात	1801-1849	70 लाख पौण्ड से बढ़कर 740 लाख पौण्ड	10.5 गुणा

उत्पादन बढ़ जाने से इंग्लैण्ड अधिकाधिक माल का निर्यात करने लगा। इससे ग्रेट ब्रिटेन की सम्पदा और शक्ति बढ़ी और वह विश्व की प्रमुख औद्योगिक शक्ति बन गया। 1815 ई० के आते-आते ग्रेट ब्रिटेन विश्व की वर्कशॉप, विश्व की भट्टी, विश्व का बैंकर व विश्व का सबसे बड़ा माल-वाहक बनकर सामने आया।

औद्योगिक क्रांति से पहले सभी व्यवसाय एवं उद्योग घरेलू-प्रणाली के आधार पर संगठित थे। इस पद्धति के अन्तर्गत प्रत्येक कारीगर अपने घर पर अपनी ही पूँजी से इच्छानुसार वस्तुएँ बनाता एवं बेचकर मुनाफा कमाता था। किन्तु यन्त्रों का आविष्कार हो जाने पर कारखाने स्थापित होने लगे, जिनसे सस्ता माल सुलभ हुआ। परिणामत: स्वतंत्र कारीगर उनसे प्रतियोगिता न कर सके। इस प्रकार पुरानी कुटीर उद्योग पद्धति का स्थान कारखाना पद्धति ने ले लिया। धीरे-धीरे बड़े कारखानों में फैक्ट्री पद्धति अपनाया गयी।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप लोग रोजगार की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर भागने लगे। बड़े-बड़े कृषि फार्मों की स्थापना के कारण छोटे किसानों को गाँव छोड़कर काम की तलाश में कारखानों में आना पड़ा, जिससे औद्योगिक केन्द्रों की आबादी बढ़ने लगी। औद्योगिक केन्द्रों के आस-पास नवीन नगरों का विकास हुआ। इंग्लैण्ड में मैनचेस्टर, लीवरपूल, लीड्स आदि बड़े नगरों के रूप में उभरे। जहाँ इंग्लैण्ड में 1700 ई० में 77 प्रतिशत लोग गाँवों में बसते थे, वहाँ 1900 ई० में केवल 20 प्रतिशत लोग गाँवों में रह गए थे और 80 प्रतिशत लोग शहरों में रहने लगे। इस तरह तीव्र गति से जनसंख्या का शहरीकरण हुआ। गाँवों के उजड़ने एवं नवीन नगरों के बसने से अर्थव्यवस्था का आधार ही बदल गया। पहले गाँव ही अर्थव्यवस्था के आधार थे। औद्योगिक क्रांति के कारण अब शहर अर्थव्यवस्था के आधार बन गए।

औद्योगिक क्रांति के बाद प्रत्येक औद्योगिक देश के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह अपने राष्ट्रीय बाजार को संरक्षित करे। अन्य देशों की निर्मित वस्तुओं पर भारी कर लगाकर राष्ट्रीय उत्पादनों को महत्त्व दिया जाने लगा। परन्तु उत्पादित माल को जब अपने ही देश में खपाना मुश्किल हो गया, तब अविकसित एवं पिछड़े देशों में मण्डियों एवं बाजारों की तलाश करनी पड़ी। बाजारों की आवश्यकता ने सरकारों को उपनिवेश प्राप्ति की ओर प्रेरित किया।

वृहत् स्तर पर उत्पादन, असमान वितरण और एकाधिकारी प्रवृत्तियों से उत्पादकों और उपभोक्ता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध समाप्त हो गया और उत्पादन तथा उपभोग में असंतुलन होने से व्यापार-चक्रों की पुनरावृत्ति होने लगी। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक संकट एक अनिवार्य अंग के रूप में सामने आया। इंग्लैण्ड में 1825, 1837, 1847, 1857, 1866, 1873, 1888, 1890, 1900, 1907, 1921 और 1930 ई० की आर्थिक मंदियाँ औद्योगिक क्रांति में संकटों की आवृत्ति के उदाहरण हैं। औद्योगिक क्रांति ने एक नए प्रकार के पूँजीवाद—औद्योगिक पूँजीवाद को जन्म दिया। यह ठीक है कि औद्योगिक क्रांति के बहुत पहले से ही यूरोप में पूँजीवाद का जन्म हो चुका था परन्तु उस काल का पूँजीवाद व्यापारिक पूँजीवाद था, जिसमें पूँजी का उपयोग व्यापार विस्तार के लिए हुआ। उस काल के पूँजीवाद से सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था परन्तु औद्योगिक पूँजीवाद ने आर्थिक ढाँचे में व्यापक परिवर्तन किए। इस नवीन औद्योगिक व्यवस्था में वही लोग ठहर सके, जिनके पास अधिक पूँजी थी। अधिक पूँजी की आवश्यकता ने संयुक्त स्कन्ध कम्पनियों एवं औद्योगिक निगमों को जन्म दिया। इस नयी व्यवस्था में पूँजीपति का काम उद्योग के लिए धन जुटाना और अन्त में लाभ प्राप्त करना रह गया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. औद्योगिक क्रांति किस देश में शुरू हुई?

(a) जर्मनी (b) फ्रांस
(c) इंग्लैण्ड (d) स्पेन

प्र.2. औद्योगिक क्रांति का परिणाम नहीं था–

(a) नवीन आविष्कार (b) उत्पादन में वृद्धि
(c) मजदूरों का उच्च जीवन स्तर (d) बेकारी

प्र.3. गौरवशाली क्रांति इंग्लैण्ड में कब हुई?

(a) 1687 (b) 1688 (c) 1689 (d) 1690

प्र.4. गौरवशाली क्रांति के फलस्वरूप कौन-सा परिणाम हुआ?
(a) संसदीय शासन की स्थापना (b) धार्मिक अत्याचार से मुक्ति
(c) आर्थिक विकास की ओर इंग्लैण्ड अग्रसर (d) ये सभी

प्र.5. निम्न में कौन-सा गौरवशाली क्रांति का परिणाम नहीं था जो संसद को शक्ति मिली थी?
(a) नागरिक स्वतन्त्रता की रक्षा करना (b) कानून बनाना
(c) कर लगाना (d) राजा का संसद की शक्ति में हस्तक्षेप

प्र.6. विलियम ऑफ ओरेंज कब 15 हजार सैनिकों के साथ इंग्लैण्ड के होरबे बन्दरगाह पर उतरा?
(a) 3 नवम्बर, 1688 (b) 4 नवम्बर, 1688
(c) 5 नवम्बर, 1688 (d) 6 नवम्बर, 1688

प्र.7. कब जेम्स राजमुद्रा को टेम्स नदी में फेंककर फ्रांस पलायन कर गया?
(a) 22 दिसम्बर, 1688 (b) 23 दिसम्बर, 1688
(c) 24 दिसम्बर, 1688 (d) 25 दिसम्बर, 1688

प्र.8. कब विलियम और मैरी संयुक्त रूप से इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुए?
(a) 10 फरवरी, 1689 (b) 11 फरवरी, 1689
(c) 12 फरवरी, 1689 (d) 13 फरवरी, 1689

प्र.9. कब तक आते-आते ग्रेट ब्रिटेन विश्व की वर्कशाप, विश्व की भट्टी, विश्व का बैंकर एवं विश्व का सबसे बड़ा मालवाहक बनकर सामने आया?
(a) 1815 (b) 1816 (c) 1817 (d) 1818

प्र.10. 1900 ई० में कितने प्रतिशत लोग ही इंग्लैण्ड में गाँवों में रह गए?
(a) 17% (b) 18% (c) 19% (d) 20%

प्र.11. जेम्स द्वितीय किस कैथोलिक राजा से आर्थिक और सैनिक सहायता प्राप्त कर इंग्लैण्ड में निरंकुश शासन स्थापित करना चाहता था?
(a) फ्रांस (b) रूस (c) पुर्तगाल (d) स्पेन

प्र.12. जेम्स द्वितीय ने इंग्लैण्ड को कैथोलिक देश बनाने हेतु कब धार्मिक अनुग्रह की घोषणा की?
(a) 1687 (b) 1688 (c) 1687 व 1688 (d) 1689

प्र.13. जेम्स ने गिरजाघरों पर राजकीय श्रेष्ठता पूर्ण रूप से स्थापित करने हेतु कोर्ट ऑफ हाई कमीशन को पुनः कब स्थापित किया?
(a) 1686 (b) 1687 (c) 1688 (d) 1689

प्र.14. जेम्स वाट ने भाप के इंजन का कब आविष्कार किया?
(a) 1768 (b) 1769 (c) 1770 (d) 1771

प्र.15. ब्रिटेन के औद्योगिक विकास में निर्णायक रहा–
(a) कोयले की बड़ी मात्रा (b) लोहे की बड़ी मात्रा
(c) पूँजी की पर्याप्तता (d) ये सभी

प्र.16. निम्न में किसने इंग्लैण्ड के व्यापार में सहयोग नहीं किया?
(a) नहरों (b) नदियों
(c) तालाबों (d) समुद्र

प्र.17. कब सैमुएल स्लेटर अमेरिका पहुँचा जो वहाँ ब्रिटिश कपड़ा उद्योग का ज्ञान अपने साथ ले गया जिससे अमेरिका में औद्योगिक क्रांति हुई?
(a) 1787 (b) 1788 (c) 1789 (d) 1790

TOUCH 'n' PASS

प्र.18. निम्न में कौन-सा युग्म सही है?
(a) स्पिनिंग म्यूल—शमूएल क्राम्पटन
(b) पानी संचालित करघा—एडमंट कार्टराइट
(c) डिलिंग मशीन—जॉन विल्किनसन
(d) ये सभी

प्र.19. कब जॉर्ज स्टीवेंसन ने पहले भाप लोकोमोटिव इंजन का आविष्कार किया?
(a) 1814
(b) 1815
(c) 1816
(d) 1817

प्र.20. यह कथन किसका है ''औद्योगिक क्रांति के प्रभाव यह सिद्ध करते हैं कि खुली प्रतियोगिता, जनकल्याण में वृद्धि के बिना ही समृद्धी को उत्पन्न कर सकती है।''
(a) लास्की
(b) पीगू
(c) मार्शल
(d) अर्नोल्ड टॉयनबी

प्र.21. औद्योगिक क्रांति के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?
(a) श्रमिकों को सप्ताह में एक छुट्टी मिलती थी
(b) मजदूरों को 14-16 घण्टे प्रतिदिन कार्य करना पड़ता था
(c) उनका पारिश्रमिक कम था
(d) स्त्रियों और बच्चों से भी पूरा काम लिया जाता था।

प्र.22. यह कथन किसका है ''अब श्रमिक सम्पत्तिहीन, मुद्राहीन और गृहविहीन प्रतिहारी मात्र रह गए थे।''
(a) सी०डी०एम० कैटलवी
(b) लास्की
(c) प्रोफेसर शार्प
(d) पीगू

प्र.23. कब इंग्लैण्ड में सरकार ने नगरीय मजदूरों को मताधिकार दिया?
(a) 1865
(b) 1866
(c) 1867
(d) 1868

प्र.24. ग्रामीण मजदूरों को इंग्लैण्ड में मताधिकार कब मिला?
(a) 1881
(b) 1882
(c) 1883
(d) 1884

प्र.25. निम्न में किसने उद्योगों में शासन के हस्तक्षेप का विरोध किया?
(a) एडम स्मिथ
(b) डेविड रिकॉर्डो
(c) (a) व (b) दोनों
(d) हीगल

उत्तरमाला

1. (c)	2. (c)	3. (b)	4. (d)	5. (d)	6. (c)	7. (b)	8. (d)	9. (a)	10. (d)
11. (a)	12. (c)	13. (a)	14. (b)	15. (d)	16. (c)	17. (c)	18. (d)	19. (a)	20. (d)
21. (a)	22. (c)	23. (c)	24. (d)	25. (c)					

TOUCH 'n' PASS

UNIT-III

अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांति
American and French Revolution

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अमेरिका की क्रांति कब और क्यों हुई?
When and why did the American revolution happen?

उत्तर अमेरिकी क्रांति 1775 से 1783 के दौरान जनरल जार्ज वाशिंगटन द्वारा अमेरिकी सेना का नेतृत्व करते हुए की गई थी। वाशिंगटन ने अमेरिकन उपनिवेशों को एकीकृत करके संयुक्त राज्य अमेरिका का वर्तमान स्वरूप प्रदान किया। बाद में उन्हें 1789 में अमेरिका का पहला राष्ट्रपति चुना गया। 14 दिसम्बर, 1799 को वाशिंगटन की मृत्यु हो गई।

प्र.2. अमेरिकी क्रांति से आप क्या समझते हैं?
What do you understand by American revolution?

उत्तर अमेरिकी क्रांतिकारी युद्ध (1775-1783), जिसे संयुक्त राज्य में अमेरिकी स्वतन्त्रता युद्ध या क्रांतिकारी युद्ध भी कहा जाता है, ग्रेट ब्रिटेन और उसके तेरह उत्तर अमेरिकी उपनिवेशों के बीच एक सैन्य संघर्ष था, जिससे वे उपनिवेश स्वतन्त्र संयुक्त राज्य अमेरिका बने। शुरुआती लड़ाई उत्तर अमेरिकी महाद्वीप पर हुई।

प्र.3. अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांति में क्या अन्तर है?
What is the difference between American and French revolution?

उत्तर अमेरिकी क्रांति ब्रिटेन में अपनी सत्ताधारी राजशाही से दूर एक महासागर में एक उपनिवेश में हुई। फ्रांसीसी क्रांति फ्रांस के भीतर ही हुई, एक ऐसी कार्यवाही जिसने सीधे फ्रांसीसी राजतन्त्र के लिए खतरा पैदा कर दिया।

प्र.4. फ्रांसीसी क्रांति के परिणाम क्या थे?
What were the results of the French revolution?

उत्तर फ्रांस की क्रांति ने शिक्षा को चर्च के अधिपत्य से निकालकर उसे राष्ट्रीय सार्वभौमिक तथा धर्मनिरपेक्ष बनाया साथ ही पुरातन व्यवस्था के अंधविश्वासों को नष्ट किया यूरोप साहित्य में स्वच्छंदतावाद आन्दोलन भी क्रांति का ही परिणाम था।

प्र.5. फ्रांस की क्रांति का मुख्य उद्देश्य क्या था?
What was the main objective of French revolution?

उत्तर फ्रांसीसी क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य राजशाही को समाप्त करना और लोकतान्त्रिक सरकार के लिए मार्ग प्रशस्त करना था। धार्मिक स्वतन्त्रता और चर्च द्वारा एकत्र करों का उन्मूलन क्रांतिकारियों का एक और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था।

प्र.6. अमेरिका की क्रांति के क्या कारण थे?
What were the causes of American revolution?

उत्तर अंग्रेजों ने सप्तवर्षीय युद्ध अमेरिकी उपनिवेशों की रक्षार्थ लड़ा था, इसलिए युद्ध में विजयी होने पर अंग्रेजों ने युद्ध में व्यय होने वाली धनराशि को अमेरिकी उपनिवेशों से वसूल करना चाहा। इसके लिए ब्रिटिश संसद ने अमेरिकी उपनिवेशों पर कर लगाने चाहे, जिसका उपनिवेशों ने कड़ा विरोध किया।

TOUCH 'n PASS

प्र.7. अमेरिकी क्रांति का अन्त कैसे हुआ?
How did the American revolution end?

उत्तर पेरिस की सन्धि पर दो साल बाद, 3 सितम्बर, 1783 को डेविड हार्टले और रिचर्ड ओसवाल्ड और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित बेंजामिन फ्रैंकलिन, जॉन एडम्स और जॉन जे सहित किंग जॉर्ज III के प्रतिनिधियों द्वारा आधिकारिक तौर पर संघर्ष को समाप्त करने पर हस्ताक्षर किए गए थे।

प्र.8. अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम का धार्मिक कारण क्या था?
What was the religious cause for the American war of independence?

उत्तर अमेरिकावासी अपने मातृदेश के साथ संबंध नहीं रखना चाहते थे। ब्रिटिश समाज सामंतवादी एवं कुलीन व्यवस्था पर आधारित थी, जबकि अमेरिकी समाज समतामूलक एवं प्रजातांत्रिक व्यवस्था पर आधारित था। इस प्रकार अमेरिका में धार्मिक एवं सामाजिक समरसता थी, जिसने स्वतन्त्रता संग्राम के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया।

प्र.9. अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम का इंग्लैण्ड और फ्रांस पर क्या प्रभाव पड़ा?
What was the impact of American war of independence of England and France?

उत्तर अमेरिकी क्रांति का प्रभाव भारत पर भी पड़ा। अमेरिकी स्वतन्त्रता संग्राम में फ्रांस के युद्ध में कूद जाने से भारत में भी आंग्ल-फ्रांसीसी युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। फ्रांसीसियों की कमजोर शक्ति से लाभ उठाकर अंग्रेजों ने अपने भारतीय राज्य विस्तार की नीति को मजबूत कर दिया।

प्र.10. फ्रांसीसी क्रांति का सारांश क्या है?
What is a summary of the French revolution.

उत्तर फ्रांसीसी क्रांति विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी जो 1789 में शुरू हुई और 1790 के दशक के अन्त में नेपोलियन बोनापार्ट की चढ़ाई के साथ समाप्त हुई। इस अवधि के दौरान, फ्रांसीसी नागरिकों ने अपने राजनीतिक परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया, सदियों पुरानी संस्थाओं जैसे राजशाही और सामंती व्यवस्था को उखाड़ फेंका।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के तात्कालिक कारणों को बताइए।
State the immediate causes of the American war of independence.

उत्तर

अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के तात्कालीन कारण
(Immediate Causes of American war of Independence)

अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के तात्कालिक कारण निम्नलिखित हैं—

1. **स्टाम्प नियम** (Stamp Act)—स्वेच्छा से उपनिवेशवादी कोई आर्थिक सहायता इंग्लैण्ड को देने को तैयार न थे, अतएव संसद में ग्रेनविल ने 1765 ई० में स्टाम्प एक्ट पारित करवाया। इसके अनुसार सभी सरकारी कागजों पर सरकारी स्टाम्प लगाना आवश्यक था। अमेरिकावासियों ने इसका विरोध किया। इनकी दृष्टि से सरकार को उनके आन्तरिक मामलों में कर लगाने का कोई अधिकार नहीं था। अत: उन्होंने एक स्वर में इसका विरोध करते हुए नारे लगाए **'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर भी नहीं'**। जब यह कर वसूल किया जाने लगा तो क्रांति के चिह्न स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगे। अत: 1766 ई० में यह समाप्त कर दिया गया।
2. **आयात-कर अधिनियम** (Import Tax Act)—1737 ई० में पिट-मन्त्रिमण्डल ने एक आयात कर अधिनियम पास किया, जिसने शीशा, चाय, कागज तथा रंग के आयात पर कर लगा दिया। अमेरिकावासियों के दृष्टिकोण से यह उनके मौलिक अधिकारों के प्रति बहुत बड़ा आघात था। इसका भी घोर विरोध हुआ।
3. **चाय पर कर लगाने का प्रयास** (Tax on Tea)—1771 ई० में लॉर्ड नार्थ प्रधानमन्त्री था। इसने कागज तथा शीशे पर चुंगी हटा ली, किन्तु चाय पर लगी रहने दी। उसने यह गलती ही की क्योंकि इससे अमेरिकावासियों का क्रोध शान्त नहीं हुआ। वे तो इंग्लैण्ड के कर लगाने के अधिकार के विरोधी थे न कि पैसे देने के।

TOUCH 'n PASS

4. **तत्कालीन घटनाएँ** (Immediate Events)—1770 ई० से 1773 ई० तक ऐसी घटनाएँ घटित हुईं जिससे दोनों पक्षों में तीव्र वैमनस्य उत्पन्न हो गया। इन घटनाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—
   (i) बोस्टन शहर के निवासी ब्रिटिश रेजीमेण्टों का अपमान करने लगे थे। एक दल के कुछ सैनिकों के साथ जनता ने अभद्र व्यवहार किया। अंग्रेजों ने गोलियाँ चला दीं जिससे कुछ व्यक्ति मारे गए। अमेरिकावासियों ने लोगों को भड़काने के उद्देश्य से इसे एक बहुत बड़े **'नर-संहार'** (The Boston massacre) का नाम दिया।
   (ii) अमेरिका की चोर-बाजारी को रोकने के लिए एक शाही जहाज (Graspee) भेजा गया। उपनिवेशवासियों ने इसे जला डाला। अमेरिका में इससे खुशी मनायी गई, किन्तु इंग्लैण्ड में रोष फैल गया।
   (iii) **बोस्टन टी पार्टी** (Boston Tea Party)—1773 ई० में चाय अधिनियम द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सीधे अमेरिका को चाय भेजने का अधिकार प्राप्त हो गया था। इसका भी विरोध किया गया और अमेरिका निवासियों ने बोस्टन के बन्दरगाह पर एक जहाज में प्रवेश कर 340 चाय के बक्स समुद्र में फेंक दिए। इस घटना से अंग्रेजों को काफी क्रोध आया और उन्होंने यह समझ लिया कि अब अमेरिका विद्रोह अवश्य करेगा। विद्रोह शान्त करने के लिए सभी उपनिवेशों में सैनिक शासन लागू कर दिया तथा बोस्टन के बन्दरगाह को व्यापार के लिए बन्द कर दिया। यूवेक एक्ट द्वारा कनाडा की सीमा ओहियों नदी तक निर्धारित कर दी गई। वहाँ के कैथोलिकों को सुविधाएँ दे दी गईं। जिससे प्यूरिटन लोग और भी रुष्ट हो गए। प्रारम्भ में इंग्लैण्ड की सरकार अमेरिका के लोगों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने से झिझकती थी क्योंकि अमेरिका के लोगों के प्रति इंग्लैण्ड की सहानुभूति थी तथा सरकार का विचार था कि यदि वह दृढ़ रुख अपनाकर अमेरिकी घटनाओं पर केवल नजर ही रखे तो पर्याप्त होगा क्योंकि यह संग्राम अधिक समय तक नहीं चल सकेगा और स्वत: ही समाप्त हो जाएगा, परन्तु बोस्टन (Boston) की घटना के कारण इंग्लैण्ड की सरकार कठोर कार्यवाही करने पर विवश हुई।
   अंग्रेजी सरकार ने 'बोस्टन टी पार्टी' की घटना को अपना अपमान समझा और अपराधियों को कठोर दण्ड दिया गया। इस दमन नीति का उपनिवेशवासियों ने विरोध किया। 1774 ई० में फिलाडेल्फिया (Philadelphia) में एक सभा हुई। इस सभा में अंग्रेजी सरकार से बातचीत करने का प्रस्ताव पारित किया गया, परन्तु जार्ज तृतीय ने विद्रोहियों से बातचीत करना उचित न समझा, अतएव अमेरिका वालों ने युद्ध करने का निर्णय लिया।

प्र.2. अमेरिका के स्वाधीनता संघर्ष में अंग्रेजों की पराजय के कारणों को लिखिए।
Write the causes for the defeat of the British in the freedom struggle of America.

उत्तर

अंग्रेजों की पराजय तथा अमेरिका की विजय के कारण
(Causes for the Defeat of the British and the Victory of America)

अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम में सफल होने के निम्न कारण थे—

1. **अमेरिका को शक्तिहीन समझना** (To consider Americans weak)—अमेरिका की शक्ति का अंग्रेज सही अनुमान न कर सके। वे अपनी शक्ति पर आवश्यकता से अधिक गर्व करते थे। जनरल गेज (Gaze) का अनुमान था कि चार रेजीमेंट अमेरिका पर विजय करने के लिए पर्याप्त हैं। अंग्रेज अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम को एक विद्रोह मात्र समझते थे और साधारण विद्रोह के समान उस पर विजय पाना आसान मानते थे।
2. **अमेरिका की इंग्लैण्ड से दूरी** (Distance between U.S.A. and U.K.)—अमेरिका, इंग्लैण्ड से बहुत दूर था। इसके कारण युद्ध-सामग्री तथा सैनिक भेजने में बड़ी कठिनाई होती थी। अमेरिकावासी अपने ही देश में लड़ रहे थे, अत: उन्हें सहायता लेने के लिए दूर जाने की आवश्यकता न थी।
3. **यातायात की असुविधा** (Transport Problems)—युद्ध का घेरा एक हजार मील लम्बा-चौड़ा था। बस्तियों के मध्य कोई सड़क न थी। बीच में अनेक जंगल थे। बस्ती वाले इन जंगलों से परिचित थे, परन्तु अंग्रेज उनमें रास्ता भूल जाते थे। एक स्थान पर यदि अंग्रेज घिर जाते तो उसकी सूचना उनके साथियों को शीघ्र न मिल पाती थी।
4. **अंग्रेज सेना के अयोग्य सेनापति** (Incompetent British Generals)—अंग्रेज युद्धमन्त्री जर्मेन (Germaine) एक अयोग्य मन्त्री था। उसने इस बात की कभी चिन्ता न की कि अंग्रेजों की अमेरिका में क्या स्थिति है? वह अमेरिका से आई डाक खोलने का कष्ट भी नहीं करता था। उसने **'पिट दि एल्डर'** की योजना पर कार्य न किया, परिणामस्वरूप फ्रांस का बेड़ा अमेरिका पहुँच गया और अमेरिका को उचित समय पर सहायता मिल गई और कॉर्नवालिस को हथियार डालने पड़े।

TOUCH 'n PASS

5. **जॉर्ज तृतीय की अयोग्यता** (Incompetency George III)—जॉर्ज तृतीय अत्यन्त हठी शासक था। वह किसी के परामर्श को स्वीकार नहीं करता था। उसने मन्त्रियों को भी अपने हाथ की कठपुतली बना रखा था। मन्त्रियों में द्वेष-भाव था और अपने स्वार्थवश वे देश की चिन्ता न करते थे। योग्य सेनापति क्लेरटाउन को हटाकर बरगोयने को रखना उचित न था। राजा का व्यक्तिगत शासन युद्ध में पराजित होने का मुख्य कारण था। वार्नर-मार्टिन म्योर के अनुसार, "जॉर्ज तृतीय के राज्याभिषेक के समय एक बस्तियाँ परिपक्व हो चुकी थीं, किन्तु मातृ देश (इंग्लैण्ड) यह समझ न सका और सम्भवत: यही प्रमुख कारण था जिसकी वजह से इतनी समस्याएँ उत्पन्न हुईं।"
6. **जॉर्ज तृतीय में अंग्रेज जनता का विश्वास न होना** (Lack of people faith in George III)—देश में राष्ट्रीय सरकार न होने के कारण देश में एकता का अभाव था। जॉर्ज तृतीय के व्यक्तिगत शासन से अनेक लोग असन्तुष्ट थे। बहुत-से लोग अमेरिका की स्वतन्त्रता के पक्षपाती भी थे। लॉर्ड चेथम तथा बर्क ने जॉर्ज तृतीय को उचित सलाह देनी चाही, किन्तु जॉर्ज तृतीय ने उसकी परवाह न की। बर्क का निम्न कथन उसका अमेरिका के पक्ष में होना स्पष्ट करता है, 'मैं अमेरिका के विरोध से सन्तुष्ट हूँ। अन्याय तथा अत्याचार के कारण अमेरिकी पागल हो उठे हैं। क्या अंग्रेज इस पागलपन के लिए उन्हें सजा देंगे जिसका बीजारोपण अंग्रेजों ने ही किया।'
7. **विदेशी शक्तियों का विरोध** (Opposition by Other Countries)—इंग्लैण्ड जब अमेरिका से युद्ध में व्यस्त था तो उसके विदेशी शत्रु (फ्रांस तथा स्पेन) पुरानी हार का बदला लेने के लिए युद्ध में कूद पड़े। अन्य यूरोप के राष्ट्रों ने भी जन-धन से अमेरिका की सहायता की। एक प्रकार से सारा यूरोप इंग्लैण्ड के विरुद्ध था। यह भी अंग्रेजों की पराजय का प्रमुख कारण था।
8. **इंग्लैण्ड की शक्ति का विभाजित होना** (Division of British Power)—इस समय इंग्लैण्ड की शक्ति आयरलैण्ड, भारत तथा यूरोप आदि देशों में बंटी हुई थी। इस कारण वे अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकते थे।
9. **जॉर्ज वाशिंगटन का कुशल नेतृत्व** (Marvellous Leadership of George Washington)—अंग्रेजों की हार का मुख्य कारण जॉर्ज वाशिंगटन का व्यक्तित्व था। वाशिंगटन क्रामवैल के समान योग्य सेनापति था। उसने अपने देशवासियों में स्वतन्त्रता की भावना प्रज्जवलित कर दी। उसने विपरीत परिस्थितियों में भी साहस न खोया। उसके साहस तथा विश्वास के कारण ही अंग्रेजों की हार तथा अमेरीकावासियों की विजय हुई। जैसा कि प्रसिद्ध इतिहासकार रैम्जे म्योर का कथन है, "वाशिंगटन के नेतृत्व ने उपनिवेशवासियों के मन में विश्वास तथा साहस को उत्पन्न कर दिया था, जिसके कारण उन्हें इस महान् तथा दुष्कर संघर्ष में अन्तिम विजय प्राप्त हुई।

प्र.3. फ्रांस की क्रांति के राजनीतिक कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the political causes of the French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति के राजनीतिक कारण
(Political Causes of the French Revolution)

फ्रांस की क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे—

1. **लुई चौदहवें के उत्तराधिकारी** (Successors of Louis XIV)—फ्रांस में शताब्दियों से समस्त राजनीतिक शक्ति राजा के हाथों में ही केन्द्रित थी। फ्रांस का राजा हुई चौदहवाँ यद्यपि एक निरंकुश शासक था, तथापि यह एक योग्य व्यक्ति था उसके शासन काल में फ्रांस की उन्नति चरम सीमा पर पहुँच गई थी, परन्तु अन्त में अनेक युद्धों के कारण तथा **सप्तवर्षीय युद्ध** (Seven Years War) के कारण उसकी आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई थी। उसने अपने पुत्र लुई पन्द्रहवें से अपनी मृत्यु के समय निम्नलिखित शब्द कहे थे—'मेरे बच्चे! अपने पड़ोसियों के साथ शान्तिपूर्वक रहने का प्रयत्न करना, जितना जल्दी हो सके लोगों को छुटकारा देने का यत्न करना और इस प्रकार वह कार्य पूरा करना जिसे दुर्भाग्यवश मैं पूरा न कर सका।'

   लुई पन्द्रहवाँ एक अयोग्य शासक प्रमाणित हुआ। सप्तवर्षीय युद्ध में फ्रांस के साम्राज्य का बहुत बड़ा भू-भाग उसके अधिकार से निकल गया तथा जनता के कष्टों में और वृद्धि हो गई। लुई पन्द्रहवें के पश्चात् लुई सोलहवाँ और भी अयोग्य निकला। मेडलिन ने लिखा—'वह पैदायशी राजा नहीं था'। एक फ्रेंच इतिहासकार ने लिखा है—'लुई चौदहवें के उत्तराधिकारियों ने राजवंश में सड़ांध पैदा कर दी और उससे जी मितला देने वाली बदबू उठने लगी थी।' लुई सोलहवें को

TOUCH 'n' PASS

शासन-प्रबन्ध में विशेष रुचि न थी। उस पर अपनी पत्नी मेरी आन्तनेत (Marie Antoinette) जो कि मेरिया थरेसा की लड़की थी, का अत्यधिक प्रभाव था। मिराब्यू ने लिखा 'राजा के निकट केवल एक ही व्यक्ति है, उसकी पत्नी'। फ्रांस के लोग मेरी आन्तनेत से अत्यन्त घृणा करते थे। उसको **'दि आस्ट्रियन'** (The Austrian) या **'मैडम डेफिसिट'** (Madame Deficit) के नाम से पुकारा जाता था। वह अत्यधिक अपव्ययी थी तथा बिना आवश्यकता के जनता का धन पानी की तरह बहाती थी।

2. **दोषयुक्त शासन-व्यवस्था** (Defective Administration)—फ्रांस की क्रांति का एक अन्य एवं प्रमुख कारण, वहाँ की बुरी शासन-व्यवस्था थी। राजा देश का प्रधान था और वह स्वेच्छानुसार आचरण करता था। लुई चौदहवें का विचार था कि देश की सर्वोच्च सत्ता व्यक्तिगत रूप से उसी में है; कानून बनाने की शक्ति एकमात्र उसी में ही विद्यमान है, उसकी प्रजा का अस्तित्व उसी के साथ ही है और राष्ट्रीय अधिकार केवल उसी के हाथों में ही है। ऐसी व्यवस्था कभी भी सुचारु रूप से नहीं चल सकती थी। राजा देश के विभिन्न भागों की स्थिति देखने के लिए दौरा नहीं करता था। परिणामस्वरूप, जनता के साथ उसका कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध न था। राजा जनता के दु:खों और इच्छाओं से पूर्णतया अनभिज्ञ था। राजा अपना ध्यान राजधानी में ही लगाए रहता था, जहाँ देशभर से दरबार के ओछे और निरर्थक कार्यों में भाग लेने कुलीन लोग आते थे। कहा गया था कि दरबार देश का मकबरा है। एक्टन ने लुई सोलहवें के शासन को 'The Era of Repentant Monarchy' कहा है।

देश की शासन-व्यवस्था अत्यधिक असन्तोषजनक थी। प्रशासन की दृष्टि से किए गए देश के भागों में से अनेक भागों की समाएँ ठीक तरह से निश्चित नहीं थीं और उनके कार्य-क्षेत्राधिकारों का एक-दूसरे से संघर्ष होने की सम्भावना रहती थी। देश की कानून-व्यवस्था (Legal System) भी दोषपूर्ण थी। सम्पूर्ण देश के लिए कोई एकरूप कानून-व्यवस्था नहीं थी। देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न कानून प्रचलित थे। कानून, अत्यधिक कठोर व अन्यायपूर्ण थे तथा साधारण अपराधों के लिए कठोर दण्डों की व्यवस्था थी। अपराधी का अपराध निश्चित करने और उसको दण्डित करने की कोई निश्चित प्रणाली नहीं थी। किसी प्रभावशाली व्यक्ति की इच्छा से कोई भी व्यक्ति कैद किया जा सकता था। बन्दी बनाने के लिए मात्र 'लैटरे डी कैचे' (Lettre de Cachet) को प्राप्त करने की आवश्यता होती थी और इसे प्राप्त करने के पश्चात् सम्बन्धित व्यक्ति अनिश्चित काल के लिए बिना किसी अदालती कार्यवाही के जेल में बन्द रखा जा सकता था।

करों को वसूल करने की प्रणाली भी अत्यधिक दोषपूर्ण थी। राज्य स्वयं अपने अधिकारियों द्वारा कर वसूल नहीं करवाता था अपितु यह अधिकार सबसे अधिक बोली देने वाले व्यक्ति को दिया जाता था। परिणामस्वरूप जहाँ कर वसूलने वाले व्यक्ति राज्य को एक निश्चित रकम देते थे वहाँ दूसरी ओर जनता से अधिक धन वसूल करने का प्रयत्न करते थे। जहाँ एक ओर जनता का शोषण किया जाता वहाँ दूसरी ओर राज्य को कोई लाभ न होता था। चूँकि कुलीन वर्ग व पादरी कर नहीं देते थे, अत: सम्पूर्ण बोझ साधारण वर्ग पर ही पड़ता था। फ्रांस की सम्पूर्ण शासन-व्यवस्था को ही सुधारना आवश्यक था।

प्र.4. फ्रांस की क्रांति के सामाजिक कारणों को लिखिए।
Write the social causes of the French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति के सामाजिक कारण
(Social Causes of the French Revolution)

गूच के अनुसार, 'फ्रांस की क्रांति यूरोप के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी', किन्तु वास्तव में फ्रांस की क्रांति केवल फ्रांस और यूरोप के इतिहास की ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण मानव जाति के इतिहास में भी महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस क्रांति ने लोगों के समक्ष स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व (Liberty, Equality and Fraternity) के आदर्श विचार प्रस्तुत किए जो आज विश्व के कोने कोने तक पहुँच चुके हैं। फ्रांस की क्रांति सैनिक ही नहीं अपितु विचारों की भी लड़ाई थी।

क्रांतियाँ कभी अचानक नहीं होतीं और संयोगवश तो कभी भी नहीं। एक छोटी-सी घटना सुरंग में चिंगारी का कार्य कर आग तो प्रज्ज्वलित कर सकती है, परन्तु सुरंग का पहले से ही बारुद से भरा होना नितान्त आवश्यक है। फ्रांस की क्रांति में भी ऐसा ही हुआ। क्रांति रूपी सुरंग तो लगभग दो शताब्दियों पूर्व से ही तैयार होनी प्रारम्भ हो गई थी, 1789 ई० में उसे केवल विस्फोटित कर

TOUCH 'n PASS

दिया गया। यद्यपि उस समय यूरोप के सभी देशों की स्थिति एकसमान थी, परन्तु फ्रांस की स्थिति सर्वाधिक शोचनीय थी, और यही कारण था कि सर्वप्रथम फ्रांस में ही क्रांति हुई। इस क्रांति ने फ्रांस की काया पलट दी। धनवान तथा निर्धनों का भेद-भाव ही मिटा देने का प्रयत्न किया गया, जमींदारों तथा पादरियों की सत्ता को समाप्त कर दिया गया।

फ्रांस की क्रांति के प्रमुख कारण निम्नवत् थे—

फ्रांस की क्रांति का एक महत्त्वपूर्ण कारण सामाजिक असमानता था। मेडलिन के अनुसार, '1789 ई० की क्रांति का विद्रोह तानाशाही से भी अधिक असमानता के प्रति था।' फ्रांस की क्रांति के समय फ्रांस में समाज में अत्यधिक असमानता व्याप्त थी। समाज दो वर्गों में विभाजित था—विशेषाधिकार वाले वर्ग में कुलीन लोग और पादरी थे। जहाँ एक ओर इन्हें विशेषाधिकार प्राप्त थे वहाँ दूसरी ओर वे करों आदि से भी मुक्त थे। फ्रांस में प्रसिद्ध था, 'सरदार (nobles) लड़ते हैं, पादरी प्रार्थना करते हैं और जनता व्यय का भार उठाती है। एक ओर तो इस वर्ग को इतनी सुविधाएँ प्राप्त थीं, दूसरी ओर साधारण वर्ग के लोगों की अवस्था सन्तोषजनक भी नहीं थी। किसानों की स्थिति विशेष रूप से शोचनीय थी। किसानों को जमींदार की जमीन पर सप्ताह में तीन दिन और कटाई के दिनों में पाँच दिन काम करना पड़ता था। खेती की भूमि बेची जाती तो मूल्य का पाँचवाँ भाग जमींदार को मिलता था। राजा को दिए जाने वाले करों की संख्या सबसे अधिक थी।

अनुमान लगाया जाता है कि करों को देने के पश्चात् फ्रांस के किसान के पास अपनी उपज का कुल 20 प्रतिशत भाग शेष रह जाता था। फ्रांस के कुछ भागों में किसान इन करों को चुकाने के पश्चात् किसी तरह निर्वाह कर लेते थे, परन्तु शेष भाग में उनकी दशा अत्यन्त शोचनीय थी। अच्छी-से-अच्छी फसल के उपरान्त भी वे अपना निर्वाह करने में स्वयं को असमर्थ पाते थे। कहा जाता है कि 'फ्रांस में जनता का 9/10 भाग भूख से और 1/10 भाग अधिक खाने से मरा।'

यद्यपि रिशलू (Richelieu) ने सत्रहवीं सदी में नोबल्स की राजनीतिक शक्तियाँ समाप्त कर दी थीं, किन्तु इससे कुलीन वर्ग में साधारण वर्ग के लिए और भी घृणा उत्पन्न हो गई। मैरियट ने इस विषय में लिखा है, '1789 ई० की क्रांति के लिए रिशलू बहुत अधिक उत्तरदायी था।'

मध्यम वर्ग के लोग भी फ्रांस के समाज के साधारण वर्ग में शामिल थे। इस श्रेणी के अन्तर्गत प्रोफेसर, वकील, साहूकार व व्यापारी, न्यायाधीश, मजिस्ट्रेट आदि थे। ये धनी भी थे और योग्य भी, तथा दुनिया के कई भागों में घूम चुके थे, अत: पुराने राज्य (Ancient Regime) के द्वारा दी गई नीची सामाजिक स्थिति (Inferior Status) को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। इसी वर्ग के लोग ही फ्रांस की जनता के द्वारा पुराने राज्य के विरुद्ध किए गए विद्रोह में उसके नेता बने।

प्र.5. फ्रांस की क्रांति के आर्थिक कारणों को बताइए।
State the economic causes of French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति के आर्थिक कारण
(Economic Causes of French Revolution)

फ्रांस की दयनीय आर्थिक अवस्था फ्रांस की क्रांति का प्रमुख कारण थी। कहा गया है कि फ्रांस की क्रांति को शीघ्र लाने का उत्तरदायित्व आर्थिक कारणों पर था और दार्शनिक विद्वान द्वारा तैयार किया गया बारूद आर्थिक कारणों के द्वारा भड़काया गया था। लुई चौदहवें के युद्धों ने देश की आर्थिक व्यवस्था को अत्यधिक शोचनीय बना दिया था। जिस समय उसकी मृत्यु हुई, उस समय देश की आर्थिक अवस्था अत्यन्त खराब थी। यद्यपि उसने लुई पन्द्रहवें को आर्थिक अवस्था सुधारने और युद्धों से बचने का परामर्श दिया था, किन्तु लुई पन्द्रहवें ने उसके परामर्श पर विशेष ध्यान न दिया, अपितु उसने बहुत से युद्धों में भाग लिया। राजमहल और प्रेमिकाओं पर भी बहुत रुपया नष्ट किया। जब लुई सोलहवाँ फ्रांस की राजगद्दी पर बैठा तो उस समय फ्रांस का दिवाला निकलने वाला था, परन्तु फिर भी फ्रांस ने अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के युद्ध में भाग लिया। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अमेरिका के स्वतन्त्र युद्ध में भाग लेने से ही फ्रांस में वह आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ जो आगे चलकर फ्रांस की क्रांति का कारण बना।

फ्रांस की अर्थ-व्यवस्था शोचनीय थी। कुलीन वर्ग के लोग और पादरी राज्य के कोष में कुछ भी योगदान नहीं देते थे। अत: आश्चर्य नहीं कि करों का सारा बोझ साधारण जनता पर पड़ता था। यह अपने में ही असन्तोष उत्पन्न करने का कारण था। राष्ट्रीय ऋण भी बहुत अधिक बढ़ गया था। सरकार की आय उसके द्वारा दी जाने वाली राष्ट्रीय ऋण के ब्याज की राशि से भी कम थी, अत: सरकार के लिए बजट को सन्तुलित रखना असम्भव ही था। एडम स्मिथ तथा आर्थर यंग ने फ्रांस को आर्थिक गलतियों का

अजायबघर बताया। यद्यपि तूर्जो (Turgot) जो 'No Bankruptcy, no increase in taxation, no more borrowing' में विश्वास रखता था, ने फ्रांस को इस संकट से निकालने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया, किन्तु वह कुलीन वर्ग का सामना न कर सका। नेकर (Necker) ने भी आर्थिक संकट दूर करने की कोशिश की, किन्तु वह भी असफल रहा।

इस आर्थिक संकट को दूर करने के इरादे से लुई सोलहवें ने 1787 ई० में कुलीन वर्ग की एक सभा बुलाई। ऐसे आशा थी कि ये लोग विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग (Priviledged classes) के लोगों पर कर लगाने के प्रस्ताव पर अपनी स्वीकृति दे देंगे, परन्तु कुलीन वर्ग राजा पर यह कृपा करने के लिए तैयार न था। राजा ने और ऋण प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु पेरिस की संसद ने अन्य कर्ज और नए करों की अनुमति देने से इन्कार कर दिया। इसने अधिकारों का एक घोषणा-पत्र (Declaration of Rights) तैयार किया और यह दावा किया कि धन की माँगें सांविधानिक दृष्टि से केवल एस्टेट्स जनरल (Estates General) के द्वारा ही स्वीकृति की जा सकती हैं। सरकार ने पेरिस की संसद के विरुद्ध कार्यवाही की और उसको समाप्त कर दिया। इससे जनता में अत्यधिक आक्रोश उत्पन्न हुआ और सैनिकों ने जजों को गिरफ्तार करने से इन्कार कर दिया। जनता ने एस्टेट्स जनरल के अधिवेशन की माँग की। इन परिस्थितियों में राजा को झुकना पड़ा और उसने 175 वर्षों (1614-1789 ई०) के बाद एस्टेट्स जनरल के निर्वाचनों के लिए आदेश जारी किए। इस प्रकार फ्रांस की 1789 ई० की क्रांति प्रारम्भ हुई।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. अमेरिकी क्रांति के मौलिक कारणों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
Describe in detail the root causes of American revolution.

उत्तर

अमेरिकी क्रांति के मौलिक कारण
(Root Causes of American Revolution)

अमेरिकी क्रांति के मौलिक कारण निम्नलिखित हैं—

1. **अमेरिकावासियों का ब्रिटेन के प्रति दृष्टिकोण** (American outlook)—जो अंग्रेज ब्रिटेन से देश निकाले के रूप में अमेरिका भेजे गए थे, उनका इंग्लैण्ड की सरकार से असन्तुष्ट होना स्वाभाविक था। अत: वह अंग्रेजों के अनुचित व्यवहार को सहन नहीं करते थे तथा वहाँ के निवासियों को अंग्रेजों के प्रति भड़काते रहते थे। इस समय तक अमेरिका के प्रत्येक क्षेत्र में विकास होने लगा था, उनमें स्वतन्त्रता की भावना शक्तिशाली होने लगी थी। अब वे स्वतन्त्रता के अभिलाषी बन गए थे। वे सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों को स्वीकारने को तैयार न थे।
2. **अमेरिकावासियों का अंग्रेज होना** (British Origin of Americans)—अमेरिका के निवासियों में वही रक्त संचरित था जो ब्रिटेन निवासी अंग्रेजों में था, क्योंकि अमेरिकावासी भी मूलत: अंग्रेज थे। यदि ब्रिटेन निवासी स्वतन्त्रता प्रेमी हो सकते थे तो अमेरिकी निवासी भी स्वतन्त्रता के लिए उतने ही उत्सुक हो सकते थे। एक अमेरिकी के शब्दों में, 'अमेरिका की स्वतन्त्रता की स्थापना करने वाले अंग्रेज ही थे, अन्य कोई नहीं और उन्होंने यह कार्य अंग्रेजी इतिहास के आधार पर ही किया।'
3. **दृष्टिकोणों में भिन्नता** (Difference in Attitudes)—इंग्लैण्ड तथा अमेरिका का दृष्टिकोण अलग-अलग था। इंग्लैण्ड के लोग कुलीन राजतन्त्र के थे, किन्तु अमेरिकी जनतन्त्र के समर्थक थे। उनकी दृष्टि से सभी लोग एक समान थे। एक अमेरिकी लेखक ने तत्कालीन अंग्रेजी समाज का निम्न शब्दों में वर्णन किया है, "इंग्लैण्ड के समाज में इस समय राज्य वालों, सेनानायकों, दास-स्वामियों एवं धनी व्यापारियों जैसे धनाढ्यों का ही प्रभुत्व बना हुआ है।"
4. **असन्तोषजनक शासन प्रणाली** (Unsatisfactory Administrature System)—उपनिवेशों की शासन-प्रणाली दोषरहित न थी। वहाँ की कार्यकारिणी तथा व्यवस्थापिका सभा में निरन्तर संघर्ष होते रहते थे। कौंसिल के सदस्य राजा द्वारा मनोनीत किए जाते थे। व्यवस्थापिका सभा के सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते थे। कौंसिल के सदस्य सम्राट के प्रति और व्यवस्थापिका सभा जनता के प्रति उत्तरदायी थी। गवर्नर जनरल को लोकसभा के कानून को रद्द करने का अधिकार था। उपनिवेश अपनी सभा को शक्तिशाली मानते थे, किन्तु सरकार उसे यह मान्यता नहीं देती थी। इस प्रकार एक संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती थी।

PUCHH PASS

5. **व्यापारिक प्रणाली** (Commercial System)—दोषपूर्ण व्यापारिक प्रणाली होने के कारण अमेरिका के निवासी असन्तुष्ट थे। इंग्लैण्ड समझता था कि अमेरिका अंग्रेजी साम्राज्य का ही एक अंग है तथा इंग्लैण्ड की संसद को उसके विषय में कानून पारित करने का पूर्ण अधिकार है। इंग्लैण्ड की विचारधारा थी कि अमेरिका इंग्लैण्ड का उपनिवेश है और सदैव उपनिवेश ही बना रहना चाहिए। साम्राज्य की एकता को बनाए रखना उनका नैतिक कर्त्तव्य है। इंग्लैण्डवासी यह नहीं सोचते थे कि उनकी सरकार अमेरिका में शोषण तथा दमन कर रही है। अंग्रेज उपनिवेशों को धनोपार्जन का एक साधन समझते थे। अंग्रेजों की व्यावहारिक प्रणाली यथार्थ में आर्थिक शोषण का ही दूसरा रूप थी। समस्त वस्तुओं के लिए इंग्लैण्ड पर निर्भर रहने के कारण व्यापार का सन्तुलन अमेरिका के विरुद्ध रहता था। अमेरिका में सोने-चाँदी की कमी हो रही थी व कागजी मुद्रा का प्रसार बढ़ रहा था। इंग्लैण्ड पर आश्रित होने के कारण अमेरिका की आर्थिक स्थिति शोचनीय थी। अमेरिका के निवासी जो मुख्यत: व्यापारी थे, अंग्रेजों के समान धनी बनना चाहते थे। अत: उन्होंने वेस्टइण्डीज से नहीं वरन् यूरोप के देशों से उच्च स्तर पर व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किए। अमेरिका के जहाज किसी भी प्रकार से अंग्रेजों के जहाजों से कम न थे, परन्तु अंग्रेजों की नीति व प्रतिबन्धों ने अमेरिकी जहाजों का विकास न होने दिया। अंग्रेजों का उद्देश्य स्वयं को समृद्ध बनाना था न कि उपनिवेशों को। इंग्लैण्ड का वैभव व समृद्धि उपनिवेशों के लिए ईर्ष्या का विषय थी। अमेरिका के निवासियों ने अपने जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के लिए तस्कर व्यापार प्रारम्भ किया। जब अंग्रेजों ने इस तस्कर व्यापार को रोकने का प्रयास किया तो अमेरिकावासियों ने इंग्लैण्ड की सरकार पर यह आरोप लगाया कि वह आयात-पत्र (Import-Duty) को समाप्त करके अमेरिका की मण्डियों को अंग्रेजी सामान से भर देना चाहती है जिससे अमेरिका के उत्पादकों का पूर्णरूपेण सफाया हो जाए। अत: अमेरिकावासियों की यह भावना थी कि वे अंग्रेजों की साम्राज्यवादिता का शिकार बने हुए हैं।
6. **सप्तवर्षीय युद्ध का प्रभाव** (Impact of the Seven Years War)—वार्नर-मार्टिन ने सप्तवर्षीय युद्ध को अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम का प्रमुख कारण बताया है। सप्तवर्षीय युद्ध में कनाडा पर पूर्ण अंग्रेजी अधिकार हो गया था और फ्रांस से भय सदैव के लिए अमेरिकावासियों के मन से निकल गया। बाह्य संकट समाप्त होते ही उपनिवेश वालों को अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत होना स्वाभाविक था। अंग्रेजों का इस बात से क्रोधित होना कोई आश्चर्य की बात न थी। यही नहीं, जब सप्तवर्षीय युद्ध में इंग्लैण्ड को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा तो ये उपनिवेश उन कठिनाइयों को दूर करने का अपना कोई दायित्व न समझते थे। इस प्रकार पारस्परिक द्वेष की अग्नि धीरे-धीरे प्रज्वलित होने लगी थी। अमेरिका के निवासियों को इंग्लैण्ड की समस्याओं का समाधान ढूँढ़ना था। अमेरिकी यह नहीं जानते थे कि सप्तवर्षीय युद्ध के कारण इंग्लैण्ड का राष्ट्रीय ऋण अत्यधिक बढ़ गया है। वे यह भी नहीं सोचते थे कि इंग्लैण्ड द्वारा लड़ाई में अमेरिका से तो एक साधारण-सी राशि ही माँगी जा रही थी।
7. **धार्मिक कारण** (Religious Causes)—यदि अमेरिका की विभिन्न बस्तियों का इतिहास देखा जाए तो ज्ञात होगा कि बसने का मूल कारण धार्मिक ही था। स्टुअर्ट काल में अंग्रेज पादरी सरकारी धर्म से तंग आकर इंग्लैण्ड छोड़ने पर बाध्य हुए थे। वे अमेरिका में बसकर अपने स्वतन्त्र धार्मिक विचारों पर चल सकते थे। वे इंग्लैण्ड की सरकार से घृणा करते थे। इन बस्तियों में प्रोटेस्टैण्ट तथा कैथोलिक दोनों सम्प्रदाय के लोग थे और दोनों सम्प्रदाय इंग्लैण्ड की धार्मिक नीति के कारण ही इंग्लैण्ड से भागे थे, अतएव दोनों सम्प्रदाय अंग्रेजी सरकार के घोर विरोधी थे।
8. **अपराध नियम** (Crime Rules)—उपनिवेश बस जाने पर इंग्लैण्ड की सरकार ने अनैतिक अपराधियों को उपनिवेश में भेजना प्रारम्भ किया। इस प्रकार से बुरे चरित्र वाले लोगों की वहाँ संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। सरकार ने 17वीं शताब्दी में यह नियम भी पारित किया कि कोई भला आदमी उपनिवेश में प्रवेश न कर सके। अतएव उपनिवेश में जाने वाले प्रत्येक अंग्रेजी जहाज की तलाशी ली जाने लगी और यह प्रयत्न किया गया कि अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति उपनिवेश में बसने न पाए। इस प्रकार उपनिवेश में बसने वाला व्यक्ति या तो धार्मिक अत्याचार से तंग आकर भागा या अपराध करने पर उसे बलपूर्वक वहाँ ले जाया जाता था। दोनों प्रकार के व्यक्ति इंग्लैण्ड की सरकार के विरोधी होते थे और अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने का प्रयत्न करते थे।
9. **भूमि की अधिकता तथा यातायात की कमी** (Lack of Transportation and Surplus of Land)—अमेरिका में भूमि तो अधिक थी, परन्तु जनसंख्या थोड़ी थी। इस भूमि के लालच से अन्य देश के निवासी भी वहाँ बसने लगे। अनेक डच लोग वहाँ बसे। डच लोगों को इंग्लैण्ड से प्रेम होने का प्रश्न ही नहीं था। इसके अतिरिक्त, इन उपनिवेशों के मध्य

TOUCH 'n' PASS

यातायात की कमी थी, सड़कों का अभाव था, रास्ते में बीहड़ जंगल थे। अतएव इनमें आपसी सम्पर्क कोई विशेष न था और अंग्रेजी नियन्त्रण भी इन सब बस्तियों में पूरा न था। अतएव जब विद्रोह हुआ तो एक बस्ती का समाचार दूसरी बस्ती पर न पहुँच सका और उनके विद्रोह दबाने में कठिनाई पड़ी।

10. **ग्रेनविल के चार आपत्तिजनक कार्य** (Four objectionable works of Grenville)—इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री ग्रेनविल (Grenville) ने चार ऐसे आपत्तिजनक कार्य किए जिनसे अमेरिकावासी अत्यधिक क्रुद्ध हो उठे। ये कार्य निम्नवत् थे—
   (i) अमेरिका की चोर-बाजारी को दूर करने के लिए ग्रेनविल ने '**एडमिरेल्टी कोर्ट**' की स्थापना की। इससे अमेरिका में हलचल मच गई तथा उनमें सरकार के प्रति विद्वेष उत्पन्न हो गया। चूँकि ग्रेनविल ने कागज-पत्रों को पढ़कर ही चोर-बाजारी का पता लगाया था, इसलिए कहा जाता है कि 'ग्रेनविल के द्वारा कागज-पत्रों को पढ़े जाने के कारण ही इंग्लैण्ड ने अमेरिका को खो दिया।'
   (ii) 1763 ई० में एक अन्य कानून शीरा के निर्यात के सम्बन्ध में पारित किया गया जिसे '**शीरा कानून**' (Duty on Molasses) कहते हैं। यह भी असन्तोष का एक मुख्य कारण था।
   (iii) ग्रेनविल ने एक घोषणा द्वारा मिसीसियों में बड़े-बड़े भाग रेड इण्डियन (Red Indians) के लिए सुरक्षित कर दिए। इससे भी अमेरिका ग्रेनविल के विरुद्ध हो गए।
   (iv) अमेरिका की सुरक्षा के लिए ग्रेनविल ने एक छोटी सेना अमेरिका में रखने की घोषणा की, जिसके खर्च का 1/3 उपनिवेश निवासियों से देने को कहा गया इससे अमेरिका निवासी भड़क उठे। यद्यपि, वार्नर-मार्टिन म्योर के शब्दों में, "ग्रेनविल का यह सोचना असंगत नहीं था कि उपनिवेशों को सेना के खर्चे के लिए कुछ सहायता देनी चाहिए।" किन्तु अमेरिकावासी इससे सहमत न थे।

प्र.2. अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।
Describe the major events of the American war of independence.

उत्तर

अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ
(Major Events of the American war of Independence)

जार्ज तृतीय की हठ के कारण उपनिवेशों की सामूहिक प्रार्थना अस्वीकार कर दी गई, अतएव फिलाडेल्फिया की सभा ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध 1775 ई० में युद्ध की घोषणा कर दी।

1. **लेक्सिंगटन** (Lexingtion) **का युद्ध**—अमेरिका के स्वतन्त्रता की सर्वप्रथम घटना 19 अप्रैल, 1775 ई० में लेक्सिंगटन के स्थान पर हुई। अंग्रेजी और उपनिवेशिक सेना में घमासान युद्ध हुआ, परन्तु हार-जीत का निर्णय न हो सका। कुछ दिनों बाद 25,000 उपनिवेशिकों ने बोस्टन को घेर लिया।
2. **स्वतन्त्रता की घोषणा** (Declaration of Independence)—उपनिवेशिकों की एक सभा पुन: हुई, जिसमें समस्त प्रान्तों को मिलाकर '**संयुक्त राज्य अमेरिका**' (United States of America) का नाम दिया गया। प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधि निश्चित किए गए, सब प्रतिनिधियों के हस्ताक्षरों से 'स्वतन्त्रता घोषणा-पत्र' 4 जुलाई, 1776 को जारी किया गया। इस घोषणा-पत्र में कहा गया था, "ईश्वर ने सब मनुष्यों को समान बनाया है। ईश्वर ने उन्हें कुछ ऐसे अधिकार दिए हैं, जिन्हें उनसे कोई छीन नहीं सकता। इन अधिकारों में जीवन, स्वतन्त्रता और सुख के लिए प्रयत्न शामिल हैं।" घोषणा-पत्र में यह भी कहा गया था कि चूँकि ब्रिटिश सरकार ने अमेरिकावासियों पर अत्यधिक अत्याचार किए हैं अतएव, "हम संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिक विश्व के सर्वोच्च न्यायाधीश से यह निवेदन करते हैं कि अब हम स्वतन्त्र राज्य के निवासी हैं तथा हम ब्रिटिश सम्राट के प्रति निष्ठा से मुक्त हो चुके हैं तथा हमारे व ब्रिटेन के मध्य अब किसी प्रकार का राजनीतिक सम्बन्ध शेष नहीं है। अत: वे युद्ध, शान्ति, सन्धि, व्यापार एवं अन्य सभी मामलों में अधिकारिक रूप से निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र हैं जो कि एक स्वतन्त्र राज्य के अधिकार होते हैं।"
3. **बंकर्स हिल** (Bunker's Hill) **की लड़ाई**—दक्षिणी उपनिवेशों ने अपने गवर्नरों को निष्कासित कर दिया और युद्ध में सम्मिलित हो गए। बोस्टन में अंग्रेजों ने बंकर्स पहाड़ी पर अपना मोर्चा लगाया, अतएव उपनिवेशों को इस युद्ध में हारना पड़ा।

TOUCH 'n PASS

4. **ब्रुकलिन** (Brooklyn) **की लड़ाई**—जॉर्ज वाशिंगटन के पास सीमित साधन होते हुए भी उसमें असीम उत्साह, उमंग तथा धैर्य था। यह भीषण से भीषण परिस्थितियों में भी निराश न होने वाला साहसी व्यक्ति था। वह कनाडा को अपनी ओर मिलाना चाहता था, परन्तु असफल रहा। वाशिंगटन क्रामवैल के समान ही अदम्य साहसी था, उसने सेना को शिक्षित किया और पुन: ब्रुकलिन के मैदानों में अंग्रेजों का सामना करने गया, परन्तु उसे पुन: हारना पड़ा। अत: वाशिंगटन को न्यूयार्क तथा न्यूजर्सी को खाली करना पड़ा।

अमेरिका की सरकार को फिलाडेल्फिया (Philadelphia) को भी खाली करना पड़ा। अमेरिकी लगातार हारने से घबरा गए। अंग्रेज जनरल होय (Howe) ने भागती हुई अमेरिकी सेनाओं का पीछा किया। वाशिंगटन ने पुन: सैनिकों में साहस का संचार किया और कुछ सैनिक टुकड़ियों को जनरल होय को पीछे से घेरने को भेज दिया। वाशिंगटन के इस चतुराईपूर्ण कार्य का आश्चर्यजनक परिणाम हुआ। अपने पीछे भी सेना को देखकर होय घबराकर न्यूयार्क वापिस चला गया। उपनिवेशिक सेना में पुन: उत्साह की लहर आ गई।

1777 ई० में अंग्रेजों ने अमेरिकी विद्रोह को पूर्णतया कुचलने का इरादा किया। अंग्रेज जनरल बरगोयने (Burgoyne) ने कनाडा में एक सेना तैयार की और हडसन की ओर प्रस्थान किया। इधर जनरल होय भी उसकी सहायतार्थ न्यूयार्क से हडसन (Hudson) पहुँचा। फिलाडेल्फिया को अंग्रेजों ने घेर लिया। वाशिंगटन ने वीरतापूर्वक अंग्रेजों का सामना किया, किन्तु उसे हारकर फिलाडेल्फिया छोड़कर अपने सर्दियों के स्थान सूकिल (Schuyekili) के किनारे जाना पड़ा। यहीं उसने होय के कैम्प पर आक्रमण करने की योजना तैयार की। उसने अपने पत्र में अपनी कठिनाइयों का वर्णन करते हुए लिखा, 'केवल कुछ सैनिकों के पास एक से अधिक कमीजें हैं, बहुतों के पास एक ही फटी-पुरानी कमीज है और बहुतों के पास वह भी नहीं। अधिकांश जवान नंगे पाँव हैं और उनके नंगे पैरों से बहते हुए रक्त द्वारा यह पता चलाया जा सकता है कि वे किधर गए हैं। इतना ही नहीं उनके पास राशन भी पर्याप्त नहीं है।'

ऐसी कठिन परिस्थितियों में युद्ध करना सरल कार्य न था। इसके अतिरिक्त, सर्दी ने अनेक सैनिकों को बीमार कर दिया तथा अनेक सेना से भागने पर विवश हुए, परन्तु वाशिंगटन के समर्थक उसके साथ डटे रहे और शीघ्र ही उन्हें अपनी सफलता दृष्टिगोचर होने लगी।

5. **साराटोगा** (Saratoga)—जनरल बरगोयने (Burgoyne) तथा होय जब अपने कार्य में सफल हो रहे थे तभी अमेरिकी जनरल गेट्स ने आश्चर्यजनक कार्य किया। उसने आगे बढ़कर उत्तरी हड़सन को घेरकर, बरगोयने के रास्ते को बन्द कर दिया। ज्यों ही बरगोयने ने गेट्स पर आक्रमण करने का विचार किया, उसने अपने पीछे जनता का अथाह समुद्र लहरें लेता हुआ देखा। युद्ध हुआ और गेट्स की विजय हुई। बरगोयने को 17 अक्टूबर, 1777 ई० को हथियार डालने पड़े। अंग्रेजों को जब यह समाचार मिला तो वे कांप उठे। लॉर्ड चैथम, जो पहले ही अमेरिका से सन्धि के पक्ष में था, ने कहा, 'तुम अमेरिका को नहीं जीत सकते। मैं एक अंग्रेज हूँ लेकिन यदि मैं अमेरिकी होता तो विदेशी आक्रमण के समय मैं कभी अपने हथियार न डालता कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।'

अमेरिका की साराटोगा (Saratoga) विजय ने अमेरिकावासियों में नवीन उत्साह का संचार किया। यही नहीं, इंग्लैण्ड के पुराने शत्रुओं को भी विश्वास हो गया कि अब इंग्लैण्ड हार जाएगा, उन्होंने अपने सप्तवर्षीय युद्ध में हार का प्रतिशोध लेना चाहा। फ्रांस ने 1778 ई० में 'संयुक्त राज्य अमेरिका' को स्वतन्त्र देश मान लिया और उससे सन्धि कर इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। कुछ समय पश्चात् स्पेन ने भी इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

यूरोप के देश रूस, डेनमार्क, स्वीडन, हॉलैण्ड तथा पर्शिया ने संगठन बनाया और अमेरिका को भी युद्ध-सामग्री भेजना प्रारम्भ किया। साथ ही यह घोषणा की कि इंग्लैण्ड को किसी तटस्थ राष्ट्र के जहाजों की तलाशी लेने का कोई अधिकार नहीं।

फ्रांस तथा स्पेन की जल सेना भी अब सम्मिलित रूप से अंग्रेजी चैनल में पहुँच गई तथा उसने अंग्रेजी तट पर उतरने की धमकी दी। इसी समय लॉर्ड चैथम ने भी मरते हुए कहा, 'क्या हम बोरबान वंश के सामने दण्डवत् करते हुए लेट जाएँगे।' इन शब्दों ने अंग्रेजी जनता को अपने कर्त्तव्य का बोध करा दिया। यद्यपि अमेरिका में उसे पराजय का सामना करना पड़ा, परन्तु अब देश पर आयी हुई आपत्ति का उन्होंने संगठित होकर सामना किया। स्पेन तथा फ्रांस की जल सेना ने जिब्राल्टर को घेरा। शीघ्र ही हॉलैण्ड भी स्पेन तथा फ्रांस से मिल गया, किन्तु अंग्रेजों ने तीनों देशों की संयुक्त जल-शक्ति का मुकाबला किया।

जनरल बरगोयने के हथियार डालने के कारण इंग्लैण्ड में एक निराशा का वातावरण छा गया था, किन्तु शीघ्र ही लॉर्ड कॉर्नवालिस की विजयों ने निराशा के बादलों को तितर-बितर कर दिया, किन्तु, 1781 ई० में लॉर्ड कॉर्नवालिस को अचानक वाशिंगटन ने यार्कटाउन में घेर लिया और लॉर्ड कॉर्नवालिस को हथियार डालने पड़े। यह समाचार जब इंग्लैण्ड पहुँचा तो लॉर्ड नॉर्थ के मुँह से निकला, 'सब कुछ समाप्त हो गया।'' उसने त्याग-पत्र दे दिया। रौकिंघम प्रधानमन्त्री बना तथा उसने सन्धि की वार्ता प्रारम्भ की। फ्रांस ने भारत के, बंगाल के अतिरिक्त, समस्त प्रान्तों की माँग की। स्पेन ने जिब्राल्टर की माँग की आयरलैण्ड ने भी अपनी सेना तैयार कर ली। इंग्लैण्ड के साम्राज्य का विघटन होता प्रतीत हुआ, परन्तु उसकी जल-शक्ति ने उसे आशा बंधाई। दो वर्ष और युद्ध चलता रहा, फ्रांस के बेड़े की हार ने अमेरिका को विदेशी सहायता की आशा से वंचित कर दिया। 1783 ई० में दोनों पक्षों ने सम्मानपूर्वक वार्साय की सन्धि पर हस्ताक्षर कर युद्ध बन्द कर दिया।

प्र.3. अमेरिकी स्वाधीनता संग्राम के नेताओं की विवेचना कीजिए।
Discuss the leaders of the American war of independence.

उत्तर

अमेरिकी स्वाधीनता संग्राम के नेता
(Leaders of the American War of Independence)

स्वाधीनता संग्राम के मुख्य नेता इस प्रकार से थे—

1. जॉर्ज वाशिंगटन (George Washington) (1732 ई० से 1799 ई० तक)

वाशिंगटन का जन्म 11 फरवरी, 1732 ई० को ब्रिज्स क्रीक (वर्जीनिया) में हुआ था। 20 जुलाई, 1749 ई० को वाशिंगटन ने भू-मापक का कार्य सम्भाला। कुछ समय पश्चात् वह सेना में सम्मिलित हो गए। उन्होंने चर्च, काउण्टी व सेना के महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया।

जॉर्ज वाशिंगटन अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति थे, किन्तु उनकी कीर्ति एक राष्ट्रपति के रूप में नहीं वरन् एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में अधिक है। उन्होंने अमेरिका की स्वाधीनता के लिए अपार कष्ट सहते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया। 6 नवम्बर, 1752 ई० को मेजर के पद से उन्होंने अपना सैनिक जीवन प्रारम्भ किया। 24 जुलाई, 1758 ई० को वह वर्जीनिया के प्रतिनिधि चुने गए। उनकी यह सफलता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। 1761 ई० में उन्होंने दक्षिण राज्यों की 1887 मील लम्बी यात्रा घोड़ागाड़ी से तय की। 1774 ई० के ऐतिहासिक फिलाडेल्फिया सम्मेलन में उन्होंने वर्जीनिया का प्रतिनिधित्व किया। 16 जून, 1775 ई० को उत्तरी अमेरिका के संयुक्त प्रान्तों के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कार्यभार ग्रहण किया तथा आगामी 8-9 वर्षों में उन्होंने ब्रिटिश सेना के छक्के छुड़ा दिए। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को इस बात के लिए बाध्य किया कि वह अमेरिका को मान्यता प्रदान करे। 28 मई, 1787 को उन्हें फिलाडेल्फिया में फेडरल सम्मेलन (Federal Conference) का अध्यक्ष चुना गया। जॉर्ज वाशिंगटन ने 17 सितम्बर, 1787 ई० को संविधान प्रारूप पर हस्ताक्षर किए व 30 अप्रैल, 1789 ई० को अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया।

जिस समय वाशिंगटन राष्ट्रपति बने, अमेरिका की स्थिति अच्छी न थी। देश में नवीन संविधान को न तो किसी परम्परा का सहारा था और न संगठित लोकमत का ही समर्थन प्राप्त था। संविधान के निर्माण के समय दो दल बने थे वे भी एक-दूसरे के विरोधी थे। संघवादी दल वाले शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता के पक्ष में थे और व्यापार तथा व्यापारिक हितों की रक्षा करना चाहते थे। संघ विरोधी दल वाले राज्यों को अधिकार देने तथा कृषि को प्रधानता देने के पक्ष में थे। इसके अतिरिक्त, नवीन शासन को संचालित करने के लिए कार्य-प्रणाली की व्यवस्था भी वाशिंगटन को स्वयं ही करनी थी। कर एकत्र नहीं हो रहे थे। न्याय-विभाग की स्थापना न होने के कारण, कानून लागू करने की व्यवस्था न थी। सेना अत्यन्त दुर्बल थी व नौ-सेना का अस्तित्व समाप्त हो चुका था। ऐसी संकटमयी स्थिति में वाशिंगटन अमेरिका का राष्ट्रपति बना। उसका विवेकपूर्ण नेतृत्व कसौटी पर था।

वाशिंगटन ने राष्ट्रपति पद ग्रहण करते समय अधिकारों का निष्ठापूर्वक पालन करने व अपनी पूर्ण क्षमता से 'संयुक्त राज्य के संविधान के परीक्षण, संरक्षण और प्रतिक्षण' का वायदा किया। जिन गुणों के कारण वाशिंगटन क्रांति का प्रथम सैनिक बना था, उन्हीं गुणों ने उसे नवसंगठित गणतन्त्र का प्रथम राजनीतिज्ञ बना दिया। वाशिंगटन में भविष्य के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण योजनाएँ बनाने की दूरदर्शिता और असीम कष्ट सहने की क्षमता थी। वह चतुर की अपेक्षा सरल होना पसन्द करता था। वह साहसी व पराक्रमी होते हुए भी शालीन था, गम्भीर और यथार्थतः नम्र था तथा लोगों में अपने प्रति सम्मान तथा विश्वास उत्पन्न कर लेने की उसमें अद्भुत क्षमता थी।

TOUCH 'n' PASS

इस प्रकार जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में अमेरिका ने अपना जीवन प्रारम्भ किया। उसकी योग्य नीतियों से युद्ध से उत्पन्न हुई समस्याएँ सुलझने लगीं व देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगा। उत्तरी न्यूयार्क, पेनसिलवानियाँ और वर्जीनिया की सम्पन्न घाटियाँ शीघ्र ही विशाल गेहूँ-उत्पादक क्षेत्रों में परिणत हो गईं। व्यापार व उद्योग का विकास भी तीव्र गति से हुआ। मैसाचूसेट्स और रोड आइलैण्ड में कपड़े के महत्त्वपूर्ण उद्योग की नींव पड़ रही थी। न्यूयार्क, न्यूजर्सी और पेनसिलवानिया कागज, काँच व लोहे का निर्माण करने लगे थे। जहाजरानी इतनी बढ़ गई थी कि समुद्र पर इंग्लैण्ड के पश्चात् अमेरिका का स्थान हो गया। 1790 ई० से पूर्व ही अमेरिकी जहाज समूर बेचने और वहाँ से चाय, मसाले और रेशम लाने के लिए चीन जाने लगे थे।
जॉर्ज वाशिंगटन 1797 ई० तक राष्ट्रपति पद पर आसीन रहे। उनके पदमुक्त होने से पूर्व सरकार संगठित हो चुकी थी, राष्ट्रीय साख जम चुकी थी, समुद्री व्यापार बढ़ रहा था, उत्तर-पश्चिम क्षेत्र पर पुन: अधिकार हो गया था और शान्ति सुरक्षित हो गई थी।
4 जुलाई, 1798 ई० को वाशिंगटन ने ले० जनरल व प्रधान सेनापति का पद ग्रहण किया।
14 दिसम्बर, 1799 ई० को इस महान् स्वतन्त्रता सेनानी व अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति की मृत्यु हो गई।

2. टॉमस जैफर्सन (Thomas Jefferson) (1743 ई० से 1826 ई० तक)

टॉमस जैफर्सन का जन्म 1743 ई० में हुआ था। उसके पिता का नाम पीटर जैफर्सन था, जो कि एक एस्टेट (Estate) का स्वामी था। जैफर्सन के बाग-बगीचों में अनेक दास (Salves) काम करते थे। उनका भविष्य में जैफर्सन की विचारधारा पर व्यापक प्रभाव पड़ा। जैफर्सन ने 5 वर्ष की आयु से स्कूल जाना प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में चार वर्ष वह अंग्रेजी स्कूल में पढ़ा। नौ वर्ष की आयु में उसने लैटिन स्कूल जाना प्रारम्भ कर दिया। 16 वर्ष की आयु में उसने विलियम एण्ड मैरी कॉलेज (William and Marry College) में दाखिला ले लिया। इस कॉलेज में अध्ययन करते समय वह विलियम स्माल (William Small) नामक एक गणित के प्रोफेसर के सम्पर्क में आया। उनके प्रभाव से जैफर्सन की विचारधारा उदारवादी हो गई।
अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् जैफर्सन ने वकालत करना प्रारम्भ कर दिया। उसने मार्था वेल्स स्केल्टन (Martha Wayles Skelton) नामक एक विधवा स्त्री से विवाह किया। उसका विवाहित जीवन अत्यन्त सुखी था। उसके 6 बच्चे हुए थे, किन्तु जीवित केवल दो पुत्रियाँ ही रहीं। दुर्भाग्यवश जैफर्सन की पत्नी की मृत्यु हो गई। जैफर्सन ने उसके पश्चात् दूसरा विवाह नहीं किया।
1776 ई० से 1779 ई० तक वह लेजिस्लेटर रहा। 1779 ई० में जैफर्सन ने मुक्त शिक्षा प्रदान करने हेतु विधेयक पारित कराने का प्रयास किया, किन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सका। जैफर्सन शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व देता था।
जैफर्सन ने अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। 10 मई, 1775 ई० को फिलाडेल्फिया में द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस की बैठक हुई थी। इस कांग्रेस की वास्तविक प्रकृति, 'शस्त्र उठाने के कारण और आवश्यकता' की उस उत्तेजक घोषणा से स्पष्ट हुई थी, जिसे जैफर्सन ने बनाया था। जैफर्सन ने कहा, "हमारा कर्त्तव्य न्यायसंगत है। हमारी एकता सम्पूर्ण है। हमारे आन्तरिक साधन बहुत हैं और यदि आवश्यकता पड़ी तो विदेशी सहायता भी हम प्राप्त करेंगे। जो शस्त्र हमारे शत्रुओं ने हमें उठाने के लिए विवश किया है, उन्हें हम अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए प्रयोग करेंगे, हम दास होने की अपेक्षा स्वतन्त्र होकर मरने का एकमत संकल्प कर चुके हैं।"
जैफर्सन स्वतन्त्र लोकतन्त्र का पक्षधर था। जैफर्सन अत्यन्त चिन्तनशील व दार्शनिक था। उसका मुख्य उद्देश्य अधिकाधिक व्यक्तिगत स्वतन्त्रता प्राप्त करना था क्योंकि उसका विश्वास था कि संसार में 'प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक जनसमूह को स्वशासन का अधिकार है।' जैफर्सन अत्याचार व निरंकुशता का घोर विरोधी था तथा सदैव स्वतन्त्रता के विषय में सोचता था। उसका मानना था कि सब स्वतन्त्र पैदा होते हैं तथा उन्हें स्वतन्त्र ही रहना चाहिए।
1800 ई० में जैफर्सन अमेरिका का तीसरा राष्ट्रपति बना। उदारवादी विचारों के कारण उसे छोटे किसानों, दुकानदारों व अन्य कर्मकारों का समर्थन प्राप्त था। राष्ट्रपति बनने के पश्चात् उसने अपने एक मित्र को लिखा, "हमारे पोत के दृढ़ पार्श्वों की परीक्षा हो चुकी है। हम उसे उसके गणतान्त्रिक मार्ग पर बढ़ाएँगे और अब वह अपनी मनोहर गति से अपने निर्माताओं की कुशलता को स्पष्ट करेगा।" उसने अपने प्रथम भाषण में एक विवेकपूर्ण और मितव्ययी सरकार की स्थापना करने की प्रतिज्ञा की जो देश के निवासियों के मध्य व्यवस्था की रक्षा करते हुए उन्हें अपने उद्देश्य और विकास के प्रयत्नों को नियन्त्रित करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता देगी।
राष्ट्रपति निवास में जैफर्सन की उपस्थिति से ही प्रजातान्त्रिक प्रणालियों को प्रोत्साहन मिला। जैफर्सन के लिए एक साधारण नागरिक भी उतना प्रतिष्ठित था, जितना उच्चतर अधिकारी। उसने कर्मचारियों को यह सिखाया कि वे जनता के सेवक हैं। उसने कृषि व पश्चिम की ओर विस्तार को प्रोत्साहित किया। यह विश्वास कर कि अमेरिका उत्पीड़ितों का आश्रयदाता है, उसने

TOUCH 'n' PASS

नागरिकता के कानून को सरल बना दिया। सम्पूर्ण अमेरिका में शीघ्र ही जैफर्सनवादी भावना की लहर प्रवाहित होने लगी। परिणामस्वरूप एक के बाद एक राज्यों ने कानूनों को उदार बनाया।

जैफर्सन का एक प्रमुख कार्य नेपोलियन से लुइजियाना को खरीदना था। इससे अमेरिका का क्षेत्रफल लगभग दुगना हो गया। मिसिसिपी नदी के पश्चिम का प्रदेश मुहाने पर स्थित न्यू आर्लियन्स के बन्दरगाह सहित चिरकाल से स्पेन के अन्तर्गत था। बन्दरगाह ओहायो और मिसिसिपी घाटियों में उत्पन्न अमेरिकी माल के निर्यात के लिए आवश्यक था। जैफर्सन के राष्ट्रपति बनने के बाद ही नेपोलियन ने स्पेन की सरकार को विवश किया कि वह लुइजियाना नामक प्रदेश फ्रांस को वापिस कर दे। इससे अमेरिका के लोग अत्यन्त क्रोधित हुए, क्योंकि अमेरिका के ठीक पश्चिम में बड़ा औपनिवेशिक साम्राज्य बसाने की नेपोलियन की योजनाओं से व्यापारिक अधिकार और भीतर की सभी बस्तियों की सुरक्षा को संकट उत्पन्न हो जाता। जैफर्सन ने दृढ़तापूर्वक नेपोलियन के इस कार्य का विरोध किया तथा कहा कि यदि फ्रांस ने लुइजियाना पर अधिकार किया तो उसी क्षण से हम इंग्लैण्ड से गठबन्धन कर लेंगे तथा यूरोप के युद्ध में चला पहला तोप का गोला न्यू आर्लियन्स पर इंग्लैण्ड व अमेरिका की संयुक्त सेना के आक्रमण का संकेत होगा। नेपोलियन यह जानता था कि ऐमियन्ज की स्वल्पकालिक सन्धि के पश्चात् इंग्लैण्ड से एक दूसरा युद्ध होने वाला है और जब यह होगा तब लुइजियाना उसके हाथ से निकल जाएगा। इसलिए उसने लुइजियाना को अमेरिका के हाथ बेचने का निश्चय किया।

1803 ई० में अमेरिका ने डेढ़ करोड़ डॉलर में 26 लाख वर्ग किलोमीटर से भी अधिक भूमि व न्यू आर्लियन्स का बन्दरगाह खरीद लिया। अमेरिका को इससे बहुत लाभ हुआ। उसे सम्पन्न मैदानों का एक बहुत बड़ा क्षेत्र मिल गया था, जो अगले 80 वर्षों के भीतर विश्व का बहुत बड़ा अन्न भण्डार बनने वाला था। इसके अतिरिक्त, इसके द्वारा महाद्वीप की सभी प्रमुख नदियों पर भी नियन्त्रण रखा जा सकता था।

जैफर्सन के इस कार्य से उसकी लोकप्रियता दूर-दूर तक फैल गई, क्योंकि लुइजियाना बहुत बड़ा उपहार था, देश सम्पन्न था और राष्ट्रपति ने सभी वर्गों के लोगों को प्रसन्न करने का कठोर प्रयास किया था। इसी कारण 1805 ई० में वह पुन: राष्ट्रपति पद के लिए चुन लिया गया व 1809 ई० तक राष्ट्रपति के पद पर कार्य करता रहा।

जैफर्सन में शिक्षा व महानता के प्रति प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था। अत: 1809 ई० में पदमुक्त होने के पश्चात् भी वह वर्जीनिया विश्वविद्यालय के विकास के लिए कार्यरत रहा। उसके विचार अत्यधिक आधुनिक थे, इसी कारण उसकी विचारधारा को कुछ लोग बीसवीं सदी की मानते थे। अब्राहम लिंकन (Abraham Lincoln) ने जैफर्सन के विषय में लिखा है, "आधुनिक समय में अमेरिका का प्रत्येक दल जैफर्सन को अपना आदि पुरुष मानता है।"

विल्सन (Woodrow Wilson) ने भी जैफर्सन की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "जैफर्सन अपनी उपलब्धियों के कारण नहीं बल्कि मानवता के प्रति रुख के कारण अमर हैं।"

जैफर्सन ने अपनी कब्र पर लिखवाने के लिए स्वयं ही लेख (Epitaph) लिखा। जैफर्सन ने लिखा, "यहाँ पर स्वाधीनता की घोषणा का लेखक, धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए वर्जीनिया की स्टेच्यू व वर्जीनिया विश्वविद्यालय का पिता टॉमस जैफर्सन दफनाया गया है।"

जैफर्सन की मृत्यु 4 जुलाई, 1825 ई० को हुई।

प्र.4. फ्रांस की क्रांति 1789 ई० के पूर्व राजनीतिक, स्थिति का परीक्षण कीजिए।
Examine the political condition before the French revolution (1789).

उत्तर

फ्रांस की क्रांति के पूर्व राजनीतिक स्थिति
(Political Condition Before the French Revolution)

मध्ययुगीन यूरोप के अधिकांश देशों में सामन्तीय व्यवस्था (Feudal system) विद्यमान थी। फ्रांस भी इन्हीं देशों में से एक था। आधुनिक युग का प्रारम्भ होने के साथ ही सामन्तीय व्यवस्था ओझिल होने लगी तथा उसका स्थान शक्तिशाली राजवंशों के शासन ने लेना प्रारम्भ कर दिया। फ्रांस में हेनरी IV (1589 ई० से 1610 ई० तक) एक शक्तिशाली शासक हुआ। उसने एक नवीन राजवंश की स्थापना की जिसे बूर्बों वंश (Bourbon Dynasty) कहा जाता है। फ्रांस का बूर्बों वंश एक शक्तिशाली राजवंश प्रमाणित हुआ, जिसने फ्रांस में लगातार दो शताब्दियों तक कुशलतापूर्वक शासन किया।

हेनरी के पश्चात् उसका पुत्र लुई XIII (1610 ई० से 1643 ई० तक) फ्रांस की राजगद्दी पर आसीन हुआ। उसने अपने योग्य मन्त्री रिशलू (Richelieu) की सहायता से फ्रांस को यूरोप की प्रमुख शक्तियों में से एक बनाने का यथासम्भव प्रयास किया। लुई

TOUCH 'n PASS

XIII ने फ्रांस में सम्पूर्ण अधिकारों को अपने हाथों में लेने का प्रयास किया था, निरंकुशतापूर्वक शासन किया। लुई XIII का उत्तराधिकारी लुई XIV (1643 ई० से 1715 ई० तक) था जो अत्यन्त शक्तिशाली शासक प्रमाणित हुआ। वह राजा के दैवीय अधिकारों (Divine rights of the king) में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था। उसने अपनी शक्ति के द्वारा यूरोप में फ्रांस को उच्च स्थान प्रदान कराया, यद्यपि ऐसा करने के लिए उसे अनेक युद्ध लड़ने पड़े। लुई XIV अत्यन्त निरंकुश शासक था। उसका कहना था, "मैं ही राज्य हूँ। लुई XIV के युद्धों ने यद्यपि फ्रांस को यूरोप में सम्मान प्रदान किया, किन्तु उसकी इस नीति से फ्रांस को अत्यधिक आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा, जिससे फ्रांस की अर्थव्यवस्था लड़खड़ाने लगी। लुई XIV के पश्चात् फ्रांस का शासक लुई XV बना। लुई XV जब गद्दी पर बैठा तब वह मात्र पाँच वर्ष का था, अत: उसने पहले तो अपने चाचा के संरक्षण में 1715 ई० से 1723 ई० तक तथा बाद में कार्डिनेल फ्लेरी के संरक्षण में 1723 ई० से 1743 तक शासन किया। 1743 ई० से 1774 ई० तक लुई XV ने स्वयं शासन किया। यह फ्रांस का दुर्भाग्य था कि लुई XV ने वहाँ इतने लम्बे समय तक शासन किया, क्योंकि वह एक अयोग्य शासक था। उसने अपना सम्पूर्ण जीवन विलासिता में ही व्यतीत किया। लुई XV के शासन-काल में ही वास्तविक अर्थों में फ्रांस में क्रांति के बीज बो दिए गए थे तो कुछ वर्षों के पश्चात् 1789 ई० में अंकुरित हुए। उसकी अकुशल नीतियों व गम्भीर आर्थिक स्थिति के कारण उसके उत्तराधिकारी लुई XVI (1774 ई० से 1793 ई० तक) को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ा।

इस प्रकार फ्रांस की क्रांति के समय वहाँ का शासक लुई XVI था।

अध्ययन की सुविधा के लिए क्रांति से पूर्व फ्रांस को निम्नलिखित शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है—1. राजनीतिक स्थिति, 2. आर्थिक स्थिति, 3. सामाजिक स्थिति, 4. धार्मिक स्थिति व 5. बौद्धिक क्रांति।

1789 ई० से पूर्व फ्रांस में जो शासन-व्यवस्था थी, उसे पुरातन-व्यवस्था (Old Regime) कहा जाता है। पुरातन-व्यवस्था की प्रमुख विशेषता उसमें व्याप्त अनियमितताएँ थीं, इसी कारण उसके लिए 'अपव्ययी अराजकता' (A prodigal anarchy), तथा 'शक्तियों का कचरा' (Debris of Powers), आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। पुरातन-व्यवस्था के अन्तर्गत समाज अनेक वर्गों में विभक्त था। उच्च वर्ग को अनेक विशेषाधिकार प्राप्त थे, जिससे निम्न वर्ग को अनेक अतिरिक्त कष्टों का सामना करना पड़ता था। तत्कालीन राजनीतिक स्थिति निम्नवत् थी—

1. **राजा के अधिकार** (Rights of the King)—फ्रांस में क्रांति से पूर्व निरंकुश राजतन्त्र था, जिसका सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था। राजा, राज्य का उच्च तथा देदीप्यमान प्रमुख और राष्ट्र की शक्ति, प्रतिष्ठा तथा वैभव का प्रतीक होता था। राजा, दैवीय अधिकारों (Devine rights) में विश्वास करने के कारण, स्वयं को किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था के प्रति उत्तरदायी नहीं मानता था तथा निरंकुशतापूर्वक शासन करना चाहता था, जैसा कि लुई XVI के कथन, "चूँकि मैं चाहता हूँ, इसलिए यह कानूनी है" से स्पष्ट है। राजा ही कानून बनाता, वही कर लगाता, खर्च भी अपनी इच्छानुसार करता, युद्ध की घोषणा करता तथा अपनी स्वेच्छा से ही अन्य राष्ट्रों के साथ सन्धि करता। राजा किसी भी व्यक्ति को बिना अभियोग बताए बन्दी बना सकता था। यद्यपि स्टेट्स जनरल तथा पार्लमां (States General and the Parlement) राजा की शक्तियों पर अंकुश लगाने वाली दो संस्थाएँ थीं, किन्तु स्टेट्स जनरल नियमित संस्था नहीं थी तथा राजा की इच्छा पर ही उसका अधिवेशन बुलाया जाता था। स्टेट्स जनरल का अधिवेशन 1614 ई० के बाद से क्रांति तक एक बार भी नहीं बुलाया गया था। फ्रांस में क्रांति के समय जब इसका अधिवेशन आमन्त्रित करने का प्रयास किया गया तो फ्रांस में उस समय किसी को इसके संगठन व चुनाव-व्यवस्था की जानकारी न थी। अनेक कठिनाइयों के उपरान्त स्टेट्स जनरल के चुनाव कराए गए। अत: इससे स्टेट्स जनरल की महत्त्वहीनता स्वत: ही प्रमाणित हो जाती है। फ्रांस में दूसरी संस्था पार्लमां थी, जो प्रतिनिधि संस्था न होकर एक उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) के समान थी। फ्रांस में कुल मिलाकर 13 पार्लमां थीं, जिनमें सबसे शक्तिशाली पेरिस की पार्लमां थी। पार्लमां का प्रमख कार्य, न्याय करने के अतिरिक्त राजा के आदेशों का पंजीकरण करना था। लुई XVI के शासनकाल में पार्लमां की शक्तियों में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई तथा वह राजा का प्रतिरोध भी समय-समय पर करने लगी। स्टेट्स के अस्तित्वहीन होने के कारण पार्लमां ही राजा और जनसाधारण के बीच एक माध्यम थी। अत: पार्लमां का विशेष महत्त्व था।
2. **राजा की विलासिता** (Lustiness of the Kings)—फ्रांस के बूर्बोवंशीय शासक अत्यन्त शान-शौकत से रहते थे तथा अत्यन्त विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। फ्रांस की राजधानी पेरिस थी, किन्तु राजा वार्साय (Versailles) में रहते थे, जो पेरिस से 12 मील की दूरी पर स्थित था। वार्साय में उनका आलीशान महल बना हुआ था, जिसे लुई XIV ने

TOUCH 'n PASS

करोड़ों डॉलर खर्च करके बनवाया था। उस महल में सैकड़ों कमरे, गिरजाघर, नाट्यशाला, भोजन कक्ष, सत्कार-गृह, अगणित अतिथि-भवन तथा नौकरों के रहने के लिए सैकड़ों कमरे बने हुए थे। इस महल में ही अनेक उद्यान, मूर्तियाँ, फव्वारे तथा कृत्रिम सरोवर बने हुए थे। राजा व राज-परिवार के लोग आमोद-प्रमोद में विलीन रहते थै। हैजन ने लिखा है कि इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि इन प्रासादों के निवासी अपने को सच्चे अर्थों में 'देवानां-प्रिय' समझते थे, क्योंकि पृथ्वी पर उससे अधिक विलासिता और तड़क-भड़क कहीं अन्यत्र देखने को नहीं मिल सकती थी।

3. **राजा की अपव्ययता** (Extravagency of Kings)—राजाओं के खर्चे भी असीमित थे। राजा तथा रानी दोनों ही कृपापात्रों एवं सेवकों को खुले हाथों से धन लुटाते थे तथा उच्च पद व पेंशन देकर राजकीय धन का अपव्यय करते थे। राजा तथा रानी के सेवक-सेविकाओं की संख्या ही 500 थी। रानी की नौकरानियों को दीपक बेचने का विशेष अधिकार था। ये दीपक केवल एक बार जलाए जाते थे, लेकिन उनसे प्रत्येक बेचने वाली को डेढ़ लाख का लाभ हो जाता था। कहा जाता है कि लुई XIV ने 1789 ई० से पूर्व के 15 वर्षों में तीस करोड़ रुपए इसी प्रकार के कार्यों में खर्च किए थे। इसी कारण हैजन ने लिखा है, "राजा की छत्र-छाया में फलने-फूलने वालों के लिए नि:सन्देह यह एक स्वर्ण युग था।" रानी आन्तनेत भी अत्यधिक अपव्ययी थी। कीमती चीजें खरीदने का उसे शौक था। प्रति सप्ताह वह चार जोड़ी जूते खरीदती थी। राज परिवार के लोगों द्वारा निरन्तर इसी प्रकार से अपव्यय करने का राजकोष पर गम्भीर प्रभाव होता था। इसी कारण फ्रांस में लोग राज दरबार को 'राष्ट्र की कब्र' (Grave of the Nation) कहते थे।
4. **अक्षम प्रशासनिक व्यवस्था** (Inefficient Administration)—फ्रांस की सरकार की स्थिति अत्यन्त खराब थी। फ्रांस की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यधिक दोषपूर्ण तथा अक्षम थी। प्रशासन में योजना व व्यवस्था का पूर्णतया अभाव था। विभागों में कार्यों का वितरण भी तर्कसंगत न था। अनेक ऐसे कार्य थे, जिनकी जिम्मेदारी कई विभागों में विभक्त थी, जिससे कोई भी विभाग उस कार्य को नहीं करता था। राजा को परामर्श देने के लिए पाँच समितियाँ थीं, जो कानून बनाने, आदेश जारी करने तथा अन्य घरेलू व विदेशी कार्यों को भी करती थीं। प्रशासन की दृष्टि से फ्रांस 36 भागों में विभक्त था, जिन्हें जिनेरालिते (Generalities) कहा जाता था। प्रत्येक जिनेरालिते का अध्यक्ष **ऐतादां** (Intendant) कहलाता था। ऐतादां, साधारणतया मध्यम वर्ग का होता था। इनकी नियुक्ति स्वयं राजा के द्वारा ही की जाती थी। इनका काम राजधानी के आदेशों का पालन करना तथा अपने काम की आख्या राजधानी को भेजना था। ये ऐतादां, वास्तव में उस कुशासन को चलाने के साधन थे, जिनकी वास्तविक शक्ति पूर्वोक्त पाँच समितियों के हाथों में थी। अत: ये भी निरंकुश रूप से ही प्रशासन करते थे।

फ्रांस में स्थानीय स्वराज्य संस्थाएँ (Local self government institutions) नहीं थीं। स्थानीय प्रशासन की नीतियाँ भी वार्साय से ही नियन्त्रित होती थीं। हेजन ने लिखा है कि वास्तविक अर्थ में राज्य भर में लालफीताशाही (Red tapism) का ही बोलबाला था। इस राक्षसी व्यवस्था के अन्तर्गत साधारण जनता की स्थिति मूक तथा असहाय पशुओं के समान थी, जो न तो बोल सकती थी और न ही कुछ कर सकती थी, जिधर को हांक दी जाती उधर ही चली जाती। उस समय फ्रांस में कोई ऐसी संस्था न थी जो जनता को राजनीतिक शिक्षा देती। सरकारी पदों पर नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं होती थी। उच्च वर्ग इन पदों को खरीद लेते थे तथा इस प्रकार अपनी आय व सम्मान को बढ़ाते थे। इन पदों के खरीदने व बेचने से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता था।

फ्रांस में ही अलग-अलग स्थानों के लिए अलग-अलग कानून थे। फ्रांस में तेरह प्रान्तों में व्यापार पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न था, किन्तु अन्य प्रान्त एक-दूसरे से इस प्रकार पृथक् थे जैसे अलग-अलग देश होते हैं। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को माल भेजने पर कर देना पड़ता था।

फ्रांस में न्याय-व्यवस्था भी अत्यन्त पेचीदा व दोषपूर्ण थी। फ्रांस में लगभग 400 प्रकार के न्याय विभाग थे। एक कार्य जो कस्बे में उचित माना जाता था, दूसरे में गैर-कानूनी माना जाता था। लिखित कानूनों की भी अधिकांश स्थानों पर व्यवस्था नहीं थी, कानून परम्परावादी तथा सामन्तीय भावनाओं से ओत-प्रोत थे? एक ही अपराध के लिए भिन्न-भिन्न प्रान्तों में अलग-अलग दण्ड का प्रावधान था। न्याय-व्यवस्था के उपर्युक्त दोषों के अतिरिक्त सर्वाधिक दोषपूर्ण गैर-कानूनी गिरफ्तारियों तथा प्रतिबन्धों का प्रचलन था। राजा बिना किसी पूर्व सूचना के किसी भी व्यक्ति को बन्दी बनवा सकता था। राजा ही नहीं वरन् उसका कोई भी कृपापात्र 'लेत्रे दे शाशे' (Letter de chachet) की सहायता से किसी को भी गिरफ्तार कर सकता था। यदि उस व्यक्ति का कोई प्रभावशाली व्यक्ति परिचित न हो तो सम्भवत: उसकी मृत्यु के समय तक भी उस केस को अदालत में प्रस्तुत नहीं किया जाता था। वाल्टेयर तथा मिराब्यू को भी इसी कुप्रणाली के द्वारा कुछ समय के लिए बन्दी बनाया गया था। फ्रांस का मध्य वर्ग इस कुप्रणाली का घोर विरोधी था।

फ्रांस के शासक इस प्रशासनिक व्यवस्था में किसी प्रकार का परिवर्तन करना नहीं चाहते थे। राजा विलासिता में ही लिप्त रहते थे। राज्य की समस्याओं की ओर ध्यान देने का उनके पास समय ही नहीं था। लुई XV के शासनकाल में जब उनके कुछ योग्य परामर्शदाताओं ने उसे सुझाव दिया कि फ्रांस में सुधार किए जाने की अत्यधिक आवश्यकता है तो विलासी लुई XV ने सुधार करने के स्थान पर जवाब दिया कि वर्तमान व्यवस्था में भी उसका समय तो कट ही जाएगा। अत: स्पष्ट है कि फ्रांस के राजा अदूरदर्शी, विलासी एवं योग्य न थे। ऐसे शासकों के अधीन अक्षम व कार्यकुशलहीन प्रशासनिक-व्यवस्था का होना स्वाभाविक ही था।

प्र.5. फ्रांस की क्रांति से पूर्व सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का परीक्षण कीजिए।
Examine the social and religious condition before the French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति से पूर्व सामाजिक स्थिति
(Social Condition Before the French Revolution)

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस की राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक स्थिति समान ही सामाजिक ढाँचा (social structure) भी अत्यन्त दोषपूर्ण एवं कष्टप्रद था। ऐसी अनेक कुरीतियाँ तथा बुराइयाँ तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान थीं, जिनका बुद्धि व जनहित से कोई सम्बन्ध न था। इनमें से अधिकांश प्रथाएँ सामन्तीय युग (feudal age) से चली आ रही परम्पराएँ थीं, जो 18वीं शताब्दी के अनुकूल नहीं थीं। तत्कालीन समाज में प्रत्येक व्यक्ति का व्यवसाय उसके जन्म के अनुसार बंटा हुआ था। जो जिस घराने में जन्म लेता था वह उन्हीं परिस्थितियों में रहता था, उसकी योग्यता अथवा अयोग्यता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए लिओ गर्शोय ने लिखा है, "फ्रांस का सामाजिक स्वरूप व्यक्ति के जीवन, स्वतन्त्रता व प्रसन्नता को बढ़ाने वाले सिद्धान्तों को प्रोन्नत करने वाला नहीं था। जब तक कि कोई व्यक्ति इतना भाग्यशाली न हो जो कि उसका जन्म उच्च वर्ग में हुआ हो।"

सामाजिक वर्गीकरण (Social Classification)

फ्रांसीसी समाज का वर्गीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है—

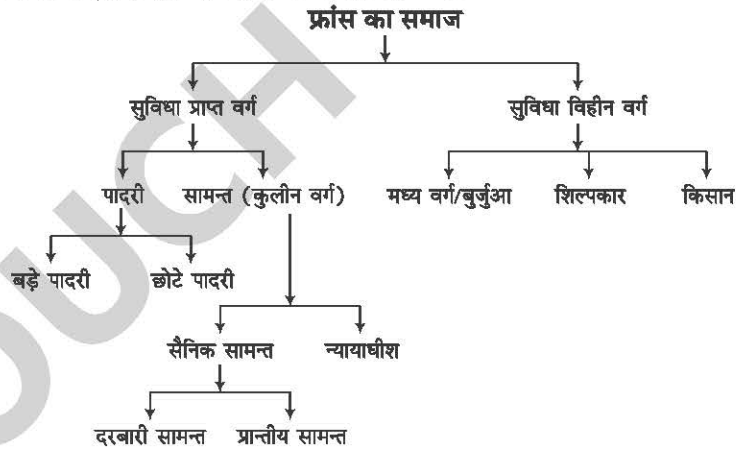

उपर्युक्त चार्ट से स्पष्ट है कि फ्रांस का समाज दो वर्गों में बंटा हुआ था। प्रथम, सुविधा प्राप्त वर्ग (Priviledged class), जिन्हें हर प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त थे। इस वर्ग में पादरी व कुलीन अथवा सामन्त आते थे। दूसरा, सुविधाविहीन वर्ग जिसके पास विशेषाधिकार अथवा सुविधाएँ न थीं, तथा इनका जीवन अत्यन्त कष्टप्रद था। इस वर्ग में जनसाधारण आता था। सुविधा प्राप्त वर्ग भी दो भागों—पादरियों व सामन्तों में बँटा हुआ था, अत: इस प्रकार फ्रांसीसी समाज में प्रमुखतया तीन वर्ग थे।
पादरी, सामन्त (कुलीन) तथा जनसाधारण, इनको क्रमश: प्रथम एस्टेट (First Estate) द्वितीय एस्टेट (Second Estate) तथा तृतीय एस्टेट (Third Estate), कहा जाता था।

1. **पादरी** (Clergy)—पादरी प्रथम एस्टेट के अन्तर्गत आने वाला वर्ग तथा इनका स्थान समाज में सर्वोच्च था। ये अत्यन्त शक्तिशाली तथा धनी थे। फ्रांस की कुल भूमि का लगभग 1/5वाँ भाग इनके अधीन था। इस भूमि से उन्हें अत्यधिक आय प्राप्त होती थी। इसके अतिरिक्त, वे किसानों से धार्मिक कर (Tithes) भी वसूल करते थे। यद्यपि यह वास्तविक अर्थों में राष्ट्रीय कर था, किन्तु इसका लाभ धर्माधिकारी उठाते थे। चर्च के अधिकारी अपने अधीन किसानों से जागीरदारी कर भी

TOUCH 'n PASS

वसूल करते थे। चर्च की वार्षिक आय लगभग दस करोड़ डालर थी, जिसे धार्मिक भवनों के निर्माण व मरम्मत, धार्मिक सेवाओं, चिकित्सालयों तथा पाठशालाओं की सहायता के लिए खर्च किया जाना चाहिए था, किन्तु वास्तविक स्थिति ऐसी न थी। फ्रांस की अन्य संस्थाओं के समान ही चर्च में भी घोर भ्रष्टाचार व्याप्त था, जिससे देश की नैतिक भावना को आघात लगा था। चर्च की आय का प्रमुख भाग बड़े अधिकारियों के व्यक्तिगत खातों में चला जाता था। इन धर्माचारियों में से कुछ का नैतिक चरित्र अत्यन्त निन्दनीय और विचारधारा निम्नस्तरीय थी।

चर्च के अधिकारियों की स्थिति में भी भारी अन्तर था। उच्च धर्माधिकारियों की स्थिति बहुत अच्छी तथा चर्च धर्म के प्रत्येक मामले में सर्वेसर्वा था, किन्तु चर्च के छोटे अधिकारियों की स्थिति बहुत खराब थी। उनकी और साधारण जनता की स्थिति में विशेष फर्क न था। अन्यायपूर्ण व्यवस्था से वे पूर्णतया परिचित थे, इस कारण क्रांति के समय इन लोगों ने जनसाधारण की सहायता की।

2. **कुलीन वर्ग** (Nobles)—विशेषाधिकार प्राप्त दूसरा वर्ग कुलीनों का था, जो राजदरबारी तथा बड़े-बड़े सरकारी अधिकारी होते थे। क्रांति से पूर्व फ्रांस में इनकी संख्या लगभग चार लाख थी। यद्यपि रिशलू तथा लुई XIV ने सामन्तों की शक्ति में पर्याप्त ह्रास किया था, किन्तु फिर भी यह वर्ग अभी शक्तिशाली था। फ्रांस की कुल भूमि का चौथाई भाग उनके अधीन था, जिसकी आय से ये लोग विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। सामन्तों में भी दो वर्ग थे—सैनिक सामन्त तथा न्यायाधीश।

वे सामन्त जिनके सम्बन्ध पुराने सैनिक परिवारों से थे—'सैनिक सामन्त' (Nobles of the Sword) की श्रेणी में आते थे। सैनिक सामन्त भी दो प्रकार के थे—दरबारी सामन्त (Court nobles) तथा प्रान्तीय सामन्त (Provincial nobles)। दरबारी सामन्त संख्या में कम थे, किन्तु वे अत्यन्त शान-शौकत व विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। राजदरबार में रहने के कारण उन्हें राजा के निकट आने का अवसर मिलता था, जिससे वे अत्यन्त शक्तिशाली हो गए थे। राजा के अधिकांश उच्च पदों पर उनका एकाधिकार था। प्रान्तीय सामन्तों की संख्या बहुत अधिक थी, किन्तु ये इतने प्रभावशाली न थे। अपने-अपने प्रान्तों में रहने के कारण उनका राजाओं से विशेष सम्बन्ध नहीं रहता था, अत: उनके प्रभावों में वृद्धि नहीं हो पाती थी। समाज में उन्हें न तो विशेष सम्मान ही प्राप्त था और न ही उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। फ्रांस की जनता के हृदय में सामन्त वर्ग के प्रति जो घृणा थी वह वास्तव में स्वार्थी तथा लालची दरबारी सामन्तों के लिए ही थी।

सामन्तों का दूसरा वर्ग न्यायाधीशों (Nobles of the Robes) का था। फ्रांस की पुरातन व्यवस्था में पदों को खरीदा जा सकता था। ऐसा पद खरीदने पर सरकार से उन्हें सामन्त (Nobles) होने का प्रमाण-पत्र प्राप्त हो जाता था। इस प्रकार सामन्तों के इस वर्ग का उदय हुआ था। ये लोग मध्यकालीन सामन्तों के वंशज न थे। इनमें से अधिकांश न्यायाधीश अथवा न्यायाधिकरणों के सदस्य थे अत: इन्हें 'न्यायाधीश सामन्त' कहा जाता था। ये वर्ग, अन्य सामन्तों की तुलना में उदारवादी थे तथा समय-समय पर राजा व सरकार के कानून का विरोध इन्होंने किया था, किन्तु अपने विशेषाधिकारों से इन्हें विशेष लगाव था, उन्हें छोड़ने के लिए वे तैयार न थे।

3. **तीसरा वर्ग** (Third Estate)—पादरी व सामन्त वर्गों के अतिरिक्त फ्रांस की शेष जनता इसी वर्ग में आती थी, जिसे तृतीय वर्ग (Third Estate) कहा जाता था। इस वर्ग को किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त न थे। इस वर्ग में भारी असमानता थी। धनी-से-धनी व्यक्ति अथवा प्रतिभाशाली साहित्यकार अथवा मजदूरी तथा किसान, जो भी पादरी व कुलीन वर्ग में न था, इसी तीसरे वर्ग का सदस्य था। यह वर्ग भी प्रमुखतया तीन भागों में विभक्त था—मध्यम वर्ग, शिल्पकार तथा किसान—

   (i) **मध्यम वर्ग** (Bourgeoisie)—फ्रांस के मध्यम वर्ग को 'बुर्जुआ' कहते थे। इस वर्ग के लोग शहरों में रहते थे तथा धनी, शिक्षित, अध्यापक, साहित्यकार, इंजीनियर व अन्य बौद्धिक लोग थे, जिन्हें शारीरिक कार्य नहीं करना पड़ता था। इस वर्ग के लोग, अक्लमन्द, मेहनती, शिक्षित एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण, पुरातन व्यवस्था के घोर विरोधी थे। पादरी एवं कुलीन वर्ग का इनके प्रति व्यवहार अच्छा न था, जिससे वे स्वयं को हीन महसूस करते थे। मध्यम वर्ग के अनेक धनी व्यापारियों ने सरकार को कर्ज दे रखा था, लेकिन सरकार की स्थिति को देखते हुए उन्हें अपने धन की चिन्ता होने लगी थी।

TOUCH 'n PASS

उल्लेखनीय है कि फ्रांस के सर्वाधिक बुद्धिमान धनी, सभ्य तथा प्रगतिवादी लोग मध्यमवर्गीय ही थे, किन्तु उनको कोई राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। मध्यम वर्ग राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करना चाहता था। पुरातन-व्यवस्था में समस्त राजनीतिक पदों पर कुलीन वर्ग का आधिपत्य था, अत: पुरातन-व्यवस्था की समाप्ति किए बिना मध्यम वर्ग को राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते थे। राजनीतिक अधिकारों के अभाव में मध्यमवर्गीय व्यापारियों को अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता था। राजा तथा कुलीन वर्ग स्वेच्छा से कर लगाते थे तथा नीतियों में परिवर्तन करते थे, जिसका परिणाम मध्यम वर्ग को भुगतना पड़ा था व उनके व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था।

मध्यम वर्ग मात्र राजनीतिक व्यवस्था में ही परिवर्तन का इच्छुक न था वरन् वे सामाजिक क्रांति भी चाहते थे। हैजन ने लिखा है, "वे सुरक्षित थे, उनके मस्तिष्क उस युग के साहित्य से, जिसका वे चाव से अध्ययन करते, ओत-प्रोत थे। वाल्टेयर, रूसो, मॉण्टेस्क्यू तथा अनेक अर्थशास्त्रियों के विचारों ने उन्हें आन्दोलित कर रखा था। व्यक्तिगत तुलना में वे उतने ही सुसंस्कृत थे जितना कुलीन वर्ग। वे सामाजिक समता चाहते थे, उनकी प्रबल इच्छा थी कि कानून इस बात को स्वीकार कर ले कि बुर्जुआ वर्ग के लोग कुलीन वर्ग के समान हैं।"

अत: मध्यम वर्ग के हितों के लिए फ्रांस की राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होना आवश्यक था। मध्य वर्ग में अपने हितों की रक्षा करने की प्रवृत्ति बलवती होती जा रही थी। यही कारण था कि फ्रांस की क्रांति में मध्यम वर्ग का प्रमुख योगदान रहा।

(ii) **शिल्पकार** (Artisans)—तृतीय वर्ग (Third Estate) मध्यम वर्ग के समान ही शहरों में रहने वाला दूसरा वर्ग शिल्पकारों का था। फ्रांस में उस समय इनकी संख्या लगभग 25 लाख थी। फ्रांस में महान् क्रांति से पूर्व उद्योग-धन्धे पूर्णतया विकसित नहीं हो सके थे, अत: इनकी संख्या कम ही थी। शिल्पकार अनेक श्रेणियों में विभक्त थे तथा प्रत्येक श्रेणी के अपने-अपने नियम थे। श्रेणियों के पारस्परिक सम्बन्ध अत्यन्त खराब थे तथा उनमें आपस में अक्सर झगड़े होते रहते थे। सरकार की ओर से इन शिल्पकारों को किसी प्रकार की सुविधा प्रदान नहीं की जाती थी।

(iii) **किसान** (Peasants)—फ्रांस में तृतीय वर्ग में सर्वाधिक संख्या किसानों की थी। फ्रांस में कुल मिलाकर भी किसानों की संख्या सर्वाधिक थी। फ्रांस की कुल जनसंख्या का 9/10वाँ भाग किसान ही थे, किन्तु फिर भी सबसे शोचनीय स्थिति उन्हीं की थी। करों का सम्पूर्ण भाग भी इन्हीं गरीबों के कन्धों पर था। किसानों को अपनी कुल आय का आधे से भी अधिक भाग करों के रूप में देना पड़ता था। सामन्तों को उन्हें भूमि-कर तथा चर्च को धर्मांश कर (Tithes) देना पड़ता था। इन सबका परिणाम यह होता था कि किसान सदैव आर्थिक संकट से ग्रस्त रहते थे। यदि कभी प्रकृति का प्रकोप हो जाता तो किसान भूखे मरने लगते थे, किन्तु सरकार को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। भूख से परेशान हजारों किसान लुटेरे बन गए थे। किसानों को हर कदम पर कर देना पड़ता था। पुलों तथा सड़कों तक का प्रयोग करने पर उनसे कर लिए जाते थे। आटे की चक्की तथा शराब बनाने के लिए कोल्हू का प्रयोग करने के लिए भी उन पर प्रतिबन्ध था कि वे अपने ही सामन्त की चक्की अथवा कोल्हू का प्रयोग करें चाहे उसके लिए उन्हें 4-5 मील जाना पड़ता था। चक्की अथवा कोल्हू का प्रयोग करने पर कर तो उन्हें देना ही पड़ता था।

उपर्युक्त कारणों से किसानों में असन्तोष की भावना बढ़ती जा रही थी। उन्हें अनुभव होने लगा था कि उनकी स्थिति में तभी परिवर्तन हो सकता है जब पुरातन-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन किया जाए। लिओ गर्शोय ने लिखा है, "किसान इतने दु:खी हो चुके थे कि वे स्वयं ही एक क्रांतिकारी तत्त्व के रूप में परिणित हो गए। उन्हें क्रांति करने के लिए मात्र एक संकेत की आवश्यकता थी, तथा उन्हीं की प्रमुख भूमिका ने 1789 ई० की क्रांति को सफल बनाया था।"

फ्रांस की क्रांति से पूर्व धार्मिक स्थिति
(Religious Condition Before the French Revolution)

फ्रांस में धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं थी। बूर्बों वंश रोमन कैथोलिक चर्च का अनुयायी था, अत: इसी चर्च का फ्रांस में प्रभुत्व छाया हुआ था। कैथोलिक चर्च के पास अपार धन-सम्पदा थी तथा उसके अधिकारी अत्यन्त शान-शौकत एवं विलासिता से रहते थे। फ्रांस में बड़ी संख्या में प्रोटेस्टैण्ट (Protestant) भी रहते थे। फ्रांस में इन्हें ह्यूगनोट (Huguenots) कहा जाता था। हेनरी IV ने अपने

TOUCH 'n' PASS

शासनकाल में इन्हें धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी थी, किन्तु मन्त्री रिशलू ने 'ह्यूगनोट्स' पर अत्यधिक अत्याचार किए। लुई XIV ने भी ह्यूगनोट्स को समाप्त करने के यथासम्भव प्रयास किए। 1685 ई० में ह्यूगनोट्स के सभी विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया तथा उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता को छीन लिया गया। लुई XIV के समय में यद्यपि ह्यूगनोट्स पर अत्याचार नहीं किए गए, किन्तु उन पर प्रतिबन्धों को पूर्ववत् बनाए रखा गया। यहूदियों के साथ भी फ्रांस में दुर्व्यवहार किया जाता था।

प्र.6. फ्रांस की क्रांति (1789) में दार्शनिकों के योगदान का वर्णन कीजिए तथा क्रांति के परिणामों को बताइए।
Describe the contribution of the philosophers in the French revolution (1789) and state the results of the revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों का योगदान
(Contribution of the Philosophers in the French Revolution)

पुनर्जागरण आन्दोलन ने फ्रांस में जागृति उत्पन्न कर दी थी। अनेक विद्वान तथा लेखक फ्रांस जन्म ले चुके थे। इन विद्वानों का प्रभाव मध्यम वर्ग पर सर्वाधिक हुआ। यह वर्ग राजनीति में भाग लेने की तीव्र इच्छा रखता था, इस इच्छा को बढ़ाने में दार्शनिकों का विशेष हाथ था। चैट्यूब्रिआंड के अनुसार, "भौतिक कठिनाइयों तथा बौद्धिक उफान के संयोग के कारण ही फ्रांस की क्रांति हुई।"

मॉण्टेस्क्यू, वल्टेयर और रूसो उस युग के तीन प्रमुख विद्वान थे। मॉण्टेस्क्यू एक प्रसिद्ध वकील था। वह अत्यन्त विद्वान और गम्भीर, पैनी बुद्धि वाला विद्यार्थी रहा था। उसकी लेखन-शैली अत्यन्त तीखी और प्रभावशाली थी। उनके लेख युक्तिसंगत, वैज्ञानिक और मध्यम मार्ग (Moderate in tone) के होते थे। उसने एक दार्शनिक आन्दोलन आरम्भ किया और समालोचना के व्यंग-बाण छोड़े जिन्होंने फ्रांस के पुराने राज्य (Ancient regime) की जड़ें हिला दीं। वह सांविधानिक शासन-पद्धति और कानून की सर्वोच्च सत्ता के पक्ष में था। माण्टेस्क्यू ने सरकार को चलाने वाले और नियमित करने वाले कानूनों और रीति-रिवाजों का विश्लेषण किया और इस प्रकार फ्रांस की पुरानी संस्थाओं के प्रति अन्धविश्वास को समाप्त किया।

वाल्टेयर ने गद्य, पद्य, इतिहास, नाटक आदि सभी प्रकार की रचनाओं में प्राचीन रूढ़िवादियों, अन्धविश्वासों और कुप्रथाओं पर आक्रमण किया। वाल्टेयर दुर्लभ सर्वतोमुखी प्रतिभा, उसका तीक्ष्ण सामान्य ज्ञान, उसकी युक्तिप्रियता ने उसके देश के लोगों को अत्यधिक प्रभावित किया। उसने इस दार्शनिक आन्दोलन को लोकप्रिय बनाया। उसकी आलोचना का मुख्य केन्द्र फ्रांस का चर्च था। वह उसको एक कुत्सित संस्था मानता था। उसने ईसाइयों की धार्मिक कट्टरता और धर्महठता की समालोचना की। वह धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपाती था। उसका मानना था, 'क्योंकि हम सभी गलतियों और मूर्खताओं के शिकार हैं, इसलिए हमें आपस में एक-दूसरे की मूर्खताओं के लिए एक-दूसरे को क्षमा कर देना चाहिए।' अपने साहित्यिक गुणों और विशेषताओं के कारण वाल्टेयर के लेख बहुत लोगों के द्वारा पढ़े गए और इसमें आश्चर्य नहीं कि उसने अपने युग में जनता को अत्यधिक प्रोत्साहित किया।

फ्रांस के दार्शनिक विद्वानों में सबसे प्रभावपूर्ण रूसो था। उसने जनता के हाथों में राज्य की सर्वोच्च सत्ता होने (Sovereignty of the People) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति राज्य की सर्वोच्च सत्ता का अभिन्न अंग था। देश के कानून केवल मात्र सर्वोच्च सत्ता की सामान्य इच्छा (General will) की अभिव्यक्ति थे। चूँकि राज्य की सर्वोच्च सत्ता जनता में निहित है इसलिए कोई भी राज्य या सरकार उसे जनता से छीन नहीं सकती। जनता को सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने का अधिकार है। रूसो ने तत्कालीन सभी संस्थाओं की समालोचना की और उनकी नींवें हिला दीं। उसकी रचनाओं का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसने जनता में स्वतन्त्र होने के लिए उत्साह उत्पन्न किया। रूसो की पुस्तक 'The Social Contract' ने क्रांति की सामग्री प्रदान करने क्रांति की चिंगारी फूँकी। यह जैकोबिन पार्टी के लिए ईश्वर की आवाज बन गई और शैब्जबरी उस आवाज को जनता तक पहुँचाने के लिए धर्मोपदेशक (High priest) बन गया। लॉर्ड मार्ले न रूसो के प्रभाव का निम्न शब्दों में मूल्यांकन किया है, "सबसे पहली बात तो यह है कि रूसो ने वे शब्द कहे जिनका प्रभाव कभी भी समाप्त नहीं किया जा सकता और उसने ऐसी आशा पैदा कर दी जिसको मिटाया नहीं जा सकता। पहले तो उसने अपने पवित्र और सच्चे दृढ़ विश्वास से लोगों को तत्कालीन स्थिति की बुराइयों के विरुद्ध भड़काया और मानवता के एक भारी भाग के लिए सभ्यता को तुच्छ सिद्ध कर दिया। फिर उसने अपनी तीक्ष्ण वक्तव्य शक्ति (Fluid eloquence) और दृढ़ विश्वास के गुणों से, जो उसने लोगों को भारी संख्या में भी पैदा कर दिए थे, फ्रांस में उस मृत्यु जैसी जड़ता और सुस्ती (Torpor) से जो कि उस (फ्रांस) पर शीघ्रता से काबू पा रही थी, जागने के लिए पर्याप्त शक्ति पैदा कर दी।"

TOUCH 'n' PASS

इन तीन दार्शनिक विद्वानों के साथ-साथ अन्य कई लेखकों ने जनता के सोचने के ढंग पर प्रभाव डाला। दिड्रौट (Diderot) एनसाइक्लोपीडिया का जिसमें बहुत-से लेखकों ने अपनी रचनाएँ दी थीं सम्पादक था। वह अपने आपको अभिव्यक्त करने में अत्यन्त जोशीला, तीक्ष्ण और विचार करने में अत्यन्त कल्पनाशील था। हैल्वेटियस (Helvetius) ने मनुष्य के विचारों और आचरण के स्वहित की भावना के द्वारा निश्चित किए जाने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। **हालबैक** (Holbach) ने राजाओं के दुर्गुणों और मनुष्यों की शोचनीय स्थिति की ओर संकेत किया। वह क्रांति का पक्षपाती था। उसके अनुसार, 'धार्मिक और राजनीतिक भूलों ने ब्रह्माण्ड को अश्रुओं के घर के रूप में परिणत कर लिया है।'

मैलेट (Mallet) के अनुसार, इन आश्चर्यजनक लेखकों के द्वारा बोए गए बीज उपजाऊ भूमि पर पड़े। मैडलिन के अनुसार, 'पहले से तैयार हथियारों को लोगों से चलवाने का काम दार्शनिकता ने किया।'

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त कारणों से क्रांति रूपी रेलगाड़ी को फ्रांस में बारूद से भरा गया और तीन घटनाओं ने उसमें चिंगारी उत्पन्न करने का कार्य किया—पहली घटना अमेरिका की बस्तियों का स्वतन्त्र होना, दूसरी, पेरिस की संसद द्वारा स्टेट्स जनरल की माँग, और तीसरी, 1788 ई० 89 ई० के जाड़ों में फ्रांस में भयंकर अकाल का पड़ना था।

1789 ई० में क्रांति हो गई और राजा को बन्दी बना लिया गया। 1793 ई० में राजा तथा रानी को मौत के घाट उतार दिया गया। राजवंशीय व्यक्तियों तथा दरबारियों की हत्या कर दी गई तथा फ्रांस में प्रजातन्त्र की स्थापना की गई।

फ्रांस की क्रांति के परिणाम (Results of the French Revolution)

फ्रांस की क्रांति एक युग परिवर्तनकारी घटना थी। इसकी उपलब्धियाँ एवं परिणामों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत प्रकट किए गए हैं। कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह एक जनतन्त्र-विरोधी, अप्रगतिशील तथा अराजकतावादी आन्दोलन था। इसके विपरीत अन्य लेखक व इतिहासकारों ने फ्रांस की क्रांति को आधुनिक इतिहास की महानतम् घटना बताया है। इतिहासकार हैजन के अनुसार, "फ्रांस की क्रांति ने राज्य के सम्बन्ध में एक नई धारणा को जन्म दिया, राजनीतिक तथा समाज के विषय में नए सिद्धान्त प्रतिपादित किए, जीवन का एक नया दृष्टिकोण सामने रखा और एक नई आशा तथा विश्वास उत्पन्न किया। इन सबसे बहुसंख्यक जनता की कल्पना और विचार प्रज्वलित हुए, उनमें एक अद्वितीय उत्साह का संचार हुआ तथा असीम आशाओं ने उन्हें अनुप्राणित किया।" सामाजिक समानता, सामन्तीय विशेषाधिकारों का अन्त, निरंकुश तथा भ्रष्ट प्रशासन में सुधार, न्याय तथा करों में समानता इन्हीं उद्देश्यों को पाने के लिए क्रांति की शुरुआत हुई थी। इस क्रांति के क्या परिणाम हुए उनका अध्ययन निम्नवत् है—

1. **सामन्तशाही का अन्त** (End of Feudalism)—फ्रांसीसी क्रांति की महत्त्वपूर्ण देन सामन्तीय व्यवस्था का अन्त करना था। इस व्यवस्था के अन्तर्गत बहुत वर्षों तक सामान्य जनता का शोषण किया गया, आर्थिक शोषण तो इस व्यवस्था की चारित्रिक विशेषता थी। फ्रांस की क्रांति द्वारा विशेषाधिकारों का अन्त करके समानता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया। इस क्रांति का अन्य देशों पर भी प्रभाव पड़ा कि यूरोप के अन्य देशों में भी धीरे-धीरे सामन्तशाही का अन्त हो गया।
2. **धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना** (Foundation of Secular State)—इस क्रांति के परिणामस्वरूप यूरोपीय देशों में धार्मिक सहिष्णुता का प्रादुर्भाव हुआ एवं लोगों को धार्मिक उपासना की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई एवं धर्म के सम्बन्ध में राजा का कोई हस्तक्षेप नहीं रहा।
3. **राजनीतिक स्वतन्त्रता, सामाजिक समानता एवं राष्ट्रीय बन्धुत्व की भावना का विकास** (Growth of Liberty, Equality and Fraternity)—क्रांति के समय क्रांतिकारियों द्वारा इन्हीं तीन सिद्धान्तों के प्रसार को अपना ध्येय बनाया गया। क्रांति ने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से प्रत्येक नागरिक को पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता का अधिकार प्रदान किया। स्वतन्त्रता (Liberty), समानता (Equality) व बन्धुत्व (Fraternity) का प्रचार केवल फ्रांस में ही नहीं, अपितु समस्त यूरोप में किया गया।
4. **राष्ट्रीयता की भावना का विकास** (Growth of National Feeling)—इस क्रांति की एक महत्त्वपूर्ण देन नागरिकों के हृदय में अपने देश की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करना था, जब विदेशी सेनाओं ने राजतन्त्र की सुरक्षा के लिए फ्रांस पर आक्रमण किया तो उस समय किसान, मजदूर एवं अन्य लोगों ने सेना में भर्ती होकर अत्यन्त वीरता के साथ विदेशी सेनाओं का सामना किया तथा विजय प्राप्त की। वह राष्ट्रीयता की भावना का ही एक ज्वलन्त उदाहरण है। राष्ट्रीयता की यह भावना यूरोप के अन्य देशों में भी व्याप्त होती गई। 1830 ई० तथा 1848 ई० की व्यापक क्रांतियाँ तथा 1870-71 ई० में इटली व जर्मनी का एकीकरण इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

TOUCH n PASS

5. **लोकप्रिय सम्प्रभुता के सिद्धान्त का प्रतिपादन** (Principles of Democracy)—इस क्रांति के द्वारा राजनीतिक दृष्टि से राजाओं के '**दैवीय अधिकार के सिद्धान्त**' का अन्त करके लोकप्रिय सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया। कानून अब एक व्यक्ति अर्थात् राजा की इच्छा का परिणाम न होकर राष्ट्र के निर्वाचित प्रतिनिधियों की इच्छा का परिणाम था। वंशानुगत एवं भ्रष्ट न्यायाधीशों के स्थान पर अब निर्वाचित न्यायपालिका एवं जूरी पद्धति का प्रारम्भ हुआ। सर्वसाधारण द्वारा देश की राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा बँटाने से उनमें आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।
6. **समाजवाद की स्थापना** (Establishment of Socialism)—कुछ इतिहासकारों के अनुसार फ्रांस की क्रांति समाजवादी विचारधारा का स्रोत थी। राष्ट्रीय सभा ने मनुष्यों के आधारभूत सिद्धान्तों की घोषणा की, जिसमें प्रजातन्त्र का शिलान्यास किया गया। इस घोषणा में स्पष्ट रूप से कहा गया कि, "सभी मनुष्य समान हैं तथा उन्नति का अवसर प्रत्येक को समान रूप से दिया जाना चाहिए।' रूसो के सिद्धान्त के अनुसार सब मनुष्य समान रूप से स्वतन्त्र जन्म लेते हैं, किन्तु सामाजिक बन्धन उनको जकड़ लेते हैं। उन बन्धनों को तोड़ने के लिए नेशनल असेम्बली ने अधिक परिश्रम किया, सभी के लिए एकसमान कानून तथा कर की व्यवस्था की गई। विशेषाधिकार युक्त वर्ग का अन्त करने के लिए 4 अगस्त, 1789 ई० को एक प्रस्ताव पास किया गया जिसके द्वारा कुलीन वर्ग का अन्त हो गया। अब कुलीन लोग भी साधारण वर्ग के समान ही थे तथा अब वे दरिद्र किसानों पर अत्याचार नहीं कर सकते थे। दास प्रथा का भी अन्त हो गया। जागीरदारों ने जनता के रुख को देखकर स्वंय ही अपने विशेषाधिकार त्याग दिए तथा फ्रांस से सामाजिक असमानता समाप्त हो गई।
7. **शिक्षा एवं संस्कृति का विकास** (Growth of Education and Culture)—फ्रांस की क्रांति ने शिक्षा को चर्च के आधिपत्य से निकालकर उसे राष्ट्रीय, सार्वभौमिक तथा धर्मनिरपेक्ष बनाया साथ ही पुरातन-व्यवस्था के अन्धविश्वासों को नष्ट किया। यूरोपीय साहित्य में स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन भी क्रांति का ही परिणाम था।

क्रांति के सम्बन्ध में लॉर्ड एल्टन का कथन है कि, "सामाजिक समानता और व्यवस्था क्रांति के उद्देश्य थे, जो प्राप्त कर लिए गए। सैनिक गौरव तथा भूमि का कृषकों को हस्तान्तरण, क्रांति की अन्य उपलब्धियाँ थीं। आधुनिक फ्रांस की राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति की नींव भी क्रांति ने रखी।"

क्रांति के स्थायी परिणाम (Permanent Results fo the Revolution)—क्रांति के समय होने वाले भीषण रक्तपात एवं अव्यवस्था से जनता थक चुकी थी, अत: अब वह शासन सुदृढ़ हाथों में देखना चाहती थी। इन परिस्थितियों ने नेपोलियन बोनापार्ट का मार्ग प्रशस्त कर दिया। कई वर्षों की क्रांति के पश्चात् नेपोलियन का एक डिक्टेटर के रूप में उदय हुआ। नेपोलियन ने सही अर्थों में अपने को क्रांति का उत्तराधिकारी सिद्ध कर दिखाया। यद्यपि उसके शासन में स्वतन्त्रता का स्थान नहीं था, किन्तु क्रांति की दो अन्य भावनाओं—समानता एवं बन्धुत्व का उसने पूर्णतया पालन किया। नेपोलियन ने इटली, जर्मनी, रूस, आस्ट्रिया व स्पेन आदि देशों में भी इन भावनाओं को फैलाया। नेपोलियन के पतन के पश्चात् 1815 ई० में वियना की कांग्रेस में प्रतिक्रियावादी लोगों ने सन्धि करते समय इन भावनाओं का ख्याल नहीं रखा, फलत: सन्धि अस्थायी सिद्ध हुई। यूरोपवासी उस सन्धि को तोड़कर क्रांतिकारी भावनाओं से प्रोत्साहित होकर अपने राष्ट्रों के निर्माण करने का प्रयत्न करने लगे। अन्त में सम्पूर्ण यूरोप में नवयुग का प्रारम्भ हुआ जिसका सम्पूर्ण श्रेय फ्रांस की क्रांति को दिया जा सकता है, क्योंकि सर्वप्रथम इसी के द्वारा नवयुगीन गणतन्त्रात्मक भावनाओं का विकास हुआ।

प्र.7. फ्रांस की क्रांति की प्रमुख घटनाओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।
Describe in detail the main events of the French revolution.

उत्तर

फ्रांस की क्रांति की प्रमुख घटनाएँ
(Main Events of the French Revolution)

फ्रांस की आर्थिक स्थिति लुई XVIवें के शासनकाल तक बहुत खराब हो चुकी थी। सरकार दिवालियेपन की स्थिति में पहुँच गई। अत: विवशतावश 1789 ई० में लुई सोलहवें ने स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया। स्टेट्स जनरल के तीन विभाग थे—1. कुलीन वर्ग, 2. पादरी वर्ग तथा 3. जनसाधारण वर्ग। इन वर्गों के प्रतिनिधियों की संख्या प्राय: एक-समान थी जिसके कारण अधिवेशन में कुलीन तथा पादरी मिलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों के हितों की अवहेलना किया करते थे जिससे जनसाधारण में असन्तोष की वृद्धि होती थी, इसलिए नेकर ने राजा से मिलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों की संख्या दुगनी कर दी, परन्तु यह निर्णय नहीं हो पाया कि तीनों वर्गों के प्रतिनिधि सम्मिलित रूप से एक भवन में बैठकर विचार करेंगे तथा भिन्न-भिन्न भवनों में बैठेंगे। तीसरा सदन 90 प्रतिशत जनता का प्रतिनिधित्व करता था, यदि तीनों सदनों की एक साथ बैठक न होती और मतदान में एक व्यक्ति का मत न मानकर एक सदन का एक मत माना जाता तो तीसरे सदन की संख्या को दोगुना करने से कोई लाभ नहीं था।

स्टेट्स जनरल के सदस्यों का निर्वाचन—1789 ई० में स्टेट्स जनरल के सदस्यों का चुनाव किया गया, इसके अन्तर्गत मत देने का अधिकार तृतीय श्रेणी के उन व्यक्तियों को भी दिया जिनकी अवस्था 25 वर्ष से अधिक थी तथा वे कोई प्रत्यक्ष कर देते थे। पेरिस में अनेक प्रतिबन्ध लगाकर निर्धनों को निर्वाचन से वंचित कर दिया गया। इस प्रकार तीनों वर्गों के प्रतिनिधियों का निर्वाचन हुआ। इन निर्वाचित सभाओं द्वारा स्टेट्स जनरल के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। इन सभी सभाओं ने सुधारों तथा शिकायतों का एक मसविदा भी तैयार किया, जिसे इतिहास में **काहिया** (Cahieys) के नाम से जाना जाता है।

स्टेट्स जनरल के निर्वाचन में मिराब्यू ने नेकर से प्रार्थना की थी कि उसको कुलीन वर्ग का प्रतिनिधि स्वीकार कर लिया जाए, परन्तु नेकर सहमत न हुआ। फलस्वरूप मिराब्यू थर्ड स्टेट्स की ओर से चुनाव के लिए खड़ा हुआ तथा एक्स (Aix) एवं मार्साई (Marseiss) नामक दो नगरों में निर्वाचित हुआ।

स्टेट्स जनरल का अधिवेशन प्रारम्भ—5 मई, 1789 ई० को स्टेट्स जनरल की प्रथम बैठक वार्साय के विशाल भवन में हुई। इसके प्रतिनिधियों की संख्या 1200 के लगभग थी जिनमें से 600 से अधिक तीसरे सदन के सदस्य थे। सभा में निर्वाचन पुरानी पद्धति के अनुसार ही किया गया। तृतीय श्रेणी में अधिकांश व्यक्ति शिक्षित एवं मध्यम वर्ग के थे। कुछ विख्यात नेता भी इस वर्ग में थे; जैसे—मिराब्यू (Mirabeau), सिए (Sieyes), राब्सपियर (Robespierre), जॉसेफ मौनिएर (Joseph Mounier), बारनाव (Barnava), विक्टर मालों (Victor Malouet), बाई (Bailly) तथा काम (Camus) आदि। उस समय इस वर्ग के प्रतिनिधियों की संख्या पहले से दोगुनी कर दिए जाने के कारण उनके उत्साह में भी वृद्धि हुई थी।

6 मई, 1789 को सर्वप्रथम वोट के प्रकार के सम्बन्ध में विवाद का आरम्भ हुआ। कुलीन एवं पादरी वर्ग चाहते थे कि वोट भवन के अनुसार हो (Vote by order), जबकि जनसाधारण के प्रतिनिधियों की माँग थी कि प्रत्येक प्रतिनिधि के अनुसार वोट का आधार निश्चित हो (Vote by head)। जनसाधारण के प्रतिनिधियों की माँग को मान लेने से सामन्तों तथा पादरियों के विशेषाधिकारों की समाप्ति हो जाती इसलिए वे इसके लिए तैयार नहीं हुए। अधिवेशन में प्रथम दोनों वर्गों को अलग-अलग भवन दिए गए, किन्तु तृतीय श्रेणी को स्टेट्स जनरल का पुराना भवन दिया गया। इस प्रकार उपर्युक्त मतभेद के कारण कोई भी कार्य सुचारु रूप से चलना कठिन था। 12 जून, 1789 ई० को सिए ने प्रथम एवं द्वितीय वर्ग से जनसाधारण के वर्ग में अधिवेशन करने के लिए सम्मिलित हो जाने को कहा, लेकिन सामन्तों ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, फलत: तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों ने अकेले ही अधिवेशन करने का निर्णय लिया। इसी समय छोटे पादरी भी अपने नेता जैले (Jallet) के नेतृत्व में अपने वर्ग को छोड़कर जनसाधारण के वर्ग में प्रवेश करने लगे। वह क्रांति का प्रथम चरण था। 17 जून को सिए के आग्रह पर तृतीय श्रेणी द्वारा एक प्रस्ताव पास करके अपने को राष्ट्रीय सभा (National Assembly) घोषित कर दिया गया। एक-दूसरे के प्रस्ताव के अनुसार राष्ट्रीय सभा ने प्रस्ताव पास किया कि राष्ट्रीय सभा की अनुमति के बिना भविष्य में कोई भी कर नहीं लगेगा। इन परिस्थितियों में भी राजा ने कोई कदम नहीं उठाया। 17 जून को पादरियों द्वारा एक प्रस्ताव पास करके तृतीय श्रेणी में मिलने का निर्णय लिया गया जिसके कारण तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों की स्थिति सुदृढ़ हो गई। अब उसके सदस्य राष्ट्रहित में राजा की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए भी तैयार थे। मेरी आन्तनेत तथा काउण्ट आर्त्वा के आग्रह पर लुई सोलहवें द्वारा तीन श्रेणियों के सम्मिलित अधिवेशन में फिर से भाषण देने की घोषणा की लेकिन जनसाधारण के प्रतिनिधियों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

टेनिस कोर्ट की शपथ—20 जून को राजा द्वारा तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों के सभा भवन को बन्द करवा दिया गया और उनसे 23 जून को सम्पन्न होने वाले राजकीय समारोह तक अपना अधिवेशन स्थगित रखने को कहा गया, परन्तु 20 जून, 1789 ई० के प्रात: ही वे सभा भवन पहुँच गए वहाँ द्वार पर ताला मिलने एवं सुरक्षा के लिए पहरेदार तैनात होने के कारण वे समीप ही एक विशाल भवन में घुस गए जो टेनिस खेलने के काम आता था। वहाँ जनसाधारण के प्रतिनिधियों ने अपने अध्यक्ष बेयी को एक मेज पर खड़ा किया तथा मून्ये द्वारा प्रस्तावित ऐतिहासिक शपथ ग्रहण की जो इतिहास में 'टेनिस कोर्ट की शपथ' के नाम से विख्यात है। यहाँ पर नेताओं ने घोषणा की कि वे यहाँ से तब तक नहीं हटेंगे जब तक कि देश के लिए एक संविधान का निर्माण न कर लें, वास्तव में यह घोषणा एक क्रांतिकारी कदम थी।

टेनिस कोर्ट की शपथ की घटना एक महान घटना थी। डेविड टामसन ने लिखा है कि, इसने राजतन्त्रों की जड़ों को हिला दिया। इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि जनसाधारण के प्रतिनिधि अब राजा या उसके समर्थकों से भयभीत होने वाले नहीं हैं। इसी कारण हैज ने इस घटना के विषय में लिखा है—"यह फ्रांस की क्रांति का वास्तविक प्रारम्भ था।"

संयुक्त अधिवेशन—उपर्युक्त कार्यवाहियों से चिन्तित होकर राजा ने 23 जून को तीनों वर्गों का सम्मिलित अधिवेशन बुलाया। अपने भाषण के पश्चात् राजा ने घोषणा की कि तीनों वर्गों के प्रतिनिधि अपने-अपने भवनों में जाकर विचार-विमर्श करें, कुलीन

एवं पादरी वर्ग उठकर चला गया, किन्तु साधारण वर्ग बैठा रहा, राजाज्ञा फिर दोहराई गई। मिराब्यू ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया, "हम यहाँ राष्ट्र इच्छा से इकट्ठे हुए हैं, केवल ताकत ही हमें तितर-बितर कर सकती है।"

जनसाधारण की प्रथम विजय—आखिर विवश होकर राजा ने आदेश दिया कि कुलीन एवं पुरोहित वर्गीय सदन साधारण वर्ग के सदन के साथ सम्मिलित हो जाए तथा तीनों वर्गों का सम्मेलन एक साथ किया जाए, इस प्रकार राजा के हाथ से शक्ति निकलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों के हाथ में आ गई।

लुई सोलहवें द्वारा किए गए मूर्खतापूर्ण कार्यों के कारण विद्रोह—अभी भी क्रांतिकारी राजा को पद्च्युत नहीं करना चाहते थे, लेकिन राजा ने अपनी अयोग्यता के कारण क्रांतिकारी नेतृत्व करने की जगह उनको दबाने का प्रयास किया। इस समय विदेशी सैनिकों की कुल संख्या 50 हजार थी। उसने जनता को भयभीत करने के लिए इन्हें पेरिस और वार्साय में तैनात करना शुरू किया। 11 जुलाई को वित्त मन्त्री नेकर को उसके पद से हटाकर वारों द ब्रेतोल (Barone de Bretuil) नामक व्यक्ति को नियुक्त किया। नेकर सुधारों का समर्थक था तथा जनता में बहुत लोकप्रिय था, इसलिए उसके पदच्युत होने से बहुत असन्तोष व्याप्त हुआ। विदेशी सैनिकों की उपस्थिति के कारण जले पर नमक छिड़कना साबित हुआ। 12 जुलाई को पेरिस में एक मीनार पर चढ़कर देमूले ने इस प्रकार के जोशीले भाषण देने प्रारम्भ किए—"नेकर को पदच्युत कर दिया गया और शीघ्र ही राजा हमारे ऊपर आक्रमण करने की योजना बना रहा है, अत: हमको अपनी रक्षा के लिए शस्त्र ग्रहण करने चाहिए। यदि हम शीघ्र तैयार नहीं होंगे तो जर्मन तथा स्विस सेनाएँ हमारा विनाश कर देंगी।" देमूले का भाषण काफी प्रभावशाली रहा। लोग हथियार इकट्ठा करने लगे, शीघ्र ही 10 हजार की भीड़ इकट्ठी हो गई। इस समय तक सेना पर भी क्रांति का प्रभाव पड़ चुका था। अत: फ्रेंच गार्ड के असन्तुष्ट सैनिक भी इस भीड़ में सम्मिलित हो गए।

बास्तील का पतन—इस प्राचीन दुर्ग में यूरोप के समस्त प्रतिक्रियावादियों का गढ़ था। इसका अध्यक्ष दलाने (Delawney) था तथा इस समय इसमें केवल 7 बन्दी तथा 125 सैनिक थे। इस दुर्ग में हथियार प्राप्त करने के उद्देश्य से जनता ने 14 जुलाई को इस पर आक्रमण कर दिया, क्योंकि उन्हें इतने हथियार नहीं मिल पाए थे जितना कि उनका लक्ष्य था। 5 घण्टे तक होने वाले भयंकर युद्ध में जनता के 200 प्रतिनिधि मारे गए, घमासान लड़ाई के बाद भीड़ ने बास्तील पर अधिकार कर लिया, उत्तेजित भीड़ ने दुर्गपाल तथा उसके सैनिकों के सिर काटकर भालों पर टाँग लिए व किले की समस्त सामग्री लूट ली तथा बन्दियों को मुक्त कर दिया। इस घटना से जनता बहुत प्रसन्न हुई, क्योंकि यह निरंकुश राजाओं पर जनता की शानदार विजय थी।

बास्तील के पतन का अत्यधिक राजनीतिक महत्त्व है, क्योंकि यह प्रजातन्त्र की निरंकुशता के ऊपर विजय थी। इस घटना से यूरोप के समस्त निरंकुश राजाओं के सिंहासन हिल गए। बास्तील के पतन का समाचार सुनकर सम्पूर्ण विश्व में प्रजातन्त्र के समर्थकों ने खुशियाँ मनाईं। लन्दन के चार्ल्स जेम्स IV ने इसे विश्व इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना कहा। राजतन्त्रवादियों को यह समझते हुए देर न लगी कि अब शस्त्र द्वारा क्रांति का दमन नहीं किया जा सकता, इसलिए प्रतिक्रियावादियों का बेटा काउण्ट आर्त्वा (Count of Artois) फ्रांस छोड़कर भाग गया। बास्तील की घटना के महत्त्व के बारे में तत्कालीन अंग्रेज राजदूत डॉरसेट ने लिखा, "इसी क्षण से हम फ्रांस को एक स्वतन्त्र देश व राजा को एक सीमित शक्तियों वाला नरेश मान सकते हैं तथा कुलीन वर्ग जैसे अपने दर्जे से गिरकर शेष राष्ट्र के साथ मिल गया है।" प्रोफेसर गुडविन ने लिखा, "शान्तिकाल में बास्तील के पतन जैसी बहुमुखी एवं दूरगामी परिणामों वाली अन्य कोई अकेली घटना नहीं हुई। दुर्ग का पतन केवल फ्रांस में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में स्वतन्त्रता की उत्पत्ति का परिचायक माना गया।"

बास्तील के पतन का सम्राट पर प्रभाव—इस घटना से राजा भली-भाँति समझ गया कि क्रांति को अब और अधिक नहीं दबाया जा सकता तथा क्रांतिकारियों से मिल जाना ही हितकर है अत: उसने पेरिस तथा वार्साय से सेना की विदेशी टुकड़ियों को हटा दिया तथा नेकर को पुन: वापस बुला दिया। राजा स्वयं पेरिस गया तथा उसने स्थानीय शासन एवं रक्षा दल का समर्थन किया। उसने क्रांति के तिरंगे झण्डे को स्वीकार किया तथा क्रांतिकारियों के कार्य की बहुत प्रशंसा की। मुसीबतों का अन्त हो गया है, परन्तु रानी तथा दरबारी राजा के इस कार्य से प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने क्रांतिकारियों को शक्ति द्वारा कुचलने के लिए राजा पर दबाव डालना प्रारम्भ किया।

सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध जनता का विद्रोह—14 जलाई को बास्तील का पतन हुआ, अत: क्रांतिकारी इसे अपनी स्वतन्त्रता की तिथि मानते थे। अब प्रत्येक प्रान्त में हत्याकाण्ड प्रारम्भ हो गए थे, ग्रामों में किसानों ने जमींदारों के मकानों, मठों तथा कागजों को जला दिया, उन्होंने बेगार करने से मना कर दिया तथा कर वसूल करने वालों को पीटा। बहुत-से जागीरदारों को मार डाला। इस घटना से भयभीत होकर अनेक जागीरदार नगरों में चले गए, कुछ विदेश भाग गए। इस परिस्थिति के सम्बन्ध में नेशनल असेम्बली के सभापति बाई (Bailly) ने कहा था, "प्रत्येक मनुष्य आदेश देना जानता है, परन्तु काई भी आज्ञापालन करना नहीं

जानता।'' इस अराजकता के विरोध में लाफायत ने त्याग-पत्र दे दिया लेकिन नेशनल असेम्बली के अन्य नेताओं के आग्रह करने पर उसने अपना त्याग-पत्र वापस ले लिया। सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध जनता द्वारा विद्रोह एवं हत्याकाण्ड किए जाने के फलस्वरूप सामन्तशाही प्रथा का अन्त हो गया।

पेरिस में स्थानीय शासन एवं राष्ट्रीय रक्षा दल स्थापित किया जाना—पेरिस में फैली अराजकता के कारण नगर में स्थानीय शासन (Commune) की स्थापना की गई। बाई (Bailly) को इस शासन का अध्यक्ष बनाया गया। इसके अतिरिक्त, शान्ति व्यवस्था कायम रखने के लिए तत्काल ही एक राष्ट्रीय रक्षा दल (National guard) की स्थापना की गई। लाफायत को इसका अध्यक्ष बनाया गया। इसकी सदस्य संख्या 200 से बढ़ाकर शीघ्र ही 48,000 हो गई। पेरिस के समान अन्य नगरों में भी राष्ट्रीय रक्षा दल एवं स्थानीय शासन स्थापित होने लगे। इस प्रकार फ्रांस से राजतन्त्र समाप्ति के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

4 अगस्त की रात्रि का सत्र एवं विशेषाधिकारियों का अन्त—राष्ट्रीय सभा द्वारा कृषकों के इन कार्यों को नहीं रोका जा सकता इसलिए लाफायत के एक निर्धन साथी नोई ने प्रत्येक वर्ग पर समान रूप से कर लगाने का प्रस्ताव रखा। नेशनल असेम्बली में यह प्रस्ताव बहुमत से पारित हो गया, दो बजे रात तक चलने वाले इस अधिवेशन में सामन्तों एवं पादरियों ने एक-एक कर खड़े होकर अपने विशेषाधिकारों को त्यागने की घोषणा की। इस प्रकार केवल 10 घण्टे के अन्दर फ्रांस में सामन्त प्रथा का अन्त हो गया। इस सम्बन्ध में एक **डिप्टी** ने कहा था, ''हमने कई महीनों का कार्य केवल 10 घण्टों में समाप्त कर दिया।'' सामन्त प्रथा की समाप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय असेम्बली के सदस्यों द्वारा सभा विसर्जित कर दी गई।

दरबार में पुनः कुचक्र—यद्यपि यह सारे प्रस्ताव पारित हो चुके थे, किन्तु इस बात की कोई सम्भावना नहीं थी कि सामन्त वर्ग हमेशा इन प्रस्तावों के पक्ष में ही रहेगा। इधर दरबार में भी कुचक्र चल रहा था। रानी एवं दरबारीगण इन प्रस्तावों से सहमत नहीं थे, वे चाहते थे कि सेना के बल से राष्ट्रीय सभा को कुचल दिया जाए। इसलिए वे राजा को हमेशा इनके विरुद्ध भड़काते रहते थे। 1 अक्टूबर, 1790 ई० की रात्रि में वर्साय में एक शानदार दावत दी गई। जब यह समाचार पेरिस पहुँचा तो इससे वहाँ बहुत असन्तोष फैल गया। जनता के समक्ष यही सन्देह था कि राजा किसी प्रकार का षड्यन्त्र रच रहा है। दूसरी बात यह थी कि पेरिस में अन्न की बहुत कमी थी। सेनाओं के आने से यह कमी और बढ़ जाती। मारा तथा दांते ने भी राजा के विरुद्ध जनता को भड़काया। क्रांति की आग को सुलगाने के लिए ये बातें पर्याप्त थीं।

पेरिस की स्त्रियों का वर्साय अभियान एवं राजा का पेरिस भागना—राजा तथा उसके दरबारियों द्वारा क्रांति के झण्डे को कुचलने का समाचार मिलने से जनता उत्तेजित हो उठी। बेकारी और रोटी की कमी से पेरिसवासी पहले ही उत्तेजित थे, इसी समय कुछ सैनिकों द्वारा सार्वजनिक रूप से घोषणा की गई कि वे राजा के साथ हैं तथा क्रांति के दमन में राजा का साथ देंगे। इस बात से विद्रोही बहुत आतंकित हो गए। इस बार स्त्रियों ने मोर्चा सम्भाला। 15 अक्टूबर को पेरिस की 8-10 हजार स्त्रियाँ इकट्ठी होकर 'हमें रोटी दो' (We want bread) का नारा बुलन्द करते हुए राजा के सम्मुख प्रदर्शन करने के लिए वर्साय पहुँची। जुलूस के साथ बहुत-से क्रांतिकारी भी सम्मिलित हो गए। 6 अक्टूबर को प्रातः भीड़ ने शाही महल के फाटक तोड़ दिए, कुछ रक्षकों को मार डाला तथा महल पर अपना अधिकार कर लिया। राजा एवं उसके परिवार को पेरिस लौटने के लिए मजबूर किया, लौटते समय जनसमूह प्रसन्न था तथा उनका कहना था—''रोटी वाला, रोटी वाली और उनका पुत्र हमारे साथ है। अब हमें खाने की कमी नहीं रहेगी।'' पेरिस में राज परिवार को 'ट्यूलरिज' के पुराने महल में रखा गया। राज परिवार के साथ राष्ट्रीय सभा भी पेरिस आ गई। अब राजा पेरिस की भीड़ का बन्दी बनकर रह गया था, क्रांति का नेतृत्व करना उसके बूते से बाहर हो गया।

20 जून को गुप्त रूप से भेष बदलकर राजा, रानी एवं उनका पुत्र पेरिस से मेज की तरफ चल दिए, लेकिन वारेन (Vernnes) नामक स्थान में राजा को गिरफ्तार करके 25 जून को पुनः पेरिस वापस लाया गया।

राजा के भागने पर पेरिस में हुई प्रतिक्रिया—राजा के भाग जाने पर पेरिस की जनता ने उसे गद्दार कहा तथा उसे राजसिंहासन से हटाने की माँग की। अधिकांश जनता राजा को दण्डित किए जाने की माँग करने लगी, जिससे राजा की प्रतिष्ठा को धक्का लगा। लियोपोल्ड द्वितीय एवं अन्य यूरोपीय राजा अब यह समझने लगे थे कि युद्ध के बिना लुई सोलहवें का उद्धार नहीं हो सकता। जुलाई में राष्ट्रीय सभा ने राजा को दण्ड न देकर उसके सहायकों को दण्ड देने का निर्णय लिया लेकिन इस निर्णय के लागू होने से पूर्व ही राजा के सारे सहायक देश छोड़कर भाग गए।

जनतन्त्र की स्थापना की माँग हेतु जनता का प्रदर्शन (1791 ई०)—जनता ने जनतन्त्र की स्थापना की माँग को लेकर 17 जुलाई, 1791 ई० को एकत्र होकर एक विशाल प्रदर्शन किया। इसमें लगभग 6 हजार व्यक्ति एकत्रित हुए। लाफायत एवं उसके

TOUCH n PASS

समर्थकों द्वारा इस सभा को भंग करने की आज्ञा दी गई लेकिन जनता वहाँ से नहीं हटी। फलत: गोली चलाने का आदेश दे दिया गया, जिसके फलस्वरूप 12 व्यक्ति मारे गए तथा अनेक घायल हुए। अत: प्रजातन्त्र के समर्थक दांते, मारा तथा देमूले आदि फ्रांस छोड़कर भाग गए तथा प्रजातन्त्र समर्थक समाचार-पत्र भी बन्द हो गए। लाफायत के इस अनुचित कार्य से राष्ट्रीय विधानसभा की कटु आलोचना हुई, परन्तु राजा ने उसके कार्यों की प्रशंसा की। राजा ने नए संविधान का पालन करने की प्रतिज्ञा की, अत: राष्ट्रीय विधानसभा ने राजा को दण्ड से मुक्त कर दिया तथा देश छोड़कर बाहर जाने वाले कुलीनों को भी क्षमा कर दिया गया।

प्र.8. लुई सोलहवें द्वारा आर्थिक समस्याओं के निराकरण हेतु किए गए प्रयत्नों का विवरण दीजिए।
Given an account of the efforts made by Louis XVI to solve the economic problems.

उत्तर

लुई सोलहवें द्वारा आर्थिक समस्याओं के निराकरण हेतु किए गए प्रयत्न
(Efforts made by Louis XVI to solve the Economic Problems)

अपनी समस्याएँ जो कि अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित थीं, के निराकरण के लिए लुई सोलहवें ने अर्थ विभाग की ओर ध्यान दिया तथा समस्याओं के निराकरण हेतु निम्नलिखित प्रयत्न किए—

1. **तूर्जो को अर्थमन्त्री बनाना** (1774 ई० से 1776 तक) (Turgot Appointed as Finance Minister)—लुई सोलहवें ने अपनी आर्थिक समस्याओं के निराकरण के लिए अर्थ विभाग का मन्त्री तूर्जो को नियुक्त किया। तूर्जो अर्थशास्त्र का एक अच्छा ज्ञाता था। वह अनुभवी एवं अत्यन्त कुशल था। वह वाल्टेयर का मित्र एवं प्रसिद्ध फिजियोक्रेट गोष्ठी का सदस्य भी था। वह विश्व कोष के लेखकों में एक था। इस नियुक्ति से पूर्व वह इंटडेंट के रूप में सफलतापूर्वक कार्य कर चुका था। नि:सन्देह अर्थमन्त्री के रूप में तूर्जो की नियुक्ति फ्रांस की जनता के लिए हर्ष का विषय थी, किन्तु दूसरी ओर विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के लिए चुनौती थी। तूर्जो फ्रांस की भयावह आर्थिक स्थिति से भिज्ञ था ही उसने तुरन्त राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाया।

   तूर्जो फ्रांस की अर्थव्यवस्था के ढाँचे को ठीक करने के लिए आर्थिक क्षेत्र में सामन्तवादी विशेषाधिकारों का अन्त, करों में भारी कमी, यथोचित रूप में यथानुरूप कर निर्धारण, कृषकों से सड़कों के निर्माण में ली जाने वाली बेगार प्रथा, व्यापार व उद्योग-धन्धों का नियन्त्रण मुक्त करना आदि अत्यन्त आवश्यक समझता था। अत: तूर्जो ने उद्योग एवं व्यापार को नियन्त्रण मुक्त कर दिया। कृषकों से ली जाने वाली बेगार प्रथा का अन्त कर दिया। विशेषाधिकार वर्ग पर भी कर लगाकर सामान्य जनता के करों को कम किया। खाद्य पदार्थों से कर हटा दिए। राजकीय पेंशनों, उपहारों एवं सरकारी खर्च पर कटौती कर दी गई। विभिन्न विभागों पर आर्थिक नियन्त्रण स्थापित कर दिया गया। कृषि उत्पादन को प्रोत्साहित किया गया, उसके इन सुधारों से फ्रांस को एक करोड़ दस लाख फ्रैंक की वार्षिक बचत होने लगी, जबकि अब तक दो लाख फ्रैंक वार्षिक घाटा हो रहा था, किन्तु तूर्जो के इन आर्थिक सुधारों को प्रारम्भ में पार्लमाँ ने पंजीकृत करने से इन्कार कर दिया, किन्तु लुई सोलहवें की दृढ़ता के कारण उसे पंजीबद्ध करना पड़ा, किन्तु विशेषाधिकार प्राप्त सामन्त व पुरोहित वर्ग तूर्जो की सुधार योजना से सन्तुष्ट न था। अत: उन्होंने मेरी आन्तनेत का दबाव डलवाकर 1776 ई० में तूर्जो को उसके पद से अपदस्थ करवा दिया। इस प्रकार लुई सोलहवें ने तूर्जो को अपदस्थ कर फ्रांस की आर्थिक स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया। तूर्जो नि:सन्देह भयावह आर्थिक स्थिति से देश को बचा सकता था, किन्तु लुई सोलहवाँ अपनी पत्नी मैरी आन्तनेत के आग्रह के विरुद्ध न जा सका।

2. **नेकर को अर्थमन्त्री बनाना** (1776 ई० से 1781 ई० तक) (Necker appointed as Finance Minister)—तूर्जो के पश्चात् लुई सोलहवें ने नेकर को अर्थमन्त्री का महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया। नेकर ने तूर्जो के उपायों का अवलम्बन तो किया, किन्तु उसने अत्यन्त सावधानी से कदम उठाते हुए राजकीय अवयवों को नियन्त्रित कर दिया। वह क्योंकि एक कुशल बैंकर और व्यापारी था, अत: उसने कर संग्रह के लिए एक व्यवस्थित नीति को अपनाया। इसी समय अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम में फ्रांस ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध अमेरिकावासियों की अधिक-से-अधिक आर्थिक व सैनिक सहायता आरम्भ कर दी। अत: नेकर ने बैंकरों से राजकीय ऋण लिया। यह ऋण 40 करोड़ फ्रैंक था। अब उसने राष्ट्रीय व्यय में कटौती की तथा कर संग्रह में सुधार किया। राष्ट्रीय आय-व्यय का लेखा-जोखा छपवाकर जनता के सामने स्पष्ट

TOUCH 'n PASS

कर दिया गया। इस रिपोर्ट से फ्रांस की जनता राजकोष के गुप्त भेदों से भिज्ञ हो गई। इधर नेकर घाटे को पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील था तो उधर मेरी आन्तनेत आभूषणों के क्रय एवं उपहारों का वितरण खुले हाथों से कर रही थी। सामन्त वर्ग एवं चापलूस दरबारी आय-व्यय के प्रकाशन से नेकर से अत्यन्त रुष्ट थे, क्योंकि इससे सामान्य जनता के सम्मुख उनकी स्थिति स्पष्ट हो गई थी। अत: उन्होंने मेरी आन्तनेत पर दबाव डालकर नेकर को उसके पद से हटवा दिया।

3. **केलोन को अर्थमन्त्री बनाना** (1783 ई० से 1787 ई० तक) (Kelone appointed as Finance Minister)—नेकर को जिस समय उसके पद से हटाया गया उस समय फ्रांस अमेरिका के स्वतन्त्रता संघर्ष में उलझा हुआ था। अत: फ्रांस का आर्थिक संकट और अधिक गहरा हो गया। सर्वत्र एक ही प्रश्न था कि आय एवं व्यय को कैसे नियन्त्रित किया जाए? इस स्थिति में भी व्यवस्था नियन्त्रित हो सकती थी, किन्तु विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग अपने आर्थिक अधिकारों को त्यागने के लिए तैयार न था। एक के बाद एक अर्थमन्त्री बदलते गए। 1783 ई० में लुई ने केलोन को अर्थमन्त्री बनाया। केलोन उच्च वर्ग से सम्बन्धित था। अत: उसने सामन्ती उच्च वर्ग के लोगों के सन्तुष्टीकरण की नीति अपनाई। उसने झूठी शान के लिए आवरण डालने की नीति का पालन किया। अमेरिका के स्वतन्त्रता संघर्ष के पश्चात् उसने अमेरिका के उपनिवेशों व इंग्लैण्ड के साथ व्यापारिक सन्धियाँ भी कीं। उसने राजकीय व्यय की पूर्ति के लिए अधिकाधिक ऋण लेने की नीति अपनाई। चार वर्षों में उसने लगभग 60 करोड़ डॉलर का ऋण ले लिया। स्थिति यहाँ तक आ पहुँची कि ऋण मिलना बन्द हो गया। अत: अब केलोन ने तूर्जो व नेकर की भाँति कर संग्रह की नीति का अवलम्बन लिया। इस स्थिति में भी उसे उच्च वर्ग के विरोध के कारण त्याग-पत्र देना पड़ा।

4. **लुई सोलहवें के अन्तिम प्रयास व क्रांति का आरम्भ** (Last Efforts of Louis XVI and the Revolution Breaks Out)—नेकर की पदच्युति समस्या का निदान न था। अत: लुई ने 1787 ई० में सामन्त, पुरोहित एवं न्यायाधीशों की प्रमुखों की सभा को समस्या के निदान हेतु बुलाया। प्रमुखों की सभा उच्च वर्ग के अधिकारों के परित्याग के लिए तैयार न थी। सभा ने 'स्टेट्स जनरल' के अधिवेशन बुलाने पर अधिक बल दिया और यह दलील दी कि किसी भी प्रकार का वित्तीय परिवर्तन स्टेट्स जनरल की अनुमति से ही होगा। इस पर लुई ने सभा को विसर्जित कर सभी वर्गों पर नए कर लगाने की घोषणा की, किन्तु पेरिस की पार्लमां ने उसकी इस घोषणा का विरोध किया। लुई ने पार्लमां को बर्खास्त कर दिया, किन्तु इस पर फ्रांस की जनता का आक्रोश उमड़ पड़ा। सर्वत्र स्टेट्स जनरल के अधिवेशन की माँग होने लगी। अन्तत: लुई ने निराश होकर नेकर को पुन: अर्थमन्त्री नियुक्त किया और स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया। 175 वर्षों के पश्चात् 1789 ई० में स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाना नि:सन्देह दैवी अधिकारों की प्रथम पराजय थी।

1789 ई० में सार्वजनिक चुनाव के पश्चात् स्टेट्स जनरल का अधिवेशन आरम्भ हुआ। स्टेट्स जनरल के तीन सदन थे। प्रथम सदन पादरी वर्ग का था। **द्वितीय** सदन सामन्त वर्ग का था। **तृतीय** सदन साधारण जनता का था। नव-निर्वाचित संसद की समस्या यह थी कि तीनों सदन मिलकर सम्पूर्ण राष्ट्र की संस्था है। अत: प्रत्येक कार्यवाही संयुक्त रूप से हो। प्रथम व द्वितीय वर्ग ने इसका तीव्र विरोध किया। इस पर तृतीय सदन ने प्रथम व द्वितीय सदनों को संयुक्त वार्ता के लिए आमन्त्रित किया और दोनों सदनों के न आने पर 17 जून, 1789 ई० को स्टेट्स जनरल की राष्ट्र सभा (National Assembly) घोषित कर दिया तथा स्वयं को राष्ट्र का वास्तविक प्रतिनिधि भी घोषित किया। लुई सोलहवें ने घबराकर तृतीय सदन में ताला डलवा दिया। इस पर 30 जून, 1789 ई० को एबेसिये एवं मिराब्यू के नेतृत्व में जनता के प्रतिनिधियों ने 'टेनिस कोर्ट' में एकत्रित होकर यह शपथ ली कि जब तक वे सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए संविधान नहीं बना लेंगे, घर नहीं जाएँगे। नि:सन्देह यह क्रांति का आरम्भ था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. अमेरिका क्रांति कब हुई?
(a) 1774-1782 (b) 1775-1783 (c) 1777-1785 (d) 1787-1791

प्र.2. उत्तर अमेरिका में ब्रिटेन के कितने उपनिवेश थे?
(a) 11 (b) 12 (c) 13 (d) 14

प्र.3. अमेरिका क्रांति का अंत किस संधि द्वारा हुआ?
(a) वियना (b) पेरिस (c) रोम (d) लन्दन

प्र.4. फ्रांस की क्रांति कब हुई?
(a) 1788 (b) 1789 (c) 1790 (d) 1791

प्र.5. ग्रेनविल ने संसद से स्टाम्प एक्ट कब पारित कराया?
(a) 1762 (b) 1763 (c) 1764 (d) 1765

प्र.6. शीशा, चाय, कागज तथा रंग के आयात पर पिट मंत्रिमंडल ने कब कर लगा दिया?
(a) 1737 (b) 1738 (c) 1739 (d) 1740

प्र.7. कब से चाय अधिनियम द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सीधे अमेरिका को चाय भेजने का अधिकार प्राप्त हो गया था?
(a) 1771 (b) 1772 (c) 1773 (d) 1774

प्र.8. अमेरिका-वासियों ने बोस्टन के बन्दरगाह पर एक जहाज से कितने चाय के बॉक्स समुद्र में फेंक दिए?
(a) 320 (b) 330 (c) 340 (d) 350

प्र.9. फिलाडेल्फिया में उपनिवेशवासियों ने कब सभा आयोजित की?
(a) 1773 (b) 1774 (c) 1775 (d) 1776

प्र.10. निम्न में कौन-सा अंग्रेजों की पराजय का कारण न था?
(a) इंग्लैण्ड का आर्थिक दृष्टि से कमजोर होना (b) अंग्रेज सेना के अयोग्य सेनापति
(c) यातायात की असुविधा (d) अमेरिका की इंग्लैण्ड से दूरी

प्र.11. यह कथन किसका है "वाशिंगटन के नेतृत्व ने उपनिवेशवासियों के मन में विश्वास तथा साहस को उत्पन्न कर दिया था, जिसके कारण उन्हें इस महान तथा दुष्कर संघर्ष में अन्तिम विजय प्राप्त हुई।"
(a) अर्नोल्ड टायनबी (b) लास्की (c) रैम्जे म्योर (d) इनमें से कोई नहीं

प्र.12. आयरलैण्ड को वैधानिक स्वतन्त्रता कब मिली?
(a) 1781 (b) 1782 (c) 1783 (d) 1784

प्र.13. किस युद्ध से लुई चौदहवें की आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई?
(a) पंचवर्षीय युद्ध (b) षष्ठवर्षीय युद्ध
(c) सप्तवर्षीय युद्ध (d) अष्टवर्षीय युद्ध

प्र.14. निम्न में कौन-सा कथन फ्रांस की क्रांति के लिए सही नहीं है?
1. कर का बोझ कुलीन और साधारण वर्ग पर था।
2. देश के विभिन्न भागों में विभिन्न कानून थे।
3. कर वसूलने का अधिकार सर्वाधिक बोली देने वाले को दिया जाता था।
4. साधारण अपराधों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था थी।
(a) 1, 2 (b) केवल 4 (c) केवल 1 (d) 1, 2, 3

प्र.15. फ्रांस की क्रांति ने कौन-सा विचार रखा?
(a) समानता (b) स्वतन्त्रता (c) भ्रातत्व (d) ये सभी

प्र.16. यह कथन किसका है '1789 की क्रांति का विद्रोह तानाशाही से भी अधिक असमानता के प्रति था।'
(a) रैम्जे म्योर (b) गूच (c) टॉयनवी (d) मेडलिन

प्र.17. फ्रांस में साधारण वर्ग में कौन शामिल था?
(a) प्रोफेसर (b) वकील
(c) साहूकार (d) ये सभी

प्र.18. कितने वर्ष बाद एस्टेट्स जनरल के निर्वाचनों के लिए आदेश जारी हुआ?
(a) 172 वर्ष बाद (b) 173 वर्ष बाद
(c) 174 वर्ष बाद (d) 175 वर्ष बाद

TOUCH 'n PASS

प्र.19. अर्थ मंत्री तूर्जो ने कौन-सा कार्य किया?

1. उद्योग व व्यापार को नियंत्रण मुक्त कर दिया।
2. कृषकों से बेगार प्रथा करानी प्रारम्भ कर दी।
3. विशेषाधिकार वर्ग पर भी कर लगा दिया।
4. सामान्य जनता के करों को कम किया।

(a) 1, 2, 4 (b) 1, 2, 3, 4 (c) 1, 3, 4 (d) 2, 4

प्र.20. तूर्जो को मेरी आन्तनेत के दबाव में कब हटाया गया?

(a) 1775 (b) 1776 (c) 1777 (d) 1778

प्र.21. लुई सोलहवें कितने वर्ष बाद स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया?

(a) 175 वर्ष (b) 176 वर्ष (c) 177 वर्ष (d) 178 वर्ष

प्र.22. स्टेट्स जनरल के तीन सदन थे। निम्न में कौन-सा सदन साधारण जनता का था?

(a) पहला सदन (b) दूसरा सदन
(c) तीसरा सदन (d) इनमें से कोई नहीं

प्र.23. एवेसियो एवं मिराब्यू के नेतृत्व में जनता के प्रतिनिधियों ने टेनिस कोर्ट में शपथ कब ली?

(a) 27 जून, 1789 (b) 28 जून, 1789
(c) 29 जून, 1789 (d) 30 जून, 1789

प्र.24. अमेरिकी क्रांति का कौन-सा कारण नहीं था?

(a) अमेरिकावासियों का अंग्रेज होना (b) असंतोषजनक शासन प्रणाली
(c) रचेन का अमेरिकावासियों को समर्थन (d) दोषपूर्ण व्यापारिक प्रणाली

प्र.25. किसने सप्तवर्षीय युद्ध को अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम का प्रमुख कारण माना है?

(a) कैटलनी (b) टॉयनबी
(c) वार्नर-मार्टिन (d) रैम्जेम्योर

प्र.26. शीरा के निर्यात सम्बन्धित कब पारित किया गया?

(a) 1763 (b) 1764 (c) 1765 (d) 1766

प्र.27. अमेरिका में उसकी सुरक्षा हेतु कितना खर्च अमेरिकियों से देने को कहा गया?

(a) $\frac{1}{2}$ (b) $\frac{1}{3}$ (c) $\frac{1}{4}$ (d) $\frac{1}{5}$

प्र.28. फिलाडेल्फिया की सभा ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कब की?

(a) 1773 (b) 1774 (c) 1775 (d) 1776

प्र.29. स्वतंत्रता घोषणा पत्र कब जारी किया गया?

(a) 2 जुलाई, 1776 (b) 3 जुलाई, 1776
(c) 4 जुलाई, 1776 (d) 5 जुलाई, 1776

प्र.30. अंग्रेज जनरल बरगोयने को कब हथियार डालने पड़े?

(a) 15 अक्टूबर, 1777 (b) 16 अक्टूबर, 1777
(c) 17 अक्टूबर, 1777 (d) 18 अक्टूबर, 1777

प्र.31. फ्रांस ने कब अमेरिका को स्वतन्त्र देश मान लिया?

(a) 1778 (b) 1789 (c) 1790 (d) 1791

प्र.32. लार्ड कॉर्नवालिस को यार्कटाउन में कब हथियार डालने पड़े?

(a) 1780 (b) 1781 (c) 1782 (d) 1783

TOUCH 'n' PASS

प्र.33. वर्साय की संधि के बाद दोनों पक्षों ने कब युद्ध बन्द कर दिया?
(a) 1781 (b) 1782
(c) 1783 (d) 1784

प्र.34. जार्ज वाशिंगटन कब अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति बने?
(a) 29 अप्रैल, 1789 (b) 30 अप्रैल, 1789
(c) 1 मई, 1789 (d) 2 मई, 1789

प्र.35. 1800 ई० में टॉमस जैफर्सन अमेरिका के कौन-से राष्ट्रपति बने?
(a) दूसरे (b) तीसरे
(c) चौथे (d) पाँचवे

प्र.36. जैफर्सन ने लुइजियाना को फ्रांस के नैपोलियन से कितने में खरीदा?
(a) 1 करोड़ डॉलर (b) $1\frac{1}{2}$ करोड़ डॉलर
(c) 2 करोड़ डॉलर (d) $2\frac{1}{2}$ करोड़ डॉलर

प्र.37. 'मैं ही राज्य हूँ' कौन कहता था?
(a) लुई (xiii) (b) लुई (xiv)
(c) लुई (xv) (d) लुई (xvi)

प्र.38. ''चूँकि मैं चाहता हूँ, इसलिए यह कानून है'' यह किसका कथन है?
(a) लुई (xiii) (b) लुई (xiv)
(c) लुई (xv) (d) लुई (xvi)

प्र.39. फ्रांस में कुल कितनी पार्लमां थीं?
(a) 11 (b) 12 (c) 13 (d) 14

प्र.40. पादरियों के पास फ्रांस की कुल भूमि का कितना भाग था?
(a) $\frac{1}{3}$ (b) $\frac{1}{4}$ (c) $\frac{1}{5}$ (d) $\frac{1}{6}$

उत्तरमाला

1. (b)	**2.** (c)	**3.** (b)	**4.** (b)	**5.** (d)	**6.** (a)	**7.** (c)	**8.** (c)	**9.** (b)	**10.** (a)
11. (c)	**12.** (b)	**13.** (c)	**14.** (c)	**15.** (d)	**16.** (d)	**17.** (d)	**18.** (d)	**19.** (c)	**20.** (b)
21. (a)	**22.** (c)	**23.** (d)	**24.** (c)	**25.** (c)	**26.** (a)	**27.** (b)	**28.** (c)	**29.** (c)	**30.** (c)
31. (a)	**32.** (b)	**33.** (c)	**34.** (b)	**35.** (b)	**36.** (b)	**37.** (b)	**38.** (d)	**39.** (d)	**40.** (c)

TOUCH 'n' PASS

UNIT-IV

नेपोलियन बोनापार्ट
Napoleon Bonaparte

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. नेपोलियन बोनापार्ट कौन था?

Who was Napoleon Bonaparte?

उत्तर नेपोलियन बोनापार्ट का जन्म 15 अगस्त, 1769 मृत्यु 5 मई, 1821 (जन्म नाम नेपोलियोनि दि बोनापार्टे) तक फ्रांस की क्रांति में सेनापति, 11 नवम्बर, 1799 से 18 मई, 1804 तक प्रथम कांसल के रूप में शासक रहा और 18 मई, 1804 से 6 अप्रैल, 1814 तक नेपोलियन के नाम से सम्राट रहा। वह पुन: 20 मार्च से 22 जून 1815 में सम्राट बना।

प्र.2. नेपोलियन बोनापार्ट का उदय कैसे हुआ?

How did Napoleon Bonaparte rise?

उत्तर 1804 ई० में नेपोलियन ने सीनेट के द्वारा स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित करा दिया। तत्कालीन फ्रांस में नेपोलियन का उदय एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना थी। नेपोलियन का जन्म कोर्सिका द्वीप के एक साधारण परिवार में हुआ था परन्तु अपनी योग्यता के बल पर वह एक मामूली सैनिक से ऊपर उठकर फ्रांस की गृह-सेना का सेनापति बन गया।

प्र.3. नेपोलियन बोनापार्ट किस कारण वाटरलू युद्ध में पराजित हुआ?

Why was Napoleon Bonaparte defeated in the battle of waterloo?

उत्तर वर्ष 1812 में कई कारणों के चलते नेपोलियन रूस पर विजय प्राप्त करने में विफल रहा, इस विफलता का कारण—दोषपूर्ण रसद, खराब अनुशासन, बीमारी, और प्रतिकूल मौसम था तथा बहुत बड़ी संख्या में उसके सैनिकों के मारे जाने के कारण उसकी सेना दुर्बल हो गयी। वर्ष 1814 में नेपोलियन को सम्राट पद का त्याग कर एल्बा द्वीप पर निर्वासित कर दिया गया, इन्हीं विफलताओं के परिणामस्वरूप अंतत: 1815 में वाटरलू के युद्ध में वह पराजित हो गया।

प्र.4. नेपोलियन बोनापार्ट का पतन कब हुआ?

When did Napoleon Bonaparte decline?

उत्तर नेपोलियन ने पूरे अपने 20 वर्ष के सैन्य जीवन में लगभग 60 युद्ध लड़े, जिनमें से केवल सात युद्ध में उसे हार का सामना करना पड़ा था। यह युद्ध नेपोलियन के पतन के आखरी वर्षों के समय के थे। 1815 में वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन आखिरी युद्ध हार गया और नेपोलियन का पतन हो गया।

प्र.5. नेपोलियन बोनापार्ट का उद्देश्य क्या था?

What was the objective of Naopleon Bonaparte?

उत्तर फ्रांस में शक्तिशाली शासन स्थापित करने तथा शान्ति व्यवस्था बनाए रखने के लिए नेपोलियन ने शासन की सम्पूर्ण शक्ति को अपने हाथों में केन्द्रित कर लिया। प्रान्तीय एवं स्थानीय स्तर पर अधिकारियों को नियुक्त करके प्रशासनिक अराजकता को समाप्त कर दिया, जो उसका प्रमुख उद्देश्य था।

प्र.6. नेपोलियन ने क्या सुधार किए थे?

What reforms did Napoleon?

उत्तर नेपोलियन ने फ्रांस की तरह अपने नियंत्रण वाले हर इलाके में प्रशासनिक सुधार किए। उसने सामंती व्यवस्था को खत्म किया। किसानों को दासता और जागीर को अदा होने वाले शुल्कों से मुक्त किया। उसने शहरों में प्रचलित शिल्प मंडलियों द्वारा लगाई गई पाबंदियों को भी समाप्त किया।

TOUCH 'n PASS

प्र.7. नेपोलियन से पहले कौन राजा था?
Who was king before Napoleon?

उत्तर नेपोलियन से पहले लुई 16वें (1774-93) का शासन था। इनके समय में राजकोष का अपव्यय बढ़ता गया। जनता में असन्तोष फैलने लगा, यहीं से फ्रांसीसी क्रान्ति की शुरुआत हुई।
21 जनवरी, 1793 को लुई 16वें को फाँसी दी गयी और अन्त में सत्ता नैपोलियन के हाथ में आ गयी थी।

प्र.8. 1814 में नेपोलियन को किसने हराया था?
Who defeated Napoleon in 1814?

उत्तर वाटरलू की लड़ाई 18 जून, 1815 को नेपोलियन की फ्रांसीसी सेना और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और मार्शल ब्लूचर के नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच लड़ी गई थी। अपने युग की निर्णायक लड़ाई, इसने एक युद्ध का समापन किया जो 23 वर्षों तक चला था, यूरोप पर हावी होने के फ्रांसीसी प्रयासों को समाप्त कर दिया और नेपोलियन की शाही शक्ति को हमेशा के लिए नष्ट कर दिया।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. "नेपोलियन क्रांति का पुत्र था।" व्याख्या कीजिए।
"Nepoleon was the son of revolution." Explain.

उत्तर

नेपोलियन : क्रांति का पुत्र
(Napoleon : The Son of Revolution)

नेपोलियन स्वयं को क्रांति का पुत्र कहता था। वह स्वयं को क्रांति भी कहता था। इतिहासकारों में इस विषय में मतभेद है कि नेपोलियन क्रांति का पुत्र था अथवा नहीं।
नेपोलियन क्रांति का पुत्र था, इस मत के पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. नेपोलियन का आविर्भाव क्रांति के समय ही हुआ था।
2. फ्रांसीसी क्रांति ने ही ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की थीं जिनका लाभ उठाकर वह उच्चतम शिखर तक जा पहुँचा।
3. उसने सामाजिक भेदभावों को मिटाकर सामाजिक समानता (Social equality) की स्थापना की।
4. फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात् उत्पन्न दुर्व्यवस्था को समाप्त कर एक सुदृढ़ शासन की स्थापना की।
5. नेपोलियन ने सामन्ती प्रथा (Feudal System) को समाप्त किया।
6. विजित प्रदेशों में प्राचीन संस्थाओं को समाप्त कर नवीन संस्थाओं की स्थापना की।
7. फ्रांस में सामाजिक व आर्थिक सुधार करके क्रांति की माँग को उसने पूरा किया।
8. अपनी विजयों से उसने फ्रांस को यूरोप का प्रमुख देश बना दिया।

उपरोक्त तर्कों के पश्चात् भी अनेक इतिहासकार नेपोलियन को क्रांति का पुत्र स्वीकार नहीं करते, तथा अपने मत के पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं—

1. नेपोलियन ने क्रांति के सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य किए।
2. नेपोलियन ने राष्ट्रीयता (Nationality) के सिद्धान्त की पूर्णतया अवहेलना की।
3. विजित देशों में उसने अपने रिश्तेदारों को शासक नियुक्त किया। प्रजा की इच्छा के विरुद्ध शासक नियुक्त करना नि:सन्देह क्रांति के सिद्धान्तों के विपरीत था।
4. अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए उसने फ्रांस को निरन्तर युद्धों में रत रखा।
5. नेपोलियन ने महाद्वीपीय नीति के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अन्य देशों के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न की व अन्य देशों के मामलों में हस्तक्षेप किया।
6. केन्द्रीकरण की नीति अपनाकर सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथों में ले ली।
7. प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगाना नि:सन्देह क्रांति के सिद्धान्तों के विरुद्ध था।
8. उसने कई पुरानी परम्पराओं को पुन: अपना लिया। उदाहरणार्थ, सम्राट की उपाधि धारण करना, लिजियन का सम्मान (Honour of Legion) इत्यादि।

अत: नेपोलियन को क्रांति का पुत्र स्वीकार करना कठिन है। इस विषय में ग्रांड एण्ड टेम्परले का कथन उल्लेखनीय है। उन्होंने लिखा है, "नेपोलियन क्रांति का पुत्र था, किन्तु उसने उन सिद्धान्तों व उद्देश्यों को उलट दिया, जिनसे उसका आविर्भाव हुआ था।"

TOUCH 'n PASS

प्र.2. नेपोलियन की क्रांति का मूल्यांकन कीजिए।
Evaluation Napoleon's Revolution.

उत्तर

नेपोलियन की क्रांति का मूल्यांकन
(Evaluation of Napoleon's Revolution)

नेपोलियन को आधुनिक युग का सबसे महान् व्यक्ति माना जाता है। अत्यन्त साधारण घर में जन्मे नेपोलियन ने अपनी असाधारण योग्यता के बल पर एक सैनिक के पद से उन्नति प्राप्त करते हुए फ्रांस के सम्राट का पद ग्रहण किया। ग्रांट टेम्परले (Grant and Temperley) ने लिखा है, "नेपोलियन एक असाधारण चरित्र व योग्यता वाला व्यक्ति था जो किसी भी देश में, किन्हीं भी परिस्थितियों में उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच सकता था।" नेपोलियन ने जितनी भी सफलताएँ प्राप्त की अपनी योग्यता के बल पर ही प्राप्त की थीं।

नेपोलियन ने अपनी असाधारण विजयों से लगभग सम्पूर्ण यूरोप को प्रभाव क्षेत्र में ला दिया था। इस प्रकार फ्रांस के सम्मान को उसने उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचा दिया। नेपोलियन ने पेरिस को यूरोप का केन्द्र बना दिया। यद्यपि नेपोलियन द्वारा स्थापित विशाल साम्राज्य स्थिर न रह सका, किन्तु इससे पूर्व फ्रांस की राजनीतिक सीमाओं का विस्तार इतना अधिक कभी नहीं हुआ था। उसने समानता की भावनाओं का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार किया।

नेपोलियन एक कुशल सेनानायक ही नहीं अपितु एक कुशल प्रशासक भी था। नेपोलियन ने प्रथम कान्सल के रूप में तथा उसके बाद सम्राट के रूप में अत्यधिक सुधार किए। नेपोलियन ने फ्रांस में वर्गविहीन समाज की स्थापना की। उसने सामाजिक समानता पर अत्यधिक बल दिया। 'नेपोलियन विधि संहिता' (Napoleon Code) की स्थापना नेपोलियन की फ्रांस को एक अमूल्य भेंट थी। नेपोलियन फ्रांस में अत्यधिक लोकप्रिय था जिसका प्रमाण यह है कि अकेले नेपोलियन के विषय में इतना अधिक साहित्य रचा गया है जितना अन्य किसी व्यक्ति के विषय में नहीं लिखा गया। ग्रांट एण्ड टेम्परले ने लिखा है, "वह ईश्वर प्रतीत होता था जो मार भी सकता था व जीवित भी कर सकता था।"

अपने कार्यों से नेपोलियन ने केवल फ्रांस को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण यूरोप को प्रभावित किया। इसी कारण 1799 ई० से 1814 ई० के समय को 'नेपोलियन युग' (Napoleon Era) कहा जाता है। अपने कार्यों के कारण वह अपने शत्रुओं में अत्यधिक अलोकप्रिय था। इसी कारण फिशर ने लिखा है, "सम्भवत: सम्पूर्ण मानव इतिहास में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ जिसको अपने समय में इतनी प्रशंसा, विरोध व घृणा प्राप्त हुई हो।"

नेपोलियन असाधारण प्रतिभा व व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था। जनसमूह पर अपने भाषणों की ओजता से प्रभाव डालने में उसे दक्षता प्राप्त थी। उसके सैनिक भी उससे अत्यधिक प्रभावित रहते थे, जिसका प्रमाण एल्बा (Elba) द्वीप से लौटने पर सैनिकों द्वारा उसका स्वागत करना व साथ देना है। नेपोलियन अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था जिसने अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए निरन्तर युद्ध किए। इन युद्धों में उसके सैनिकों ने सदैव उसका साथ दिया। अन्तत: यही महत्त्वाकांक्षाएँ ही उसके पतन का कारण भी बन गयीं। इस तरह 1815 में नेपोलियन का पतन हो गया, किन्तु नेपोलियन युग का यश स्थायी था। नेपोलियन के विषय में तालीरां का कथन उल्लेखनीय है, "नेपोलियन जैसा व्यक्तित्व न किसी ने देखा है और न ही आने वाली कई शताब्दियों में ऐसा असाधारण व्यक्ति जन्म ले सकेगा।"

प्र.3. नेपोलियन बोनापार्ट के प्रारम्भिक जीवन का उल्लेख कीजिए।
Explain the early life of Napoleon Bonaparte.

उत्तर

नेपोलियन बोनापार्ट का प्रारम्भिक जीवन
(Early Life of Napoleon Bonaparte)

नेपोलियन का जन्म 15 अगस्त, 1769 ई. को कार्सिका (Carcica) द्वीप के **अजाकियो** (Ajaccio) नामक नगर में एक निर्धन, किन्तु कुलीन वकील के घर हुआ था। उसके पिता का नाम चार्ल्स बोनापार्ट था जो मूलत: फ्लोरेंस का निवासी था। नेपोलियन की माँ मेरी लिटिजिया रामोलिनो (Merie Litizia Ramolino) थी जो कार्सिका की निवासिनी थी। नेपोलियन के पिता की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण नेपोलियन का प्रारम्भिक जीवन सुखद नहीं था, किन्तु उसकी माँ ने सदैव उसे महान् बनने की प्रेरणा दी। नेपोलियन ने फ्रांस में **ब्रीन** (Brienne) में अपनी शिक्षा प्रारम्भ की। स्कूल में अन्य विद्यार्थी उसकी गरीबी व नाम का मजाक

TOUCH 'n' PASS

उड़ाते थे। नेपोलियन अत्यन्त मेधावी छात्र था। उसके एक शिक्षक ने उसके विषय में कहा था, "यह बालक ग्रेनाइट का बना हुआ है, लेकिन इसके भीतर एक ज्वालामुखी है।" नेपोलियन ने अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान इतिहास, भूगोल, राजनीति व गणित आदि विषयों का गहन अध्ययन किया। नेपोलियन ने वाल्टेयर, रूसी, मॉण्टेस्क्यू, आदि विचारकों की रचनाओं का भी अध्ययन किया तथा वह उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ।

मात्र 16 वर्ष की ही आयु में वह सेना में द्वितीय लेफ्टिनेण्ट के पद पर नियुक्त हो गया। नेपोलियन बहुत अनुशासनप्रिय था तथा फ्रांस की क्रांति के समय उत्पन्न हुई अव्यवस्था का विरोधी था।

फ्रांसीसी क्रांति ने नेपोलियन के उन्नति करने के मार्ग को प्रशस्त कर दिया। 1789 ई० में कार्सिका द्वीप ने फ्रांस के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। नेपोलियन जो बचपन में कार्सिका द्वीप की स्वतन्त्रता का स्वप्न देखता आ रहा था, को अपनी इच्छा पूर्ण करने का अवसर मिल गया। नेपोलियन, जो काफी समय से कार्सिका में ही रह रहा था। (इसी कारण उसकी नौकरी भी छूट गयी थी) ने इस युद्ध में सक्रिय भाग लिया तथा कार्सिका द्वीप को राष्ट्रीय सभा ने फ्रांस के अन्य प्रान्तों जैसी समानता प्रदान कर दी। नेपोलियन 1793 ई० में अपने परिवार के साथ फ्रांस आ गया तथा उसने **जैकोबिन दल** (Jacobin Party) की सदस्यता ग्रहण कर ली। जैकोबिन दल के सदस्य बन जाने से उसे अपनी नौकरी पुन: प्राप्त हो गयी।

नेपोलियन को उन्नति करने का वास्तविक अवसर तूलों (Toulon) में मिला। 28 अगस्त, 1793 ई० को अंग्रेजी जहाजी बेड़े ने फ्रांस पर आक्रमण किया व तूलों पर अधिकार कर लिया, किन्तु इसी समय नेपोलियन ने अंग्रेजी सेना पर आक्रमण करके उसे परास्त किया। नेपोलियन के जीवन की यह प्रथम महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस विजय के परिणामस्वरूप नेपोलियन को बिगेडियर जनरल का पद प्रदान किया गया।

नेपोलियन को अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का दूसरा अवसर 1795 ई० में मिला। 5 अक्टूबर, 1795 ई० को प्रजातन्त्रवादियों ने राजतन्त्रवादियों व संविधान से असन्तुष्ट होकर पेरिस की भीड़ को संगठित किया तथा राष्ट्रीय सभा (National Convention) के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। राष्ट्रीय सभा की सुरक्षा का कार्य नेपोलियन को सौंप दिया गया। नेपोलियन ने 40 तोपों से भीषण गोलाबारी करके दो घण्टे के अन्दर ही विद्रोहियों को भागने पर विवश कर दिया। इस संघर्ष में 400 विद्रोही मारे गए। यद्यपि 200 सैनिक नेपोलियन के भी हताहत हुए, किन्तु नेपोलियन ने विद्रोहियों का पूर्णरूप से दमन करके फ्रांस को गृह युद्ध (Civil War) से बचा लिया व राष्ट्रीय सभा की रक्षा की। इस सफलता के परिणामस्वरूप नेपोलियन को **समस्त आन्तरिक सेना** (Army of the interior) का सेनापति नियुक्त किया गया। इस घटना के बाद से उसे 'प्रजातन्त्र का रक्षक' (Defender of the Democracy) भी कहा जाने लगा।

प्र.4. प्रथम कान्सल के रूप में नेपोलियन की विदेश नीति को बताइए।
State the foreign policy of Nepoleon as the first consul.

उत्तर

प्रथम कान्सल के रूप में नेपोलियन की विदेश नीति
(Foreign Policy of Nepoleon as First Consul)

नेपोलियन ने प्रथम कान्सल के रूप में गृह नीति में ही सफलता प्राप्त नहीं की वरन् वैदेशिक नीति में भी वह सफल रहा। उसकी कार्य-प्रणाली इस प्रकार से थी—

1. **इटली का द्वितीय अभियान** (Second Campaign against Italy)—नेपोलियन ने प्रथम कान्सल बनने के बाद आस्ट्रिया पर दो ओर से आक्रमण करने की योजना बनायी। उसने एक सेना प्रसिद्ध सेनापति मोरो (Moreau) के नेतृत्व में दक्षिण जर्मनी की ओर से आस्ट्रिया पर आक्रमण करने के लिए भेजी। दूसरी सेना का नेतृत्व स्वयं नेपोलियन ने किया। उसने इस बार इटली पर आक्रमण करने के लिए आल्पस की दुर्गम पहाड़ियों को पार करने का निर्णय किया। नेपोलियन ने **बर्नार्ड के दर्रे** (Great St. Bernard Pass) को पार करके इटली में प्रवेश किया। मोरेंगो (Morrengo) नामक स्थान पर नेपोलियन व ऑस्ट्रियन सेनाओं के मध्य भीषण युद्ध हुआ। नेपोलियन की इस युद्ध से विजय हुई। दूसरी ओर से मोरो निरन्तर सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ रहा था। मोरो ने 3 दिसम्बर, 1800 ई० को होहेनलिण्डन (Hohenlinden) नामक स्थान पर आस्ट्रिया की सेना को परास्त किया। आस्ट्रिया का सम्राट फ्रांसिस II (Francis II) नेपोलियन व मोरो की निरन्तर सफलताओं से भयभीत हो उठा व विवश होकर उसने फ्रांस के साथ 1801 ई० में **ल्यूनेविले की सन्धि** (Treaty of Luneville) कर ली।

   इस सन्धि से फ्रांस को बहुत लाभ हुआ। इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नवत् थीं—

   (i) आस्ट्रिया हैल्वेटिक (Halvetic), बेटेवियन (Batavian) तथा सिस-अल्पाइन (Cis-alpine) गणराज्यों को मान्यता प्रदान करने के लिए तैयार हो गया।

(ii) इटली के गणराज्यों को मान्यता प्रदान कर दी गयी।
(iii) बेल्जियम पर फ्रांस का अधिकार मान लिया गया।
(iv) केम्पोफोमिया की सन्धि को पुनः स्वीकार किया गया।

2. **इंग्लैण्ड से समझौता** (Agreement with England)—फ्रांस और इंग्लैण्ड परस्पर लम्बे समय से युद्ध करते-करते ऊब चुके थे। नेपोलियन यह समझ चुका था कि शक्तिशाली नौ-सेना के बिना इंग्लैण्ड को परास्त करना सम्भव न था। दूसरी ओर इंग्लैण्ड को भी आभास हो गया था कि शक्तिशाली थल सेना के अभाव में फ्रांस पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती थी। अतः 27 मार्च, 1802 ई० को दोनों देशों के मध्य आमियाँ की सन्धि (Treaty of Amines) हो गई।
इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित थीं—
(i) इंग्लैण्ड ने फ्रांस की कान्स्यूलेट (Consulate) सरकार को मान्यता प्रदान की।
(ii) इंग्लैण्ड ने श्रीलंका व ट्रिनिडाड को छोड़कर शेष सभी उपनिवेश जिन्हें उसने पिछले युद्धों में फ्रांस से जीता था, फ्रांस को लौटा दिए।
(iii) इंग्लैण्ड ने ल्यूनेविले की सन्धि (Treaty of Luneville) को मान्यता प्रदान की।

इस प्रकार कुछ समय के लिए दोनों प्रमुख प्रतिद्वन्द्वियों के मध्य युद्ध विराम हो गया, किन्तु दुर्भाग्यवश यह सन्धि स्थाई प्रमाणित नहीं हुई। एक वर्ष के पश्चात् ही यह सन्धि टूट गई, किन्तु यह सन्धि निःसन्देह नेपोलियन के लिए एक कूटनीतिक विजय थी क्योंकि इसके द्वारा फ्रांस की सरकार को मान्यता प्रदान की थी।

प्र.5. प्रायद्वीपीय युद्ध में नेपोलियन की पराजय के कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the causes for the defeat of Napoleon in the peninsular war.

उत्तर

प्रायद्वीपीय युद्ध में नेपोलियन की पराजय के कारण
(Causes for the Defeat of Napoleon in the Peninsular War)

स्पेन पर आक्रमण करना नेपोलियन की एक ऐसी भूल थी जो उसे ले डूबी। यह युद्ध नेपोलियन द्वारा लड़ा गया सबसे लम्बे समय तक चलने वाला युद्ध था। इस युद्ध में नेपोलियन की पराजय के निम्नलिखित कारण थे—

1. स्पेन एक पर्वतीय प्रदेश है। फ्रांस के सैनिकों को इस युद्ध में भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अपार कष्ट का सामना करना पड़ा।
2. स्पेन के सैनिकों में देश के प्रति श्रद्धा व प्रेम कूट-कूट कर भरा था। वे इस युद्ध में अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे थे, जबकि फ्रांसीसी सैनिकों के साथ ऐसा न था।
3. नेपोलियन का विचार था कि स्पेन एक धार्मिक देश है, अतः उसे आसानी से जीता जा सकता है। वह स्पेन की शक्ति का सही अनुमान न लगा सका।
4. स्पेन की विजय का मुख्य श्रेय अंग्रेजी सहायता को है। यदि स्पेन की सहायता इंग्लैण्ड न करता तो स्पेन नेपोलियन को पराजित नहीं कर सकता था। इंग्लैण्ड ने लार्ड वेलिंग्टन व वेलेसली जैसे योग्य सेनापति स्पेन की सहायतार्थ भेजे जिन्होंने फ्रांसीसी सेना के छक्के छुड़ा दिए।
5. नेपोलियन ने पोप के साथ दुर्व्यवहार किया था, अतः सम्पूर्ण कैथोलिक सम्प्रदाय नेपोलियन के विरुद्ध हो गया था। कैथोलिक पादरियों ने लोगों से धर्म रक्षा के लिए नेपोलियन के विरुद्ध एक जुट होने के लिए कहा।
6. जिस समय फ्रांस व स्पेन के मध्य संघर्ष चल रहा था उसी समय नेपोलियन को यूरोप में अन्यत्र भी युद्धों में व्यस्त होना पड़ा, अतः नेपोलियन इस युद्ध में अपनी सम्पूर्ण शक्ति न लगा सका।
7. नेपोलियन द्वारा स्पेन को राजपरिवार के साथ दुर्व्यवहार करने व जोसेफ बोनापार्ट को बलपूर्वक स्पेन का सम्राट बनाने के कारण स्पेन की जनता की राष्ट्रीय भावनाओं पर आघात हुआ जिसने "भिक्षुओं के देश को सैनिक देश में बदल दिया।"
8. स्पेन की सेनान ने फ्रांसीसी सेना के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध प्रणाली अपनाई, अतः फ्रांसीसी सेना को अपार कष्ट का सामना करना पड़ा।

उपरोक्त कारणों ने सम्मिलित रूप से इस युद्ध में नेपोलियन की पराजय में सहयोग दिया।

TOUCH 'n' PASS

प्रायद्वीपीय युद्ध का महत्त्व (Significance of the Peninsular War)

प्रायद्वीपीय युद्ध का यूरोप के इतिहास में विशेष महत्त्व है। यह युद्ध नेपोलियन के पतन के प्रमुख कारणों में से एक था, अत: यदि यह युद्ध न होता और यदि नेपोलियन का पतन न हुआ होता तो यूरोप का इतिहास ही कुछ और होता। इस प्रकार प्रायद्वीपीय युद्ध को यूरोप के इतिहास की एक निर्णायक घटना (Epoch making event) कहा जाता है।

प्रायद्वीपीय युद्ध से नेपोलियन को अत्यधिक हानि हुई व फ्रांस की प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगा। फ्रांस की अजेय समझी जाने वाली सेना की दुर्बलता को इस युद्ध ने यूरोप के समक्ष स्पष्ट कर दिया। इस युद्ध ने इंग्लैण्ड को फ्रांस के विरुद्ध अप्रत्यक्ष रूप से कार्यवाही करने का अवसर प्रदान कर दिया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस युद्ध ने लिपजिग व वाटरलू (Waterloo) के युद्धों में नेपोलियन की पराजय की भूमिका को तैयार कर दिया। ग्रांट एण्ड टेम्परले ने इस युद्ध के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, "स्पेन के युद्ध को ऐसा कैंसर उचित ही कहा गया है जिसने नेपोलियन की शक्ति को खींच लिया।" नेपोलियन ने स्वयं भी इस युद्ध के विषय में कहा था, "स्पेनी नासूर ने मेरा विनाश कर दिया।" इस युद्ध ने नेपोलियन की पतन के मार्ग पर अग्रसर कर दिया।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. नेपोलियन की विजयों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
Describe in detail the victories of Napoleon.

उत्तर

नेपोलियन की प्रारम्भिक सैनिक विजय
(Napoleon's Early Military Victory)

26 अक्टूबर, 1797 ई० को फ्रांस में राष्ट्रीय सभा (National Convention) का पतन हो गया तथा 'डाइरेक्टरी' का शासन प्रारम्भ हुआ। डाइरेक्टरी के शासन के दौरान आस्ट्रिया पर दो ओर से आक्रमण करने की योजना बनायी। आस्ट्रिया पर एक ओर से आक्रमण करने का उत्तरदायित्व नेपोलियन को सौंपा गया। नेपोलियन ने आस्ट्रिया पर आक्रमण करने की योजना अत्यन्त उत्साह से बनायी। आस्ट्रिया पर आक्रमण करने से पूर्व उसने अपने सैनिकों का नैतिक बल (Moral force) बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण भाषण दिया। नेपोलियन ने कहा, "मैं तुम्हें विश्व के सबसे उपजाऊ प्रदेश में ले चलूँगा। धनी प्रदेश तथा महान् शहर आप लोगों के अधीन होंगे। वहाँ आपको गौरव, सम्मान तथा अपार सम्पत्ति मिलेगी। क्या आप लोग साहस तथा दृढ़ता में असफल हो जाएँगे"

1. **इटली का अभियान** (Invasion of Italy)—आस्ट्रिया पर आक्रमण करने से पूर्व नेपोलियन ने इटली के विभिन्न राज्यों का अभियान किया। सर्वप्रथम, नेपोलियन ने अपनी सेना के साथ आल्पस पर्वत पार करके सार्डीनिया पर आक्रमण किया तथा उसकी सेना को परास्त किया। 28 अप्रैल, 1796 ई० को पीडमाण्ट के राजा ने नेपोलियन से सन्धि कर ली। इस सन्धि के परिणामस्वरूप सेवाएँ (Savay) तथा नीस (Nice) पर फ्रांस का अधिकार स्थापित हो गया। इसके साथ ही उसने नेपोलियन को आगे बढ़ने का मार्ग भी दे दिया। 10 मई, 1796 ई० को नेपोलियन ने मिलान (Milan) पर आक्रमण करके उस पर भी अधिकार कर लिया। मिलान में अनेक सम्मानित व्यक्तियों द्वारा उसे अमूल्य भेंट प्रदान की गयीं जो उसने डाइरेक्टरी के पास भिजवा दीं। तत्पश्चात्, नेपोलियन ने माण्टुआ (Mantua) का घेरा डाला। आस्ट्रिया द्वारा इस घेरे को तोड़ने के लिए सेना भेजी गयी, परन्तु नेपोलियन ने अनेक स्थानों पर आस्ट्रिया की सेना को परास्त किया। नेपोलियन की इन विजयों में आरकोला (Arcola) तथा रिवोली (Revoli) की विजयों का विशेष महत्त्व है। अन्ततः 2 फरवरी, 1797 ई० को माण्टुला पर नेपोलियन ने अधिकार कर लिया। नेपोलियन ने मोडेना, रेग्गियो (Reggio), बोलोन (Boulogne) तथा फरारा (Ferrara) को मिलाकर एक गणतन्त्र की स्थापना की जिसे **ट्रांसपोडेन गणराज्य** (Transpodane Republic) कहा गया।

   पोप से समझौता (Agreement with Pope)—उपरोक्त विजयों के पश्चात् नेपोलियन ने पोप को शक्ति का भय प्रदर्शित कर उसे समझौता करने के लिए विवश किया। पोप ने नेपोलियन से **टोलेण्टिनो** (Tolentino) नामक स्थान पर समझौता कर लिया। इस समझौते की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् थीं—

   (i) पोप ने नेपोलियन द्वारा स्थापित **ट्रांसपोडेन गणतन्त्र** (Transpodance Republic) को मान्यता प्रदान कर दी।

   (ii) पोप ने तीन करोड़ फ्रैंक, 500 हस्तलिखित ग्रन्थ तथा अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ नेपोलियन को प्रदान की।

TOUCH 'n' PASS

(iii) आवीनयो (Avignon) पर फ्रांस का अधिकार पोप द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

इस प्रकार इटली में महत्त्वपूर्ण सफलताएँ अर्जित करने के पश्चात् नेपोलियन ने आस्ट्रिया की ओर प्रस्थान किया।

2. **आस्ट्रिया का अभियान** (Expedition to Austria)—नेपोलियन ने आस्ट्रिया की ओर प्रस्थान करते हुए वेनिस (Venice) पर विजय प्राप्त की तथा ल्योबेन (Leoben) पर भी अधिकार कर लिया। नेपोलियन ने उत्तरी इटली के राज्यों को मिलाकर सिस-अल्पाइन (Cis-Alpine) गणतन्त्र व लगुरियन गणराज्य (Ligurian Republic) की स्थापना की। नेपोलियन के इन कार्यों का वहाँ की जनता द्वारा स्वागत किया गया। नेपोलियन ने आस्ट्रिया के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि यदि वह लोम्बार्डी (Lombardi) पर फ्रांस का अधिकार स्वीकार कर लेगा तो युद्ध समाप्त कर दिया जाएगा। अन्ततः आस्ट्रिया ने नेपोलियन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया व 17 अक्टूबर, 1797 ई० को सन्धि कर ली, जिसे कैम्पोफार्मिया की सन्धि (Treaty of Campoformia) कहा जाता है। इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित थीं—
   (i) आस्ट्रिया द्वारा फ्रांस को बेल्जियम प्रदान किया गया।
   (ii) लोम्बार्डी पर फ्रांस का अधिकार स्वीकार कर लिया गया।
   (iii) राइन का प्रदेश भी फ्रांस को दे दिया गया।
   (iv) फ्रांस द्वारा वेनिस के इस्ट्रिया तथा डालमेशिया प्रदेश आस्ट्रिया को दे दिए गए तथा वेनिस का पश्चिमी भाग सिस-अल्पाइन गणतन्त्र (Cis-Alpine Republic) में मिला दिया गया।

   केम्पोफार्मिया की सन्धि का अत्यधिक राजनीतिक महत्त्व है। इस सन्धि ने नेपोलियन की ख्याति में चार चाँद लगा दिए। नेपोलियन, इस सन्धि के द्वारा इटली से आस्ट्रिया के प्रभाव को कम करने में सफल हो गया। इस सन्धि ने यूरोप के राजनीतिक मानचित्र में भी परिवर्तन किया। फ्रांस की राजनीतिक सीमा उसकी प्राकृतिक सीमा तक पहुँच गयी। इस सन्धि से इटली पर फ्रांस के प्रभाव में वृद्धि हुई। इस सन्धि के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रो० मार्खम ने लिया है, "यह सन्धि फ्रांस तथा नेपोलियन के लिए महत्त्वपूर्ण थी, किन्तु इसने भविष्य में युद्ध के बीज बो दिए।"

3. **नेपोलियन का फ्रांस लौटना** (Return of Napoleon to France)—आस्ट्रिया से केम्पोफार्मिया की सन्धि करने के पश्चात् नेपोलियन 5 दिसम्बर, 1797 ई० को लौटकर पेरिस पहुँचा। फ्रांस में नेपोलियन का भव्य स्वागत किया गया तथा उसे **'राष्ट्रीय नायक'** (National Hero) माना जाने लगा। नेपोलियन ने आस्ट्रिया के अभियान के दौरान अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी। उसने केवल युद्ध के सम्पूर्ण खर्च को वसूला अपितु अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ भी वह इटली से फ्रांस लाया। इसके साथ ही उसने फ्रांस की राजनीतिक सीमाओं में परिवर्तन करके फ्रांस के सम्मान में वृद्धि की। अतः नेपोलियन का 'राष्ट्रीय नायक' के रूप में सम्मान किया जाना स्वाभाविक ही था।

4. **मिस्र का अभियान** (Campaign to Egypt)—नेपोलियन द्वारा इटली व आस्ट्रिया में प्राप्त सफलताओं व उसकी फ्रांस में बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर डाइरेक्टरी के सदस्य उससे भयभीत होने लगे। डाइरेक्टरी के सदस्यों को अपना अस्तित्व संकट में दिखाई देने लगा। अतः उन्होंने नेपोलियन को फ्रांस से दूर ही रखने का प्रयत्न किया। इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। डाइरेक्टरी के सदस्य बारा ने नेपोलियन ने कहा, "जाओ और उस समुद्री डाकू को पकड़ लो जो समुद्र में उत्पात मचाता है।" नेपोलियन ने इस चुनौती को स्वीकार किया। नेपोलियन जानता था कि इंग्लैण्ड को एक द्वीप के रूप में परास्त करना कठिन था, इसलिए उसने इंग्लैण्ड को एक साम्राज्य के रूप में परास्त करने की योजना बनाई। इसी उद्देश्य से उसने मिस्र पर आक्रमण करने का निर्णय किया, क्योंकि मिस्र पर अधिकार कर लेने से भारत के लिए फ्रांस का मार्ग प्रशस्त हो सकता था तथा नेपोलियन जानता था कि भारत इंग्लैण्ड का एक महत्त्वपूर्ण उपनिवेश था। नेपोलियन की इस योजना को डाइरेक्टरी ने स्वीकृति प्रदान कर दी।

   नेपोलियन 19 मई, 1797 ई० को टूलों (Tonlon) गया तथा वहाँ से अपने साथ अड़तीस हजार सैनिक व चार सौ जहाजों को लेकर उसने मिस्र के लिए प्रस्थान किया। नेपोलियन इस अभियान में अपने साथ मार्मा (Marmont), क्लेबर (Claber), लान (Lannes), मूरा (Murat), देसे (Desaix) तथा बर्तिए (Berthier) जैसे योग्य सेनापतियों को भी ले गया था। मिस्र पहुँचकर नेपोलियन ने 'पिरामिडों के देश' (Country of Pyramids) पर विजय प्राप्त करने के लिए

TOUCH 'n' PASS

अपने सैनिकों को उत्साहित किया। नेपोलियन ने आक्रमण करके माल्टा तथा सिकन्दरिया (Alexandria) पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् उसने काहिरा की ओर प्रस्थान किया। 21 जुलाई, 1798 को मिस्र व नेपोलियन की सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ, जिसे पिरामिडों का युद्ध (Battle of Pyramids) कहा जाता है। इस युद्ध के कुछ समय पश्चात् ही काहिरा पर भी नेपोलियन ने अधिकार कर लिया। मिस्र पर अधिकार करना उतना कठिन नहीं था जितना कि उस अधिकार को बनाए रखना कठिन था। नेपोलियन ने वहाँ कूटनीति का प्रयोग किया। नेपोलियन ने वहाँ स्वयं को मुसलमान घोषित किया तथा कुरान के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। मिस्र के लोगों को प्रभावित करने के लिए नेपोलियन ने मस्जिदों का निर्माण कराया। नेपोलियन के इन कार्यों से उसे कोई सफलता नहीं मिली तथा मिस्र में विद्रोह होते रहे।

5. **नील नदी का युद्ध** (Battle of Nile)—जिस समय नेपोलियन काहिरा में था अंग्रेजी सेनापति नेल्सन (Nelson) उसका पीछा करते हुए सिकन्दरिया (Alexandria) तक पहुँच गया। नेल्सन व नेपोलियन की सेनाओं के मध्य अबूकर की खाड़ी (Bay of Abukir) में भीषण युद्ध हुआ। अंग्रेजों की नौ-सेना अत्यन्त शक्तिशाली थी। नेल्सन ने नेपोलियन की सेना को तहस-नहस कर दिया। नेपोलियन के 400 जहाजों में से 396 जहाज इस युद्ध में नष्ट हो गए व केवल चार जहाज शेष बचे। नेल्सन व नेपोलियन के मध्य हुआ यह युद्ध नील नदी के युद्ध (Battle of Nile) के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में अपार हानि के पश्चात् भी नेपोलियन निराश नहीं हुआ व कुशल सेनानायक का परिचय देते हुए उसने अपने बचे हुए सैनिकों में अपने भाषण से उत्साह का संचार किया। नेपोलियन ने कहा, "तूफानों की बाढ़ से अपने मस्तकों को ऊपर रखना चाहिए। तूफान स्वत: शान्त हो जाएँगे।"
6. **सीरिया पर विजय** (Conquest of Syria)—नील के युद्ध में नेल्सन के हाथों पराजित हो जाने व उसके जहाजी बेड़े के नष्ट हो जाने के कारण नेपोलियन को अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जहाजी बेड़ा नष्ट हो जाने के कारण नेपोलियन के लिए समुद्र मार्ग से फ्रांस लौटना सम्भव न था। अत: उसने सीरिया होते हुए फ्रांस लौटने का निर्णय लिया। इसी समय टर्की ने भी फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी जिससे नेपोलियन की कठिनाइयाँ और बढ़ गयीं। अन्य कोई और रास्ता न देखकर नेपोलियन ने फरवरी, 1799 ई० में सीरिया पर आक्रमण कर दिया। सीरिया भी टर्की-साम्राज्य का ही अंग था। प्रारम्भ में इस युद्ध में नेपोलियन को सफलता मिली व उसने गाजा व जाफा पर अधिकार कर लिया, किन्तु एकरे (Acre) में उसे पराजित होना पड़ा तथा विवश होकर वह पुन: काहिरा लौटा। काहिरा पहुँचने पर उसे ज्ञात हुआ कि यूरोप में पुन: संघर्ष प्रारम्भ हो गया है व इटली से फ्रांस की सेना को निष्कासित कर दिया गया है। उसे यह भी सूचना मिली कि फ्रांस के विरुद्ध आस्ट्रिया, रूस व इंग्लैण्ड मिल गए हैं। अत: नेपोलियन ने ऐसी परिस्थिति में वापस फ्रांस लौटना ही उचित समझा व 21 अगस्त, 1799 ई० को अपनी सेना के साथ एक जहाज में बैठकर उसने गुप्त रूप से फ्रांस की ओर प्रस्थान किया।

इस प्रकार नेपोलियन का मिस्र का अभियान असफल ही रहा। केटेलबी ने इस विषय में लिखा है, "एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक कार्य के रूप में मिस्र का अभियान असफल रहा।" असफल होकर लौटने के पश्चात् भी फ्रांस की जनता ने नेपोलियन का स्वागत किया। जनता में सर्वत्र यह चर्चा थी कि 'फ्रांस का रक्षक' (Defender of France) आ गया है।

डाइरेक्टरी का शासन समाप्त (End of Directory Rule)

इस समय तक फ्रांस की जनता डाइरेक्टरी के शासन से तंग आ चुकी थी। सम्पूर्ण देश में घूसखोरी व अशान्ति का वातावरण था। इसी कारण नेपोलियन के मिस्र से लौटने पर जनता द्वारा उसका स्वागत किया गया था। जनता को नेपोलियन से आशा थी कि यह स्थिति में परिवर्तन करेगा। इस प्रकार नेपोलियन बचपन से जिस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, वह उसे मिल गया। उसने घोषणा की, "ऐसा प्रतीत होता है कि सब मेरा ही इन्तजार कर रहे थे। एक क्षण भी पहले आना उचित नहीं था और एक दिन बाद आने से बहुत देर हो जाती। मैं एकदम सही क्षण पर आया हूँ" नेपोलियन ने सिये (Sieyes) व ड्यूको (Ducos) नामक दो डाइरेक्टरों (डाइरेक्टरी के सदस्य) से गुप्त समझौता किया तथा 10 नवम्बर, 1799 ई० को उसने 500 सदस्यों की सभा पर सैनिकों की सहायता से आक्रमण किया। इस प्रकार नेपोलियन के समर्थक सदस्यों को छोड़ कर अन्य भाग गए। इस प्रकार डाइरेक्टरी का पतन हो गया।

10 नवम्बर, 1799 ई० को डाइरेक्टरी के शासन का अन्त करके शासन की बागडोर तीन व्यक्तियों—नेपोलियन, सिये तथा ड्यूको के हाथ में दे दी गयी। इस प्रकार फ्रांस में कान्स्यूलेट शासन (Consulate Rule) की स्थापना हुई। नेपोलियन को प्रधान कान्सल बनाया गया। कान्सल ने देश के लिए एक नवीन संविधान की रचना की। फ्रांस के इतिहास में इस घटना को 'रक्तहीन क्रांति' (Bloodless Revolution) कहा जाता है। इस घटना ने नेपोलियन की उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर दिया। नेपोलियन ने स्वयं ही अत्यन्त हर्ष के साथ कहा था, "यह मेरे जीवन की एक प्रमुख घटना है जिसमें मैंने अभूतपूर्व योग्यता का परिचय दिया।"

कान्स्यूलेट का संविधान (Constitution of the Consulate)

डाइरेक्टरी के शासन की समाप्ति के पश्चात् कान्स्यूलेट शासन की स्थापना हुई। इस शासन के लिए नवीन संविधान की रचना की गई जिसे आठवें वर्ष का संविधान (Constitution of the VIII year) भी कहा जाता है। इस नवीन संविधान के अनुसार, कार्यकारिणी के सभी अधिकार तीन सदस्यों की कान्स्यूलेट (Consulate) को दिए गए। कान्स्यूलेट के सदस्यों का चुनाव 10 वर्ष के लिए होना था। कान्स्यूलेट से तीन सदस्यों के प्रथम कान्सल (First Consul) को सम्पूर्ण अधिकार प्रदान किए गए थे। **द्वितीय** तथा **तृतीय** कान्सल (II and III consul) का कार्य प्रथम कान्सल को परामर्श देना था। प्रथम कान्सल कानून बना सकता तथा सिविल एवं सैनिक उच्चाधिकारियों की नियुक्ति कर सकता था। कान्स्यूलेट शासन के अन्तर्गत नेपोलियन को प्रथम कान्सल नियुक्त किया गया था, इस प्रकार नेपोलियन के हाथों में ही सम्पूर्ण अधिकार आ गए।

नवीन संविधान के अन्तर्गत चार वैधानिक संस्थाओं की स्थापना की गयी। ये चार संस्थाएँ निम्नवत् थीं—

1. **काउन्सिल ऑफ स्टेट** (Council of State)—काउन्सिल ऑफ स्टेट के सदस्यों को प्रथम काउन्सल द्वारा नियुक्त किया जाता था। कानून का खाका (Draft) तैयार करने का कार्य इन्हीं का था।
2. **ट्रिब्यूनेट** (Tribunate)—ट्रिब्यूनेट के सदस्यों की संख्या 100 होती थी जिसका कार्य काउन्सिल ऑफ स्टेट द्वारा तैयार कानून के ड्राफ्ट पर बहस करना होता था।
3. **व्यवस्थापिका सभा** (Legislative body)—इसके सदस्यों को बहस करने का अधिकार नहीं था, परन्तु काउन्सिल ऑफ स्टेट द्वारा तैयार कानून के मसविदे पर मतदान करती थी।
4. **सीनेट** (Senate)—सीनेट के सदस्यों की संख्या 60 होती थी। इसका कार्य यह निर्णय देना था कि कोई भी कानून संविधान की दृष्टि से उचित है अथवा नहीं। इसके अतिरिक्त ट्रिब्यूनेट तथा लेजिस्लेटिव सभा के सदस्यों को चुनती थी।

नवीन संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जिसकी आयु 21 वर्ष हो मताधिकार प्रदान किया गया। मतदान का तरीका अप्रत्यक्ष (Indiret Election System) था।

संविधान की समीक्षा (Criticism of Constitution)—कान्स्यूलेट शासन के अन्तर्गत सम्पूर्ण शक्ति प्रथम कान्सल में निहित कर दी गयी थी, अत: सम्पूर्ण शक्ति नेपोलियन के हाथों में केन्द्रित हो गयी। इस प्रकार नेपोलियन ने एक निरंकुश शासन की स्थापना की। इस संविधान ने गणतान्त्रिक प्रणाली को पूर्णतया समाप्त कर दिया। इसी कारण हैजन ने लिखा है—"नामक के लिए फ्रांस अब भी गणतन्त्र था, किन्तु वास्तव में उसने एक प्रच्छन्न राजतन्त्र का रूप धारण कर लिया था।" इस विषय में लिओ गर्शोय का कथन भी उल्लेखनीय है "इसने (नवीन संविधान ने) नेपोलियन को फ्रांस में अनुशासन रखने वाला 'ड्रिल मास्टर' बना दिया जिसका कार्य अपने आदेशों का तत्काल पालन करवाना था।" फिशर का कथन भी इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। फिशर के शब्दों में, "कान्स्यूलेट और 'साम्राज्य' के शासन को हम क्रूर शासन कह सकते हैं, किन्तु उनसे पूर्व के शासन की तुलना में यह स्वतन्त्र था।"

सम्भवत: फ्रांस में व्याप्त भ्रष्टाचार व अव्यवस्था को देखते हुए निरंकुश शासन की स्थापना समय के अनुकूल ही भी। इसी कारण फ्रांस की जनता ने नेपोलियन के निरंशुक शासन को स्वीकार कर लिया।

प्र.2. प्रथम कान्सल के रूप में नेपोलियन द्वारा किए गए सुधारों का विवरण दीजिए।
Describe the reforms introduced by Napoleon as the first consul.

उत्तर

प्रथम कान्सल के रूप में नेपोलियन
(Nepoleon as the First Consul)

नेपोलियन ने जिस समय फ्रांस में प्रथम कान्सल का पद ग्रहण किया, उसके समक्ष अनेक समस्याएँ विद्यमान थीं। फ्रांस की क्रांति तथा उसके बाद के दस वर्षों में उत्पन्न अराजकता एवं अव्यवस्था के कारण फ्रांस की स्थिति दयनीय थी। फ्रांस की पूरानी सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक व्यवस्था नष्ट हो गयी थी, अत: नेपोलियन के लिए यह आवश्यक था कि वह एक नवीन एवं

सुदृढ़ व्यवस्था की स्थापना की स्थापना करे ताकि फ्रांस की स्थिति को सुधारा जा सके। नेपोलियन ने ऐसी विषय परिस्थिति में एक कुशल प्रशासक होने का परिचय दिया तथा अनेक सुधारों के द्वारा उसने फ्रांस की स्थिति में सुधार किया। नेपोलियन की सुधारवादी नीति में चार तथ्यों पर विशेष बल दिया गया था। ये थे केन्द्रीकरण (Centralization), आर्थिक स्थिति को दृढ़ करना (Strong Economic Condition), समझौता करना (Conciliation) तथा सक्षम प्रशासन (Efficient Administrative System)।

नेपोलियन ने प्रथम कान्सल के रूप में निम्नलिखित सुधार किए—

1. **सामाजिक समानता** (Social Equality)—नेपोलियन ने स्वतन्त्रता (Liberty) की अपेक्षा समानता (Equality) को अधिक महत्त्व दिया। नेपोलियन ने उच्च व निम्न वर्गों के भेद को समाप्त कर दिया। अपनी योग्यता के बल पर कोई भी व्यक्ति शासन के समस्त पदों को प्राप्त कर सकता था। इसके अतिरिक्त नेपोलियन ने फ्रांस से भागे हुए कुलीनों एवं पादरियों के विरुद्ध पारित किए गए कानूनों का अन्त करके उन्हें क्षमा प्रदान कर दी जिससे 40 हजार से भी अधिक परिवार फ्रांस में पुन: आ गए।
2. **सार्वजनिक कार्य** (Public Works)—नेपोलियन ने प्रथम कान्सल के रूप में अनेक सार्वजनिक कार्य करवाए। नवीन सड़कों का निर्माण किया गया तथा पुरानी सड़कों को सुधारा गया। सिंचाई के उद्देश्य से नहरों की भी व्यवस्था की गयी। इसके अतिरिक्त, पेरिस के सौन्दर्यीकरण का कार्य भी इन वर्षों में नेपोलियन ने कराया। अनेक सुन्दर भवनों का निर्माण, मार्गों के किनारे वृक्षारोपण व सुन्दर सड़कें इसी उद्देश्य से बनवायी गयीं। राजमहलों को भी सुसज्जित किया गया तथा विभिन्न देशों से लायी गयी कलाकृतियों का संग्रह भी फ्रांस में नेपोलियन के द्वारा कराया गया।
3. **प्रशासन में सुधार** (Reforms in the Administration)—नेपोलियन ने प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु रूप प्रदान करने के उद्देश्य से अनेक सुधार किए। उसका मानना था कि, "फ्रांस के लोग स्वतन्त्रता के नहीं, बल्कि समानता के इच्छुक हैं।" अत: उसने 1800 ई० में प्रशासन की सम्पूर्ण शक्ति को उसने अपने हाथों में केन्द्रित कर लिया। इस प्रकार वह प्रशासन में कोई भी सुधार कर सकता था। उसने एक नवीन कानून बनाया जिसके द्वारा स्थानीय संस्थाओं (Local Institutions) को केन्द्र के अधीन कर दिया गया। अब प्रत्येक विभाग प्रीफेक्ट (Prefact) के, जिला (Arrondisement) उप-प्रीफेक्ट (Sub-Prefect) तथा कम्यून 'मेयर' (Mayor) के अधीन होता था। इन सभी अधिकारियों की नियुक्ति नेपोलियन ने स्वयं की तथा उन्हें केन्द्र के अधीन ही कार्य करना था। इन अधिकारियों की सहायता के लिए, 'निर्वाचित परिषदों' (Elective Councils) की स्थापना भी की गयी जिनका कार्य प्रमुखतया अपने स्थानों के लिए राष्ट्रीय करों को तय करना था। इस प्रकार नेपोलियन ने केन्द्रीय कानून को लागू कर प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु एवं समान बनाया। नेपोलियन की इस नीति के विषय में हाल तथा रोज ने लिखा है, "इस प्रकार फ्रांस में स्थानीय स्वशासन के स्थान पर प्रशासनिक निरंकुशता की स्थापना हुई जिसने राजनीतिक निरंकुशवाद के मार्ग को प्रशस्त किया।"
4. **न्याय एवं दण्ड व्यवस्था** (Judiciary and the Punishments)—नेपोलियन ने न्याय एवं दण्ड व्यवस्था को सुधारने के भी व्यापक प्रयास किए। अनेक सिविल एवं दण्ड (Criminal) न्यायालयों की स्थापना की गयी। न्यायाधीशों की नियुक्ति का कार्य नेपोलियन स्वयं करता था। इस प्रकार न्याय व्यवस्था को भी केन्द्र के ही अधीन किया गया। नेपोलियन का दण्ड विधान बहुत कठोर था। साधारण अपराधों के लिए भी मृत्युदण्ड की व्यवस्था थी। नेपोलियन ने क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए मुद्रित पत्रों (Letters de Catchet) का पुन: प्रचलन किया। नेपोलियन ने जूरी की प्रथा भी प्रारम्भ की। नवीन दण्ड व्यवस्था में यह भी व्यवस्था की गयी कि कोई भी मुकदमा गुप्त रूप से नहीं हो सकता था। इस व्यवस्था की एक कमी यह थी कि अवैध कारावास को रोकने के लिए कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था।
5. **प्रतिष्ठा मण्डल की स्थापना** (Legion of Honour Established)—इसके अन्तर्गत योग्यता के आधार पर इस मण्डल में कुलीनों को सम्मिलित किया जाता था। यह कार्य नेपोलियन ने फ्रांसीसियों में स्वयं के प्रति आदर की भावना जाग्रत करने के उद्देश्य से किया था। यह उपाधि केवल उन्हीं लोगों को दी जाती थी जिन्होंने कोई असाधारण अथवा वीरतापूर्ण कार्य किया हो। किसी अयोग्य व्यक्ति को चाहे वह किसी भी परिवार अथवा वंश का क्यों न हो, यह सम्मान प्रदान नहीं किया जाता था। इसी प्रकार भूमिखण्डों के पुरस्कार द्वारा उसने एक नवीन कुलीनता का विकास किया।

TOUCH 'n' PASS

6. **प्रेस पर प्रतिबन्ध** (Press Censorship)—नेपोलियन ने प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगा दिया। प्रेस अपनी इच्छा से कुछ भी छापने के लिए स्वतन्त्र नहीं थी। प्रेस पर नियन्त्रण रखने के लिए दो सेन्सर बोर्ड नियुक्त किए गए थे। इस कारण अनेक अखबारों का प्रकाशन बन्द हो गया।
7. **सैन्य व्यवस्था** (Military organization)—नेपोलियन ने सैन्य व्यवस्था में भी पर्याप्त सुधार किए। उसने सैनिक सेवा को अनिवार्य बना दिया तथा अनेक देशों में उन्हीं के खर्चे पर सेना रखकर फ्रांस की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया।
8. **शिक्षा के क्षेत्र में सुधार** (Educational Reforms)—नेपोलियन शिक्षा के महत्त्व से अच्छी तरह परिचित था। अत: उसने शिक्षा का राष्ट्रीयकरण कर दिया। नेपोलियन का मानना था कि शिक्षा पर राज्य का पूर्ण नियन्त्रण परिवर्तन के लिए आवश्यक है। अत: 1802 ई० में नेपोलियन ने शिक्षा को चर्च के हाथों से निकालकर राज्य के अधीन कर दिया। तत्पश्चात् नेपोलियन ने चार प्रकार की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की—
   (i) **प्राइमरी स्कूल** (Primary School)—प्रत्येक कम्यून में प्राइमरी स्कूल खोले गए जिनका उत्तरदायित्व प्रीफेक्ट अथवा उप-प्रीफेक्ट पर होता था।
   (ii) **माध्यमिक अथवा ग्रामर स्कूल** (Grammar School)—माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बहुत अधिक थी। इनमें कला, भाषा, विज्ञान व फ्रेंच भाषा की शिक्षा दी जाती थी।
   (iii) **हाई स्कूल** (High School)—इन स्कूलों को लेसी (Lecees) कहा जाता था तथा इन्हें बड़े नगरों में खोला गया था। इन स्कूलों के अध्यापकों की नियुक्ति व वेतन सरकार देती थी।
   (iv) **विशेष स्कूल** (Speical Schools)—विशेष स्कूलों की व्यवस्था की गयी थी। प्रथम, जिनमें कला तथा विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी; द्वितीय, जिनमें व्यावसायिक शिक्षा का प्रबन्ध था उदाहरणार्थ सैनिक स्कूल, सिविल सेवा स्कूल, इत्यादि।

   उपर्युक्त सुधारों के अतिरिक्त अध्यापकों को अध्ययन कार्य में शिक्षित बनाने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र की भी स्थापना की गयी। 1808 ई० में पेरिस में एक विश्वविद्यालय (University of France) की स्थापना की गयी थी जिसमें लैटिन, फ्रेंच, साधारण विज्ञान तथा गणित इत्यादि की शिक्षा दी जाती थी। नेपोलियन ने सभी विद्यालयों में राष्ट्रप्रेम व देशभक्ति की शिक्षा अनिवार्य कर दी। नेपोलियन ने राजनीति एवं नैतिक विज्ञान विषयों को बन्द करवा दिया।
9. **आर्थिक सुधार** (Economic Reforms)—फ्रांस की आर्थिक स्थिति लुई XVI के शासनकाल से खराब हो चुकी थी तथा वह निरन्तर बिगड़ती जा रही थी। डाइरेक्टरी के शासन में फ्रांस की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार का सुधार नहीं हुआ था। प्रथम कान्सल बनने के बाद नेपोलियन ने इस ओर विशेष ध्यान दिया। सर्वप्रथम, कर वसूलने का कार्य केन्द्रीय सरकार को सौंप कर बेकारों को कार्य दिलाने का प्रबन्ध किया गया। फ्रांस की साख दृढ़ करने के उद्देश्य से बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना की गयी। बैंक ऑफ फ्रांस के संगठन व कार्यप्रणाली को प्रसिद्ध बैंक शास्त्री (Banker) परेगो (Perregaux) से तैयार करवाया गया। 1803 ई० में बैंक ऑफ फ्रांस को नोट छापने का कार्य भी दे दिया। नेपोलियन द्वारा बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना करना आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। हैज ने नेपोलियन के इस कार्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "नेपोलियन की वित्तीय पुनर्संगठन की सर्वप्रमुख सफलता बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना थी जो उसी समय से विश्व की सबसे सुदृढ़ वित्तीय संस्था रही है।"

   नेपोलियन ने फ्रांस के व्यय को भी कम किया। अनावश्यक खर्चों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के लिए भी नेपोलियन ने प्रयत्न किए। 1802 ई० में 'चैम्बर ऑफ कॉमर्स' (Chamber of Commerce) की स्थापना की गयी। नेपोलियन ने फ्रांस के सभी नागरिकों पर कर भी लगाया। भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया गया। इस प्रकार नेपोलियन के निरन्तर प्रयासों से फ्रांस की आर्थिक स्थिति आश्चर्यजनक ढंग से सुधरी। हेजन ने नेपोलियन की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "महत्त्वाकांक्षी बोनापार्ट ने उद्योगों तथा वाणिज्य की ओर विशेष ध्यान दिया। सड़कों का सुधार किया, नहरें खोदी गयीं और बन्दरगाहों का उद्धार किया गया। देश का आर्थिक विकास इतनी तेजी से हुआ कि इंग्लैण्ड भी चिन्तित हो उठा।"

TOUCH 'n PASS

10. **धार्मिक सुधार** (Religious Reforms)—फ्रांस की जनता चर्च की विरोधी थी। उनका विचार था कि चर्च का कार्य जनसाधारण का शोषण करना ही है। चर्च में सुधार करने की दृष्टि से 'पादरी-विधान' (Constitution of the Clergy) पारित किया गया था, किन्तु अधिकांश जनता इस विधान के विरुद्ध थी। अत: प्रथम कान्सल बनने के पश्चात् नेपोलियन ने पोप से जुलाई 1801 ई० में समझौता कर लिया। इस समझौते को कांकाडर्ट (Concodart) कहा जाता है। हैजन ने लिखा है, "उसका (नेपोलियन का) विचार था कि धर्म की बागडोर भी शासक के हाथों में ही होनी चाहिए। एक बार उसने कहा था, 'बिना इसके शासन करना असम्भव है।' इसलिए उसने पोप के साथ सन्धि कर ली। उसका कहना था कि यदि पोप पहले से न होता तो इस अवसर के लिए मुझे पोप बनना पड़ता।"

अत: समझौते के अनुसार निम्नवत् निर्णय लिए गए—

(i) पोप ने चर्च की जब्त की गयी सम्पत्ति तथा भूमि पर से अपना अधिकार त्याग दिया।

(ii) शिक्षा संस्थाओं पर राज्य का नियन्त्रण स्वीकार किया गया।

(iii) राज्य की आज्ञा के बिना कोई पादरी देश से बाहर आ-जा नहीं सकता था। बिशप परस्पर अथवा पोप से पत्र-व्यवहार नहीं कर सकते थे।

(iv) पादरियों को राज्य के प्रति भक्ति की शपथ लेना आवश्यक था। देश के सभी गिरजाघरों पर राज्य का अधिकार हो गया।

(v) क्रांति के समय गिरफ्तार सभी पादरियों को मुक्त कर दिया गया तथा देश छोड़कर भागे हुए पादरियों को पुन: फ्रांस लौटने की अनुमति दे दी गयी।

(vi) कैथोलिक धर्म को राजधर्म स्वीकार कर लिया गया तथा कैथोलिक चर्च को सार्वजनिक पूजा का अधिकार दे दिया गया। इस प्रकार चर्च राज्य का एक अंग बन गया।

इस समझौते से जनसाधारण को बहुत सन्तोष हुआ। इसके दो मुख्य कारण थे। एक तो लोगों को अपने धर्म पर निर्विघ्न आचरण करने का अधिकार मिल गया तथा दूसरे क्रांति के दिनों में चर्च की जो भूमि उन्होंने खरीद ली थी। उस पर उनका अधिकार विधिवत् हो गया।

इस समझौते की हैजन ने आलोचना की है। हैजन ने लिखा है कि इस समझौतो को नेपोलियन की एक महान् भूल समझना चाहिए। फ्रांस ने चर्च और राज्य के पूर्ण पृथक्करण की नीति अपना ली थी। यदि उसको जारी रहने दिया जाता तो इससे बड़ा देश का कल्याण होता। जनता को धीरे-धीरे सहिष्णुता के सिद्धान्त पर चलने का अभ्यास हो जाता, किन्तु इस समझौते ने इस आशा पर पानी फेर दिया तथा चर्च और राजा का पुन: गठबन्धन करके एक खतरनाक समस्या उत्पन्न कर दी जो 19वीं शताब्दी में भय व विक्षोभ का कारण बनी रही। शीघ्र ही दोनों सन्धि से भी उकता गए। नेपोलियन तथा पोप के बीच भी बहुत दिनों तक अच्छे सम्बन्ध न रह सके। कुछ ही वर्षों में दोनों के मध्य झगड़ा इतना बढ़ गया कि पोप ने नेपोलियन को धर्म से बहिष्कृत कर दिया तथा नेपोलिन ने पोप को बन्दी बना लिया। नेपोलियन स्वयं भी यह अनुभव करने लगा था कि यह समझौता करके उसने भारी भूल की थी, किन्तु फिर भी इस समझौते से तात्कालिक लाभ हुए।

11. **सिविल कोड की स्थापना** (Civil Code)—इस समय फ्रांस में अनेक कानून थे, किन्तु कोई एक सुनिश्चित संहिता (Code) नहीं थी। नेपोलियन ने इस कार्य में व्यक्तिगत रुचि ली तथा 1894 ई० में 'सिविल कोड' तैयार करवाया। नेपोलियन का यह कार्य उसकी महान् उपलब्धि थी। इसी कारण इसे नेपोलियन संहिता (Napoleon Code) भी कहा जाता है। स्वयं नेपोलियन ने इस संहिता के विषय में घोषणा की थी, "मेरे कानूनों का संग्रह मेरी विजयों से अधिक स्थायी रहेगा।"

नेपोलियन ने सिविल कोड तैयार कराने के लिए 1804 ई० में एक समिति नियुक्त की जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध विधि-विशेषज्ञ कैम्बासेरेस (Cambaceres) ने किया। इस समिति ने चार माह के कठोर परिश्रम के पश्चात् एक सिविल कोड तैयार किया। फिशर ने इस कोड की अत्यन्त प्रशंसा की है। उन्होंने लिखा है—"जिस कार्य के लिए आधुनिक सरकारें 15 वर्षों का समय लेती हैं, नेपोलियन ने वह चार महीनों में कर दिखाया।"

यह संहिता फ्रांस के लिए वरदान प्रमाणित हुई।

TOUCH 'n PASS

इस सिविल कोड के पाँच भाग थे—

(i) **व्यावहारिक संहिता** (Civil Code)—इस संहिता के अन्तर्गत व्यक्तियों, वस्तुओं व सम्पत्ति आदि के विषय में कानून थे।

(ii) **व्यावहारिक प्रक्रिया संहिता** (Code of Civil Procedure)—इसमें 1737-38 ई० के अध्यादेशों का संग्रह था।

(iii) **दण्ड संहिता** (Penal Code)—इसमें विभिन्न प्रकार के अपराधों के लिए विभिन्न दण्ड देने का प्रावधान था।

(iv) **दण्ड प्रक्रिया संहिता** (Code of Criminal Procedure)—इसके अन्तर्गत अपराधी को न्यायालयों में अपने पक्ष में वकील आदि करने का अधिकार दिया।

(v) **वाणिज्य संहिता** (Commercial Code)—इस संहिता के अन्तर्गत व्यापार सम्बन्धी नियम थे। उल्लेखनीय है कि इस सिविल कोड के निर्माण में नेपोलियन का निजी हाथ भी बहुत अधिक था। नेपोलियन स्वयं विधिविज्ञ नहीं था और न ही उसे कानून का विशेष ज्ञान था, किन्तु उसकी बौद्धिक प्रतिभा अत्यन्त प्रखर, सूझ-बूझ और विचार शक्ति तथ्यगम्य थी, इसलिए उसने जो अनेक सुझाव, आलोचनाएँ और प्रश्न प्रस्तुत किए उससे पूरी संहिता का रूप भी परिष्कृत होकर निखर उठा। हैजन ने लिखा है, "धर्म सम्बन्धी अपनी शब्दावली और अभिव्यंजना के कारण पादरियों ने उसे (नेपोलियन को) 'कान्सेण्टाइन' की उपाधि दी और विधिविज्ञों ने उसे नया 'जस्टीनियन' कहा, किन्तु सत्य यह है कि अनेक बातों में वह दोनों से बढ़कर था।"

प्र.3. नेपोलियन की महाद्वीपीय योजना का वर्णन कीजिए। महाद्वीपीय योजना के परिणामों एवं इसकी असफलता के कारणों को भी लिखिए।

Describe Napoleon's continental system. Also, write the results of the continental system and the causes for its failure.

उत्तर

नेपोलियन की महाद्वीपीय योजना
(Napoleon's Continental System)

1807 ई० में हुई टिलसिट (Tilsit) की सन्धि के समय नेपोलियन अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर पहुँच गया था। थॉमसन ने लिखा है, "टिलसिट की सन्धि के समय नेपोलियन का साम्राज्य न केवल अपने चरम उत्कर्ष पर था वरन् अत्यन्त सुदृढ़ भी था।" लगभग सम्पूर्ण यूरोप पर इस समय तक नेपोलियन का प्रभाव स्थापित हो चुका था। यूरोप के प्रमुख राष्ट्रों आस्ट्रिया, प्रशा व रूस को वह क्रमश: 1805 ई० 1806 ई० व 1807 ई० में परास्त कर चुका था। यूरोप में केवल इंग्लैण्ड ही एक ऐसा देश था जो फ्रांस को निरन्तर चुनौती दे रहा था। ट्राफल्गर के युद्ध के पश्चात् नेपोलियन समझ चुका था कि शक्तिशाली नौसेना के रहते इंग्लैण्ड को पराजित करना सम्भव न था। इसी कारण नेपोलियन स्वयं कहा करता था—"बालोन से फॉल्कस्टोन तक सेना भेजने की तुलना में पेरिस से दिल्ली सेना भेजना सरल है।" ऐसी स्थिति में इंग्लैण्ड को परास्त करना अत्यन्त कठिन था। इसी समय नेपोलियन को माण्टगैलार्ड ने परामर्श दिया कि इंग्लैण्ड एक व्यापारिक देश था, अत: उसे आर्थिक युद्ध के द्वारा परास्त किया जा सकता था। नेपोलियन ने इस परामर्श को स्वीकार किया व इंग्लैण्ड पर जलमार्ग पर विजय करने के विचार को त्याग दिया। नेपोलियन ने इंग्लैण्ड से आर्थिक युद्ध करने के लिए नवीन एवं विशाल योजना द्वारा इंग्लैण्ड के आयात एवं निर्यात को बन्द करने का निश्चय दिया। उसकी इस योजना को इतिहास में महाद्वीपीय योजना (Continental System) अथवा महाद्वीपीय अवरोध (Continental Blockade) कहा जाता है। नेपोलियन जानता था कि इंग्लैण्ड एक व्यापारिक देश था तथा अपने यहाँ निर्मित माल को अन्य देशों को निर्यात करता था। अन्न इत्यादि खाने की वस्तुएँ इंग्लैण्ड अन्य देशों से आयात करता था। अत: नेपोलियन का विचार था कि यदि इंग्लैण्ड के आयात निर्यात को बन्द कर दिया जाए तो आर्थिक स्थिति के खराब होने व खाने-पीने की वस्तुओं के अभाव के कारण इंग्लैण्ड को घुटने टेकने के लिए विवश होना पड़ेगा। इसके साथ ही नेपोलियन यूरोप में ऐसी अर्थव्यवस्था को लागू करना चाहता था जिसका केन्द्र लन्दन में न होकर पेरिस में हो। जैसा कि पामर ने भी लिखा है, "महाद्वीपीय व्यवस्था इंग्लैण्ड के निर्यात को नष्ट करने की योजना थी। इसका उद्देश्य यूरोप में ऐसी अर्थव्यवस्था को विकसित करना भी था जिसका मुख्य केन्द्र फ्रांस हो।"

महाद्वीपीय योजना का प्रारम्भ (Beginning of Continental System)

नेपोलियन ने महाद्वीपीय योजना को कार्यान्वित करने के लिए अनेक आदेश जारी किए। वे आदेश निम्नवत् थे—

1. **बर्लिन आदेश** (Berlin Decree)—इसको नेपोलियन ने 21 नवम्बर, 1806 ई० को घोषित किया। इस प्रकार महाद्वीपीय प्रणाली प्रारम्भ हो गई। इस आदेश में उसने कहा कि "ब्रिटिश द्वीप समूह तथा अंग्रेजी उपनिवेशों का घेरा

प्रारम्भ किया जाता है। अब यदि ब्रिटिश द्वीप समूह अंग्रेजी उपनिवेशों का कोई जहाज फ्रांस अथवा उसके मित्र राष्ट्रों के किसी बन्दरगाह में प्रवेश करेगा तो उसे जब्त कर लिया जाएगा।'' इस आदेश में यह भी कहा गया था कि यूरोप का कोई भी राज्य इंग्लैण्ड से व्यापार नहीं करेगा। इंग्लैण्ड के जितने भी लोग उन देशों में हों उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाए व उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जाए।

2. **वार्सा आदेश** (Warsaw Decree)—25 जनवरी, 1807 ई० को नेपोलियन ने वार्सा आदेश (Warsaw Decree) जारी किए। इसके द्वारा प्रशा तथा हेनोवर के समुद्र तटों पर भी अंग्रेजी व्यापार के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगा दिया गया। टिलसिट सन्धि के पश्चात् रूस, प्रशा तथा डेनमार्क ने भी ब्रिटिश माल का बहिष्कार कर दिया। इससे इंग्लैण्ड को अत्यधिक आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा।

इंग्लैण्ड द्वारा इन आदेशों का प्रत्युत्तर (The British Reply)—नेपोलियन के आदेशों का जवाब देने के लिए इंग्लैण्ड ने 'आर्डर इन कौंसिल' (Order in Council) पारित किया। इसके द्वारा घोषित किया गया कि—

(i) यदि किसी जहाज में फ्रांस अथवा उसके उपनिवेशों का बना हुआ सामान पाया जाएगा तो उसे जब्त कर लिया जाएगा।
(ii) अपने विदेशी व्यापार को बनाए रखने के लिए अंग्रेजों ने तटस्थ राज्यों को कम करों पर सामान देना घोषित किया।
(iii) कोई भी तटस्थ राज्य फ्रांस के किसी जहाज को न खरीदे।
(iv) इंग्लैण्ड की ओर से व्यापार करने वाले तटस्थ देशों के जहाजों को प्रत्येक सुविधा प्रदान की जाएगी।
(v) प्रशा तथा पुर्तगाल आदि देशों द्वारा विवशता में महाद्वीपीय योजना स्वीकार की गई अत: उनके जहाजों को छोड़ दिया जाएगा।

इस प्रकार 'आर्डर इन कौंसिल' के द्वारा इंग्लैण्ड ने अपने व्यापार को सजीव बनाए रखने की चेष्टा की।

3. **मिलान आदेश** (Milan Decree)—17 दिसम्बर, 1807 ई० को नेपोलियन ने मिलान आदेश जारी किए। इसके अनुसार यह घोषणा की गई कि अंग्रेजी बन्दरगाहों में उपस्थित अथवा अंग्रेजों को तलाशी देने वाले जहाज को जब्त कर लिया जाएगा चाहे वह किसी भी देश का क्यों न हो।

इस समय इंग्लैण्ड ने भी दूसरा 'आर्डर इन कौंसिल' (Order in Council) पारित किया। इसमें कहा गया था कि जो देश अंग्रेजी माल स्वीकार नहीं करेगा, इंग्लैण्ड उसका अवरोध करेगा। तटस्थ देशों से कहा गया कि वे इंग्लैण्ड के जहाजों को सुविधा प्रदान कराएँ।

4. **फाण्टेंब्ल्यू आदेश** (Fontainebleau Decree)—18 अक्टूबर, 1810 ई० को नेपोलियन ने सबसे कठोर आदेश जारी किए, जिन्हें फाण्टेंब्ल्यू आदेश कहा जाता है। इन आदेशों में कहा गया कि जब्त अंग्रेजी सामान को जला दिया जाए। अवैध ढंग से व्यापार करने वालों के लिए कठोर दण्ड व पृथक् न्यायालय की स्थापना की गयी।

उपरोक्त आदेशों का इंग्लैण्ड के अंग्रेजी व्यापार पर गहरा प्रभाव हुआ, किन्तु इसके पश्चात् भी तटस्थ देशों के जहाज छिपकर अवैध रूप से उत्तरी सागर तथा मध्य सागर के देशों में माल पहुँचा रहे थे तथा वहाँ से यह माल स्थल मार्ग से यूरोप के विभिन्न देशों में पहुँचाया जाता था। इसके अतिरिक्त, फर्जी लाइसेन्सों के द्वारा भी व्यापार किया जा रहा था। इसको रोकने के लिए नेपोलियन ने अंग्रेजी वस्तुओं पर चुंगी लगा दी। इस प्रकार अंग्रेजी व्यापार को बहुत हानि हुई।

उपर्युक्त आदेश जारी करने के अतिरिक्त भी नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक प्रयास किए जिनमें प्रमुख निम्नलिखित थे—

(i) **रूस के साथ समझौता** (Agreement with Russia)—टिलसिट की सन्धि में रूस के जार के द्वारा इस योजना को स्वीकार कराने के लिए नेपोलियन ने उसे फिनलैण्ड तथा तुर्की का कुछ भाग देने का लालच दिया।
(ii) **आस्ट्रिया पर दबाव** (Austria Pressurized)—28 फरवरी, 1808 ई० को नेपोलियन ने आस्ट्रिया को महाद्वीपीय योजना को स्वीकार करने के लिए विवश किया।
(iii) **स्पेन पर अधिकार** (Spain Captured)—नेपोलियन ने स्पेन के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया था, अत: स्पेन ने स्वत: ही इस योजना को स्वीकारा।
(iv) **पुर्तगाल पर अधिकार** (Portugal Captured)—नेपोलियन ने पुर्तगाल से इस योजना को स्वीकार करने के लिए कहा, किन्तु पुर्तगाल ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। अत: नेपोलियन ने पुर्तगाल पर आक्रमण किया।

TOUCH 'n PASS

पुर्तगाल का राजा राज्य छोड़कर ब्राजील भाग गया। यही से प्रायद्वीपीय युद्ध (Peninsular war) प्रारम्भ हुआ, जिसके घातक परिणाम हुए।

(v) **पोप को बन्दी बनाना** (Pope was arrested)—पोप ने महाद्वीपीय योजना में भाग न लेते हुए स्वयं को तटस्थ (Neutral) घोषित कर दिया, अत: क्रोधित होकर नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण किया व उसे बन्दी बना लिया। नेपोलियन द्वारा ऐसा करना उसकी एक राजनीतिक भूल (Political blunder) थी क्योंकि इस प्रकार उसने कैथोलिकों को नाराज कर दिया।

(vi) **प्रशा से सन्धि** (Treaty with Prussia)—महाद्वीपीय योजना में प्रशा को सम्मिलित करने के लिए नेपोलियन ने उससे सन्धि की।

(vii) **स्वीडन को पराजित** (Sweden Conquered)—1808 ई० में नेपोलियन ने स्वीडन पर विजय प्राप्त करके उसे भी महाद्वीपीय योजना में शामिल किया।

(viii) **हॉलैण्ड का फ्रांस में विलय** (Holland annexed with France)—हॉलैण्ड का शासक नेपोलियन का भाई लुई बोनापार्ट था, किन्तु फिर भी वह वहाँ महाद्वीपीय व्यवस्था लागू न कर सका, अत: 9 जुलाई, 1810 ई० को नेपोलियन ने हॉलैण्ड को फ्रांस में मिला दिया।

महाद्वीपीय योजना के परिणाम (Results of the Continental System)

नेपोलियन द्वारा प्रारम्भ की गयी महाद्वीपीय योजना के दूरगामी परिणाम हुए। इस नीति से हॉलैण्ड को उतनी हानि नहीं हुई जितनी कि नेपोलियन ने अपेक्षा की थी। इस योजना के निम्नलिखित परिणाम हुए—

1. इंग्लैण्ड से व्यापार बन्द होने से फ्रांस तथा उसके मित्र देशों में दैनिक वस्तुओं का अभाव होने लगा। इससे वे नेपोलियन के विरोधी हो गए।
2. इस योजना को लागू करने के लिए नेपोलियन ने अनेक देशों से युद्ध किए, जिससे उसके शत्रुओं की संख्या बढ़ी। अन्तत: यही युद्ध नेपोलियन के पतन के कारण बने।
3. इस योजना का इंग्लैण्ड पर प्रभाव होना स्वाभाविक था। देश में अनाज महँगा हो गया व अंग्रेजी वस्तुओं के दामों में भारी कमी आयी। अत: आर्थिक सन्तुलन बनाए रखने के उद्देश्य से इंग्लैण्ड की सरकार को जनता पर लगे हुए करों में वृद्धि करनी पड़ी व अन्य देशों से ऋण लेना पड़ा, किन्तु नेपोलियन ने जितना सोचा था उतना प्रभाव इस व्यवस्था का इंग्लैण्ड पर नहीं हुआ। यूरोप के साथ इंग्लैण्ड का व्यापार 1805 ई० में (महाद्वीपीय व्यवस्था लागू होने से पहले) 37.8%, 1806 ई० में 30.9%, 1807 ई० में 25.5%, 1808 ई० में 25.7% तथा 1809 ई० 35.3% रहा। इसी प्रकार विदेशों में जो माल इंग्लैण्ड के द्वार बेचा गया उसकी कुल कीमत 1805 ई० में 41 लाख पौंड, 1806 ई० में 44 लाख पौंड, 1807 ई० 40 लाख पौंड, 1808 ई० में 40 लाख पौंड व 1809 में 50 लाख पौंड थी। उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि इस योजना का प्रभाव सर्वाधिक 1807 ई० में रहा। अन्य वर्षों में कोई विशेष प्रभाव नहीं रहा था। सम्भवत: इसी कारण स्टीफेन्स ने लिखा है—"इस व्यवस्था ने इंग्लैण्ड की सम्पन्नता को कम करने के स्थान पर उसमें वृद्धि की।"
4. इस व्यवस्था का आर्थिक प्रभाव फ्रांस पर भी पड़ा। वहाँ हजारों मजदूर बेकार हो गए। फ्रांस का मध्यवर्ग भी नेपोलियन का विरोधी हो गया।
5. इस व्यवस्था ने भविष्य में अनेक युद्धों (प्रायद्वीपीय युद्ध इत्यादि) को जन्म दिया।
6. कैथोलिक जनता नेपोलियन की विरोधी हो गयी क्योंकि उसने पोप को बन्दी बनाया था।
7. इंग्लैण्ड ने अपने यहाँ बना माल अनेक ऐसे देशों को भेजा जो प्रत्यक्षत: उसके पक्ष में न थे। इस प्रकार इंग्लैण्ड को अपने सम्बन्ध सुधारने का अवसर मिल गया।
8. टिलसिट की सन्धि के पश्चात् जो देश फ्रांस के मित्र बन गए थे वे भी इस महाद्वीपीय व्यवस्था के कारण नेपोलियन के विरुद्ध हो गए। नेपोलियन इस व्यवस्था के कारण ऐसे व्यूह-जाल में फंस गया जिससे वह कभी बाहर न निकल सका। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस व्यवस्था के व्यापक परिणाम हुए।

TOUCH 'n' PASS

महाद्वीपीय योजना की असफलता के कारण (Causes of the Failure of Continental System)

नेपोलियन ने इस व्यवस्था को सफल बनाने के लिए अत्यधिक प्रयत्न किए थे, किन्तु फिर भी इस कार्य में वह सफल न हो सका। तत्कालीन परिस्थितियों के अतिरिक्त इस योजना में अनेक मूलभूत दोष थे जिनके कारण यह व्यवस्था असफल प्रमाणित हुई। इस योजना के असफल प्रमाणित हुई। इस योजना के असफल होने के कारण निम्नलिखित थे—

1. इंग्लैण्ड में अन्न की बहुत कमी थी। नेपोलियन को चाहिए था कि यह अन्न का आयात इंग्लैण्ड में न होने देता, किन्तु नेपोलियन ऐसा न कर सका। रोज ने लिखा है, "महाद्वीपीय योजना तभी सफल हो सकती थी जबकि नेपोलियन वहाँ अनाज को भेजा जाना बन्द कर देता, परन्तु नेपोलियन यह अमानवीय कार्य न कर सका और इसलिए यह योजना भी सफल न हुई।"
2. इंग्लैण्ड से चोरी-छिपे होने वाले व्यापार को भी नेपोलियन रोक नहीं सका।
3. अनेक राज्यों ने किन्हीं विवशताओं के कारण इस व्यवस्था को स्वीकार किया था, उन्होंने अवसर मिलते ही इंग्लैण्ड से व्यापारिक सम्बन्ध पुन: कायम कर लिए।
4. यूरोप के राज्यों की जनता को दैनिक उपयोग की वस्तुएँ न मिल पाने के कारण जनता नेपोलियन व उसकी इस नीति का विरोध करने लगी। स्वयं फ्रांस की जनता इस महाद्वीपीय व्यवस्था से तंग आ गयी थी।
5. तटस्थ देश में नेपोलियन के विरोधी हो गए, क्योंकि नेपोलियन ने उन पर भी इस व्यवस्था को लागू करने का प्रयास किया।
6. नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण करके उसे बन्दी बना लिया था। इससे कैथोलिक जनता नेपोलियन की विरोधी हो गयी।
7. स्पेन व पुर्तगाल ने इंग्लैण्ड का ही समर्थन किया।
8. महाद्वीपीय योजना एक अव्यावहारिक योजना थी। सम्पूर्ण यूरोप के विशाल क्षेत्र पर किसी भी एक देश के लिए नियन्त्रण व निगरानी रखना सम्भव न था। इसके अतिरिक्त नेपोलियन का यह विचार कि यूरोप के लोग इंग्लैण्ड को परास्त करने के लिए अपना सब कुछ त्याग देंगे व अपार कष्ट सहन कर लेंगे, तर्क संगत नहीं था, यह नि:सन्देह नेपोलियन की एक महान् भूल थी।
9. महाद्वीपीय व्यवस्था शक्तिशाली नौसेना के अभाव में सफल नहीं हो सकती थी। फ्रांस की नौसेना शक्तिशाली नहीं थी, अत: इस योजना का असफल होना स्वाभाविक ही था।

प्र.4. नेपोलियन के पतन के कारणों का सविस्तार विवेचन कीजिए।
Discuss in detail the causes for the downfall of Napoleon.

उत्तर

नेपोलियन के पतन के कारण
(Causes of Napoleon's Donwfall)

नेपोलियन न केवल यूरोप अपितु विश्व-इतिहास का एक महान् व्यक्तित्व था। यूरोप के राजनीतिक पटल पर अचानक व तेजी से उसका पदार्पण हुआ, किन्तु उतनी ही शीघ्रता से वह विलुप्त भी हो गया। 1799 ई० से 1814 ई० तक वह यूरोप पर छाया रहा तथा अपने कार्यों, विजयों व व्यक्तित्व से न केवल फ्रांस अपितु सम्पूर्ण विश्व को उसने प्रभावित किया। एक साधारण परिवार में जन्मा, एक सिपाही के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ करने वाला नेपोलियन असाधारण योग्यता एवं प्रतिभा का स्वामी था जिसके द्वारा ही वह फ्रांस के सम्राट के पद तक जा पहुँचा। 1807 ई० में वह अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर था। ग्रांट एण्ड टेम्परले ने लिखा है—"1807 ई० में नेपोलियन अपनी शक्ति की चरम सीमा पर था। यदि वह उसी वर्ष मर जाता तो उसका जीवन यूरोप के सैन्य इतिहास एवं सम्भवत: विश्व के इतिहास में सबसे चमत्कारपूर्ण बन जाता।" उल्लेखनीय है कि 1807 ई० से पहले के 7 वर्ष में नेपोलियन ने जिस तेजी के साथ उन्नति की थी, 1807 ई० के बाद उतनी ही तीव्रता से वह पतन की ओर अग्रसर हुआ।

इतिहास साक्षी है कि प्रत्येक साम्राज्य अथवा सम्राट का चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो एक निश्चित अवधि के पश्चात् पतन होने लगता है। नेपोलियन भी इस ऐतिहासिक सत्य का अपवाद न था। 'असम्भव' शब्द को न मानने वाला नेपोलियन भी अन्ततोगत्वा पतन के गर्भ में समा गया। नेपोलियन के पतन में अनेक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कारणों ने सहयोग दिया, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित थे—

1. **एक व्यक्ति की योग्यता पर आधारित राज्य** (Empire based on only one Person)—नेपोलियन अपनी योग्यता के आधार पर शासक बना था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि नेपोलियन प्रतिभा का स्वामी था, किन्तु फिर भी राज्य

TOUCH 'n PASS

को सुचारु रूप से चलाने के लिए परामर्शदाताओं की आवश्यकता होती है। नेपोलियन किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करता था और न ही किसी से परामर्श लेता था यहाँ तक तालीरॉ (Talleyrand), फूशे (Fouche) जैसे योग्य व्यक्तियों से परामर्श लेना भी उसने छोड़ दिया। नेपोलियन यह भूल गया था कि वह ईश्वर नहीं वरन् एक मनुष्य है और मनुष्य की क्षमताएँ सीमित होती हैं, चाहे वह कितना भी योग्य क्यों न हो।

2. **असीमित महत्त्वाकांक्षी होना** (Over ambitious)—उन्नति करने क लिए मनुष्य का महत्त्वाकांक्षी होना आवश्यक है, किन्तु जब महत्त्वाकांक्षाएँ मनुष्य की क्षमता से अधिक होने लगती हैं तो उसका पतन होना लगता है। नेपोलियन के साथ भी यही हुआ था। नेपोलियन के पतन के लिए अन्य बाहरी कारणों से अधिक उसकी अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ अधिक उत्तरदायी थी। नेपोलियन अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति में किसी भी प्राकृतिक बाधा को स्वीकार करने के लिए तैयार न था। वह एक साधारण सिपाही से फ्रांस का सम्राट बन गया था, किन्तु फिर भी उसकी अभिलाषाएँ समाप्त न हुईं। फ्रांस का सम्राट बनने के पश्चात् वह विश्व विजय के स्वप्न देखने लगा। यही उसके पतन का कारण बन गया, क्योंकि यूरोप के राष्ट्रों ने उसके विरुद्ध संगठन बनाकर उसके पतन के बीज बो दिए।
3. **नेपोलियन का खराब स्वास्थ्य** (Ill health of Napoleon)—बढ़ती आयु के साथ-साथ नेपोलियन का स्वास्थ्य भी खराब होने लगा था। यद्यपि रोज इत्यादि कुछ इतिहासकारों का मानना था कि वाटरलू के युद्ध के समय नेपोलियन पूर्णतया स्वस्थ था। केवल उसकी निर्णय शक्ति कमजोर हो गई थी, किन्तु इस बात को स्वीकार करना कठिन है। रूस के अभियान के पश्चात् उसका स्वास्थ्य गिरा था, इसके अतिरिक्त यदि रोज की बात को भी मानें तो यदि सम्राट की निर्णय शक्ति ही कमजोर हो जाएगी तो उसका पतन होना स्वाभाविक ही है। सम्भवत: इसी कारण उसने लिप्जिग व वाटरलू के युद्ध में अनेक भूलें की। डॉ० स्लोन ने लिखा है, "नेपोलियन के पतन के समस्त कारण एक ही शब्द 'थकान' में निहित हैं।" नि:सन्देह, निरन्तर युद्धों में रत रहने से नेपोलियन थक चुका होगा, जिससे उसकी कार्यक्षमता व युद्ध क्षमता पर असर हुआ।
4. **सैनिकवादी नीति** (Policy of Militarism)—नेपोलियन ने अपने जीवनकाल में जो उन्नति की थी उसका आधार सैनिकवादी नीति ही थी। अत: नेपोलियन का विचार था कि सैन्य बल के द्वारा ही सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। उसने एक बार कहा था, "यदि मैं और अधिक यश व विजय नहीं करूँगा तो मेरी सत्ता समाप्त हो जाएगी। जो मैं हूँ वह मुझे विजयों ने ही बनाया है तथा विजय ही मुझे इस स्थान पर बनाए रख सकती हैं" नेपोलियन का विचार था कि उसका सम्मान व यश विजयों द्वारा ही सुरक्षित रह सकता है। उसका कहना था कि "ईश्वर महानतम् सेनाओं का साथ देता है।" इस प्रकार नेपोलियन ने फ्रांस की राष्ट्रीय भावनाओं को सैन्यवाद में परिवर्तित कर दिया। नेपोलियन यह भूल गया कि सैन्यवादी नीति किसी एक सीमित उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित हो सकती है, किन्तु प्रत्येक अवसर पर सेना का प्रयोग करना उचित नहीं होता और न ही सैनिक शक्ति के द्वारा राज्य को अधिक दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। शीघ्र ही यह स्थिति उत्पन्न हो गयी। नेपोलियन की सैन्य आवश्यकताएँ इतनी अधिक बढ़ गयी जिनको पूरा करना कठिन हो गया। परिणामस्वरूप उसे अन्य देशों के सैनिक भी अपनी सेना में लेने पड़े जिसका परिणाम उसके हित में नहीं हुआ। नेपोलियन को सम्राट पद प्राप्त कर लेने के पश्चात् अपना देश शान्ति के सिद्धान्तों पर आधारित करना चाहिए था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया, अत: वह पतन की ओर अग्रसर हो गया।
5. **नेपोलियन के सम्बन्धी** (Relatives of Napoleon)—नेपोलियन का व्यवहार अपने सम्बन्धियों के प्रति अत्यन्त उदार था। उसने अपने सम्बन्धियों की अत्यधिक सहायता की तथा उच्च पद प्रदान किए। उसने अपने भाइयों—लुई नेपोलियन जोसेफ, जेरोम (Jerome) को क्रमश: हॉलैण्ड, स्पेन व बेस्टफेलिया का शासक नियुक्त किया, किन्तु संकट के समय में किसी भी सम्बन्धी ने उसकी सहायता नहीं की। नेपोलियन ने स्वयं भी इस बात को महसूस करते हुए मैटरनिख को लिखा था, "मैंने अपने सम्बन्धियों का जितना भला किया, उन्होंने उससे अधिक मेरा नुकसान किया।"
6. **पोप के साथ दुर्व्यवहार** (Misbehaviour with Pope)—प्रारम्भ में नेपोलियन के पोप के साथ सम्बन्ध ठीक थे, किन्तु महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) के प्रश्न पर पोप व नेपोलियन के सम्बन्धों में कटुता आ गई। नेपोलियन ने अपनी शक्ति के मद में पोप को बन्दी बना लिया। नेपोलियन द्वारा पोप को बन्दी बनाना उसकी भारी भूल थी।

TOUCH 'n PASS

रोज ने लिखा है, "पोप के साथ दुर्व्यवहार करना नेपोलियन की भयंकर भूल थी।" पोप को बन्दी बनाए जाने से सम्पूर्ण कैथोलिक वर्ग नेपोलियन के विरुद्ध हो गया जिसका भारी मूल्य नेपोलियन को चुकाना पड़ा।

7. **महाद्वीपीय व्यवस्था** (Continental System)—नेपोलियन ने इंग्लैण्ड को परास्त करने के लिए आर्थिक युद्ध का सहारा लिया। इसी के अन्तर्गत नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करने की घोषणा की। नेपोलियन इंग्लैण्ड को व्यापारियों का देश (Nation of Shopkeepers) कहता था। उसका विचार था कि यदि इंग्लैण्ड के व्यापार को बन्द कर दिया जाए तो इंग्लैण्ड आर्थिक रूप से टूट जाएगा तथा फ्रांस के समक्ष घुटने टेक देगा। नेपोलियन की योजना पूर्णतया असफल हो गई। इंग्लैण्ड यूरोप के प्रत्येक देश को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करता था। अत: इस व्यवस्था से प्रत्येक देश में आवश्यक वस्तुओं की कमी हो गयी तथा अन्य देशों ने इस व्यवस्था का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। जब नेपोलियन ने अन्य देशों पर दबाव डाला तो उनके पारस्परिक सम्बन्ध खराब होने लगे इससे नेपोलियन को अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। महाद्वीपीय व्यवस्था नेपोलियन के पतन का एक प्रमुख कारण थी। हैजन ने लिखा है, "अन्तत: इस नीति (महाद्वीपीय नीति) ने उसे अनिवार्य रूप से आक्रामक युद्धों की नीति में उलझा दिया.....जिसके परिणाम नाशकारी हुए और उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी।"
8. **स्पेन से युद्ध** (War against Spain)—नेपोलियन द्वारा स्पेन पर आक्रमण करना उसकी भारी भूल थी। इस युद्ध के कारण नेपोलियन को अत्यधिक हानि का सामना करना पड़ा। नेपोलियन के जीवन का यह सबसे लम्बा युद्ध था। नेपोलियन ने स्वयं इस युद्ध के विषय में कहा था, "स्पेनी नासूर ने मेरा विनाश कर दिया।"
9. **रूसी अभियान** (Russian Campaign)—स्पेन के अभियान के समान ही नेपोलियन का रूसी अभियान भी उसके लिए विनाशकारी प्रमाणित हुआ। यद्यपि 1807 ई० की टिलसिट की सन्धि (Treaty of Tilsit) से दोनों देशों के सम्बन्ध सुधार गए थे, किन्तु महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) के कारण दोनों के सम्बन्ध पुन: खराब हो गए। 1812 ई० में नेपोलियन ने 5 लाख सैनिकों के साथ रूस के लिए प्रस्थान किया व जब वह वापस फ्रांस पहुँचा तो मात्र 20 हजार सैनिक बचे थे। इन आँकड़ों से इस अभियान में नेपोलियन को कितनी क्षति हुई, अनुमान किया जा सकता है। इस अभियान ने नेपोलियन की शक्ति को बहुत धक्का पहुँचाया तथा उसकी छवि को खराब किया। इस युद्ध ने फ्रांस की सेना की कमजोरियों को यूरोप के राष्ट्रों के समक्ष स्पष्ट कर दिया तथा वे भी अपनी स्वतन्त्रता का प्रयास करने लगे।
10. **राष्ट्रीयता की भावनाएँ जाग्रत** (Rise of Nationalism)—नेपोलियन ने अपने अधीनस्थ राज्यों पर अत्यधिक अत्याचार किया तथा भीषण कर लगाए थे। उन राज्यों में नेपोलियन के विरुद्ध भावनाएँ प्रबल हो रही थीं। स्पेन व रूस के अभियानों में नेपोलियन की असफलता को देखकर इन राष्ट्रों में राष्ट्रीय भावना की लहर दौड़ गयी। प्रशा प्रतिरोध लेने के लिए व्याकुल हो रहा था। इटली में भी राष्ट्रवाद प्रबल हो रहा था। नेपोलियन इस राष्ट्रवाद का सामना न कर सका।
11. **नेपोलियन का स्वभाव** (Nature of Napoleon)—नेपोलियन के पतन में उसके स्वभाव का भी प्रमुख हाथ था। नेपोलियन अत्यन्त हठी स्वभाव का व्यक्ति था तथा अपने विचारों के अतिरिक्त किसी की बात मानने को वह कदापि तैयार नहीं होता था। इसी कारण तालीरों (Talleyrand) जैसे व्यक्तियों ने उसका साथ छोड़ दिया था। वह जानता था कि महाद्वीपीय व्यवस्था असम्भव थी, किन्तु फिर भी उसने उसे लागू किया। राइन संघ को भी वह स्वयं गलत (a bad calculation) मानता था, किन्तु फिर भी उसे बनाए रखा। नेपोलियन जानता था कि उसे इतने युद्ध नहीं करने चाहिए थे, किन्तु फिर भी उसने किये। नेपोलियन ने 1814 ई० में स्वयं यह बात स्वीकार करते हुए कहा था, "मैं डरता हूँ इस तथ्य को स्वीकार करने से कि मैंने बहुत ज्यादा युद्ध किए हैं, मैं विश्व पर फ्रांस का प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था" प्रो० मारखम ने लिखा है, अपने कार्यों में वह एक दैवीय भूल कर रहा था।" नेपोलियन को मिली प्रारम्भिक सफलताओं से उसे घमण्ड भी हो गया था। इसी कारण आस्ट्रिया के प्रधानमन्त्री मैटरनिख ने नेपोलियन से कहा था, "आपका पतन निश्चित है, यह मुझे लगा था जब मैं यहाँ आया था, अब जबकि मैं जा रहा हूँ मुझे यह निश्चित हो गया है।" 26 जून, 1813 ई० को मैटरनिख ने जब ड्रेस्डन (Dresden) में समझाने का प्रयास किया था तो नेपोलियन ने जवाब दिया, "क्या तुम यह चाहते हो कि मैं अपने आपको स्वयं अपमानित करूँ। मैं ऐसा कदापि नहीं करूँगा। मैं जानता हूँ कि कैसे मरा जाता है, किन्तु मैं एक इंच भी भूमि न दूँगा..... तुम एक सैनिक नहीं हो, अत: तुम्हें यह ज्ञात नहीं है कि एक सैनिक की आत्मा में क्या होता है। मैं बड़ा ही युद्ध क्षेत्र में हुआ हूँ, अत: मैं लाखों लोगों की जिन्दगी की परवाह नहीं करता।" इसी प्रकार अपने

TOUCH 'n' PASS

अहं के कारण उसने शत्रु को सदैव कमजोर समझा। उसने अपने सेनापति सॉल्ट (Soult) से अंग्रेजी जनरल के विषय में कहा था, "वेलिंग्टन एक अयोग्य जनरल है तथा अंग्रेज अच्छे योद्धा नहीं है।" नेपोलियन के इस प्रकार के स्वभाव के कारण इसका पतन होना स्वाभाविक ही थी।

12. **नेपोलियन की भूलें** (Blunders of Napoleon)—नेपोलियन ने अपने राजनीतिक एवं सैन्य जीवन के दौरान अनेक भयंकर भूलें की जिनका परिणाम उसे भुगतना पड़ा। उसके द्वारा की गयी कुछ प्रमुख गलतियाँ निम्नवत् थीं—
   (i) महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करना।
   (ii) महाद्वीपीय व्यवस्था के दौरान इंग्लैण्ड के लिए अनाज जाने देना।
   (iii) स्पेन पर आक्रमण करना।
   (iv) रूस के अभियान के दौरान मास्को में एक माह से अधिक समय तक रुके रहना।
   (v) 4 जून, 1813 ई० को 'प्लेसविज का युद्ध विराम' (Armistice of Pleswitz) करना।
   (vi) शत्रु सेना को कमजोर समझना।
   (vii) वाटरलू के युद्ध (Battle of Waterloo) के समय आक्रमण में देर करना।
   नेपोलियन की उपरोक्त भूलें उसके पतन का प्रमुख कारण बनीं।

13. **इंग्लैण्ड से दुश्मनी** (Enemity with England)—यह नेपोलियन का दुर्भाग्य था कि उसका प्रमुख शत्रु इंग्लैण्ड था। इंग्लैण्ड अत्यन्त शक्तिशाली था तथा चारों ओर समुद्र से घिरा होने के कारण सुरक्षित था। इंग्लैण्ड की नौसेना अत्यधिक शक्तिशाली थी, अत: फ्रांस तमाम प्रयत्नों के पश्चात् भी उसे परास्त करने में असफल रहा। इंग्लैण्ड ने राजनीतिक एवं कूटनीतिक श्रेष्ठता का परिचय देते हुए फ्रांस के विरुद्ध अन्य राष्ट्रों के साथ चार संगठन (four Coalitions) बनाए तथा अन्तत: वाटरलू के युद्ध में परास्त कर उसके राजनीतिक जीवन का अन्त कर दिया।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त कारण प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नेपोलियन के पतन के लिए उत्तरदायी थे। नेपोलियन ने जिन मूल्यों पर अपने साम्राज्य की नींव रखी थी वे मूल्य ही उसे ले डूबे। उसने युद्ध के द्वारा ही साम्राज्य का निर्माण किया था तथा युद्धों ने ही उसका पतन कर दिया। इसी कारण थामसन ने लिखा है, "जिन तत्त्वों ने नेपोलियन के साम्राज्य का निर्माण किया था उन्हीं तत्त्वों ने उसका विनाश भी कर दिया।" इसी कारण फिशर ने लिखा है—"नेपोलियन के पतन के नाटक में तीन दृश्य मास्को, लिप्जिग तथा फाउण्टेनब्ल्यू प्रमुख हैं। वाटरलू इस नाटक का उपसंहार है। यह कहना उचित ही है कि निरंकुश सत्ता पर राष्ट्रीय भावना की विजय ही इस नाटक का मूल उद्देश्य है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. वाटर लू का युद्ध कब हुआ?
(a) 1814 (b) 1815 (c) 1816 (d) 1817

प्र.2. नेपोलियन का किया कौन-सा कार्य था?
(a) सामन्ती प्रथा की समाप्ति (b) सामाजिक समानता की स्थापना
(c) नवीन संस्थाओं की स्थापना (d) ये सभी

प्र.3. नेपोलियन को एल्बा द्वीप पर कब निर्वासित कर दिया गया?
(a) 1813 (b) 1814 (c) 1815 (d) 1815

प्र.4. यह कथन किसका है "नेपोलियन क्रांति का पुत्र था किन्तु उसने उन सिद्धान्तों व उद्देश्यों को उलट दिया जिनसे उसका आविर्भाव हुआ था।"
(a) रैम्जेम्योर (b) कैटलवी (c) ग्रांड एण्ड टेम्परले (d) लास्की

प्र.5. नैपोलियन युग कहलाता है
(a) 1799-1805 (b) 1799-1807 (c) 1799-1712 (d) 1799-1814

TOUCH 'n PASS

प्र.6. नेपोलियन कितनी वर्ष की आयु में द्वितीय लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुआ?
(a) 14 (b) 15 (c) 16 (d) 17

प्र.7. नेपोलियन ने आस्ट्रिया को होहेनलिण्डन के युद्ध में हरा दिया?
(a) 1800 (b) 1801 (c) 1802 (d) 1803

प्र.8. ऑस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस II ने ल्यूनेविले की संधि 1801 में की। इसमें कौन-सी बात सही है?
1. इटली के गणराज्यों को मान्यता
2. बेल्जियम पर फ्रांस का अधिकार मान लिया गया
3. केम्पोकोमिया की संधि को पुनः स्वीकार किया गया
(a) 1, 2 (b) 2, 3 (c) केवल 1 (d) 1, 2, 3

प्र.9. 1802 में हुई इंग्लैण्ड और फ्रांस के मध्य हुई आमियाँ की संधि में कौन-सी बात शामिल थी?
1. इंग्लैण्ड ने फ्रांस की कांस्यूलेट सरकार को मान्यता दी।
2. इंग्लैण्ड ने श्रीलंका व ट्रिनिडाड को छोड़कर शेष सभी उपनिवेश जिन्हें फ्रांस से जीता था, लौटा दिए।
3. इंग्लैण्ड ने ल्यूनविले की संधि को मान्यता प्रदान की।
4. इंग्लैण्ड ने फ्रांस की सर्वोच्चता स्वीकार कर ली।
(a) 1, 2, 4 (b) 1, 2, 3 (c) 1, 3, 4 (d) 1, 2, 3, 4

प्र.10. यह कथन किसका है ''स्पेनी नासूर ने मेरा विनाश कर दिया''?
(a) फ्रांसिस II (b) नेपोलियन
(c) कमाल पाशा (d) इनमें से कोई नहीं

प्र.11. पीडमाण्ट के राजा ने नेपोलियन से कब संधि कर ली? सेवाए और नीस फ्रांस को मिले।
(a) 27 अप्रैल, 1796 (b) 28 अप्रैल, 1796
(c) 29 अप्रैल, 1796 (d) 30 अप्रैल, 1796

प्र.12. मिलान पर नेपोलियन ने कब अधिकार कर लिया?
(a) 10 मई, 1796 (b) 11 मई, 1796
(c) 12 मई, 1796 (d) 13 मई, 1796

प्र.13. पोप ने नेपोलियन से टोलोण्टिनो नामक स्थान पर समझौता किया। समझौते में कौन-सी बात नहीं थी?
1. पोप ने ट्रांसपोडेन गणतंत्र को मान्यता दी।
2. पोप ने 3 करोड़ फ्रैंक नेपोलियन को दिए।
3. अवीनयो पर फ्रांस का अधिकार पोप द्वारा स्वीकार कर लिया गया।
4. पोप पर आक्रमण की दशा में नेपोलियन ने सहायता का वचन दिया।
(a) 1, 2 (b) 1, 2, 3, 4
(c) 1, 2, 3 (d) 2, 4

प्र.14. फ्रांस और आस्ट्रिया के मध्य कैम्पोफार्मिया की संधि कब हुई?
(a) 15 अक्टूबर, 1797 (b) 16 अक्टूबर, 1797
(c) 17 अक्टूबर, 1797 (d) 19 अक्टूबर, 1797

प्र.15. कैम्पोफार्मिया की संधि में कौन-सी बात शामिल थी?
(a) आस्ट्रिया द्वारा फ्रांस को बेल्जियम दिया गया।
(b) लोम्बार्डी पर फ्रांस का अधिकार स्वीकार कर लिया गया।
(c) राइन का प्रदेश भी फ्रांस को दे दिया गया।
(d) उपर्युक्त सभी

TOUCH 'n' PASS

प्र.16. कैम्पोफार्मिया की संधि के बाद नेपोलियन पेरिस कब लौटा?
(a) 4 दिसम्बर, 1797 (b) 5 दिसम्बर, 1797
(c) 6 दिसम्बर, 1797 (d) 7 दिसम्बर, 1797

प्र.17. पिरामिडो का युद्ध कब हुआ?
(a) 20 जुलाई, 1798 (b) 21 जुलाई, 1798
(c) 22 जुलाई, 1798 (d) 23 जुलाई, 1798

प्र.18. नेपोलियन ने सीरिया पर कब आक्रमण किया?
(a) 1797 (b) 1798 (c) 1794 (d) 1800

प्र.19. कब डायरेक्टरी का शासन का अंत करके शासन की बागडोर नेपोलियन, सिये तथा ड्यूको के हाथ में आ गई?
(a) 7 नवम्बर, 1799 (b) 8 नवम्बर, 1799
(c) 9 नवम्बर, 1799 (d) 10 नवम्बर, 1799

प्र.20. सीनेट के सदस्यों की संख्या कितनी थी?
(a) 57 (b) 58 (c) 59 (d) 60

प्र.21. कब नेपोलियन ने प्रशासन की सम्पूर्ण शक्ति को अपने हाथों में ले लिया?
(a) 1800 (b) 1801 (c) 1802 (d) 1803

प्र.22. निम्न में कौन-सा सुधार नेपोलियन ने किया?
1. प्रेस पर प्रतिबंध
2. सैनिक सेवा को अनिवार्य किया
3. प्रतिष्ठा मण्डल की स्थापना
4. शिक्षा में सुधार
(a) 1, 2, 3 (b) 2, 3, 4 (c) 1, 2, 3, 4 (d) 1, 3, 4

प्र.23. पेरिस में एक विश्वविद्यालय की स्थापना कब की गई?
(a) 1806 (b) 1807 (c) 1808 (d) 1809

प्र.24. बैंक ऑफ फ्रांस को नोट छापने का कार्य कब दिया गया?
(a) 1801 (b) 1802 (c) 1803 (d) 1804

प्र.25. निम्न में कौन-सा आर्थिक सुधार नेपोलियन ने नहीं किया?
1. अनावश्यक खर्चों पर प्रतिबंध
2. भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित किया
3. विदेशों से कर्ज लिया
4. सड़कों का सुधार, नहरें खोदी गई, बंदरगाहों का उद्धार किया
(a) 1, 2, 3 (b) 2, 3, 4
(c) 1, 2, 4 (d) 1, 2, 3, 4

प्र.26. 1801 में नेपोलियन और पोप के मध्य कांकडर्ट समझौता हुआ इसमें कौन-सी बात थी?
(a) पोप ने चर्च की जब्त सम्पत्ति तथा भूमि से अधिकार त्याग दिया।
(b) शिक्षा संस्थाओं का नियन्त्रण स्वीकार किया गया।
(c) पादरियों को राज्य के प्रति भक्ति की शपथ लेना आवश्यक था।
(d) उपर्युक्त सभी।

प्र.27. नेपोलियन ने कब सिविल कोड तैयार करने के लिए एक समिति कैम्बासेरस के नेतृत्व में नियुक्त की?
(a) 1804 (b) 1805 (c) 1806 (d) 1807

TOUCH 'n PASS

प्र.28. सिविल कोड या नेपोलियन संहिता के कितने भाग थे?
(a) 2 (b) 3 (c) 4 (d) 5

प्र.29. यह कथन किसका है ''टिलसिट की संधि के समय नेपोलियन का साम्राज्य न केवल अपने चरम उत्कर्ष पर था वरन अत्यन्त दृढ़ भी था''?
(a) रैम्जेम्योर (b) गूच
(c) थॉमसन (d) टायनबी

प्र.30. टिलसिट की संधि कब हुई?
(a) 1806 (b) 1807
(c) 1808 (d) 1809

प्र.31. 'बर्लिन आदेश' जो महाद्वीपीय योजना को लागू करने हेतु था, कब जारी किया गया?
(a) 20 नवम्बर, 1806 (b) 21 नवम्बर, 1806
(c) 22 नवम्बर, 1806 (d) 23 नवम्बर, 1806

प्र.32. नेपोलियन ने वार्सा आदेश कब जारी किए?
(a) 25 जनवरी, 1807 (b) 26 जनवरी, 1807
(c) 27 जनवरी, 1807 (d) 28 जनवरी, 1807

प्र.33. काण्टेंब्ल्यू आदेश कब जारी किए गए?
(a) 18 अक्टूबर, 1810 (b) 19 अक्टूबर, 1810
(c) 20 अक्टूबर, 1810 (d) 21 अक्टूबर, 1810

प्र.34. नेपोलियन ने स्वीडन पर कब विजय प्राप्त कर ली?
(a) 1806 (b) 1807
(c) 1808 (d) 1809

प्र.35. हॉलैण्ड का फ्रांस में कब विलय हुआ?
(a) 7 जुलाई, 1810 (b) 8 जुलाई, 1810
(c) 9 जुलाई, 1810 (d) 10 जुलाई, 1810

उत्तरमाला

1. (b)	**2.** (d)	**3.** (b)	**4.** (c)	**5.** (d)	**6.** (c)	**7.** (a)	**8.** (d)	**9.** (b)	**10.** (b)
11. (b)	**12.** (a)	**13.** (c)	**14.** (c)	**15.** (d)	**16.** (b)	**17.** (b)	**18.** (c)	**19.** (d)	**20.** (d)
21. (a)	**22.** (c)	**23.** (c)	**24.** (c)	**25.** (c)	**26.** (d)	**27.** (a)	**28.** (d)	**29.** (c)	**30.** (b)
31. (b)	**32.** (a)	**33.** (a)	**34.** (c)	**35.** (c)					

TOUCH 'n' PASS

UNIT-V

जर्मनी और इटली का एकीकरण
Unification of Germany and Italy

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. जर्मनी का एकीकरण कब और किसने किया?
When and who unified Germany?

उत्तर यह 1870 में हुआ। जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क ने किया। बिस्मार्क प्रशा के शासक विलियम प्रथम का प्रधानमन्त्री था।

प्र.2. इटली का एकीकरण किसके कारण हुआ?
What led to the unification of Italy?

उत्तर इटली के एकीकरण का श्रेय मेजिनी, काउंट काबूर और गैरीबाल्डी को दिया जाता है। गैरीबाल्डी को एकीकरण की तलवार कहा जाता है। इटली का एकीकरण चार चरणों (1848-71) में पूरा हुआ।
सन् 1831 ई० और 1848 ई० में क्रान्तिकारी विद्रोह हुए। इन घटनाओं के फलस्वरूप 'इटली का एकीकरण' आन्दोलन ने एक नया मोड़ लिया और 1871 ई० में इटली का एकीकरण पूरा हुआ।

प्र.3. जर्मनी के एकीकरण का जनक कौन था?
Who was the father of unification of Germany?

उत्तर जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क ने प्रमुख भूमिका निभाई थी।
इन सभी राज्यों में प्रशा राज्य सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य था। बिस्मार्क प्रशा राज्य के शासक विलियम प्रथम का प्रधानमन्त्री था।

प्र.4. जर्मनी का एकीकरण कैसे हुआ?
How did Germany unify?

उत्तर जर्मन एकीकरण प्रशिया की शक्ति द्वारा प्राप्त किया गया था और ऊपर से नीचे तक लागू किया गया था, जिसका अर्थ है कि यह एक जैविक आन्दोलन नहीं था जिसे लोकप्रिय वर्गों द्वारा पूरी तरह से समर्थन और प्रसार किया गया था, बल्कि इसके बजाय प्रशिया की शाही नीतियों का एक उत्पाद था।

प्र.5. एकीकरण का उद्देश्य क्या है?
What is the purpose of integration?

उत्तर क्षैतिज एकीकरण का उद्देश्य कीमत में कटौती, उत्पादन में पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं, अनुसंधान और विकास, विपणन और प्रबन्धन आदि को समाप्त करना, प्रतिस्पर्धा में कमी या कमी है। इस प्रकार का एकीकरण प्रतिस्पर्धा के पैमाने और उन्मूलन की अर्थव्यवस्था के लाभ को प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

प्र.6. इटली और जर्मनी के एकीकरण के विरोध में कौन था?
Who was opposed to the unification of Italy and Germany?

उत्तर ऑस्ट्रिया (Austria) इटली (Italy) एवं जर्मनी (Germany) के एकीकरण के विरुद्ध था।

TOUCH 'n' PASS

प्र.7. जर्मनी और इटली के एकीकरण के क्या प्रभाव थे?
What were the effects of the unification of Germany and Italy?

उत्तर जर्मनी और इटली दोनों के एकीकरण के प्रभाव ने स्वतन्त्रता, आर्थिक विकास और एक मजबूत राष्ट्रवाद के लिए एक सशक्त मानसिकता पैदा की। हालाँकि, प्रत्येक के लिए यहाँ एक बयान हो सकता है, क्योंकि एकीकरण भी खूनी युद्ध, अलगाव और राजनीति को नियन्त्रित करते हैं।

प्र.8. जर्मनी और इटली में क्या समानता है?
What are the similarities between Germany and Italy?

उत्तर चूँकि जर्मनी और इटली दोनों "युवा राष्ट्र" हैं, इसलिए दोनों देश अपने ऐतिहासिक विकास में अनुभव साझा करते हैं। आज यूरोप के केन्द्र में उनकी स्थिति और नाटो और यूरोपीय संघ की उनकी सदस्यता के साथ-साथ उनके करीबी आर्थिक सम्बन्ध इसके लिए एक बहुत अच्छा आधार प्रदान करते हैं।

प्र.9. जर्मनी के एकीकरण में जालवेराइन का क्या योगदान था?
What was Zollverein's contribution to the unification of Germany?

उत्तर इसे सुनेंरोकेंजॉलवेराइन—यह एक जर्मन शुल्क संघ था जिसमें अधिकांश जर्मन राज्य शामिल थे। यह संघ 1834 में प्रशा की पहल पर स्थापित हुआ था। इसमें विभिन्न राज्यों के बीच शुल्क अवरोधों को समाप्त कर दिया गया और मुद्राओं की संख्या दो कर दी जो पहले बीस से भी अधिक थीं यह संघ जर्मनी के आर्थिक एकीकरण का प्रतीक था।

प्र.10. राइन संघ से आप क्या समझते हैं?
What do you mean by Rhine confederation?

उत्तर नेपोलियन ने अप्रत्यक्ष रूप से जर्मनी के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। उसने जर्मनी के छोटे-छोटे राज्यों के स्थान पर 39 राज्यों का एक संघ बनाया तथा जटिल शासन व्यवस्था के स्थान पर एक सरल शासन व्यवस्था स्थापित की। इस संघ को राइन संघ (Rhine Confederation) कहा गया।

प्र.11. जर्मनी के एकीकरण के लिए बिस्मार्क ने कौन-सी नीति अपनाई तथा इसका क्या परिणाम हुआ?
What policy did Bismarck adopt for the unification of Germany and what would be its result?

उत्तर बिस्मार्क 1862 में प्रशा का चान्सलर बना और अपनी कूटनीति, सूझबूझ रक्त एवं लौह की नीति के द्वारा जर्मनी का एकीकरण पूर्ण किया।

प्र.12. बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण कैसे किया?
How did Bismarck unify Germany?

उत्तर बिस्मार्क का निश्चित मत था कि सैनिक शक्ति के बल पर ही जर्मनी का एकीकरण सम्भव था। अत: बिस्मार्क ने कुछ समय में प्रशा में एक विशाल और सुसज्जित सेना का निर्माण कर दिया और अन्त में 'लौह एवं रक्त' की नीति का अनुसरण करते हुए उसने केवल 6 वर्षों में (1864 से 1870 ई०) तक सम्पूर्ण जर्मनी का एकीकरण कर दिया।

प्र.13. इटली का एकीकरण किस प्रकार पूर्ण हुआ?
How was the unification of Italy accomplished?

उत्तर इस प्रकार एक लम्बे संघर्ष के बाद इटली का एकीकरण पूरा हो गया। 1856 ई० में कैवूर ने एक बार कहा कि, "मुझे पूरा यकीन है कि इटली एक दिन एक राष्ट्र ही बनेगा और रोम उसकी राजधानी होगी।" वास्तव में उसके ये शब्द सही साबित हुए। मैजिनी के नैतिक बल, गैरीबाल्डी के पराक्रम तथा कैवूर की कूटनीति एवं इमानुएल की व्यावहारिक समझदारी से इटली का एकीकरण 1870 ई० में पूर्ण हो गया।

TOUCH 'n PASS

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. इटली के एकीकरण की प्रमुख बाधाओं पर प्रकाश डालिए।
Throw light on the major obstacles in the unification of Italy.

उत्तर

इटली के एकीकरण में प्रमख बाधाएँ
(Main Obstacles in the Unification of Italy)

इटली के एकीकरण में अनेक बाधाएँ थीं। 19वीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध में इटली के एकीकरण के मार्ग की प्रमुख बाधाएँ निम्नलिखित थीं—

1. **इटली में बाहरी शक्तियों का नियन्त्रण**—विदेशी राज्यों का प्रभुत्व इटली के एकीकरण के मार्ग में सबसे अधिक बाधक तत्त्व था। इटली में ऑस्ट्रिया का प्राधान्य था। लोम्बार्डी और वेनेशिया पर उसका अधिकार था। मोडेना व टस्कनी पर ऑस्ट्रिया से सम्बन्धित राजकुमारों का अधिकार था। पर्मा की रानी ऑस्ट्रियन राजकुमारी थी। ऑस्ट्रिया का इतना अधिक प्रभाव इटली के एकीकरण में सबसे अधिक बाधक था। इसलिए कैवूर ने कहा था, "ऑस्ट्रिया इटली की स्वतन्त्रता का प्रमुख शत्रु है।"
2. **पोप का असीमित अधिकार क्षेत्र**—पोप की शक्तिशाली राजसत्ता के कारण इटली के दो भाग हो गए थे। पोप के राज्य को जीतना भी मुश्किल था, क्योंकि इससे यूरोप की समस्त कैथोलिक जनता नाराज हो जाती। अत: जब तक पोप के हाथ में सत्ता रही तब तक उसने इटली का एकीकरण नहीं होने दिया।
3. **प्रान्तीय एवं व्यापक फूट**—इटली विभिन्न छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। इन सभी राज्यों में भिन्न-भिन्न प्रकार के कानून एवं भिन्न-भिन्न प्रकार की व्यवस्थाएँ थीं। इसी प्रान्तीयता के कारण इटली में व्यापक फूट फैली हुई थी। इन प्रान्तों में राष्ट्रीय चेतना का अभाव था।
4. **राजाओं में ईर्ष्या**—राजाओं में इटली की एकता के लिए त्याग करने की भावना न थी। इटली की राष्ट्रीय एकता के लिए अपने स्वार्थों का बलिदान करने को कोई राजा तैयार न था। सब अपनी निरंकुश सत्ता को बनाए रखने को चिन्तित थे।
5. **इटली के एकीकरण में मत वैभिन्य**—इटली के एकीकरण के सम्बन्ध में विभिन्न मत थे। कुछ लोग इटली के पूर्णत: गणतन्त्रात्मक स्वरूप के समर्थक थे। कुछ लोग रोम के पोप की अध्यक्षता में संघीय राज्य की स्थापना के पक्ष में थे। कुछ सार्डीनिया-पीडमाण्ट की अध्यक्षता में इटली के एकीकरण के इच्छुक थे। अत: यह आपसी मत वैभिन्य भी इटली के एकीकरण के मार्ग में बाधक था।

प्र.2. 1815 से 1850 तक इटली के एकीकरण की असफलता के कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the causes for the failure of unification of Italy from 1815 to 1850.

उत्तर

1815 से 1850 तक इटली के एकीकरण की असफलता के कारण
(Causes for the Failure of Unification of Italy from 1815 to 1850)

1850 ई० तक इटली का एकीकरण न हो पाने के अनेक कारण थे, जिनमें से प्रमुख निम्नांकित थे—

1. **निश्चित योजना का अभाव**—इस काल में इटली के देशभक्त भिन्न-भिन्न उद्देश्यों को लेकर अलग-अलग ढंग से कार्य कर रहे थे; यथा सार्डीनिया, पीडमाण्ट राजतन्त्र के पक्ष में थे। गिओबर्टी पोप के नेतृत्व में संघीय शासन चाहता था जबकि मैजिनी गणतन्त्र चाहता था। अत: क्रान्तिकारियों के सम्मुख एक निश्चित उद्देश्य न था।
2. **कूटनीतिज्ञ नेता का अभाव**—असफलता का एक कारण यह भी था कि इस दौर में इटली में योग्य कूटनीतिज्ञ नेता का उदय न हो सका जो कि इटली की वास्तविक समस्याओं को समझकर एक सफल हल ढूँढ़ता। मैजिनी एकमात्र दार्शनिक नेता था।
3. **सशक्त बल का अभाव**—इटली में कोई ऐसा दल न था जो सम्पूर्ण देश को अपनी ओर आकृष्ट करके सम्पूर्ण जनता को एक झण्डे के नीचे एकत्र कर सके। कार्बोनरी संस्था छोटे-छोटे विद्रोहों के अतिरिक्त कुछ न कर सकी। मैजिनी का 'यंग इटली' भी जनता को अपनी ओर आकृष्ट न कर सका।
4. **इटली की समस्या स्थानीय न होकर अन्तर्राष्ट्रीय थी**—1850 ई० तक इटली के देशभक्तों का यह विश्वास था कि वे मात्र अपने ही साधनों के बल पर इटली को स्वतन्त्र कर सकते हैं जबकि यह विचार गलत था क्योंकि इटली की समस्या स्थानीय नहीं थी वरन् वह एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या थी। 1815 ई० में इटली का विभाजन भी एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (विएना सम्मेलन) ने किया था, अत: इटली के एकीकरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौते की धाराओं को भंग करना था।

TOUCH 'n PASS

5. **इटली में ऑस्ट्रिया का प्रभुत्व**—इस काल में इटली के स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता का एक कारण ऑस्ट्रिया की इटली में प्रधानता थी। लोम्बार्डी और वेनेशिया में उसका राज्य था। पर्मा, मोडेना तथा टस्कनी के राज्य भी ऑस्ट्रिया के राजवंश से सम्बन्धित थे। रोम का पोप ऑस्ट्रिया का समर्थक था। नेपिल्स तथा सिसली ने ऑस्ट्रिया से सन्धि कर ली। अत: इस समय बिना ऑस्ट्रिया को शक्तिहीन बनाए इटली का स्वन्त्रता संग्राम सफल नहीं हो सकता था।

लेकिन इस विफलता में भी सफलता की किरणें छिपी हुई थीं। यह बात अब स्पष्ट हो गई थी कि सार्डीनिया-पीडमाण्ट ही आगामी इटली का नेतृत्व कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, इस समय तक सारा इटली जाग चुका था। इस समय तक यह बात भी स्पष्ट हो चुकी थी कि इटली अकेले अपनी स्वतन्त्रता और एकता प्राप्त नहीं कर सकता, इटली का प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न है जिसे कुछ बड़े देशों के सहयोग से ही हल किया जा सकता है। अत: अब इटली मजबूत और सुसंगठित राष्ट्र होने जा रहा था, इसके लिए एक नवीन संकल्प की आवश्यकता थी। विक्टर एमानुएल ने इसलिए कहा था, "सामन्तवादी प्रतिष्ठा के दिन समाप्त हो गए हैं, व्यावहारिक युग का आरम्भ हो गया है। अब काव्य का स्थान गद्य को लेना है।"

प्र.3. इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी का क्या योगदान था?

What was the contribution of Garibaldi in the unification of Italy?

उत्तर

इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी का योगदान
(Contribution of Garibaldi in the Unification of Italy)

इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इसका जन्म 1807 ई० में इटली के नीस नामक नगर में हुआ था। बचपन से ही उसमें स्वदेश के प्रति लगाव था। प्रारम्भ में वह 'तरुण इटली' (Young Italy) का सदस्य बन गया। 1833 ई० में मैजिनी के साथ मिलकर उसने इटली में गणतन्त्र स्थापित करने का असफल प्रयत्न किया जिसके कारण उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया, लेकिन वह किसी तरह दक्षिणी अमेरिका भाग निकला। 14 वर्ष तक वह प्रवासी जीवन व्यतीत करता रहा तथा गुप्त रूप से दक्षिणी अमेरिका से स्वतन्त्रता संग्रामों में भाग लेता रहा। मैटरनिख के पतन के बाद 1848 ई० में सार्डीनिया तथा ऑस्ट्रिया के बीच युद्ध चल रहा था। गैरीबाल्डी तीन हजार स्वयंसेवकों को साथ लेकर सार्डीनिया की ओर से लड़ा, लेकिन जुलाई 1848 ई० में सार्डीनिया के शासक एल्बर्ट को ऑस्ट्रिया से सन्धि करनी पड़ी, मगर गैरीबाल्डी ने युद्ध जारी रखा। 1849 ई० में रोम की क्रान्ति में भी गैरीबाल्डी ने भाग लिया। तत्पश्चात् यहाँ मैजिनी के नेतृत्व में रोमन गणराज्य की स्थापना हुई। गैरीबाल्डी भी रोम चला गया। जब नेपोलियन तृतीय की सेना ने पोप की सहायता के लिए फ्रांसीसी सेनाएँ भेजीं तो गणराज्य की रक्षा हेतु गैरीबाल्डी ने डटकर फ्रांसीसी सेना का मुकाबला किया, लेकिन उसको हार का मुँह देखना पड़ा और उसे विवश होकर अमेरिका भागना पड़ा। इस बार वह 6 वर्ष तक अमेरिका में रहा। 1854 ई० में वह पुन: इटली आकर कैपोरा (सार्डीनिया) टापू में रहने लगा। 1856 ई० में कैवूर से उसकी मुलाकात हुई। इसने कैवूर से समझौता कर अपने गणतन्त्रवादी विचार बदल दिए। अत: इटली में गणतन्त्रवादी और वैधानिक राजसत्ता में समझौता हो गया। केटलबी के अनुसार, "यदि यह समझौता नहीं होता और उनके बीच मतभेद बना रहता तो सम्भवत: इटली की एकता कायम नहीं होती तथा उसकी नाव मझधार में डूब गई होती।

गैरीबाल्डी का वास्तविक काल 1860 ई० से प्रारम्भ होता है। 1860 ई० में उसने सिसली को स्वतन्त्र कराया। सितम्बर, 1860 ई० में उसने नेपिल्स पर अधिकार कर लिया। 1860 ई० में कैवूर की नीतियों से असन्तुष्ट होकर उसे सहयोग देने से इन्कार कर दिया। इसके बाद गैरीबाल्डी विक्टर इमानुएल से मिला। उसने अपनी जीती हुई भूमि इमानुएल को दी दी, जो कि उसका महान् आत्म-त्याग था।

गैरीबाल्डी का उद्देश्य भी इटली का एकीकरण करना था, मगर उसका उद्देश्य प्राप्ति का मार्ग विभिन्न था। उसे इस बात का दु:ख था कि इटली के नेता उस पर विश्वास नहीं करते हैं। उसने कैवूर की मृत्यु के बाद पुन: रोम पर आक्रमण किया, लेकिन असफल रहा। इसके बाद उसने अपना शेष जीवन केपरेरा टापू में व्यतीत किया जहाँ 1882 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। गैरीबाल्डी का नाम इटली को संगठित करने वाले देशभक्तों में सर्वोपरि है। एकीकरण के इस महान् कार्य में उसने अपने अदम्य साहस, बल और शक्ति का अपूर्व परिचय दिया।

प्र.4. जर्मनी के एकीकरण में प्रमुख बाधाओं का उल्लेख कीजिए।

Mention the Major obstacles in the unification of Germany.

उत्तर

जर्मनी के एकीकरण में प्रमुख बाधाएँ
(Major Obstacles in the Unification of Germany)

इस अवधि में जर्मनी के एकीकरण की गति बहुत मन्द रही। इसके निम्नलिखित कारण थे—

1. **ऑस्ट्रिया का प्रतिक्रियावादी शासन**—विएना कांग्रेस ने ऑस्ट्रिया का जर्मनी पर पूरा प्रभुत्व स्थापित कर दिया था। अत: ऐसी स्थिति में न तो जर्मन राज्य ऑस्ट्रिया के प्रभुत्व में एकत्र होना चाहते थे और न ही ऑस्ट्रिया का प्रतिक्रियावादी

चांसलर मैटरनिख जर्मनी के एकीकरण के लिए उत्सुक था। प्रशा के राजा ने मस्त जर्मन राजाओं को एकत्र करके एकीकरण के प्रयास किए थे, किन्तु ऑस्ट्रियन सम्राट ने इसका घोर विरोध किया। उसने जर्मनी को दबाने के लिए घोर प्रतिक्रियावादी नीति अपनायी। 1815 ई० में उसने कार्ल्सबाद नियम पारित करवा कर जर्मनी के राष्ट्रीय आन्दोलनों का कठोरता से दमन किया। राष्ट्रीय विचारों को प्रोत्साहित करने वाले शिक्षकों को निकाल देने की व्यवस्था की, गुप्त एवं अनियमित संस्थाओं पर कड़े प्रतिबन्ध लगा दिए गए। प्रतिक्रियावादी मैटरनिख ही सर्वशक्तिमान पुलिस-व्यवस्था का स्वामी था। 1848 ई० में मैटरनिख के पतन के बाद ही जर्मनी में पुन: नयी चेतना के अंकुर तेजी से फूटने लगे।

2. **पिछड़ी राजनीतिक व्यवस्था**—जर्मनी के राजनीतिक एकीकरण में बाधक वहाँ की पिछड़ी हुई राजनीतिक व्यवस्था थी। जर्मन राज नेताओं को राजनीतिक योजनाओं को कार्यान्वित करने का कोई अनुभव नहीं था। वे अनावश्यक बातों में ध्यान एवं समय का अपव्यय करते थे।
3. **राजनीतिक दलों में एकता का अभाव**—जर्मनी के विभिन्न राजनीकि दल सुधार सम्बन्धी विषयों को लेकर एकमत नहीं थे। भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों ने भिन्न-भिन्न प्रकार की योजनाएँ बनाईं, लेकिन किसी भी एक योजना पर वे एकमत नहीं हो सके, सभी राज्य अपने-अपने स्वार्थ को सिद्ध करना चाहते थे। एकीकरण के सम्बन्ध में भी उनके भिन्न-भिन्न विचार थे। कुछ राज्य प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण चाहते थे और कुछ राज्य सामन्तवादी विचारों के समर्थक थे। कुछ राज्य स्वतन्त्र गणतन्त्र के रूप में जर्मनी का एकीकरण चाहते थे और कुछ हैप्सबर्ग वंश के नेतृत्व में जर्मन साम्राज्य के संगठन के पक्ष में थे। इन दलों में प्राय: संघर्ष हुआ करते थे। अत: राजनीतिक दलों के इन आपसी मतभेदों के कारण जर्मनी में राष्ट्रीय एकीकरण की विचारधारा का विकास बहुत मन्द गति से हुआ।
4. **जर्मन राज्यों की आपसी प्रतिस्पर्द्धा**—जर्मनी के समस्त छोटे-छोटे राज्य पृथकता के कारण केवल अपनी-अपनी स्वतन्त्रता से प्रेम करते थे। ये राज्य सम्पूर्ण जर्मनी के लिए अपनी स्वतन्त्रता का त्याग नहीं करना चाहते थे। उनके लिए राष्ट्रीय एकता से बढ़कर अपने-अपने राज्यों का अस्तित्व था।
5. **ऑस्ट्रिया तथा प्रशा की आपसी शत्रुता**—जर्मनी के सभी राज्यों में ऑस्ट्रिया तथा प्रशा सबसे अधिक शक्तिशाली थे। जर्मनी के नेतृत्व को लेकर इन दोनों पारस्परिक द्वेष था। ऑस्ट्रिया तो जर्मनी की राष्ट्रीय भावना को दबाने के लिए उसका नेतृत्व करना चाहता था लेकिन प्रशा जर्मनी को राष्ट्रीयता के आधार पर संगठित रखना चाहता था। अत: इन दोनों के पारस्परिक विद्वेष के कारण जर्मनी के एकीकरण की गति मन्द हो गई।

उपर्युक्त कारणों से जर्मनी का एकीकरण 1815 से 1850 ई० तक काफी मन्द गति से हुआ। 1862 ई० में बिस्मार्क के आगमन से ही जर्मनी का एकीकरण सम्भव हुआ।

प्र.5. इटली के एकीकरण में कैवूर के उदय व इसके उद्देश्यों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
Give a brief account of the rise of Cavour and its objectives in the unification of Italy.

उत्तर

कैवूर का उदय
(Rise of Cavour)

कैवूर वह व्यक्ति था जिसने इटली के सदियों पुराने स्वप्न को पूरा किया था। मैजिनी और गैरीबाल्डी से कम लोकप्रिय, किन्तु इटली के एकीकरण में सबसे अधिक शक्तिशाली व्यक्ति कैवूर ही था। यह व्यक्ति कूटनीतिक मामलों में बिस्मार्क से कम न था, वैदेशिक मामलों में इसकी तुलना डिजरैली (Disraeli) से की जाती है। काउण्ट कैवूर का जन्म 1810 ई० में सार्डीनिया के एक कुलीन घराने में हुआ था। 10 वर्ष की आयु में उसे ट्यूरिन की मिलिटरी एकेडमी में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा गया। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वह सेना में इन्जीनियर हो गया, किन्तु इसकी लालसा राजनीतिज्ञ बनने की थी। अत: 1831 ई० में उसने सैनिक सेवा से त्यागपत्र दे दिया और देश के लिए कुछ करने का निश्चय किया। 15 वर्ष देहात में रहकर उसने जमींदार का जीवन बिताया और अपनी जायदाद की उन्नति में लगा रहा। चूँकि राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं में रुचि होने के कारण उसने इन वर्षों में फ्रांस जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि देशों की यात्राओं द्वारा राजनीति का ज्ञान प्राप्त किया। उसे इंग्लैण्ड का द्वैध शासन बहुत पसन्द आया। एक बार उसने कहा भी था, "अगर मैं अंग्रेज होता तो अभी तक कुछ बन गया होता और अभी तक मेरा नाम अज्ञान न रहता।" वह इंग्लैण्ड की संसदीय प्रणाली अपने देश में स्थापित करना चाहता था। रात-रात भर वह लोकसभा (हाउस ऑफ कॉमन्स) के दर्शक कक्ष में बैठा रहता था जिससे वह उसकी कार्यप्रणाली को पूरी तरह जान सके। 1842 ई० में कैवूर ने कृषि की

TOUCH 'n PASS

उन्नति के लिए एक समिति बनायी जिसका कार्यालय कालान्तर में वाद-विवादों का केन्द्र बन गया। 1847 ई० में कैवूर ने एक पत्र प्रकाशित किया। इस समाचार-पत्र का उद्देश्य इटली में सुधारों और एकीकरण की जड़ों को मजबूत करना था। इससे पूर्व 1842 ई० में उसने एक संगठन 'एसोसिएजोन अग्रेरिया' (Associazone Agraria) की स्थापना की। यह संगठन थोड़े ही समय में काफी प्रभावशाली हो गया था। धीरे-धीरे कैवूर का प्रभाव बढ़ता गया। 1848 ई० में वह पहली बार पीडमाण्ट की विधान परिषद् का सदस्य बन गया। देश का मन्त्रिमण्डल बार-बार बदलता रहा, किन्तु कैवूर हर बार सफलतापूर्वक निर्वाचित होता रहा। 1850 ई० में वह कृषि एवं वाणिज्य मन्त्री नियुक्त हुआ। 1852 ई० में उसे अर्थ और नौ-सेना के विभाग भी दिए गए। उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर 1852 ई० में विक्टर इमानुएल ने उसे अपना प्रधानमन्त्री नियुक्त किया। केवल बीच के कुछ सप्ताहों को छोड़कर वह जीवन भर इस पद पर बना रहा तथा अपने कार्यों द्वारा उसने एक महान् राजनीतिक एवं एक अद्वितीय राजनायक होने का परिचय दिया।

कैवूर के उद्देश्य (Objectives of Cavour)

कैवूर का उद्देश्य भी यही था जो मैजिनी का था अर्थात् वह भी इटली का एकीकरण करना चाहता था, लेकिन इन उद्देश्यों की प्राप्ति के ढंग अलग-अलग थे। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसमें जोश एवं तलवारबाजी के पैंतरों के स्थान पर राजनीतिक दाँव-पेचों की मर्मज्ञता एवं कूटनीति की निपुणता थी। 1815 ई० में इटली का मामला जो कि लगातार ऑस्ट्रिया का घरेलू मामला समझा जा रहा था उसे कैवूर ने अपनी कूटनीति से अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बना दिया। संक्षेप में, कैवूर के स्पष्ट उद्देश्यों का विवरण निम्नलिखित हैं—

1. सर्वप्रथम कैवूर ने ही इस बात का अनुभव किया कि एकमात्र सार्डीनिया-पीडमाण्ट राज्य ही इटली के स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व कर सकता है।
2. कैवूर ने इटली की समस्या को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बनाया, अत: प्रधानमन्त्री का पद सम्भालते ही उसने निरन्तर यूरोपीय देशों की मित्रता एवं सद्भावना प्राप्त करने का प्रयास किया।
3. कैवूर ने ही पहली बार राजनीतिक प्रश्नों के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक समस्याओं पर भी जोर दिया। उसने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं बौद्धिक सभी दृष्टिकोणों से एक आदर्श राज्य बनाने का प्रयास किया। उसका मानना था कि ऐसा करने पर ही इटली के अन्य राज्य सार्डीनिया-पीडमाण्ट की ओर आकृष्ट होंगे।
4. कैवूर यह जानता था कि इटली से विदेशियों को निकालने के लिए सशस्त्र युद्ध होगा, अत: इसके लिए उसने सार्डीनिया-पीडमाण्ट के संगठन को अपना एक प्रमुख उद्देश्य बनाया।
5. कैवूर शस्त्रों के बल पर अपने निर्णयों को आरोपित नहीं करना चाहता था। वह लोकमत एवं संसद को लेकर आगे चलना चाहता था। सैनिक तैयारी के साथ-साथ वह लोकमत को अपने पक्ष में करना चाहता था। उसने स्पष्ट घोषणा की कि "इटली का निर्माण स्वतन्त्रता के आधार पर किया जाए या हमें इटली के निर्माण का विचार त्याग देना चाहिए।"

प्र.6. फ्रैंको-प्रशियन युद्ध के परिणामों का उल्लेख कीजिए।
Mention the results of Franco-Prussian War.

उत्तर

फ्रैंको-प्रशियन युद्ध के परिणाम
(Results of Franco-Prussian War)

इस युद्ध के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित थे—

1. **जर्मनी का एकीकरण पूर्ण एवं जर्मन साम्राज्य की स्थापना**—प्रो० हेज के अनुसार, "फ्रांस-प्रशा युद्ध ने इस प्रकार प्रशा के नेतृत्व में जर्मन साम्राज्य के निर्माण को गति प्रदान की। इस युद्ध ने जर्मन सैनिक तन्त्र की सर्वोत्कृष्टता की भी पुष्टि की।" अत: इस युद्ध के फलस्वरूप प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी का राजनीतिक एकीकरण पूर्ण हो गया। 18 जनवरी, 1871 ई० को वर्साय के राजभवन में बड़ी धूमधाम से उत्सव हुआ। प्रशा का राजा विलियम प्रथम एक सुसज्जित मंच पर बैठा और राजा के पास ही एक आसन पर बिस्मार्क बैठा। सभी राज्यों की ओर से विलियम प्रथम को राजमुकुट दिया गया जिसे उसने सहर्ष स्वीकार किया तथा बिस्मार्क ने जर्मन साम्राज्य की स्थापना की घोषणा पढ़ी। इस प्रकार जर्मनी के एकीकरण का यह यज्ञ सम्पन्न हो गया।

TOUCH 'n' PASS

2. **इटली का एकीकरण पूर्ण हुआ**—इस प्रकार युद्ध के परिणामस्वरूप इटली का एकीकरण भी पूर्ण हो गया। 1866 ई० तक मात्र रोम को छोड़कर इटली के समस्त राज्य सार्डीनिया-पीडमाण्ट के नेतृत्व में एक हो चुके थे। रोम में पोप के राज्य की रक्षा फ्रांसीसी सेनाएँ कर रही थीं। अत: 1870 ई० में इटली ने फ्रांस को प्रशा के साथ संघर्ष में उलझा देखकर रोम पर अधिकार करके एकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण कर दी। इस प्रकार, पोप की लौकिक शक्ति समाप्त हो गई तथा रोम एकीकृत इटली की राजधानी बन गया। हैजन के अनुसार, सन् 1866 ई० की लड़ाई के फलस्वरूप ऑस्ट्रिया को जर्मनी एवं इटली से निकाल दिया गया था। सन् 1870 ई० की लड़ाई से दोनों देशों का एकीकरण पूर्ण हो गया। बर्लिन जर्मन-संघ साम्राज्य की राजधानी बना और रोम संयुक्त इटली की राजधानी बना।''
3. **फ्रांस में तृतीय गणतन्त्र की स्थापना**—इधर सेडान के युद्ध में पराजय के बाद नेपोलियन तृतीय को बन्दी बना लिया गया और उधर फ्रांस में क्रान्ति हो गई और 4 सितम्बर, 1871 ई० को फ्रांस में तृतीय गणतन्त्र की स्थापना हुई।
4. **रूस के कदम काले सागर की ओर**—रूस पर भी इस युद्ध का प्रभाव पड़ा। बिस्मार्क के प्रोत्साहन से उसने पूरा लाभ उठाया। अत: उसने फ्रांस को युद्ध में फंसा देखकर पेरिस सन्धि का उल्लंघन करते हुए काले सागर में पुन: अपना जहाजी बेड़ा रखकर वहाँ वर्गीकरण करना आरम्भ कर दिया जिससे पूर्वी समस्या में एक बार पुन: वह खतरा बन गया।
5. **विएना सन्धि को आघात**—इस युद्ध के फलस्वरूप विएना सन्धि के निर्णयों पर भारी आघात लगा क्योंकि इस युद्ध ने इटली एवं जर्मनी को पूर्ण रूप से एकीकृत कर दिया जो कि विएना सन्धि की शर्तों के विरुद्ध था।
6. **जर्मनी (प्रशा) यूरोपीय राजनीति का केन्द्र बन गया**—इस युद्ध के पश्चात् यूरोप की राजनीति का केन्द्र फ्रांस (पेरिस) के स्थान पर जर्मनी (प्रशा) बन गया। अब जर्मनी सारे यूरोप का एक प्रतिष्ठित एवं सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य बन गया और बिस्मार्क सारे जर्मन का अधिपति बन गया।

इस प्रकार बिस्मार्क के प्रयत्नों से सदियों से बँटे हुए जर्मनी का एकीकरण हो गया। वास्तव में बिस्मार्क ऐसा व्यक्तित्व था जिसने इस महान् कार्य में सफलता प्राप्त कर अपने नाम को जर्मनी के महान् देशभक्तों के रूप में अमर बनाया। हर्नशा के अनुसार, ''जो कार्य वाद-विवाद द्वारा नहीं हो सकता था उसे बिस्मार्क ने अपने 'रक्त एवं लौह की नीति' से सम्पादित किया।'' नि:सन्देह जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क की कुशल कूटनीति का ही परिणाम था।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. इटली के एकीकरण के प्रारम्भिक प्रयासों का वर्णन कीजिए।
Describe the early efforts to unify Italy.

उत्तर

इटली के एकीकरण के प्रारम्भिक प्रयास
(Early Efforts to Unity Italy)

विभिन्न बाधाओं के बावजूद भी इटलीवासियों ने राष्ट्रीयता की भावना से मुँह नहीं मोड़ा। 1815 से 1850 ई० के बीच इटली के एकीकरण के लिए बराबर प्रयास होते रहे। यद्यपि ये प्रयास सफल नहीं हुए, लेकिन इनसे अवश्य ही इटली के एकीकरण का आधार बन गया।

आन्दोलन का आरम्भ—इटली में सर्वत्र स्वेच्छाचारी राजाओं के शासन स्थापित हो गए थे जिससे इटलीवासी काफी दु:खी थे। अत: अपने देश से विदेशी प्रभाव को समाप्त करने के लिए 1815 ई० के बाद इटली में बराबर आन्दोलन होते रहे।

कार्बोनरी संगठन (Carbonari Organization)—इटली के निवासियों में नेपोलियन के सुधारों से बहुत अधिक जागृति आ गई थी। इटली में प्रतिक्रियावादी राजसत्ता स्थापित हो जाने से यह जागृति और अधिक बढ़ गई। इटली के राष्ट्रवादियों द्वारा स्थान-स्थान पर गुप्त सन्धियाँ स्थापित की गईं, इन समितियों में **कार्बोनरी समितियाँ** सबसे प्रमुख थीं। इस गुप्त राजनीतिक संस्था के दो प्रमुख उद्देश्य थे—1. विदेशियों को इटली से बाहर निकालना, 2. वैधानिक स्वतन्त्रता की स्थापना करना। कार्बोनरी दल में लगभग सभी वर्गों के लोग थे। 1831 ई० तक इस समिति के नेतृत्व में इटली का स्वतन्त्रता संग्राम चलता रहा। सेण्ट हेलेना द्वीप में बन्दी जीवन व्यतीत करते हुए नेपोलियन ने कहा था, ''इटली एक राष्ट्र है और भविष्य में वह एक राष्ट्र रहेगा तथा उसकी राजधानी रोम होगी।'' अन्त में नेपोलियन की यह भविष्यवाणी सत्य साबित हुई।

1820-21 ई० का विद्रोह—1820 ई० में स्पेन में क्रान्ति हुई। इसका प्रभाव इटली पर भी पड़ा। सर्वप्रथम 1820 ई० में नेपल्स में विद्रोह हुआ, लेकिन ऑस्ट्रिया ने इस विद्रोह को दबा दिया। नेपिल्स का अनुसरण करके ही लोम्बार्डी पीडमाण्ट में भी विद्रोह हो

गए। पीडमाण्ट के विद्रोह में भी कार्बोनरी संस्था का हाथ था। उसका उद्देश्य था, "ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध तथा पीडमाण्ट में संविधान की स्थापना।" पीडमाण्ट के राजा विक्टर इमानुएल ने अपने प्रतिक्रियावादी भाई चार्ल्स फेलिक्स के लिए गद्दी को छोड़ दी। जनता इसे नहीं चाहती थी वह इसके छोटे भाई एल्बर्ट को चाहती थी। इस पारस्परिक संघर्ष का आस्ट्रिया ने फायदा उठाया। नेपिल्स के विद्रोह को दबाने के पश्चात् लौटती हुई ऑस्ट्रिया की सेना ने पीडमाण्ट के विद्रोह को भी दबा दिया। इस प्रकार 1820 ई० का विद्रोह असफल रहा। जनता में इससे निराशा हो गई।

मैजिनी का उदय—मैजिनी एक विख्यात लेखक था। 1850 ई० में जेनेवा के एक प्रसिद्ध डॉक्टर के घर में इसका जन्म हुआ था। फ्रांसीसी क्रान्ति की अनेक बातें उसने अपने पिता से रोचक शब्दों में सुनी थीं, अत: परिवार से ही बालक मैजिनी के संस्कारों ने देश की दयनीय दशा का चित्रण तथा देश-सेवा के भावों को अंकुरित कर दिया। विद्यार्थी जीवन से ही वह देश की समस्याओं पर विचार करता रहता था। अपनी मनोरंजक, किन्तु अपूर्व आत्मकथा में एक स्थान पर उसने लिखा है, "मेरे चारों ओर विद्यार्थियों के जीवन का कोलाहल एवं शोरगुल था, किन्तु उनके मध्य भी मैं सदैव गम्भीर और आत्मलीन दिखाई देता और ऐसा लगता कि मैं सहसा बूढ़ा हो गया हूँ। बालकों की भाँति मैंने संकल्प किया था कि मैं सदैव काले वस्त्र पहनूँगा क्योंकि मुझे ऐसा लगता था कि मैं अपने देश की दुर्दशा पर विलाप कर रहा हूँ।"

जोजेफ मैजिनी का उद्देश्य—मैजिनी का उद्देश्य आल्पस पर्वत श्रेणी से लेकर दक्षिण के समुद्र-पर्यन्त एक विशाल तथा सुसंगठित इटालियन राष्ट्र का निर्माण करना था। मैजिनी ने 1830 ई० की क्रान्ति में कार्बोनरी संस्था के सदस्य के रूप में भाग लिया तथा क्रान्ति का दमन हो जाने पर उसे बन्दी बनाकर सेवोना (Savona) के दुर्ग में भेज दिया गया और बाद में इटली से निष्कासित कर दिया गया, लेकिन वह सेवोना दुर्ग में रहते हुए भी गुप्त रूप से पत्रों द्वारा अपने क्रान्तिकारी विचारों को व्यक्त करता रहा।

तरुण इटली—यद्यपि मैजिनी कार्बोनरी का सदस्य था, लेकिन वह उससे सन्तुष्ट नहीं था। वह कार्बोनरी की कार्यप्रणाली को अपर्याप्त एवं असन्तोषजनक समझने लगा था। कार्बोनरी के विषय में वह यह कहा करता था, "उनके पास कोई कार्यक्रम, धर्म तथा ऊँचे आदर्श नहीं हैं।" 1831 ई० में जेल से छूटने के बाद मैजिनी को इटली से निष्कासित कर दिया गया। अत: 1831 ई० में मार्साई में निर्वासित जीवन व्यतीत करते हुए उसने 'यंग इटली' नामक संस्था का निर्माण किया। इस संस्था ने नव इटली के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भाग लिया। वैसे तो यह गुप्त संस्था थी, परन्तु उसके सिद्धान्त में षड्यन्त्रकारिता को प्रमुखता नहीं दी गई थी।

उद्देश्य—इस संस्था का उद्देश्य स्पष्ट एवं निश्चित था कि ऑस्ट्रिया के प्रभाव को देश से समाप्त किया जाए। इस शर्त की पूर्णता पर ही सारी सफलता निर्भर थी। मैजिनी एवं उसके अनुयायियों का विश्वास था कि युद्ध अनिवार्य है, मैजिनी का यह भी कहना था कि "इटलीवासियों को विदेशी सरकारों की सहायता और राजनय का भरोसा नहीं करना चाहिए बल्कि मात्र अपनी शक्ति पर निर्भर रहना चाहिए। जब दो करोड़ जनसंख्या वाला राष्ट्र अपने अधिकारों के लिए लड़ने को खड़ा हो जाएगा तो ऑस्ट्रिया उसके सामने टिक न सकेगा।"

मैजिनी का कथन था कि इटली का उद्धार नवयुवकों द्वारा होगा। 40 वर्ष से कम उम्र के लोग ही इस संस्था के सदस्य हो सकते थे क्योंकि उसका ध्यान मात्र नवयुवकों पर था। उसका कहना था कि "विद्रोही जनता का नेतृत्व जनता के हाथ में होना चाहिए। तुम इन तरुण हृदयों में छिपी हुई शक्ति का रहस्य नहीं जानते और न तुम्हें यही मालूम है कि युवकों की आवाज का जनता पर जादू सा असर होता है, इन युवकों में तुम्हें इस धर्म के अनेक सन्देशवाहक मिल जाएँगे।"

मैजिनी ने नवयुवकों को शिक्षा दी कि मजदूरों की भाँति साधारण भोजन करो, पर्वतों पर चढ़ो तथा कारखानों में जाकर उपेक्षित मजदूरों से मिलो। देशभक्तों की असफलता से वह कभी निराश नहीं होता था। उसका मानना था कि "शहीदों के रक्त से सिंचित होकर ही विचार रूपी पौधे बढ़ते और पनपते हैं।" समस्त इटली में उसने एकता की भावना उत्पन्न की, उसका नारा भी यही था।

इससे पहले कभी कोई ऐसा दल नहीं हुआ जिसका नेता मैजिनी से अधिक निर्भीक, चरित्रवान, कल्पनाशील एवं प्रतिभावान रहा हो और जिसकी वाणी में इतना आश्चर्यजनक प्रभाव और जिसके हृदय में ऐसा ज्वलन्त उत्साह रहा हो। अगणित लोगों ने उत्साह से मैजिनी का साथ दिया। 1833 ई० तक यंग इटली के सदस्यों की संख्या 60,000 तक पहुँच गई।

मैजिनी गणतन्त्र का पक्षपाती था। वह राजाओं की सत्ता का घोर विरोधी था। छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर वह एक शक्तिशाली विशाल इटालियन संघ की स्थापना करना चाहता था। यद्यपि इटली का निर्माण मैजिनी की इच्छानुसार नहीं हुआ, लेकिन सच्चे अर्थों में वह इटली का निर्माता था। अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण उसे विदेशों में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा था। उसके पास साधन बहुत न्यून थे और सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि अपनी जनता से उसका निकट का सम्पर्क नहीं था, लेकिन बाहर रहकर भी अपने क्रान्तिकारी एवं ओजस्वी साहित्य द्वारा अपने देश को बराबर जाग्रत करता रहा। उसके विचारों के प्रभावस्वरूप ही इटलीवासियों में देशभक्ति का उदय एवं उत्थान हुआ, इससे पहले का अस्तित्व केवल लोगों की कल्पना में ही था। हैजन ने उसका मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि "मैजिनी की समता का अन्य कोई निर्भीक नैतिक आचरण वाला विचारशील, मृदुभाषी और उत्साही नेता नहीं देखा गया।"

1830 ई० की फ्रांस क्रान्ति और इटली—1830 ई० में फ्रांस में क्रान्ति हो गई। इसकी आग एकदम इटली में फैल गई। इसके प्रभाव के अन्तर्गत पर्मा, मोडेना एवं पोप के राज्यों में भी विद्रोह हो गए। इटली के अनेक राज्यों से शासकों को अपने प्राण बचाकर भागना पड़ा, लेकिन मैटरनिख ने इस विद्रोह का क्रूरतापूर्वक दमन किया। ऑस्ट्रिया की फौजों के हस्तक्षेप द्वारा सभी राज्यों में पुन: पुराने राजाओं को उनमें सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर दिया गया। इस क्रान्ति में मैजिनी ने भी महत्त्वपूर्ण भाग लिया था जिसके कारण उसको 6 माह की कैद तथा विदेशों में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि मर्साई नगर में निर्वासित जीवन व्यतीत करते समय उसने 'Association of Young Italy' का निर्माण किया था जिसका प्रमुख नारा था 'इटली इटली वालों के लिए है।' (Italy for Italians')।

1830 ई० से पीडमाण्ट में **'लिबरल पार्टी' द अजेग्लिओ** (D. Azeglio) के नेतृत्व में काम कर रही थी। यह देश में एकतन्त्र के स्थान पर गणतन्त्र स्थापित करना चाहती थी तथा संघ शासन की स्थापना करना चाहती थी। इसी समय पीडमाण्ट के प्रतिक्रियावादी राजा चार्ल्स फेलिक्स की मृत्यु हो गई तथा उसका छोटा भाई एल्बर्ट राजा बना जो उदार था। वह पहले कार्बोनरी संस्था का सदस्य रह चुका था, लेकिन उसने मैजिनी को मार्साई नगर से बाहर निकलते ही गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया। इससे एल्बर्ट का विरोध बहुत बढ़ गया। उसकी हत्या के प्रयत्न किए जाने लगे। इससे मैजिनी बहुत बदनाम हो गया और इंग्लैण्ड भाग गया।

एक दल राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण कैप्पिलिकों का था जो **निओग्वेल्फ** (Neogvelph) कहलाता था। इसका नेता विन्सेन्जो गिओवर्ट था। इसने अपने विचार **'प्राइमेटो'** नामक अपनी पुस्तक में प्रकट किए थे। गिओवर्ट राष्ट्रीयता, उदारवाद तथा परम्परागत धर्म को शामिल करके समस्त इटली को पोप की अध्यक्षता में एक संघ बनाना चाहता था। 1846 ई० में ग्रेगरी सोलहवें की मृत्यु हो जाने पर पोप पायस नवम् पोप बना, यह उदार था। इसने अनेक राजनीतिक बन्दियों को मुक्त कर दिया तथा जनता की सुधार की माँगों को स्वीकार कर लिया, परन्तु पोप पायस का उदारवाद अधिक दिनों तक नहीं चला, 1849 ई० में यह लुप्त हो गया।

1848 ई० की फ्रांस क्रान्ति और इटली में विद्रोह—1831 से 1848 ई० के पूर्व तक इटली में सामान्यत: शान्ति रही, लेकिन इस काल में इटली के देशभक्त अपनी क्रान्तिकारी तैयारियाँ करते रहे और अवसर की तलाश में रहे। 1848 की फ्रांसीसी क्रान्ति का समाचार पहुँचते ही इटली में भी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का युद्ध आरम्भ हो गया। सर्वप्रथम ऑस्ट्रिया साम्राज्य की राजधानी विएना में विद्रोह हो गया और प्रतिक्रियावादी मैटरनिख का पतन हो गया। वास्तव में मैटरनिख का पतन एक युगान्तरकारी घटना थी। इसके पश्चात् अन्य राज्यों में भी विद्रोह की आग भड़क उठी। सर्वप्रथम लोम्बार्डी की राजधानी मिलान में विद्रोह हुआ। पाँच दिन के घमासान युद्ध के पश्चात् भी विद्रोह दबाया न जा सका। सिसली, नेपिल्स तथा टस्कनी आदि राज्यों में भी विद्रोह भड़क उठे। ऑस्ट्रिया की सेना को हर स्थान पर पराजय का मुँह देखना पड़ा, इसी समय पीडमाण्ट के राजा चार्ल्स एल्बर्ट ने भी घोषणा की, "सभी का केवल एक ही कर्त्तव्य है कि ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ दें।" 23 मार्च, 1848 ई० को चार्ल्स एल्बर्ट ने ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। लगभग सारा इटली उसके झण्डे के नीचे आ गया। इटली के समस्त राज्यों की जनता में जोश उमड़ पड़ा। राष्ट्रीय स्तर पर इटली के इतिहास का पहला युद्ध था। ऑस्ट्रिया की सेनाएँ स्थान-स्थान पर पराजित हो रही थीं, लेकिन इटली की जनता प्रारम्भिक विजयों का फायदा न उठा सकी क्योंकि धीरे-धीरे इटली के राज्यों की आपसी अस्थायी एकता समाप्त हो गई। सर्वप्रथम पोप ने युद्ध से हाथ खींच लिया, इसके बाद नेपल्स के राजा ने भी पोप का अनुसरण किया। टस्कनी भी सहायता देने से मुकर गया। अब पीडमाण्ट का राजा एल्बर्ट अकेला रह गया। अन्त में विवश होकर एल्बर्ट ने विगेवैंनो की सन्धि कर ली तथा लोम्बार्डी और वेनेशिया को खाली कर दिया। इस प्रकार 1848 ई० का आन्दोलन सफल न हो सका। ऑस्ट्रिया की प्रधानता पुन: स्थापित हो गई। केवल पीडमाण्ट को छोड़कर बाकी सब स्थानों पर निरंकुश शासन फिर से स्थापित हो गया। हैज ने इस सन्दर्भ में कहा, "मध्य यूरोप के सभी देशों में इटली ही एक ऐसा देश था जहाँ उदारवाद अत्यधिक उग्र व प्रभावी था, और इटली ही सर्वप्रथम 1848 ई० की अपनी पराजय का प्रतिशोध लेकर अपना राष्ट्रीय एकीकरण कर सका।"

रोम में क्रान्ति और गणतन्त्र की स्थापना—इटली का स्वतन्त्रता संग्राम समाप्त हो जाने पर निरंकुश शासकों ने इटली के देशभक्तों का दमन करना प्रारम्भ कर दिया। इन्हीं दिनों मैजिनी इटली वापस लौट आया था। उसी के नेतृत्व में पोप की राजधानी रोम में विद्रोह हो गया। पोप रोम छोड़कर भाग गया तथा उसने नेपिल्स के राजा फर्डीनेण्ड के पास शरण ली। अत: 1849 ई० में रोम में गणतन्त्र की स्थापना कर दी गई। गणतन्त्र की इस केन्द्रीय कार्यकारिणी में तीन व्यक्ति थे। मैजिनी भी इनमें से एक था। फ्लोरेन्स और टस्कनी में भी इसी तरह के गणराज्य स्थापित हो गए। एल्बर्ट इस गणतन्त्रात्मक प्रवृत्ति के प्रसार से भयभीत हो गया उसने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। ऑस्ट्रिया ने नोवारा के युद्ध में इसे बुरी तरह पराजित कर दिया। अत: निरन्तर असफलता से दु:खी होकर वह अपने पुत्र इमेनुएल के पक्ष में सिंहासन छोड़कर स्वयं देश से निकल गया।

इस समय तक क्रान्ति समाप्तप्राय हो चुकी थी, लेकिन इसी समय फ्रांस के राष्ट्रपति नेपालियन तृतीय ने पोप का पक्ष लेते हुए कैथोलिक दल के आग्रह पर पोप की सहायता हेतु अपनी सेनाएँ रोम भेज दीं। सेना ने रोम में प्रवेश करके पोप को पुन: सिंहासन पर बैठा दिया। मैजिनी इंग्लैण्ड भाग गया।

अत: एक बार पुन: ऑस्ट्रिया ने टस्कनी, मोडेना, पर्मा आदि के शासकों को पुन: उनके सिंहासनों पर बैठा दिया। रोम तथा पीडमाण्ट को छोड़कर समस्त इटली पर पुन: ऑस्ट्रिया का प्रभाव स्थापित हो गया। वह इटली के स्वतन्त्रता संग्राम का पहला चरण था जिसमें राष्ट्रीय आन्दोलन के सारे प्रयत्न विफल रहे। ऑस्ट्रिया द्वारा इटली में किए गए अत्याचारों से सारा यूरोप ऑस्ट्रिया का विरोधी हो गया।

प्र.2. इटली के एकीकरण में कैवूर की नीतियों के योगदान का वर्णन कीजिए।

Describe the contribution of Cavour's policies in the unification of Italy.

उत्तर

कैवूर की गृह नीति
(Domestic Policy of Cavour)

कैवूर इटली की आवश्यकताओं को भली प्रकार अनुभव करता था। अपनी योजनानुसार उसने अपनी गृह नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किए—

1. **आर्थिक क्षेत्र में कार्य**—पीडमाण्ट की उन्नति के लिए व्यापार एवं वाणिज्य की ओर विशेष ध्यान दिया। व्यापार के क्षेत्र में वह स्वतन्त्र व्यापार का समर्थक था। उसने पड़ोसी राज्यों के साथ व्यापारिक सन्धियाँ कीं। कृषि की उन्नति के लिए भी उसने अनेक कार्य किए। कृषकों को आर्थिक सहायता प्रदान की तथा उनके लिए वैज्ञानिक परामर्श की व्यवस्था की। अनेक कारखाने खोले तथा यातायात की सुविधाओं के लिए रेलवे लाइन बना दी गई। सड़कों तथा नहरों का भी विस्तार किया गया। देश के बजट में भी सुधार किए गए, कर बढ़ा दिए गए ताकि अधिक आमदनी से सेना का संगठन अच्छा हो सके। बैंकों की स्थापना की गई, सहकारी समितियाँ खोली गईं तथा कृषि की उन्नति हेतु ऋण देने का भी प्रबन्ध किया गया, दलदलों एवं उजड़े प्रदेशों को भी खेती योग्य बनाया गया। चर्च की बहुत-सी भूमि छीनकर उसका सार्वजनिक उपयोग किया गया।
2. **सेना में सुधार**—कैवूर ने सार्डीनिया-पीडमाण्ट के सैनिक संगठन को ऊँची प्राथमिकता दी, क्योंकि उसका मानना था कि बिना युद्ध हुए इटली का एकीकरण नहीं हो सकता है। अत: उसने जनरल लामारमोरा के नेतृत्व में सेना का पुनर्गठन किया। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि बजट में से एक भारी धनराशि सेना के संगठन से लिए निर्धारित की गई थी, जिसके फलस्वरूप राज्य की 90 हजार की एक सुसंगठित एवं सुसज्जित सेना तैयार की गई जबकि राज्य की कुल जनसंख्या 50 लाख के लगभग ही थी। इन सबके अतिरिक्त उसने एक जहाजी बेड़े का भी निर्माण कराया तथा राज्य में भिन्न-भिन्न स्थानों में अनेक स्थानों में अनेक दुर्गों का भी निर्माण कराया।
3. **धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन**—कैवूर राजनीतिक क्षेत्र में चर्च के हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करता था। कैथोलिक पादरी इटली के एकीकरण के विरोधी थे, क्योंकि उन्हें भय था कि इटली के एकीकरण से पोप का राज्य भी समाप्त हो जाएगा। अत: कैवूर स्वयं भी इन्हें इटली की एकता का शत्रु मानता था। उसने चर्च के अनेक विशेषाधिकार छीन लिए तथा कई अवांछित मठ तोड़ दिए गए। कैवूर ने धर्म को राज्याधारिता बनाया। इसके लिए उसने सार्डीनिया से अनेक जैसूइट (Jesuit) पादरियों को निष्कासित कर अनेक पदों पर अधिकार कर लिया।
4. **राजनीतिक सुधार**—कैवूर ने सार्डीनिया-पीडमाण्ट को पूर्णतया संवैधानिक राज्य बनाने का प्रयत्न किया। उसने प्रत्येक काम संसद के माध्यम से कराकर उसकी शक्ति बढ़ाई। उसने मताधिकार को व्यापक बनाया। भाषण तथा लेख को भी स्वतन्त्रता प्रदान की। प्रेस को प्रोत्साहित किया गया जिससे वह स्वतन्त्रतापूर्वक विभिन्न विचारों को व्यक्त कर सके।

उदारवादी आदर्श से प्रभावित होकर उसने अपने राज्य की समृद्धि के लिए प्रयास किया। हैज ने लिखा है, "प्रधानमन्त्री के रूप में कैवूर ने अंग्रेजी उदारवादी आदर्श के अनुरूप अपने राज्य की भौतिक समृद्धि में वृद्धि की।"

इस प्रकार की गृह नीति के फलस्वरूप ही सार्डीनिया-पीडमाण्ट का छोटा राज्य इटली का भाग्य-निर्माता बन गया। हर दृष्टि से उसने एक आदर्श राज्य बनाने की कोशिश की जिससे सम्पूर्ण इटली सार्डीनिया-पीडमाण्ट की ओर आकृष्ट होने लगा।

TOUCH 'n PASS

कैवूर की विदेश नीति (Foreign Policy of Cavour)

कैवूर ने इटली को एकीकृत करने के लिए प्रभावशाली विदेश नीति अपनायी। वह अब तक इस तथ्य को भली-भाँति समझ चुका था कि इटली से ऑस्ट्रिया को किसी विदेशी सत्ता की सहायता के बिना नहीं निकाला जा सकता है। अत: कैवूर को एक मित्र की तलाश थी। उसने देखा कि क्षेत्र बहुत सीमित है। इंग्लैण्ड अथवा फ्रांस में से ही कोई एक इटली का मित्र बन सकता था। इंग्लैण्ड स्वयं को यूरोपीय उलझनों से दूर रखना चाहता था तथा उसके पास सेना भी नहीं थी। जबकि फ्रांस की सेना यूरोप की सर्वश्रेष्ठ सेनाओं में से एक थी और उसका शासक नेपोलियन भी साहसिक तथा महत्त्वाकांक्षी था, इसीलिए कैवूर कहा भी करता था, "हम चाहें या न चाहें हमारा भाग्य फ्रांस पर निर्भर है।" अत: अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कैवूर ने विदेश नीति के क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य किए—

क्रीमिया युद्ध में हस्तक्षेप—यूरोपीय राज्यों की सहानुभूति एवं सहयोग प्राप्त करने का पहला अवसर उसे 1854-56 के क्रीमिया युद्ध (Crimean War) में मिला। वह युद्ध लैटिन पादरियों और यूनानी पादरियों के बीच झगड़े के कारण उत्पन्न हुआ था। इस युद्ध में फ्रांस और इंग्लैण्ड ने रूस के विरुद्ध टर्की का साथ दिया। कैवूर यूरोप के राजनीतिक रंगमंच पर इंग्लैण्ड और फ्रांस के मित्र के रूप में आना चाहता था जिससे ऑस्ट्रिया के विरुद्ध व इन दोनों राष्ट्रों की नहीं तो कम-से-कम एक राष्ट्र की सहायता प्राप्त कर सके। अत: अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कैवूर ने बिना किसी शर्त के क्रीमिया के युद्ध में इंग्लैण्ड और फ्रांस का साथ दिया। इस अवसर पर उसने 17,000 सैनिकों को क्रीमिया भेजा। इस अवसर पर उसने अपने सेनापति ला मारमोरा को लिखा कि देश का भविष्य आपके थैलों में है। वास्तव में, उसका यह कथन सत्य था। क्रीमिया युद्ध ने इटली का भाग्य निर्माण किया। कैवूर की सेना ने इस युद्ध में बड़ी वीरता का प्रदर्शन किया। यह युद्ध लगभग दो वर्ष तक चला अन्त में रूस की पराजय हुई। कैवूर के सैनिकों की वीरता से फ्रांस और इंग्लैण्ड बड़े प्रभावित हुए। अत: दोनों कैवूर के मित्र बन गए। डेविड थामसन के शब्दों में, "कैवूर ने क्रीमिया युद्ध में ब्रिटेन व फ्रांस के मित्र के रूप में भाग लेकर 1856 ई० में पेरिस की सन्धि के निर्णय में भाग लेने का विश्वास प्राप्त कर लिया।" केटलबी ने भी कैवूर द्वारा इस यद्ध में भाग लिए जाने के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, "क्रीमिया की मिट्टी से इटली और जर्मनी दोनों का निरूपण हुआ।"

पेरिस सम्मेलन में आमन्त्रित—रूस ने जब आत्मसमर्पण कर दिया तो दोनों पक्षों में 1856 ई० में पेरिस की सन्धि हुई। आस्ट्रिया के लाख विरोध करने पर भी सार्डीनिया को सम्मेलन में आमन्त्रित किया गया। अत: सार्डीनिया की ओर से कैवूर ने भाग लिया। उसने वहाँ इटली के प्रश्न को उठाया। सम्मेलन में ब्रिटिश विदेश-मन्त्री ने कैवूर के भाषण का जोरदार शब्दों में समर्थन किया तथा इटली में पोप राज्य की आलोचना की। इस सम्मेलन से कैवूर को अनेक लाभ हुए—

1. कैवूर की गणना यूरोप के प्रमुख कूटनीतिज्ञों में की जाने लगी।
2. सार्डीनिया-पीडमाण्ट के हाथ में इटली के स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व आ गया।
3. कैवूर के नेतृत्व वाली राजतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था अब इटली में अधिक लोकप्रिय हो गई।
4. ऑस्ट्रिया इससे काफी बदनाम हो गया तथा इटली के राष्ट्रीय हितों के लिए उसका इटली में आधिपत्य हानिकारक समझा जाने लगा।
5. इटली का प्रश्न अब स्थानीय न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बन गया। अपनी सफलता पर कैवूर ने घोषित किया कि इटली का प्रश्न भविष्य में एक यूरोपीय प्रश्न होने वाला है।
6. इस सम्मेलन से कैवूर को सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि उसे यूरोप के दो बड़े देशों—फ्रांस तथा इंग्लैण्ड की सहानुभूति प्राप्त हो गई, जो भविष्य में इटली के स्वतन्त्रता संग्राम में लाभकारी प्रमाणित हुई।

नेपोलियन तृतीय से सन्धि (प्लाम्बियर्स समझौता, 1858 ई०)

यद्यपि इंग्लैण्ड की सहानुभूति इटली की ओर अवश्य थी, परन्तु वह इटली को सक्रिय सहायता देने को तैयार नहीं था। वह विएना कांग्रेस के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहता था। अत: कैवूर ने फ्रांस के राजा नेपोलियन तृतीय को अपनी ओर मिलाने का प्रयास शुरू कर दिया। नेपोलियन की इटली के प्रति सहानुभूति के अनेक कारण थे जिनके कारण फ्रांस इटली की मदद करना चाहता था। नेपोलियन स्वभावत: राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रति सहानुभूति रखता था। यह कार्बोनरी संस्था के सदस्य के रूप में 1831 ई० में इटली के स्वतन्त्रता संग्राम में भी भाग ले चुका था। उसके चाचा नेपोलियन बोनापार्ट ने भी इटली में नयी व्यवस्था स्थापित की थी। अत: नेपोलियन तृतीय विएना कांग्रेस के निर्णयों को फ्रांस के लिए अपमानजनक समझता था तथा इन निर्णयों को वह इटली में नवीन व्यवस्था स्थापित करके तोड़ सकता था। इसके अतिरिक्त, नेपोलियन तृतीय को यह भी आशा थी की सम्भवत: इटली को सहायता देने के बदले में फ्रांस को कुछ प्रदेश मिल जाएँगे।

इन सब कारणों से 21 जुलाई, 1858 ई० को नेपोलियन के आक्रमण पर कैवूर के साथ फ्रांस के प्लाम्बियर्स नामक स्थान पर एक गुप्त मन्त्रणा हुई। यह वार्ता इतनी गुप्त हुई की नेपोलियन के मन्त्रियों को भी पता न चला। इस गुप्त वार्ता में निम्नलिखित बातें तय हुईं—

1. यदि ऑस्ट्रिया और सार्डीनिया-पीडमाण्ट के बीच युद्ध छिड़ा तो फ्रांस सार्डीनिया-पीडमाण्ट को सैनिक सहायता देगा।
2. लोम्बार्डी-वेनेशिया से ऑस्ट्रिया को निकालकर ये प्रदेश सार्डीनिया-पीडमाण्ट को दिए जाएँगे।
3. पर्मा, मोडेना और टस्कनी से भी विदेशी शासन समाप्त करके इन राज्यों को सार्डीनिया-पीडमाण्ट को दे दिया जाएगा तथा पोप राज्य के रोमैग्ना तथा लीगेशन्स क्षेत्र भी सार्डीनिया-पीडमाण्ट के दे दिए जाएँगे।
4. सैनिक सहायता के बदले में फ्रांस को सेवाय प्रदेश और यदि सम्भव हुआ तो नाइस प्रदेश दिए जाएँगे।
5. विक्टर इमानुएल की पुत्री का विवाह नेपोलियन तृतीय के चचेरे भाई जेरोम (Jerome) के साथ होगा।
6. वृहत्तर सार्डीनिया तथा पीडमाण्ट एवं इटली के अन्य राज्यों का एक संघ बनाया जाएगा और पोप इस संघ का अध्यक्ष होगा।

यद्यपि विक्टर एमानुएल को अपनी 16-वर्षीय पुत्री का विवाह 43-वर्षीय जेरोम के साथ करने में बड़ा कष्ट हुआ, लेकिन कैवूर के समझाने पर देश-हित हेतु उसने अपनी भावनाओं का दमन कर दिया।

पीडमाण्ट-ऑस्ट्रिया युद्ध (1859 ई०)—अब कैवूर ने पुन: कूटनीतिक कदम उठाने प्रारम्भ किए। प्लाम्बियर्स के समझौते के अनुसार फ्रांस कैवूर की मदद तभी करता जबकि युद्ध का आरम्भ ऑस्ट्रिया करता। अत: अब कैवूर एक ऐसे अवसर की खोज करने लगा कि ऑस्ट्रिया युद्ध करने के लिए विवश हो जाए। इसके लिए कैवूर ने एक नया तरीका अपनाया उसने अखबारों एवं भाषणों के माध्यम से ऑस्ट्रिया को काफी भड़काया। उसने ऑस्ट्रिया के माल पर चुँगी बढ़ा दी तथा ऑस्ट्रिया अधिकृत लोम्बार्डी और वेनेशिया के प्रान्तों में उपद्रव करवाने का भरसक प्रयास किया।

ब्रिटेन इस स्थिति से प्रसन्न नहीं था। वह फ्रांस के प्रभाव में वृद्धि नहीं चाहता था उसने आस्ट्रिया और सार्डीनिया-पीडमाण्ट के बीच एक समझौता कराने का प्रयास किया। नेपोलियन ने भी इंग्लैण्ड के सुझाव का समर्थन किया, लेकिन कैवूर तो युद्ध चाहता था, अत: 23 अप्रैल, 1859 ई० को ऑस्ट्रिया ने पीडमाण्ट को यह चेतावनी दी कि वह तीन दिन के अन्दर अपना नि:शस्त्रीकरण कर दे वरना ऑस्ट्रिया उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर देगा। कैवूर इस चेतावनी से बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा, "पासा पलट गया है और हम नया इतिहास बनाने जा रहे हैं।" डेविड थॉमसन के अनुसार, "कैवूर की कूटनीति का एकमात्र उद्देश्य यह था कि ऑस्ट्रिया को ठीक समय पर युद्ध की घोषणा करने के लिए प्रेरित किया जाए ताकि अन्य यूरोपीय शक्तियों के साथ स्वयं को युद्ध की चुनौती स्वीकार करनी पड़े।

अत: कैवूर को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त हुई। उसने ऑस्ट्रिया की चुनौती को ठुकरा दिया और अप्रैल, 1859 ई० में ऑस्ट्रिया ने पीडमाण्ट पर आक्रमण कर दिया। युद्ध ऑस्ट्रिया की ओर से आरम्भ हुआ था, अत: प्लाम्बियर्स समझौते के अनुसार नेपोलियन तृतीय भी अपनी सेना के साथ पीडमाण्ट की सहायता करने हेतु आ गया। युद्ध की सूचना पाते ही गैरीबाल्डी भी अपने स्वयंसेवकों के साथ स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिए आ गया। इसके अतिरिक्त, इटली के भिन्न-भिन्न प्रदेशों के भी बहुसंख्यक स्वयंसेवक पीडमाण्ट की सहायता हेतु आ गए। इन सेनाओं के बीच तीन प्रमुख यद्ध हुए—

1. **मौगेण्टा का युद्ध** (Battle of Mogenta)—4 जून, 1859 ई० को इटली एवं फ्रांसीसियों ने ऑस्ट्रिया को पराजित किया और मिलान पर अधिकार कर लिया।
2. **साल्फेरिनो का युद्ध** (Battle of Solfarino)—24 जून, 1859 ई० को साल्फरिनो के युद्ध में ऑस्ट्रिया को पराजय का मुँह देखना पड़ा। साल्फेरिनो की लड़ाई 19वीं शताब्दी की भीषणतम लड़ाइयों में गिनी जाती है। इस युद्ध में दोनों ओर से लगभग 40 हजार सैनिक हताहत हुए।
3. **सैनमार्टिनो का युद्ध** (Battle of Sanmartino)—इस युद्ध में पुन: ऑस्ट्रिया की पराजय हुई।

इन विजयों के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण लोम्बार्डी पर सार्डीनिया-पीडमाण्ट का राज्य स्थापित हो गया।

नेपोलियन का युद्ध से अलग होना—इन विजयों के फलस्वरूप लगभग समस्त इटली में सार्डीनिया-पीडमाण्ट का प्रभाव स्थापित हो गया। इटली के समस्त राज्यों की जनता सार्डीनिया-पीडमाण्ट के साथ हो जाना चाहती थी। अब ऐसा प्रतीत होने लगा कि सार्डीनिया-पीडमाण्ट के नेतृत्व में सम्पूर्ण इटली एकीकृत हो जाएगा, मगर नेपोलियन इससे भयभीत हो गया उसने इस बात को महसूस किया कि फ्रांस की दक्षिणी-पूर्वी सीमा पर एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना हो रही है जो फ्रांस के लिए खतरनाक साबित हो सकती है। इसके अतिरिक्त, अन्य अनेक कारण थे जिससे वह ऑस्ट्रिया की ओर आकृष्ट हुआ। सर्वप्रथम तो नेपोलियन को इन युद्धों के दौरान काफी हानि उठानी पड़ी, उसके काफी सैनिक मारे गए तथा धन भी काफी व्यय हुआ। युद्ध का भीषण रक्तपात देखकर भी नेपोलियन का हृदय द्रवित हो गया। रक्तपात देखकर उसने कहा भी था, "गरीब जनता, गरीब जनता, युद्ध कितनी भयंकर चीज है।"

इसके अतिरिक्त, फ्रांस का कैथोलिक वर्ग भी इटली-नीति का काफी विरोध कर रहा था, क्योंकि सार्डीनिया-पीडमाण्ट की विजय से उत्साहित होकर पोप के विरुद्ध विद्रोह होने लगे थे। फ्रांस के कैथोलिकों को भय था कि इससे पोप के राज्य को खतरा हो जाएगा। नेपोलियन को यह भी सूचना मिली कि प्रशा भी इटली में हस्तक्षेप करने के लिए सैनिक तैयार कर रहा है। अत: नेपोलियन ऑस्ट्रिया और प्रशा दोनों शक्तियों से एक साथ लड़ने को तैयार न था।

अत: इन सब कारणों से नेपोलियन ने कैवूर का साथ छोड़ दिया।

दूसरी ओर ऑस्ट्रिया भी युद्ध समाप्त करना चाहता था क्योंकि पिछले दो माह के युद्ध से ऑस्ट्रिया को इस बात का यकीन हो गया था कि उसकी सेना में कुशल संगठन एवं अनुभव की कमी है जिससे वह सार्डीनिया-पीडमाण्ट व फ्रांस की संयुक्त शक्ति का सामना नहीं कर सकता है। इसके अतिरिक्त, ऑस्ट्रिया के विरुद्ध हंगरी भी आन्दोलन कर रहा था, अत: ऑस्ट्रिया अपने घरेलू झगड़ों को निपटाने के लिए भी इस समय शान्ति चाहता था।

ऑस्ट्रिया और फ्रांस में विलाफ्रैंका की सन्धि—अत: उपर्युक्त सभी कारणों से 11 जुलाई, 1860 ई० को ऑस्ट्रिया और फ्रांस के बीच विलाफ्रैंका की सन्धि हुई। इस सन्धि की प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित थीं—

1. लोम्बार्डी सार्डीनिया-पीडमाण्ट को दे दिया जाए, लेकिन वेनेशिया पर ऑस्ट्रिया का ही अधिकार रहेगा।
2. ऑस्ट्रिया तथा सार्डीनिया-पीडमाण्ट के बीच हुए युद्धों के समय पर्मा, मोडेना तथा टस्कनी की जनता ने विद्रोह के द्वारा अपने शासकों को भगा दिया था, अत: विलाफ्रैंका की सन्धि के द्वारा यह तय हुआ कि टस्कनी, पर्मा और मोडेना के ड्यूकों को उनकी गद्दियाँ वापस दिला दी जाएँ।
3. पोप की अध्यक्षता में इटली के राज्यों का एक ढीला-ढाला संघ बना दिया जाए।

लिप्सन ने इस सन्धि के विषय में लिखा है, "इटली के लोगों ने अपनी विजय की खुशी का प्याला होठों से लगाया ही था कि वह गिरकर चूर-चूर हो गया।"

कैवूर का त्यागपत्र—विलाफ्रैंका की सन्धि से कैवूर काफी क्रोधित हुआ। उसने नेपोलियन पर विश्वासघात और वचन-भंग का आरोप लगाया। कैवूर का क्रोध इसलिए अधिक बढ़ा क्योंकि नेपोलियन ने ऑस्ट्रिया से सन्धि करने से पूर्व उसे किसी प्रकार की सूचना नहीं दी। अत: कैवूर इस सन्धि को मानने के लिए तैयार नहीं था। यह सन्धि वास्तव में जले पर नमक छिड़कने के समान थी। कैवूर ने इमानुएल पर जोर डाला कि वह विलाफ्रैंका की सन्धि को न मानकर ऑस्ट्रिया के विरुद्ध पुन: युद्ध छेड़ दे, लेकिन इमानुएल ने ऐसा न करके दूरदर्शिता का परिचय दिया। कैवूर सम्राट से सहमत नहीं हुआ और उसने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

मध्य इटली पर अधिकार (मध्य इटली के राज्यों द्वारा विलय का निर्णय)—ऑस्ट्रिया तथा सार्डीनिया-पीडमाण्ट युद्ध के दिनों में पर्मा, मोडेना तथा टस्कनी के लोगों ने अपने दो राजाओं को निकाल दिया था। रोमान्या (रोमन) की जनता ने भी पोप से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था। इन राज्यों ने सार्डीनिया-पीडमाण्ट के साथ मिलने की इच्छा प्रकट की। सार्डीनिया भी गुप्त रूप से विद्रोही नेताओं को मदद देता रहा, लेकिन स्पष्ट रूप से उसने इन राज्यों को अपने में मिलाने से इन्कार कर दिया क्योंकि सार्डीनिया-पीडमाण्ट को यह भय था कि इतने बड़े परिवर्तनों को देखकर विशेषकर पोप के खण्डित राज्य को देखकर नेपोलियन कहीं गलत कदम न उठा ले। अत: कई दिनों तक मध्य इटली की स्थिति बड़ी डावांडोल रही, लेकिन इसी बीच परिस्थितियों में कुछ परिवर्तन आया जिसका वर्णन निम्नवत् है—

1. **जून, 1859 ई० में इंग्लैण्ड में पामर्स्टन सरकार का आगमन**—जून, 1859 ई० में इंग्लैण्ड में पामर्स्टन की सरकार आयी। वह सरकार इटली के स्वतन्त्रता संग्राम के पक्ष में थी। पामर्स्टन ने घोषित किया, "इन रियासतों की जनता को भी अपने शासकों को बदलने का उतना ही अधिकार है जितना कि इंग्लैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम अथवा स्वीडन की जनता को है। इन ठिकानों के पीडमाण्ट में शामिल हो जाने से इटली को अपार लाभ होगा।"
2. **कैवूर को पुन: प्रधानमन्त्री बनाना तथा नेपोलियन से समझौता**—6 महीने अलग रहने के बाद जनवरी, 1860 ई० में कैवूर पुन: प्रधानमन्त्री पद पर आसीन हो गया। प्रधानमन्त्री पद सम्भालते ही उसने परिस्थिति अपने पक्ष में करनी प्रारम्भ कर दी तथा कूटनीतिक चाल चलते हुए नेपोलियन से सौदा किया। दोनों के बीच यह तय हुआ कि यदि मध्य इटली के राज्य सार्डीनिया-पीडमाण्ट को मिल जाएँगे तो फ्रांस को सेवाय तथा नाइस के प्रदेश दिए जाएँगे।
3. **विद्रोही राज्यों में जनमत गणना तथा सेवाय एवं नाइस प्रदेशों पर फ्रांस का अधिकार**—11-12 मार्च, 1860 ई० को पर्मा, मोडेना, टस्कनी तथा रोमैग्ना आदि राज्यों में जनमत गणना हुई। इस जनमत गणना में जनता ने भारी बहुमत से सार्डीनिया-पीडमाण्ट राज्य में मिलने की राय दी। परिणामस्वरूप ये सभी राज्य सार्डीनिया-पीडमाण्ट राज्य में मिला दिए गए। लोम्बार्डी पहले ही सार्डीनिया के कब्जे में आ चुका था। इस प्रकार सार्डीनिया-पीडमाण्ट का छोटा-सा राज्य एक

TOUCH 'n PASS

विशाल राज्य में बदल गया। अब उत्तरी और मध्य इटली एक हो गया और 2 अप्रैल, 1860 ई० को उन सब की संसद का ऐतिहासिक अधिवेशन ट्यूरिन में हुआ। जनमत गणना के प्रस्ताव का समर्थन करने के बदले फ्रांस को वायदे के अनुसार सेवाय तथा नाइस के प्रदेश दे दिए गए। सेवाय सम्राट विक्टर इमानुएल का पैतृक प्रदेश था। फ्रांस को देते हुए उसे बड़ा दु:ख हुआ। गैरीबाल्डी नाइस का निवासी था, अत: अपने जन्म-स्थान के बलिदान से गैरीबाल्डी बड़ा रुष्ट हुआ।

4. **दक्षिण इटली में विद्रोह**—उत्तरी एवं मध्य इटली तो एकीकृत होकर सार्डीनिया-पीडमाण्ट के अधीन आ गया था, लेकिन अभी दक्षिण के प्रदेश रोम, सिसली, नेपिल्स तथा वेनेशिया इससे बाहर थे। कैवूर इन प्रदेशों को भी कूटनीतिक चाल द्वारा इटली के अधीन लाना चाहता था, लेकिन दक्षिणी भाग को एकीकृत करने का श्रेय कैवूर को नहीं वरन् गैरीबाल्डी को जाता है।
5. **सिसली का विद्रोह**—सिसली की जनता ने अपने बूर्बों-नरेश के विरुद्ध 1860 ई० से ही विद्रोह प्रारम्भ कर दिए थे। यह शासक अत्यन्त निरंकुश एवं प्रतिक्रियावादी था। यहाँ विद्रोहियों का नेता क्रिस्पी था, उसने सहायता हेतु गैरीबाल्डी को आमन्त्रित किया। गैरीबाल्डी तो ऐसे साहसिक कार्यों के लिए सदैव ही तत्पर रहता था। अत: गैरीबाल्डी ने जेनोआ में स्वयंसेवकों की भर्ती करना आरम्भ कर दिया। इस समय कैवूर एक विकट परिस्थिति में फंस गया था। इस समय सिसली एवं सार्डीनिया के बीच युद्ध की स्थिति न थी, ऐसे में यदि कैवूर गैरीबाल्डी को सिसली राज्य पर आक्रमण करने की तैयारी करने देता तो उसका यह कार्य अमैत्रीपूर्ण समझा जाता और यदि गैरीबाल्डी को आक्रमण करने से रोकता तो स्वदेश प्रेमियों की भावनाओं को ठेस पहुँचती, ऐसे समय में उसने एक कूटनीतिक चाल चली। उसने यह घोषणा तो कर दी कि वह गैरीबाल्डी को सहायता नहीं देगा, लेकिन गुप्त रूप से वह उसे सैन्य संगठन हेतु काफी मदद देता रहा। स्वयं विक्टर इमानुएल ने अपने निजी कोष से 30 लाख फ्रैंक की सहायता दी। गैरीबाल्डी के लाल कुर्ती (Red Shirts) वाले 10,000 स्वयंसेवक थे। 11 मई, 1860 ई० को गैरीबाल्डी अपने लाल कुर्ती (Red Shirts) दल के सैनिकों के साथ सिसली द्वीप के पश्चिमी किनारे पर उतर गया। इस समय नेपिल्स के राजा के 24 हजार सैनिक सिसली में ही मौजूद थे तथा नेपिल्स में एक लाख से अधिक सैनिक थे। अनेक दिनों के घमासान युद्ध के बाद गैरीबाल्डी ने पूरे सिसली द्वीप पर अधिकार कर लिया और 5 अगस्त, 1860 ई० को विक्टर इमानुएल द्वितीय की अधीनता में अपने को सिसली का शासक घोषित किया।
6. **नेपिल्स पर अधिकार**—सिसली द्वीप पर अधिकार करने के बाद गैरीबाल्डी ने नेपल्स पर अधिकार करने का निश्चय किया। समुद्र पार कर 19अगस्त, 1860 ई० को गैरीबाल्डी ने नेपिल्स पर अधिकार कर लिया। वहाँ का सम्राट फ्रांसिस द्वितीय नेपिल्स छोड़कर भाग गया। हेजन ने इसे आधुनिक इतिहास की रोमांचकारी घटना कहा है।

प्र.3. जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क के योगदान का वर्णन कीजिए।
Describe the contribution of Bismarck in the unification of Germany.

उत्तर

बिस्मार्क
(Bismarck)

यूरोपीय राजनीति के रंगमंच पर प्रवेश करने वाला वह व्यक्ति सर्वाधिक अद्‌भुत व्यक्ति था। इसका जन्म 1815 ई० में ब्रैण्डेनबर्ग के एक जागीरदार के घर में हुआ था। उसकी माता एक उच्च अधिकारी की पुत्री थी। उसने पिता की शारीरिक शक्ति एवं माँ की बौद्धिक प्रखरता प्राप्त भी थी। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा बर्लिन की व्यायामशाला में हुई। तत्पश्चात् उसने गोर्तिजन एवं बर्लिन विश्वविद्यालय में शिक्षा पूर्ण कर प्रशा की सिविल सेवा में सर्विस कर ली लेकिन दो वर्ष पश्चात् उसने नौकरी छोड़ दी और वह पौमेरैनिया में अपने जागीर की देखरेख करने लगा। इससे उसके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी हो गई। इस बीच उसने विभिन्न भाषाओं, राजनीति, इतिहास और दर्शन आदि का स्वाध्याय किया।

राजनीति में प्रवेश—बिस्मार्क का राजनीतिक जीवन 1845 ई० से आरम्भ हुआ, वह इस वर्ष पौमेरैनिया की प्रान्तीय संसद (Diet) का सदस्य हो गया। इस संसद ने 1857 ई० में उसे अपने प्रतिनिधि के रूप में प्रशा की 'संयुक्त प्रशियन संसद' (United Prussian Deit) में भेजा। इस सभा में बिस्मार्क क्रान्ति तथा उदारवाद का कट्टर विरोधी रहा। वह 'विधान' को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा करता था। वह उसे 'कागज का टुकड़ा' कहा करता था। यद्यपि वह जर्मन एकता का प्रबल समर्थक था लेकिन 1848 ई० में जर्मनी के एकीकरण का उसने घोर विरोध किया क्योंकि उसका मानना था कि जर्मनी के एकीकरण का प्रश्न जनता द्वारा नहीं वरन् राजाओं द्वारा हल किया जाना चाहिए। वह जर्मनी का एकीकरण प्रशा के नेतृत्व में करना चाहता था। 1851 ई० में वह फ्रैंकफर्ट की संसद में प्रशा का सदस्य बनाकर भेजा गया। यह उसके जीवन की दशा परिवर्तित करने वाली घटना थी।

इस महासभा में वह 8 वर्ष तक प्रशा का प्रतिनिधित्व करता रहा। इस काल में उसने कूटनीति की अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ली। जर्मनी के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों तथा शासकों से उसे परिचय प्राप्त हुआ तथा जर्मन राजनीति के दाँवपेंचों की बड़ी अच्छी जानकारी प्राप्त हुई। इन आठ वर्षों में वह लगातार ऑस्ट्रिया को नीचा दिखाने का प्रयत्न करता रहा। अब वह इस अनुभव पर पहुँच चुका था कि जर्मन संघ में ऑस्ट्रिया के रहते हुए जर्मनी कभी एकीकृत नहीं हो सकता। ऑस्ट्रिया प्रशा का सहज शत्रु है अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए प्रशा को कार्यान्वित करने के लिए प्रशा को ऑस्ट्रिया से युद्ध करना ही होगा। ऑस्ट्रिया को गैर-जर्मन राज्य समझते हुए वह कहा करता था कि जर्मनी इतना संकीर्ण है कि उसमें प्रशा और ऑस्ट्रिया दोनों नहीं रह सकते।

राजा विलियम ऑस्ट्रिया को नाराज नहीं करना चाहता था, अत: 1859 ई० में उसने बिस्मार्क को फ्रैंकफर्ट संसद से वापस बुलाकर रूस में अपना राजदूत नियुक्त किया। यह नियुक्ति भी बिस्मार्क के भावी राजनीतिक जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध हुई। अपनी निपुणता से बिस्मार्क ने रूस के जार से व्यक्तिगत मैत्री स्थापित कर ली। क्रीमिया युद्ध के समय प्रशा में रूस के विरुद्ध युद्ध घोषित करने की माँग की गयी लेकिन बिस्मार्क के विरोध के कारण प्रशा तटस्थ रहा। इससे जार अलेक्जेण्डर बिस्मार्क का प्रबल समर्थक बन गया।

1859 से 1862 ई० तक वह रूस में राजदूत रहा। तत्पश्चात् 1862 ई० में उसे फ्रांस में राजदूत बनाकर भेजा गया। वहाँ उसने फ्रांसीसी नरेश नेपोलियन तृतीय के चरित्र का अध्ययन किया।

फ्रांस में वह कुछ ही माह रहा था कि प्रशा में एक संवैधानिक संकट उत्पन्न हो गया। अत: अपनी समस्या का समाधान करने के लिए सम्राट विलियम प्रथम ने तत्काल उसे फ्रांस से बुलाकर अपना प्रधानमन्त्री नियुक्त किया।

लक्ष्य प्राप्त करने हेतु बिस्मार्क का कार्यक्रम एवं तैयारी—बिस्मार्क प्रशा की सैन्य शक्ति के बल पर प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी को एकीकृत करना चाहता था। प्रधानमन्त्री पद संभालने के बाद उसका एकमात्र उद्देश्य यही था कि ऑस्ट्रिया से लोहा लिया जाए। अपने इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उसने प्रशा के सैन्य संगठन को पुनर्गठित करने का कार्य जारी रखा। उसने यह प्रतिज्ञा कर ली कि वह संसद के सामने कभी नहीं झुकेगा।

संसद से संघर्ष—1862 से 1866 ई० तक 4 वर्ष का उसका संसद से संघर्ष चलता रहा वह प्रतिवर्ष सैन्य संगठन हेतु संसद में बजट रखता था। किसी वर्ष निम्न सदन उसे अस्वीकार कर देता था तो उच्चतर सदन पारित कर देता। इस विरोध में बिस्मार्क संसद की उपेक्षा करते हुए आवश्यक धन हेतु जनता पर कर लगाता रहा और वसूल करता रहा। संसद मात्र मौखिक विरोध के और कुछ न कर सकी। हैजन के अनुसार, "प्रशा के इतिहास का यह काल तानाशाही का काल था। इसमें संसदीय शासन समाप्त हो गया था।" उसने संसद के विरोध को देखते हुए बजट सम्बन्धी समिति में साफ-साफ कहा, "जर्मनी प्रशा के उदारवाद की ओर नहीं देख रहा है बल्कि शक्ति की ओर देख रहा है। आज की समस्याएँ भाषणों एवं संसदीय मतों के द्वारा नहीं वरन् रक्त एवं लौह से हल होंगी।"

अत: बिस्मार्क ने यह स्पष्ट कर दिया कि जर्मनी के भविष्य का निर्णय संसद नहीं बल्कि सेना करेगी। संसद एवं बिस्मार्क के बीच संघर्ष छिड़ गया। अगले 4 वर्षों तक यह संसद से लड़ता रहा। इस कार्य से सम्राट विलियम से उसे पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ और अन्त में प्रशा की सैन्य शक्ति बढ़ाने में उसे पूर्ण सफलता मिली। प्रशा की सेना यूरोप भर में सर्वश्रेष्ठ हो गई। संसद देखती ही रह गई। बिस्मार्क को इस बात का पूरा यकीन था कि यदि विदेश नीति में उसे सफलता मिलेगी तो लोग इसकी निरंकुशता को भूल जाएँगे। बिस्मार्क का अनुमान बिल्कुल सही निकला क्योंकि जब कूटनीति एवं युद्ध रुचि में वह निरन्तर सफलताएँ अर्जित करने लगा तो सारा देश उसका अनुयायी बन गया।

बिस्मार्क की विदेश नीति एवं जर्मनी के एकीकरण में उसका योगदान
(Bismarck's Foreign Policy and his Contribution to the Unification of Germany)

वास्तव में बिस्मार्क ने **'रक्त एवं लौह की नीति'** (Policy of Blood and Iron) का अनुसरण करते हुए मात्र 8 वर्षों में (1862-70) जर्मनी का एकीकरण कर दिया जबकि 1815 से 1850 ई० के काल में समस्त संसदीय एवं संवैधानिक प्रयत्न असफल रहे। अपनी इस नयी नीति के अन्तर्गत बिस्मार्क ने निम्न कार्य किए—

श्लेसविग होलेस्टाइन समस्या (डेनमार्क युद्ध) Problem of Schleswig-Holestein (Denmark War)—डेनमार्क से युद्ध का प्रमुख कारण श्लेसविग होलेस्टाइन (Schleswig-Holestein) का प्रश्न था। इसी बहाने बिस्मार्क को ऑस्ट्रिया के साथ युद्ध करने का सुअवसर मिल गया जिसके लिए बिस्मार्क बहुत इच्छुक था।

TOUCH n PASS

श्लेसविग एवं होलेस्टाइन के प्रदेश जर्मनी एवं डेनमार्क के मध्य स्थित थे। होलेस्टाइन में जर्मन रहते थे तथा वह जर्मन संघ का सदस्य था, परन्तु श्लेसविग में जर्मन तथा डेन दोनों साथ रहते थे। ये दोनों ही प्रदेश 10वीं शताब्दी से डेनमार्क से सम्बद्ध थे। इन दोनों प्रदेशों का डेनमार्क से पृथक् सम्बन्ध था लेकिन 15वीं शताब्दी से इन दोनों डचियों (प्रदेशों) को एक समझा जाने लगा जिससे इनके पारस्परिक सम्बन्ध घनिष्ठ हो गए। 1760 ई० से डेनमार्क का राजा इनका ड्यूक उसी प्रकार बन गया जिस प्रकार हैनोवर का राजा जार्ज इंग्लैण्ड का राजा हो गया था और तभी से इन डचियों का इंग्लैण्ड के राजा से व्यक्तिगत सम्बन्ध था। डेनमार्क का राजा इनका शासक था, परन्तु ये डेनमार्क के भाग नहीं थे इनका अलग विधान था। 19वीं शताब्दी के आरम्भ से इन दोनों डचियों एवं डेनमार्क के सम्बन्धों में कटुता आने लगी क्योंकि श्लेसविग एवं होलेस्टाइन की जनता में भी राष्ट्रीयता की भावना जोर पकड़ रही थी। 1845 ई० से 1852 ई० के बीच यहाँ डेनमार्क के विरुद्ध काफी विद्रोह होते रहे। प्रशा इन विद्रोहों को समर्थन देता रहा। प्रशा इन दोनों डचियों की सहायता के लिए आगे भी आया, किन्तु अन्य यूरोपीय राष्ट्रों के विरोध के कारण वह पीछे हट गया। अन्त में 1852 ई० में लन्दन की सन्धि हो गई। इस सन्धि के द्वारा इन दोनों डचियों के डेनमार्क के साथ सम्बन्धों की पुष्टि कर दी गई। ग्लकबर्ग के प्रिंस क्रिश्चियन को आगामी राजा घोषित किया गया। वह डेनमार्क तथा दोनों डचीज का अधिकारी होगा तथा आगस्टनबर्ग के ड्यूक को धन देकर उसके अधिकार को समाप्त कर दिया जाएगा। ये निर्णय लन्दन सन्धि के थे।

1863 ई० में डेनमार्क के राजा फ्रेडरिक सप्तम की मृत्यु हो गई जिससे एक पेचीदा स्थिति पैदा हो गई। फ्रेडरिक डेनमार्क का राजा होने के साथ श्लेसविग एवं होलेस्टाइन की जर्मन डचियों का शासक भी था। अत: लन्दन सन्धि के अनुसार प्रिंस क्रिश्चियन नौवां गद्दी पर बैठा। उसने एक नए संविधान द्वारा श्लेसविग को अपने राष्ट्र का अभिन्न अंग घोषित किया। उसके इस कार्य से पुन: झगड़ा उठ खड़ा हुआ। जर्मनी की संघीय डायट ने डेनमार्क से माँग की कि वह अपने इस नए संविधान को रद्द कर दे, परन्तु बिस्मार्क ने संघीय संसद का साथ नहीं दिया। वह इस अवसर का लाभ उठाकर श्लेसविग तथा होलेस्टाइन पर स्वयं अधिकार करना चाहता था। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति भी उसी के पक्ष में थी।

बिस्मार्क की कूटनीति (ऑस्ट्रिया से सहयोग)—इस अवसर पर बिस्मार्क ने कूटनीतिज्ञता से काम लिया, उसने घोषणा भी की कि, "ऑस्ट्रिया से अच्छे या बुरे सम्बन्ध होने चाहिए हम अच्छे की इच्छा रखते हैं, किन्तु हमें खराब सम्बन्धों के लिए तैयार रहना चाहिए।" इस समय जर्मन डायट (संसद) आगस्टनबर्ग का समर्थन कर रही थी। अब बिस्मार्क को अपने मार्ग से डायट को हटाना था। बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया को समझाया कि श्लेसविग एवं होलेस्टाइन के प्रश्न को संघीय संसद के सम्मुख न रखा जाए क्योंकि इससे भविष्य में संघीय संसद बहुत शक्तिशाली हो जाएगी और जर्मनी में जनतन्त्रवादी तथा क्रान्तिकारी विचारों को प्रोत्साहन मिलेगा। ऑस्ट्रिया बिस्मार्क की बातों में आ गया उसने डायट को इस विवाद से बाहर निकाल दिया।

तत्पश्चात् बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया से कहा कि इस प्रश्न पर ऑस्ट्रिया तथा प्रशा को सम्मिलित कार्यवाही करनी चाहिए। ऑस्ट्रिया ने प्रशा की माँग को स्वीकार कर लिया। अत: प्रशा एवं आस्ट्रिया ने संयुक्त रूप से डेनमार्क को यह धमकी दी कि वह 48 घण्टे के भीतर उस संविधान को वापस ले ले जिसके द्वारा श्लेसविग को डेनमार्क का अभिन्न अंग बनाया गया था, पर डेनमार्क के लिए ऐसा करना सम्भव न था क्योंकि डेनमार्क की संसद भंग की जा चुकी थी और 48 घण्टे के भीतर नयी संसद चुनना मुश्किल था। वास्तव में, बिस्मार्क यह सब जानता था लेकिन यह उसकी एक चाल थी उसका उद्देश्य तो लड़ाई मोल लेना था और वह इस उद्देश्य में सफल हुआ। डेनमार्क के राजा द्वारा संविधान न हटाए जाने पर फरवरी, 1864 ई० में ऑस्ट्रिया तथा प्रशा ने डेनमार्क पर आक्रमण कर दिया। डेनमार्क को पराजय का मुँह देखना पड़ा और 30 अक्टूबर, 1864 ई० को उसे विएना सन्धि के लिए विवश होना पड़ा। इस सन्धि के अनुसार श्लेसविग तथा होलेस्टाइन के प्रदेश प्रशा एवं ऑस्ट्रिया को दे दिए गए। डेनमार्क ने यह भी स्वीकार किया कि इन दोनों डचियों का प्रशा एवं ऑस्ट्रिया जो कुछ चाहें करें।

गेस्टाइन का समझौता—इस प्रकार बिस्मार्क की कूटनीति का एक अंग पूरा हुआ लेकिन अभी उसे बहुत कुछ करना था। अब लूट के इस बंटवारे का प्रश्न पैदा हुआ। ऑस्ट्रिया तो श्लेसविग, होलेस्टाइन के प्रदेशों में कोई विशेष रुचि नहीं रखता था लेकिन बिस्मार्क इन्हें प्रशा में मिलाना चाहता था। अत: उन डचियों के भविष्य को लेकर एक बार पुन: संघर्ष की नौबत आ गई थी लेकिन बिस्मार्क ने अपने मन्तव्य को गुप्त रखते हुए ऑस्ट्रिया को पुन: अपने जाल में फंसा लिया। 14 अगस्त को ऑस्ट्रिया एवं प्रशा के बीच गेस्टाइन का समझौता हो गया, इस समझौते के अनुसार इन दोनों प्रदेशों को इस प्रकार बाँटा गया—

1. लाएनबर्ग का प्रदेश प्रशा ने खरीद लिया एवं ऑस्ट्रिया को उसका मूल्य दे दिया।
2. श्लेसविग प्रशा को मिला।
3. होलेस्टाइन ऑस्ट्रिया को मिला, परन्तु होलेस्टाइन दोनों ओर से प्रशा से घिरा था अत: ऑस्ट्रिया के लिए उस पर अपना अधिकार बनाए रखना बड़ा कठिन था।

इस प्रकार गेस्टाइन का समझौता बिस्मार्क की कूटनीति की महान् सफलता थी। इस विभाजन से प्रशा को अधिक लाभ हुआ। श्लेसविग तथा लाएनबर्ग पर अधिकार हो जाने से प्रशा का 'कील' (Kiel) बन्दरगाह पर अधिकार हो गया तथा प्रशा की सैनिक शक्ति बढ़ गई। फिशर के अनुसार, "अब तक बिस्मार्क असाधारण रूप से सफल रहा।" गेस्टाइन समझौता होने पर बिस्मार्क ने कहा था, "गेस्टाइन के समझौते से उसने दरारों के ऊपर कागज मढ़ दिया।"

वास्तव में, ऑस्ट्रिया उन दरारों को उस वक्त नहीं देख पाया। थोड़े समय पश्चात् ही ऑस्ट्रिया को अपनी भूल का आभास हुआ। वह समझ गया कि होलेस्टाइन पर अधिकार बनाए रखना सरल नहीं है। अत: उसने आगस्टबर्ग के ड्यूक के प्रश्न को फिर से उठाया तथा होलेस्टाइन एवं श्लेसविग के प्रश्न को पुन: संघीय संसद के समक्ष रखने के लिए कहा लेकिन बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया के इस कार्य को गेस्टाइन समझौते के विरुद्ध बताया, अत: यहीं से 1866 ई० में आस्ट्रो-प्रशियन युद्ध की शुरुआत हो जाती है।

प्र.4. फ्रैंको-प्रशियन युद्ध का वर्णन कीजिए तथा इस युद्ध के प्रमुख कारणों पर भी प्रकाश डालिए।
Describe Franco-Prussian war and also, throw light on the major causes of this war.

उत्तर

फ्रैंको-प्रशियन युद्ध (1870 ई०)
(Franco-Prussian War, 1870)

जर्मनी के एकीकरण का अन्तिम चरण फ्रैंको-प्रशियन युद्ध था। बिस्मार्क अब ऐसे अवसर की तलाश में था जबकि दक्षिणी जर्मनी के राज्य स्वयं ही उत्तरी जर्मनी के राज्य में मिलने की कोशिश करें। बिस्मार्क का मानना था कि यदि सम्पूर्ण जर्मनी के सामने कोई राष्ट्रीय संकट आ जाए तो सारे राज्य पारस्परिक मतभेदों को भुलाकर प्रशा की पताका के नीचे आ सकते हैं। यह राष्ट्रीय संकट केवल फ्रांस की ओर से उपस्थित हो सकता था। दूसरे शब्दों में, बिस्मार्क जर्मनी के एकीकरण को पूरा करने के लिए फ्रांस से युद्ध करना चाहता था इसी कारण वह कहा करता था कि—"ऑस्ट्रिया के युद्ध के बाद फ्रांस से युद्ध इतिहास के तर्क में ही निहित है।"

फ्रैंको-प्रशियन युद्ध के कारण (Causes of Franco-Prussian War)

यह युद्ध फ्रांस तथा प्रशा दोनों चाहते थे। मुख्य रूप से इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे—

1. **ऑस्ट्रो-प्रशियन युद्ध में फ्रांस के भाग लेने के कारण फ्रांस को अपनी भूल का अहसास**—1866 ई० के ऑस्ट्रो-प्रशियन युद्ध में फ्रांस ने भाग न लेकर बहुत भारी भूल की। अत: उसे इस बात का अनुभव होने लगा कि जर्मनी का उत्कर्ष एक शक्तिशाली राज्य के रूप में होने लगा है। फ्रांस यह कभी नहीं चाहता था कि उसके पड़ोस में किसी शक्तिशाली राज्य का उत्कर्ष हो, लेकिन नेपोलियन की मूर्खता के कारण फ्रांस 1866 के ऑस्ट्रो-प्रशियन युद्ध में तटस्थ रहा। यदि उस समय नेपोलियन ऑस्ट्रिया की सहायता करने की धमकी देता जैसा कि ऑस्ट्रिया चाहता था तो वह सन्धि की शर्तों को निश्चित करने में प्रमुख भूमिका अदा कर सकता था। अत: 1866 ई० के सैडोवा युद्ध में ऑस्ट्रिया की नहीं वरन् फ्रांस की पराजय हुई। इस कारण फ्रांस भी उस युद्ध का बदला लेना चाहता था।
2. **नेपोलियन तृतीय की असफल गृहनीति**—नेपोलियन तृतीय की गृहनीति की असफलता 1866 ई० में अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई थी। अत: गृहनीति में असफल रहने के कारण उसके विरोधियों का विरोध और अधिक बढ़ गया। ऐसी स्थिति में नेपोलियन ने अपनी जनता का ध्यान बाहर की ओर आकर्षित करना चाहा। अत: 1870 ई० में नेपोलियन प्रशा से युद्ध करने क काफी इच्छुक था क्योंकि इससे जनता का ध्यान नेपोलियन का विरोध करने के बजाय शत्रु की ओर चला जाए। इस प्रकार उसका सिंहासन सुरक्षित हो जाएगा।
3. **नेपोलियन द्वारा मैक्सिको मे हस्तक्षेप**—इसी समय नेपोलियन ने एक अन्य भारी भूल की। मैक्सिको के प्रति उसने जो नीति अपनायी वह नितान्त गलत तथा फ्रांस के लिए घातक सिद्ध हुई। उन दिनों अमेरिका में गृहयुद्ध चल रहा था। नेपोलियन तृतीय को यह आशा थी कि अमेरिका अपने गृहयुद्ध में ही उलझा रहेगा। अत: उसने मैक्सिको में हस्तक्षेप किया, किन्तु वह मैक्सिको के गणतन्त्र को समाप्त कर वहाँ अपना राज्य स्थापित करने में असफल हो गया। साथ ही मैक्सिको के राष्ट्रपति मैक्समिलियन की हत्या का दोष भी फ्रांस पर लगा। कहा जाता है कि मैक्सिको की लड़ाई नेपोलियन तृतीय के लिए उसी प्रकार विनाशकारी सिद्ध हुई जैसे कि स्पेन की लड़ाई नेपोलियन बोनापार्ट के लिए हुए थी। अत: इससे फ्रांस की प्रतिष्ठा गिर गई। अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुन: प्राप्त करने के लिए प्रशा के साथ युद्ध करने के अतिरिक्त उसके पास कोई मार्ग नहीं था।

TOUCH 'n PASS

4. **बिस्मार्क की राय में फ्रांस के विरुद्ध युद्ध अनिवार्य**—जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि जर्मनी पूर्ण रूप से एकीकृत हो गया था सिर्फ दक्षिण के राजा शेष थे, अत: बिस्मार्क एक ऐसी स्थिति उत्पन्न करना चाहता था जिससे ये दक्षिणी राज्य स्वयं ही उत्तरी संघ में सम्मिलित हो जाएँ और यह स्थिति तभी उत्पन्न हो सकती थी जबकि फ्रांस से युद्ध किया जाए।
5. **युद्ध का तात्कालिक कारण**—इस युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी। अत: कोई भी सामान्य कारण इन दोनों देशों के बीच युद्ध आरम्भ कर सकता था और ऐसा ही हुआ। 1868 ई० में स्पेन की जनता ने रानी ईसाबेला को देश से निष्कासित कर दिया, अत: स्पेन का सिंहासन खाली हो गया था। स्पेन की जनता ने प्रशा के राजा के रिश्तेदार लियोपोल्ड को वहाँ का शासक नियुक्त कर दिया, अत: प्रशा और स्पेन का यह मिलन फ्रांस सहन न कर सका। फ्रांस को इस बात का भय था कि लियोपोल्ड के राजा होते ही स्पेन पर प्रशा का प्रभाव स्थापित हो जाएगा। उसने लियोपोल्ड को गद्दी पर बैठाने का घोर विरोध किया। सम्राट विलियम प्रथम इस विरोध को देखकर दब गया और लियोपोल्ड ने स्वत: ही स्पेन की राजगद्दी की उम्मीदवारी छोड़ दी लेकिन नेपोलियन तृतीय इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ वह तो प्रशा से अपनी कूटनीतिक पराजयों के अपमान का बदला लेना चाहता था। अत: नेपोलियन तृतीय ने प्रशा के शासन से इस बात के लिए स्पष्ट रूप से लिखित आश्वासन माँगा कि प्रशा भविष्य में लियोपोल्ड को स्पेन के सिंहासन पर बैठाने का प्रयत्न नहीं करेगा। सम्राट विलियम इन दिनों एम्स नामक नगर में छुट्टियाँ व्यतीत करने गया था। अत: नेपोलियन तृतीय ने वेनेविटी नामक अपने राजदूत को कैसर विलियम प्रथम के पास भेजा। सम्राट विलियम प्रथम ने फ्रांसीसी राजदूत को यह आश्वासन दिया कि राजकुमार लियोपोल्ड कभी भी स्पेन के राजसिंहासन के लिए उम्मीदवार नहीं होगा, अत: इसके बाद एम्स से दूसरे स्थान चला गया तथा फ्रांसीसी राजदूत के साथ हुई अपने वार्ता का सारांश उसने तार द्वारा बिस्मार्क को दिया। 13 जुलाई, 1870 ई० की रात को बिस्मार्क को यह तार मिला। तार पढ़कर उसे घोर निराशा हुई।

अत: बिस्मार्क ने पुन: एक कूटनीतिक चाल चली। उसने तार की भाषा में हेर-फेर करके समाचार-पत्रों में प्रकाशित करा दिया। इस हेर-फेर के पश्चात् तार को पढ़ने पर ऐसा महसूस हो रहा था कि एम्स में कैसर विलियम प्रथम ने फ्रांसीसी राजदूत का अपमान किया है। दूसरी ओर फ्रांसीसी जनता भी यह समझती थी कि सम्राट ने फ्रांसीसी राजदूत का घोर अपमान किया है। यह तार '**एम्स तार**' के नाम से प्रसिद्ध है। फ्रांसीसी जनता इससे बड़ी क्रुद्ध हुई तथा अपने अपमान का बदला लेने के लिए नेपोलियन से माँग करने लगी। बिस्मार्क भी यही चाहता था, बिस्मार्क चाल से दोनों देशों की जनता पूरी तरह भड़क गई। दोनों देशों में युद्ध छिड़ने की माँग होने लगी और तब 15 जुलाई, 1870 ई० को फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. निम्न में कौन-सा कथन सही नहीं है?

1. जर्मनी का एकीकरण 1870 में हुआ।
2. जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क के नेतृत्व में हुआ।
3. बिस्मार्क प्रशा के शासक विलियन प्रथम का प्रधानमंत्री था।
4. बिस्मार्क सुलह और भाईचारे से जर्मनी का एकीकरण चाहता था।

(a) 1, 2 (b) 1, 3, 4
(c) 1, 2, 3 (d) 1, 2, 3, 4

प्र.2. इटली और जर्मनी के एकीकरण के विरोध में मुख्यत: कौन था?

(a) फ्रांस (b) इंग्लैण्ड (c) स्पेन (d) आस्ट्रिया

प्र.3. जालवेराइन की स्थापना कब हुई जो एक जर्मन शुल्क संघ था?

(a) 1833 (b) 1834 (c) 1835 (d) 1836

प्र.4. नेपोलियन ने राइन संघ कितने राज्यों को मिलाकर बनाया था?

(a) 37 (b) 38 (c) 39 (d) 40

TOUCH 'n PASS

प्र.5. बिस्मार्क प्रशा का चांसलर कब बना?
(a) 1862 (b) 1863 (c) 1864 (d) 1865

प्र.6. इटली का एकीकरण कब पूरा हुआ?
(a) 1868 (b) 1869 (c) 1870 (d) 1871

प्र.7. इटली में आस्ट्रिया के प्रभुत्व का कौन-सा कारण था?
(a) आस्ट्रिया का लोम्बार्डी और वेनेशिया पर राज्य
(b) पर्मा, मोडेना और टस्कनी के राज्य भी आस्ट्रिया के राजवंश से सम्बन्धित थे
(c) रोम का पोप आस्ट्रिया का समर्थन था
(d) उपर्युक्त सभी

प्र.8. यह कथन किसका है ''सामंतवादी प्रतिष्ठा के दिन समाप्त हो गए हैं व्यावहारिक युग का आरम्भ हो गया है। अब काव्य का स्थान गद्य को लेना है''?
(a) पीगू (b) थामसन (c) पोप (d) विक्टर इमानुएल

प्र.9. गैरीबाल्डी ने सिसली को कब स्वतंत्र कराया?
(a) 1859 (b) 1860 (c) 1861 (d) 1862

प्र.10. मैटरनिख ने कब कार्ल्सवाद नियम पारित करा जर्मन राष्ट्रीय आंदोलन का दमन किया?
(a) 1813 (b) 1814 (c) 1815 (d) 1816

प्र.11. मैटरनिख का पतन कब हुआ?
(a) 1847 (b) 1848 (c) 1849 (d) 1850

प्र.12. काबूर को कब विक्टर एमानुएल ने प्रधानमंत्री नियुक्त किया?
(a) 1851 (b) 1852 (c) 1853 (d) 1854

प्र.13. कार्बोनरी संगठन के संदर्भ में कौन-सा कथन सही है?
1. विदेशियों को इटली से बाहर निकालना
2. वैधानिक सत्ता की स्थापना करना
3. यह गुप्त राजनीतिक संस्था थी
4. यह संस्था मैटरनिख की समर्थक थी

(a) 1, 2 (b) 2, 3, 4 (c) 1, 2, 3 (d) 1, 2, 3, 4

प्र.14. रचेन में विद्रोह कब हुआ?
(a) 1819 (b) 1820 (c) 1821 (d) 1822

प्र.15. सेवोना के दुर्ग में किसे बंदी बनाकर भेज दिया गया?
(a) कावूर (b) मैजिनी (c) गैरीनाल्डी (d) बिस्मार्क

प्र.16. मैजिनी 'तरूण इटली' 'Young Staly' संगठन की स्थापना कब की?
(a) 1831 (b) 1832 (c) 1833 (d) 1834

प्र.17. 1833 तक यंग इटली के सदस्यों की संख्या कितनी हो गई थी?
(a) 55,000 (b) 56,000 (c) 58,000 (d) 60,000

प्र.18. 1830 की फ्रांस की क्रांति से किस राज्य में विद्रोह फैल गया?
(a) पर्मा (b) मोडेना (c) पोप के राज्य (d) ये सभी

TOUCH 'n' PASS

प्र.19. चार्ल्स एल्बर्ट ने ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कब की जिससे सारा इटली उसके झण्डे के नीचे आ गया?

(a) 21 मार्च, 1848 (b) 22 मार्च, 1848
(c) 23 मार्च, 1848 (d) 24 मार्च, 1848

प्र.20. रोम में गणतंत्र की स्थापना कब हुई?

(a) 1848 (b) 1849 (c) 1850 (d) 1851

प्र.21. निम्न में कौन-सा कार्य कैवूर ने किया?

(a) पड़ोसी राज्यों से व्यापारिक संधियाँ (b) कृषकों को आर्थिक सहायता
(c) बैंकों की स्थापना (d) ये सभी

प्र.22. कैवूर ने कितने हजार की एक सुगठित सेना तैयार की?

(a) 87000 (b) 88000 (c) 89000 (d) 90000

प्र.23. यह कथन किसका है ''क्रीमिया की मिट्टी से इटली और जर्मनी दोनों का निरूपण हुआ''?

(a) थॉमसन (b) रैम्जेम्योर (c) केटलबी (d) आर्नोल्ड

प्र.24. क्रीमिया का युद्ध कब हुआ?

(a) 1854-1856 (b) 1855-1858 (c) 1854-1858 (d) 1857-1860

प्र.25. इटली एवं फ्रांसीसियों ने मांगेण्टा के युद्ध में 4 जून, 1859 को किसे पराजित किया?

(a) स्पेन (b) इंग्लैण्ड (c) आस्ट्रिया (d) पोप

प्र.26. साल्फेरिनों का युद्ध इटली और आस्ट्रिया के मध्य कब हुआ?

(a) 24 जून, 1859 (b) 25 जून, 1859 (c) 26 जून, 1859 (d) 27 जून, 1869

प्र.27. आस्ट्रिया और फ्रांस में विलाफ्रैंका की संधि कब हुई?

(a) 9 जुलाई, 1860 (b) 10 जुलाई, 1860 (c) 11 जुलाई, 1860 (d) 12 जुलाई, 1860

प्र.28. गैरीबाल्डी ने नेपिल्स पर कब अधिकार किया?

(a) 18 अगस्त, 1860 (b) 19 अगस्त, 1860 (c) 20 अगस्त, 1860 (d) 21 अगस्त, 1860

प्र.29. कब गैरीबाल्डी ने सिसली पर अधिकार कर इमानुएल द्वितीय की अधीनता में स्वयं को सिसली का शासक घोषित कर दिया?

(a) 5 अगस्त, 1860 (b) 6 अगस्त, 1860 (c) 7 अगस्त, 1860 (d) 8 अगस्त, 1860

प्र.30. फ्रैंको-प्रशियन युद्ध कब हुआ?

(a) 1868 (b) 1869 (c) 1870 (d) 1871

उत्तरमाला

1. (c)	**2.** (d)	**3.** (b)	**4.** (c)	**5.** (a)	**6.** (d)	**7.** (d)	**8.** (d)	**9.** (b)	**10.** (c)
11. (b)	**12.** (b)	**13.** (c)	**14.** (b)	**15.** (b)	**16.** (a)	**17.** (d)	**18.** (d)	**19.** (c)	**20.** (b)
21. (d)	**22.** (d)	**23.** (c)	**24.** (a)	**25.** (c)	**26.** (a)	**27.** (c)	**28.** (b)	**29.** (a)	**30.** (c)

TOUCH 'n' PASS

UNIT-VI

प्रथम विश्व युद्ध के लिए अग्रणी कारक
Causes Leading to First World War

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. पेरिस की विभिन्न सन्धियाँ क्या हैं?
What are the different treaties of Paris?

उत्तर पेरिस की सन्धियाँ, (1919-20), सामूहिक रूप से प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त करने वाले शान्ति समझौते और पेरिस के आसपास के स्थलों पर हस्ताक्षर किए गए। वर्साय की सन्धि (28 जून, 1919 पर हस्ताक्षर); सेंट-जर्मेन की सन्धि (10 सितम्बर, 1919); न्यूली की सन्धि (27 नवम्बर, 1919); Trianon की सन्धि (4 जून, 1920); और सेवर्स, सन्धि (अगस्त)।

प्र.2. प्रथम विश्व युद्ध कब हुआ?
When did the first world war happen?

उत्तर 1 अगस्त, 1914—जर्मनी ने रूस के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। 2 अगस्त, 1914—ओटोमन साम्राज्य और जर्मनी ने गठबंधन की एक गुप्त सन्धि पर हस्ताक्षर किए। 4 अगस्त, 1914—जर्मनी ने बेल्जियम पर आक्रमण किया। इसी दिन ब्रिटेन ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।

प्र.3. प्रथम विश्व युद्ध में किसकी हार हुई?
Who lost in the first world war?

उत्तर प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की हार हुई। इसके बाद विजयी मित्र राष्ट्रों जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, अमेरिका और जापान आदि देश शामिल थे, उन्होंने जर्मनी को वर्साय की सन्धि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया।

प्र.4. प्रथम विश्व युद्ध में किन-किन देशों ने भाग लिया?
Which countries participated in the first world war?

उत्तर **30 से ज्यादा देश लड़े**—प्रथम विश्व युद्ध में 30 से ज्यादा देश शामिल हुए। इसमें दो धुरी थी। एक ओर 17 से ज्यादा मित्र देश थे, जिनमें सर्बिया, ब्रिटेन, जापान, रूस, फ्रांस, इटली और अमेरिका आदि थे। दूसरी ओर सेंट्रल पावर जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी, बुल्गारिया और ऑटोमन साम्राज्य था।

प्र.5. प्रथम विश्व युद्ध किसने जीता?
Who won the first world war?

उत्तर प्रथम विश्व युद्ध यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, इटली से मिलकर मित्र राष्ट्रों द्वारा जीता गया था। उन्होंने इंपीरियल जर्मनी, ऑस्ट्रो-हंगरी साम्राज्य और तुर्क साम्राज्य से मिलकर केन्द्रीय शक्तियों को हराया। यह 1914 से चला और 1919 में वर्साय शांति सन्धि पर हस्ताक्षर होने तक चला।

प्र.6. पेरिस शान्ति सम्मेलन में कितनी सन्धियाँ की गई?
How many treaties were signed in the Paris Peace convention?

उत्तर यह सम्मेलन 1919 में पेरिस में हुआ था जिसमें विश्व के 32 देशों के राजनायिकों ने भाग लिया। इसमें लिए गए मुख्य निर्णय थे—लीग ऑफ नेशन्स का निर्माण तथा पराजित देशों के साथ पाँच शान्ति-संधियाँ हुई।

TOUCH 'n PASS

प्र.7. पेरिस शांति सम्मेलन की सबसे प्रमुख सन्धि कौन-सी थी?
What was the most important treaty of the Paris Peace convention?

उत्तर वर्साय की सन्धि, 28 जून, 1919 ई० वैसे तो पेरिस शान्ति-सम्मेलन में कई सन्धियों एवं समझौतों के प्रारूप तैयार किए गए, किन्तु उन सभी सन्धियों में जर्मनी के साथ की गई वर्साय की सन्धि का विशेष महत्त्व है।

प्र.8. पेरिस शान्ति सम्मेलन का क्या उद्देश्य था?

उत्तर आत्म निर्णय के सिद्धान्त को कार्य रूप प्रदान करना। एक न्याय संगत एवं चिरस्थायी शान्ति सन्धि का मसौदा तैयार करना एवं उस पर हस्ताक्षर कराना। प्रजातन्त्र की सुरक्षा को कायम रखना।

प्र.9. वर्साय की सन्धि कहाँ हुई?
Where did the treaty of Versilles take place?

उत्तर 17 जून को मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी को सन्धि मानने के लिए 5 दिन का समय दिया, न मानने की स्थिति में फिर से युद्ध की धमकी दी गई। 28 जून, 1919 को पेरिस के बाहरी इलाके में स्थित वर्साय महल में 240 पेज और 440 दण्डनीय कानून वाली इस सन्धि पर जर्मन नेताओं ने हस्ताक्षर कर दिए।

प्र.10. वर्साय सन्धि कब समाप्त हुई?
When did the treaty of Versailles end?

उत्तर पेरिस शान्ति सम्मेलन में हुई सन्धियों और समझौतों के प्रारूप तैयार किए गए और उन पर हस्ताक्षर किए गए, परन्तु इन सन्धियों में जर्मनी के साथ जो वर्साय सन्धि हुई, वही सबसे प्रमुख और महत्त्वपूर्ण है। लगभग चार माह के अथक परिश्रम के बाद 6 मई, 1919 को सन्धि का अन्तिम प्रारूप तैयार हुआ।

प्र.11. वर्साय की सन्धि क्यों विफल हुई?
Why did the treaty of Versailles fail?

उत्तर यह व्यापक रूप से सहमत है कि वर्साय की सन्धि विफल रही क्योंकि यह कठोर दण्ड और बड़े पैमाने पर पुनर्भुगतान, भुगतान की अवास्तविक अपेक्षाओं से भरी हुई थी और जर्मनी पर उसके गलत कामों के लिए विसैन्यीकरण लगाया गया था।

प्र.12. आर्लेण्डो कौन था?
Who was Arlando?

उत्तर आर्लेण्डो इटली का प्रधानमन्त्री था। वह एक कुशल वक्ता एवं कूटनीतिज्ञ था। 1915 ई० की लन्दन की सन्धि का पक्षधर होने से विल्सन उससे नाराज था। अत: सम्मेलन की बैठकों में उसने कम ही भाग लिया।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. प्रथम विश्व युद्ध की मुख्य घटनाओं का उल्लेख कीजिए।
Mention the main events of the first world war.

उत्तर

प्रथम विश्व युद्ध की घटनाएँ
(Events of the First World War)

1914 ई० में जर्मनी ने बेल्जियम की तटस्थता को भंग करते हुए फ्रांस की सीमाओं में प्रवेश किया। उसका उद्देश्य पेरिस पर अधिकार करने का था, किन्तु अपने इस उद्देश्य में वह अन्त तक सफल न हो सका। दूसरी ओर रूस को परास्त करने में उसने प्रारम्भिक सफलता प्राप्त की। रूस की सेनाओं को जर्मनी ने टनेनबर्ग के युद्ध में परास्त किया।

1915-16 ई० में मित्र-राष्ट्रों ने मैसोपोटामिया एवं गैलीपोली पर अधिकार करने का प्रयत्न किया, किन्तु असफल रहे। इस वर्ष लड़े गए अन्य प्रमुख युद्ध ऑस्ट्रिया द्वारा सर्बिया पर अधिकार करने का प्रयत्न करना था, जर्मनी द्वारा फ्रांस के प्रमुख दुर्ग वर्डन पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करना था, जर्मनी सफल न हो सका। स्थल-युद्ध के साथ-साथ जल-युद्ध भी चल रहा था। 1916 ई० में जर्मनी एवं इंग्लैण्ड की नौ-सेनाओं में जूटलैण्ड का प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिसमें दोनों ही पक्षों की अपार क्षति हुई।

TOUCH 'n' PASS

इसी समय जर्मन पनडुब्बी के कारण अमेरिका का जहाज जिसमें बारह-सौ व्यक्ति थे, डूब गया। अमेरिका, जर्मनी के इस कार्य से अत्यन्त क्रोधित हुआ और वह मित्र-राष्ट्रों का साथी बन गया। 1917 ई० की यह एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस वर्ष की एक अन्य प्रमुख घटना रूस में क्रान्ति का होना था। जार के स्थान पर बोल्शेविकों की साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। बोल्शेविकों ने जर्मनी को परास्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु असफल रहे तथा विवश होकर उन्हें ब्रिस्टलीवास्क की सन्धि करनी पड़ी। इस प्रकार युद्ध से रूस पृथक् हो गया जिसमें मित्रराष्ट्रों को अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। मित्र-राष्ट्रों को पश्चिमी मोर्चे पर एवं टर्की के विरुद्ध भी सफलता न प्राप्त हुई। प्रथम विश्व युद्ध में पहली बार वायुयानों का भी प्रयोग किया गया। लन्दन शहर में हवाई बम वर्षा से हजारों नागरिकों की मृत्यु हो गई।

1918 ई० में स्थिति में परिवर्तन हुआ। यद्यपि इस वर्ष प्रारम्भ में तो जर्मनी को विजय प्राप्त हुई तथा यह पेरिस के बहुत निकट तक पहुँच गया, किन्तु बाद में उसकी स्थिति खराब हो गई, क्योंकि अमेरिका की शक्तिशाली सेना तथा अस्त्र-शस्त्र मित्र राष्ट्रों की सहायता के लिए पहुँच गए। जर्मनी की सेनाएँ प्रत्येक स्थान पर परास्त होने लगीं। ऑस्ट्रिया के परास्त होने पर जर्मनी की स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गई। नवम्बर, 1918 ई० के प्रारम्भ में जर्मनी के सेनापति हिण्डेनबर्ग ने विलियम कैसर द्वितीय को परामर्श दिया कि जर्मनी की आन्तरिक स्थिति भी विस्फोटक हो गई। अत: वह अपने लिए सुरक्षित स्थान खोज ले, क्योंकि जर्मनी की जनता किसी भी समय उसके विरुद्ध विद्रोह कर सकती है। विलियम कैसर ने हिण्डेनबर्ग की इस सलाह पर विशेष ध्यान न दिया। अन्तत: 8 नवम्बर, 1818 ई० को बर्लिन में क्रान्ति हो गई तथा विलियम कैसर द्वितीय को सपरिवार हॉलैण्ड भागना पड़ा। जर्मनी में गणतन्त्र (Weimer Republic) की स्थापना हुई तथा मित्र-राष्ट्रों से सन्धि वार्ता प्रारम्भ हुई। 11 नवम्बर, 1918 ई० को जर्मनी ने युद्ध विराम सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिए इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो गया।

प्र.2. प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों को लिखिए।
Write the results of the first world war.

उत्तर

प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम
(Results of the First World War)

1914 से 1918 ई० तक हुआ प्रथम विश्व-युद्ध इससे पूर्व के समस्त युद्धों से अधिक भयंकर एवं विनाशकारी था। इसमें 36 देशों ने भाग लिया जिनके एक करोड़ तीस लाख सैनिक हताहत हुए। इस युद्ध में अपार धन व्यय किया गया। दोनों पक्षों ने युद्ध में एक खरब छियासी अरब डॉलर व्यय किए। इसके अतिरिक्त हजारों व्यक्ति हत्याकाण्डों, बीमारी तथा भूख से मारे गए व एक खरब डॉलर की सम्पत्ति नष्ट हो गई।

प्रथम विश्व युद्ध के विश्व की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर गम्भीर प्रभाव हुए। नवीनतम हथियारों के प्रयोग के कारण देशों में आधुनिकतम हथियारों के आविष्कार के लिए प्रतिस्पर्द्धा होने लगी। इस युद्ध के परिणामस्वरूप प्रजातन्त्र एवं राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ। जिससे विश्व के विभिन्न देशों में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के आन्दोलनों में तीव्रता उत्पन्न हुई तथा ऑस्ट्रिया, पोलैण्ड, लाटविया, चेकोस्लोवाकिया, आदि देशों में प्रजातन्त्रात्मक शासन पद्धति की स्थापना हुई। राष्ट्रीयता के आधार पर अनेक नवीन राज्यों का निर्माण हुआ। इटली एवं जर्मनी की सरकारें जनता को सन्तुष्ट करने में असफल रहीं। अत: वहाँ नाजीवाद तथा फासीवाद का उदय हुआ। इंग्लैण्ड एवं फ्रांस की शक्ति इस युद्ध के पश्चात् अत्यधिक बढ़ गई तथा उनके राष्ट्रीय सम्मान में भी वृद्धि हुई। अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन ने शान्ति-स्थापना के लिए चौदह सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया तथा शान्ति की सुरक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्था राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। इसी युद्ध के समय में रूस में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई तथा अमेरिका का विश्व के राजनीतिक क्षितिज पर प्रभाव बढ़ा।

युद्ध के पश्चात् मित्र-राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ वर्साय की सन्धि (28 जून, 1919 ई०), में ऑस्ट्रिया के साथ सेण्ट जर्मेन की सन्धि (10 सितम्बर, 1919 ई०), बुल्गारिया के साथ 27 नवम्बर, 1919 ई० को न्यूली की सन्धि, हंगरी से 4 जून, 1920 ई० को त्रिआनो की सन्धि तथा टर्की से 10 अगस्त, 1920 ई० को सेव्रीस (Severes) की सन्धि की। इन समस्त सन्धियों, जिनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जर्मनी के साथ की गई वर्साय की सन्धि थी, के द्वारा मित्र-राष्ट्रों ने पराजित राष्ट्रों के साथ प्रतिशोधात्मक व्यवहार करते हुए अत्यन्त कठोर शर्तें रखीं, जिनका स्वीकार करना किसी भी राष्ट्र के लिए प्राय: असम्भव था, किन्तु पराजित राष्ट्रों को इन्हें स्वीकार करने के लिए विवश किया गया। जर्मनी के विरुद्ध विशेष रूप से वर्साय की सन्धि में अत्यन्त कठोर व्यवहार किया गया था ताकि जर्मनी को स्थाई रूप से निर्बल बनाया जा सके। मित्र राष्ट्रों के इस कठोर व्यवहार का परिणाम यह हुआ कि पराजित राष्ट्रों में प्रतिशोध की भावना जाग्रत होने लगी तथा वे प्रतिशोध लेने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगे, अत: कुछ ही वर्षों के उपरान्त पुन: एक अत्यन्त भयंकर युद्ध की अग्नि प्रज्वलित हो उठी, जिसे द्वितीय विश्व युद्ध कहा गया।

प्र.3. सेण्ट जर्मेन की सन्धि की प्रमुख व्यवस्थाएँ बताइए।
Mention the main provisions of the treaty of St. Germain.

उत्तर

सेण्ट जर्मेन की सन्धि की व्यवस्थाएँ
(Provisions of the Treaty of St. Germain)

सेण्ट जर्मेन की सन्धि ऑस्ट्रिया के साथ की गई, क्योंकि यह पेरिस के पास सेण्ट जर्मेन नामक स्थान पर हुई। अत: इसे सेण्ट जर्मेन की सन्धि के नाम से जाना जाता है। ऑस्ट्रिया के प्रतिनिधियों ने सन्धि-पत्र पर 10 सितम्बर, 1919 को हस्ताक्षर किए। इस सन्धि के अनुसार निम्न व्यवस्थाएँ की गईं—

1. प्रादेशिक व्यवस्था (Territorial Provision)

सेण्ट जर्मेन की संधि की प्रादेशिक व्यवस्था निम्न प्रकार है—

(i) ऑस्ट्रिया ने पोलैण्ड, हंगरी, यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया की स्वतन्त्रता को मान्यता दे दी।
(ii) मोराविया, बोहेमिया, साइलेशिया को मिलाकर चेकोस्लोवाकिया का निर्माण किया गया।
(iii) बोस्निया, हर्जेगोविना और कोरिया को मिलाकर यूगोस्लाविया का गठन किया गया।
(iv) पोलैण्ड को गैलेशिया तथा रोमानिया को बुकोबिना दिया गया।
(v) ऑस्ट्रिया में निवास करने वाली विभिन्न जातियाँ; जैसे—जर्मन, पोल, रोमानिया, इटैलियन, क्रीट, चैक आदि को आत्मनिर्णय के सिद्धान्त के अनुसार प्रदेश दिए गए।
(vi) इटली को इस्ट्रिया, दक्षिणी टायरोल, ट्रीस्ट एवं डालमोशिया दे दिए गए।
(vii) हैप्सबर्ग शासन का अन्त हो गया और ऑस्ट्रिया एक छोटा-सा जनतन्त्र मात्र रह गया।

2. सैन्य व्यवस्था (Military Provision)

ऑस्ट्रिया की सेना की संख्या 30 हजार निश्चित कर दी गई। उनकी नभ एवं नौसेना को समाप्त कर दिया गया। उसे डैन्यूब नदी में केवल तीन किश्तियाँ रखने का अधिकार दिया गया।

3. आर्थिक व्यवस्था (Economic Provision)

युद्ध के क्षतिपूर्ति की रकम निश्चित करने के लिए एक क्षतिपूर्ति आयोग गठित किया जाएगा। वह जो भी राशि निर्धारित करेगा ऑस्ट्रिया को स्वीकार होगा। टेशन का उद्योग-प्रधान प्रदेश पोलैण्ड एवं चेकोस्लोवाकिया में बाँट दिया गया। यह भी व्यवस्था की गई कि ऑस्ट्रिया युद्ध अपराधियों को मित्र राष्ट्रों को सौंप देगा।

इस प्रकार इस सन्धि ने ऑस्ट्रिया के साम्राज्य को सिकोड़कर रख दिया और उसके अवशेषों पर छोटे-छोटे राज्यों की स्थापना की गई, किन्तु इनका निर्माण करते समय सांस्कृतिक सिद्धान्तों को भुला दिया गया। जैसे—अनेक जर्मन जो कि जर्मनी के साथ मिलना चाहते थे उन्हें इस भय से कि कहीं जर्मनी अधिक शक्तिशाली न हो जाए, जर्मनी से नहीं मिलाया गया। इटली को टायरोल दिया गया उसमें $1\frac{1}{2}$ लाख जर्मन रहते थे। ई०एच० कार के अनुसार, "आत्मनिर्णय के सिद्धान्त का स्पष्ट रूप से उल्लंघन करने वाले दो प्रावधान इस सन्धि में थे। उसमें से एक था ऑस्ट्रिया और जर्मन के संयोग का निषेध जो कि वर्साय की सन्धि में की गई व्यवस्था की पुनरावृत्ति था। दूसरा प्रावधान था विशद्ध जर्मन भाषी दक्षिणी टायरोल का इटली को सौंपा जाना, ताकि उसे ब्रेनर का सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त मिल जाए।" फिशर महोदय ने भी इस सम्बन्ध में ऐसे विचार प्रस्तुत किए हैं।

प्र.4. न्यूइली और लोसाने की सन्धि का महत्त्व बताइए।
State the importance of treaty of Nuilly and Lausanne.

उत्तर

न्यूइली की सन्धि का महत्त्व
(Importance of Treaty of Nuilly)

यह सन्धि बुल्गारिया के साथ की गई। यह 27 नवम्बर, 1919 ई० को हुई। इसके निर्णय निम्न हैं—

1. यूनान को थ्रेस का समुद्र तट दे दिया गया।
2. पश्चिमी बुल्गारिया के कुछ प्रदेश जिनकी जनता बुल्गारियन थी, यूगोस्लाविया को दे दिए गए।

TOUCH 'n PASS

3. बुल्गारिया की जल सेना समाप्त कर दी गई। उसकी सेना संख्या 10 हजार सीमित कर दी गई।
4. उस पर 35 करोड़ डॉलर युद्ध की क्षतिपूर्ति लादी गई जो कि 37 किस्तों में देय होना था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बुल्गारिया को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी थी। कार महोदय ने लिखा है, "सन् 1919 ई० की न्यूइली की सन्धि ने बुल्गारिया की हानि पर अपनी मुहर लगा दी और बुल्गारिया को और भी अधिक हानि में डालते हुए सर्बिया और यूनान से लगी हुई उसकी सीमाओं में परिवर्तन पर दिया गया तथा रोमानिया से लगे हुए उसके 1913 ई० में निर्धारित स्पष्टतया न्यायपूर्ण सीमान्त को वैसा ही छोड़ दिया गया।

लोसाने की सन्धि का महत्त्व
(Importance of Treaty of Lausanne)

इस सन्धि के द्वारा निम्न निर्णय लिए गए—

1. पूर्वी थ्रेस, स्मर्ना और आर्मिनिया टर्की को लौटा दिए गए।
2. मैसोपोटामिया, सूडान, सीरिया, अरब, मिस्र, साइप्रस, फिलीस्तीन पर उसका अधिकार छीन लिया गया।
3. वासफोरस तथा दानियाल के जलडमरूओं को किलेबन्दी रहित एवं अन्तर्राष्ट्रीय ही रहने दिया गया।
4. उस पर क्षतिपूर्ति न लादी गई।
5. कोई सैन्य प्रतिबन्ध न लगाया गया।
6. टर्की के सुल्तान को अपने शासक के अन्तर्गत रहने वाला समस्त जातियों के समान व्यवहार का वचन लिया गया।
7. अनातालिया पर टर्की की पूर्ण सत्ता मानी गई।

इस प्रकार इस सन्धि के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि यह आरोपित शान्ति न थी। सेव्रेस की सन्धि का पूर्ण विरोध कर टर्की ने मित्र राष्ट्रों के रोंगटे खड़े कर दिए थे। वस्तुतः लोसाने की सन्धि वास्तविक अर्थों में शान्ति सन्धि कही जा सकती है।

प्र.5. ट्रियानों व सेव्रेस की सन्धि की व्याख्या कीजिए।
Explain the Treaty of Triano and Sevres.

उत्तर

ट्रियानो की सन्धि
(Treaty of Triano)

यह सन्धि हंगरी के साथ हुई। यह 4 जून, 1920 ई० को हुई, इसके अनुसार—ट्रान्सिलवेनिया रोमानिया को और क्रीशिया, सर्बिया को दे दिया गया। स्लोवाकिया, चेकोस्लोवाकिया को दिया गया। हंगरी को ऑस्ट्रिया से अलग कर दिया गया।
कार के अनुसार, "मोटे तौर पर ये निर्णय न्यायोचित थे, किन्तु जर्मनी के पूर्वी सीमान्त की अपेक्षा हंगरी के सीमान्त इस बात के अधिक स्पष्ट प्रमाण हैं कि सन्धिकर्त्ता अपने सिद्धान्तों की मित्र राष्ट्रों के हित में और शत्रु राष्ट्रों के अहित में यथासम्भव खींचतान करने के लिए काफी उत्सुक थे। इस खींचतान का एकत्रित परिणाम बहुत गहरा पड़ा और हंगरी के प्रचारकों ने इन छोटे-मोटे अन्यायों का पूरा-पूरा उपयोग किया।"
हंगरी को ऑस्ट्रिया से अलग कर दिया गया जिसका प्रभाव आस्ट्रिया पर भी पड़ा। हंगरी जिसका क्षेत्रफल 12,000 वर्गमील और जनसंख्या 20,000,000 थी यह 35,000 वर्गमील क्षेत्रफल और 80,000 जनसंख्या वाले राज्य में परिणित कर दिया गया। हंगरी की सेना 35 हजार सीमित कर दी गई। ऑस्ट्रिया के समान ही उस पर क्षतिपूर्ति लाद दी गई।

सेव्रेस की सन्धि
(Treaty of Sevres)

यह सन्धि तुर्की की भगोड़ी सरकार के साथ हुई। यह 10 अगस्त, 1920 ई० को हुई। इसके अनुसार—

1. कुर्दिस्तान को स्वतन्त्र करने का आश्वासन दिया गया।
2. आर्मीनिया को स्वतन्त्र कर दिया गया।
3. थ्रेस, एड्रियाटिक, स्मर्नासागर के कुछ टापू तथा गेलीपोली के द्वीप को दे दिए गए।
4. मिस्र, मोरक्को, ट्रिपोली, सीरिया, फिलिस्तीन, अरब, मैसोपोटामिया पर तुर्की ने अपने अधिकारों का त्याग कर दिया। इस प्रकार तुर्की के खलीफा के पास अनातोलिया की पहाड़ी प्रदेश तथा कुस्तुन्तुनियाँ के आसपास का ही प्रदेश रहा।
5. वास्फोरस तथा डार्डेनेलीज जल अन्तरीपों का अन्तर्राष्ट्रीय कर दिया गया।

TOUCH 'n' PASS

वेन्स ने इस सन्धि के विषय में लिखा है, "टर्की पहले से टर्की की एक छाया मात्र रह गई और उसका अस्तित्व एशियाई राज्य अंगोरा के आसपास बचा रहा।"

परन्तु इस सन्धि का पालन न हो सका। मुस्तफा कमाल पाशा ने इसे स्वीकार नहीं किया। उसने ग्रीस को युद्ध में पराजित करके मित्र राष्ट्रों को इस सन्धि पर विचार-विमर्श के लिए बाध्य कर डाला। कार ने लिखा है, "जो हो, सेव्रे की सन्धि को अमल में लाने की जो भी धुंधली आशा थी उसे यूनान की घटनाओं ने मिटा दिया।" अत: मित्र राष्ट्रों ने 24 जुलाई, 1933 को टर्की के साथ पुन: लोसाने की सन्धि की।

प्र.6. लॉयड जॉर्ज एवं क्लेमांसू पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
Write short note on Lloyd George and Clemenceau.

उत्तर

लॉयड जॉर्ज
(Lloyd George)

मैरियट ने लॉयड जॉर्ज के विषय में लिखा है, "लॉयड जॉर्ज ने इंग्लैण्ड तथा यूरोप की राजनीति में बीस वर्षों से भी अधिक समय तक एक महत्त्वपूर्ण तथा मूर्तिमान भूमिका निभाई" लॉयड का जन्म लन्दन में 1863 ई० में हुआ था। उसके पिता का नाम विलिमय जॉर्ज था। 1890 में वह कामन सभा का सदस्य बना। 1905 और 1909 ई० में उसने इंग्लैण्ड के वित्त-विभाग का संचालन किया और एक कुशल वित्तमन्त्री के रूप में ख्याति अर्जित की। 1916 ई० में उसने ऐसे समय में प्रधानमन्त्री का पद सँभाला, जबकि युद्ध में जर्मनी लगातार सफलताएँ प्राप्त कर रहा था। उसने **म्यूनिशन ऑफ वार** (Munition of war) तथा युद्ध परिषद् (War cabinet) का गठन किया और उसके अथक प्रयत्नों से मित्र राष्ट्र विजयी हुए। जर्मनी को पराजित करने पर **जॉर्ज** ने कहा था, "दूसरे लोगों ने साधारण लड़ाइयाँ जीती हैं मैंने एक युद्ध पर विजय प्राप्त की है।"

युद्ध की समाप्ति के बाद जॉर्ज की स्थिति का बड़ा रोचक वर्णन फिशर ने किया है। परन्तु जॉर्ज ने बड़ी बुद्धिमानी से ब्रिटिश जनता के विचारों को समझकर अपना चुनाव का नारा **"जर्मनी से पूर्ण क्षतिपूर्ति लो, शिलिंग के बदले शिलिंग और टन के बदले टन"** दिया और चुनाव जीता।

हालाँकि उस चुनाव का नारा अत्यन्त कठोर था, परन्तु क्लेमांसू के मुकाबले उसका दृष्टिकोण उदार था और जहाँ तक हो सका वह जर्मनी के प्रति उदार रहा। एक बार उसने कहा भी था, "जर्मनी रूपी गाय का दूध तथा मांस एक साथ नहीं लिया जा सकता।"

लॉयड जॉर्ज के सम्मुख तीन प्रमुख उद्देश्य थे—

(i) नौसेना के मामले में जर्मनी का सर्वनाश,
(ii) फ्रांस अत्यधिक शक्तिशाली न बने,
(iii) इंग्लैण्ड को अधिक-से-अधिक लाभ दिलवाना।

जॉर्ज अपने उद्देश्यों में पूर्ण सफल रहा, फिशर महोदय के अनुसार वह इंग्लैण्ड को लाभ देने के रूप में सफल रहा। यही कारण है लैन्सिग ने उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है—"उसके पास एक अद्भुत सजग मस्तिष्क था जो अथक स्फूर्ति से छलकता रहता था, वह बड़ी तेजी के साथ निर्णय कर लिया करता था और उसमें न तो बारीकियों का ध्यान रखता था और न मूलभूत प्रश्नों का, जीवन से उत्फुल्ल, व्यवहार से शिष्ट और स्वभाव से सरल, वह सामाजिक दृष्टि से बहुत ही आकर्षक व्यक्ति था।"

क्लेमांसू
(Clemenceau)

फ्रांस का प्रधानमन्त्री क्लेमांसू शान्ति सम्मेलन के समय 80 वर्ष का वृद्ध व्यक्ति था स्पष्ट है कि उसने राजनीति के प्रत्येक दाँव देखे होंगे। उसे सम्मेलन का शेर एवं वयोवृद्ध केसरी की संज्ञा दी गई है। यूरोप की तत्कालीन परिस्थितियों का जितना विशद ज्ञान उसे था शायद ही सम्मेलन में किसी को था। लैंगसम ने भी इसी प्रकार के विचार प्रकट किए हैं। फिशर महोदय ने उसे क्रूर भी माना है तो साथ ही फ्रांसीसी संसद के प्रति स्वामिभक्त माना है।

उसका प्रमुख उद्देश्य फ्रांस की सुरक्षा था और उसे वह हर कीमत पर पाना चाहता था, इसीलिए उसने लॉयड जॉर्ज एवं विल्सन पर छींटाकशी करते हुए कहा था, "लॉयड जॉर्ज अपने को नेपोलियन मानता है और विल्सन स्वत: को ईसामसीह।" ईश्वर भी दस आदेश देता है विल्सन 14 आदेश देता है।

कीन्स के अनुसार, "फ्रांस के प्रति उसका दृष्टिकोण वही था जो कि पेरीक्लीज का ऐथेन्स के प्रति था।" वास्तव में, अपनी नीतियों के कारण वह पूरे सम्मेलन में छा गया। इसलिए कहा भी जाता है कि उसने सम्पूर्ण सम्मेलन को ही जीत लिया था।

TOUCH 'n' PASS

प्र.6. विल्सन के 14 सूत्रीय कार्यक्रम पर प्रकाश डालिए।
Throw light on the Wilson's fourteen point programme.

उत्तर

विल्सन का 14 सूत्रीय कार्यक्रम
(Wilson's Fourteen Point Programme)

वुड्रो विल्सन संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति था। वह एक सुन्दर, द्वेष रहित एवं शान्ति से युक्त संसार का स्वप्न देखा करता था। जिस समय युद्ध समाप्त हुआ सम्पूर्ण विश्व विल्सन की ओर ऐसे देख रहा था मानो उससे किसी चीज की याचना कर रहा हो। शेपिरो ने लिखा है, "युद्ध से जर्जरित विश्व विल्सन की ओर इस भावना से निहार रहा था कि वह उस राष्ट्र का प्रतिनिधि था जिसे अपने लिए कोई स्वार्थ नहीं था और जिसने विश्व के सहयोग के द्वारा हमेशा के लिए मानव को युद्ध के ताप से विमुक्त करने का स्वप्न देखा था।" विल्सन आदर्शवादी था। वह धूर्तता एवं कुटिल चालों से परे था। उसने अपने 14 सिद्धान्तों के आधार पर विश्व शान्ति का स्वप्न देखा था। उसके 14 सिद्धान्त निम्नवत् हैं—

1. गोपनीय तरीकों से अन्तर्राष्ट्रीय समझौते नहीं किए जाएँगे, राजनय सदैव निष्कपट रूप में तथा सार्वजनिक दृष्टि से कार्य करेगा, सन्धियाँ खुले रूप से की जाएँ।
2. समुद्रतटीय भागों के अतिरिक्त युद्ध अथवा शान्ति काल, दोनों अवस्थाओं में जहाज चलाने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए।
3. आन्तरिक सुरक्षा के लिए जितने अस्त्र-शस्त्र पर्याप्त हों उतने ही रखे जाएँ।
4. औपनिवेशिक दावे बिना पक्षपात के निर्णीत हों।
5. रूस से सेनाएँ हटा ली जाएँ तथा उसकी स्वतन्त्रता को मान्यता प्रदान हो।
6. बेल्जियम को खाली किया जाए तथा उसकी स्वतन्त्रता मान्य हो।
7. सम्पूर्ण फ्रांसीसी भूमि स्वतन्त्र कर दी जानी चाहिए। आल्सेस या लॉरेन के प्रदेश फ्रांस को लौटा दिए जाएँ।
8. इटली की राष्ट्रीयता के आधार पर उसकी सीमाएँ पुन: निर्धारित की जाएँ।
9. आपसी व्यापार में चुंगियाँ कम-से-कम हों।
10. रोमानिया, सर्बिया, माण्टेनेग्रो खाली किए जाएँ, सर्बिया को यह अधिकार दिया जाए कि वह समुद्र तट तक पहुँच सके।
11. टर्की का शासक, अपने शासन के अन्तर्गत रहने वाली सभी जातियों के प्रति समानता की नीति अपनाएगा, डार्डेनेलीज का अन्तर्राष्ट्रीयकरण किया जाए।
12. ऑस्ट्रिया हंगरी के विकास हेतु साधन उपलब्ध कराए जाएँ।
13. पोलैण्ड की स्वतन्त्रता मान्य हो। पोलैण्ड में वे क्षेत्र मिला दिए जाएँ, जो निर्विवाद रूप से पोल हों। उसकी प्रादेशिक अखण्डता, आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतन्त्रता को मान्यता दी जाए।
14. विश्व शान्ति के लिए छोटे-बड़े सभी राष्ट्रों का संगठन हो, जिससे दोनों प्रकार के राष्ट्रों की प्रदेशिक अखण्डता एवं राजनैतिक स्वतन्त्रता की गारण्टियाँ समान रूप से दी जा सकें।

विल्सन के 14 सूत्रों का विश्व शान्ति की कल्पना में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, यदि पेरिस के शान्ति सम्मेलन में उनका पूर्णतया पालन हुआ होता तो सम्भवतया द्वितीय विश्व युद्ध न हुआ होता और न जाने विश्व का इतिहास आज क्या होता? खैर विल्सन द्वारा प्रतिपादित 14 सूत्रों का पालन हालाँकि अक्षरश: नहीं किया गया, किन्तु बहुत कुछ क्षेत्रों में इनका पालन किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों को प्रकाशित करने की व्यवस्था राष्ट्र संघ द्वारा की गई, हालाँकि इससे गुप्त सन्धियाँ नहीं टाली जा सकीं फिर भी यह एक महत्त्वपूर्ण कदम कहा जा सकता है, बेल्जियम से सेनाएँ हटायी गईं, आल्सेस तथा लॉरेन के प्रदेश फ्रांस को सौंप दिए गए। सामुद्रिक स्वतन्त्रता की शर्त किसी को मान्य न हुई। जहाँ तक जल मार्गों के अन्तर्राष्ट्रीयकरण का प्रश्न था कुछ का अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर दिया गया, किन्तु चुंगियों की व्यवस्था पूर्ववत बनी रही। नि:शस्त्रीकरण पराजित राष्ट्रों का ही किया गया। अमेरिका व इंग्लैण्ड के अतिरिक्त कोई भी देश स्वयं पर इसे लागू होने न देना चाहता था। उपनिवेशों में बंटवारे का आधार संरक्षण का सिद्धान्त अपनाया गया, परन्तु इसका भी पूर्णतया पालन न हो सका। रूस से जर्मनी की सेनाएँ हटा ली गईं। इटली के प्रश्न में भी आंशिक पालन हुआ। ऑस्ट्रिया हंगरी में रहने वाली अल्पसंख्यक जातियों की ओर विशेष ध्यान न दिया गया। टर्की के सम्बन्ध में भी पूर्णतया पालन न हो पाया। राष्ट्र संघ की स्थापना अपने आप में महत्त्वपूर्ण कदम था।

वास्तव में विल्सन के 14 सिद्धान्त केवल राजनीकि भाषण थे। कुछ अपने आप में परस्पर विरोधी थे। फिशर के अनुसार वह अपने ही देश में अकेले थे। परन्तु यह तो कहना ही होगा कि विल्सन के 14 सूत्र अपने आप में महत्त्वपूर्ण थे और जितना भी उनका पालन हुआ उसने पेरिस शान्ति समझौते की कठोरता को कम करने में काफी मदद की थी।

TOUCH 'n' PASS

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. प्रथम विश्व युद्ध के कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
Describe in detail the causes of the first world war.

उत्तर

प्रथम विश्व युद्ध
(First World War)

1914 ई० में प्रारम्भ हुआ प्रथम विश्व युद्ध न केवल यूरोप की, वरन् विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। इससे पूर्व हुए समस्त युद्ध क्षेत्रीय स्तर पर लड़े गए थे, अथवा दो-तीन देशों के मध्य हुए थे, किन्तु इस युद्ध में विश्व का लगभग प्रत्येक देश उलझा हुआ था तथा किसी-न-किसी पक्ष को समर्थन दे रहा था। अत्यन्त उच्च स्तर पर लड़े गए इस युद्ध में पहली बार गोरी, पीली, काली तथा भूरी जातियों ने एक-दूसरे की हत्या करने में भाग लिया तथा युद्ध की लपटें शीघ्र ही पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, जल, आकाश में फैल गईं। शीघ्र ही सम्पूर्ण विश्व इस युद्ध की आग से घिर गया।

इस युद्ध की आशंका बहुत समय पूर्व से ही की जा रही थी। 1898 ई० में बिस्मार्क ने इस युद्ध के विषय में भविष्यवाणी करते हुए हर बैलिन (Herr Ballian) से कहा था, **''मैं विश्व-युद्ध नहीं देखूँगा पर तुम देखोगे और यह पश्चिमी एशिया में प्रारम्भ होगा।''** प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार जे०ए०आर० मैरियट का विचार कि यदि बिस्मार्क ने 1898 ई० में इस प्रकार की भविष्यवाणी कर दी थी तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, क्योंकि सम्भवत: 1898 ई० तक बिस्मार्क यह समझ गया था कि जो बीज उसने बर्लिन कांग्रेस में बोया था उससे शीघ्र ही विध्वंसक प्रतिफलों का होना निश्चित था। मैरियट के इस विचार को कि बिस्मार्क प्रथम विश्वयुद्ध के लिए पूर्णरूपेण उत्तरदायी था, स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस युद्ध की पृष्ठभूमि में अनेक अन्य पहलू भी थे जिनका इस युद्ध को प्रारम्भ करने में कम योगदान नहीं था। टर्की साम्राज्य निरन्तर दुर्बल होता जा रहा था तथा बाल्कान प्रदेश में हैप्सवर्गों व रोमनेफों, स्लावों तथा ट्यूटनों में प्रतिस्पर्द्धा चल रही थी। यद्यपि बिस्मार्क ने बर्लिन कांग्रेस में ऑस्ट्रिया का पक्षपात करके रूस के साथ विश्वासघात किया था तथापि उसने फ्रांस और रूस की इंग्लैण्ड से मित्रता नहीं होने दी थी तथा स्वयं ने इटली से भी मित्रता कर ली थी। बिस्मार्क के पश्चात् जर्मनी में कोई भी कुशल राजनीतिज्ञ न हुआ जो बिगड़ती परिस्थिति में सुधार ला सकता। विश्वयुद्ध तो वास्तव में 1909 ई० में ही प्रारम्भ हो गया होता, यदि बोस्निया एवं हर्जेगोविना के प्रश्न पर रूस ने ऑस्ट्रिया का सामना करने का निर्णय लिया होता, किन्तु तब रूस युद्ध करने की स्थिति में न था, अत: युद्ध टल गया था।

प्रथम विश्व युद्ध के कारण (Causes of the First World War)

1914 ई० में प्रथम विश्व-युद्ध के प्रारम्भ होने के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे—

1. **दल प्रथा** (Party System)—प्रथम विश्व युद्ध का एक अत्यन्त प्रमुख कारण दल प्रथा का जन्म होना था। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक यूरोप दो सैनिक दलों में विभक्त हो गया था। सर्वप्रथम 1879 ई० में जर्मनी ने ऑस्ट्रिया के साथ **द्वि-राष्ट्र सन्धि** की स्थापना शीघ्र ही इटली भी 1882 ई० में इस दल में सम्मिलित हो गया, इस प्रकार **त्रि-राष्ट्र सन्धि** की स्थापना हुई। इस समय तक जर्मनी में बिस्मार्क शक्ति में था तथा उसकी वैदेशिक नीति का एक प्रमुख उद्देश्य फ्रांस को पृथक् रखना था, किन्तु 1890 ई० में उसके पतन के पश्चात् जर्मनी ने इस ओर ध्यान न दिया। अत: 1894 ई० में फ्रांस तथा रूस में सन्धि हो गई। इंग्लैण्ड बहुत समय पूर्व से इस समय तक शानदान पृथकत्व की नीति का पालन कर रहा था। किन्तु इस समय उसे अपनी सुरक्षा के लिए यह सोचने पर विवश होना पड़ा कि यूरोप की महान् शक्तियों में केवल यही एक ऐसा देश है जो अकेला है और ऐसी स्थिति में यदि किसी देश से युद्ध करना हुआ तो स्थिति कितनी शोचनीय हो जाएगी। अत: इंग्लैण्ड ने शानदान पृथकत्व भी नीति का परित्याग कर, 1902 ई० में जापान के साथ सन्धि कर ली। 1904 ई० में इंग्लैण्ड ने **फ्रांस से सन्धि** (Triple Entente) की। 1907 ई० में इसमें रूस भी सम्मिलित हो गया तथा **हार्दिक मैत्री सम्बन्ध** (Triple Entente) की स्थापना हुई। इस प्रकार यूरोप दो सैनिक दलों में विभक्त हो गया। एक ओर त्रि-राष्ट्र सन्धि में जर्मनी, ऑस्ट्रिया तथा इटली थे, दूसरे खेमे में 'हार्दिक मैत्री सम्बन्ध' के फ्रांस, इंग्लैण्ड व रूस थे। इस प्रकार यूरोप के दो परस्पर विरोधी दलों में विभक्त हो जाने से युद्ध होना स्वाभाविक ही था।

TOUCH 'n PASS

2. **गुप्त कूटनीति** (Secret Diplomacy)—बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक कूटनीति में भी भ्रष्टता व्याप्त होने लगी थी, जिसका आधार धोखा व झूठ हो गया था। सन्धियाँ गुप्त होने लगी थीं जिनके विषय में जनता व अन्य देशों के राजनीतिज्ञों को कोई जानकारी नहीं रहती थी। गुप्त राजनीति एवं नीति की भ्रष्टता का उदाहरण इटली की नीति थी। इटली यद्यपि जर्मनी एवं ऑस्ट्रिया के साथ त्रि-राष्ट्र सन्धि कर चुका था तथापि गुप्त रूप से इंग्लैण्ड एवं फ्रांस से भी मित्रता की बात कर रहा था।
3. **राष्ट्रवाद की भावना** (Rise of Nationalism)—प्रथम विश्व युद्ध का एक कारण उग्र राष्ट्रीयता की भावना का होना था। इस समय यूरोप में दो प्रमुख राष्ट्रवाद सम्बन्धी आन्दोलन चल रहे थे। जर्मनी में 'पान जर्मन आन्दोलन' (Pan German Movement) चल रहा था, जिसका उद्देश्य जर्मनों को जो यूरोप के विभिन्न राज्यों में रह रहे थे, एक महान् जर्मनी के अन्तर्गत एक करना था। इसी प्रकार का एक अन्य आन्दोलन 'पान स्लाव आन्दोलन' (Pan Slavic Movement) था, जिसके द्वारा स्लाव जाति रूस में सर्वाधिक संख्या में थी, स्वयं को संगठित करना चाहती थी। राष्ट्रीयता की उग्र भावना के परिणामस्वरूप राजनीतिक अराजकता उत्पन्न हो गई थी। फ्रांस व जर्मनी तथा इंग्लैण्ड व जर्मनी के निरन्तर कटु हो रहे सम्बन्धों का कारण भी राष्ट्रीयता की भावना ही थी।
4. **साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा** (Imperialistic Rivalry)—यूरोप की महान् शक्तियों में से प्रत्येक देश अधिक-से-अधिक उपनिवेश स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील था, क्योंकि देश के सम्मान व आर्थिक कारणों से यह आवश्यक था। औद्योगिक क्रान्ति ने उपनिवेशों के महत्त्व को और भी बढ़ा दिया था। इंग्लैण्ड व फ्रांस के पास अनेक उपनिवेश थे। जर्मनी में जब तक बिस्मार्क सत्ता में रहा, उसने इंग्लैण्ड से इस सम्बन्ध में प्रतिस्पर्द्धा करने का प्रयत्न किया, किन्तु बिस्मार्क के पश्चात् जर्मनी ने भी उपनिवेश स्थापित करने का प्रयास किया। जर्मनी की इंग्लैण्ड व फ्रांस के उपनिवेशों पर भी दृष्टि थी। ऐसी स्थिति में संघर्ष होना निश्चित ही था।
5. **सैनिकवाद की भावना** (Militarism)—यूरोप में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक उग्र सैनिक भावना का जन्म हुआ तथा तीव्रता से चारों ओर इसका प्रसार हुआ। प्रत्येक देश में सेना के विस्तार एवं हथियारों के लिए प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हो गई। प्रत्येक देश में यह भावना दृढ़ होने लगी कि राष्ट्रीय गौरव की रक्षा के लिए सैनिक शक्ति आवश्यक है। इसी समय कुछ विचारकों ने सैनिकवाद का अपने लेखों से अत्यधिक प्रचार किया। ट्रीटस्की (Treitscke) ने अपनी कृति 'पॉलिटिक्स' में 'बल प्रयोग ही अधिकार है' (Might is Right) सिद्धान्त को सराहा। फ्रांस में भी दार्शनिकों ने इसी प्रकार की भावना को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार सैनिकवाद की भावना यूरोपीय राष्ट्रों को निरन्तर युद्ध की ओर अग्रसर कर रही थी।
6. **अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव** (Absence of International Organisation)—प्रथम विश्व-युद्ध के समय तक यूरोप अथवा विश्व में कोई अन्तर्राष्ट्रीय संस्था न थी, जिसके द्वारा विभिन्न देशों की समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाया जा सके। अत: इस प्रकार की संस्था के अभाव में राष्ट्रों में पारस्परिक वैमनस्य बढ़ता ही जा रहा था, जिसका अन्त विश्व युद्ध के रूप में हुआ।
7. **आल्सेस एवं लॉरेन प्रदेश** (Provinces of Alsace and Lorraine)—इन दोनों प्रदेशों के कारण फ्रांस एवं जर्मनी में दीर्घकाल से शत्रुता चल रही थी। 1870 ई० में जर्मनी ने फ्रांस को परास्त किया तथा अल्सेस एवं लॉरेन प्रदेशों पर अधिकार कर विश्व-युद्ध के एक कारण को जन्म दिया। फ्रांस के लिए आल्सेस एवं लॉरेन का अत्यधिक महत्त्व था क्योंकि ये प्रदेश लुई चौदहवें की विजयों के प्रतीक थे, इसके अतिरिक्त लॉरेन में लोहे की खानों के कारण उसका आर्थिक एवं औद्योगिक महत्त्व भी था। अत: फ्रांस अल्सेस एवं लारेन प्रदेशों पर अधिकार करना चाहता था, परिणामस्वरूप फ्रांस एवं जर्मनी के सम्बन्ध निरन्तर कटु होते गए।
8. **बोस्निया एवं हर्जेगोविना** (Bosnia and Herzagovina)—अल्सेस एवं लॉरेन प्रदेशों की समस्या के अनुरूप ही बोस्निया एवं हर्जेगोविना की समस्या थी। 1878 ई० में बर्लिन सन्धि के द्वारा ये दोनों प्रदेश प्रशासन हेतु ऑस्ट्रिया के अधिकार में दिए गए थे, किन्तु ऑस्ट्रिया पर इन्हें अपने राज्य में मिलाने पर प्रतिबन्ध लगाया गया। ऑस्ट्रिया ने 1908 ई० में बर्लिन सन्धि (Treaty of Berlin) की अवहेलना कर दोनों प्रदेशों को अपने राज्य में विलीन कर लिया। बोस्निया एवं हर्जेगोविना में मुख्यत: स्लाव जाति रहती थी, अत: सर्बिया ने ऑस्ट्रिया के इस कार्य का घोर विरोध किया। रूस इस समय पूर्णत: युद्ध के लिए तैयार न था अन्यथा विश्व-युद्ध इसी समय प्रारम्भ हो जाता।

TOUCH 'n' PASS

9. **मोरोक्को संकट** (Morocco Crisis)—1904 ई० में इंग्लैण्ड व फ्रांस में सन्धि हो जाने से जर्मनी अत्यन्त चिन्तित हुआ, क्योंकि इससे अफ्रीका में उसके उपनिवेशों को हानि होने का भय था। 1905 ई० में मोरोक्को में हुए विद्रोह को दबाने के लिए फ्रांस ने सेना भेजी, जिसका जर्मनी ने घोर विरोध किया तथा फ्रांस को जर्मनी द्वारा रखी गई अपमानजनक शर्तें स्वीकार करनी पड़ी। कुछ वर्ष पश्चात् मोरोक्को में अव्यवस्था फैलने पर फ्रांस ने पुन: सेना भेजी। जर्मनी ने भी अपना जहाजी बेड़ा मोरोक्को भेजा, किन्तु इस समय तक स्थिति में परिवर्तन हो चुका था क्योंकि 1970 ई० में हार्दिक मैत्री सम्बन्ध (Triple Entente) हो चुकी थी। इंग्लैण्ड ने भी इस अवसर पर जर्मनी को धमकी दी जिससे जर्मनी को पीछे हटना पड़ा, किन्तु वह प्रतिशोध लेने का अवसर ढूँढ़ने लगा।
10. **परतन्त्र इटली** (Italian Irrendenta)—एड्रियाटिक सागर के उत्तर में इटली का एक प्रदेश था, जिस पर ऑस्ट्रिया ने अधिकार कर रखा था। इटली निरन्तर ऑस्ट्रिया से इस प्रदेश को उसे सौंपने के लिए अनुरोध कर रहा था, किन्तु ऑस्ट्रिया इस बात के लिए तैयार न था। जर्मनी भी ऑस्ट्रिया का ही समर्थन करता था। अत: इटली को यह विश्वास हो गया था कि त्रि-राष्ट्र का सदस्य रहते हुए उसे वह प्रदेश नहीं प्राप्त होगा। अत: उसने इंग्लैण्ड, फ्रांस व रूस का समर्थन करने का निर्णय लिया। परिणामस्वरूप, शक्ति सन्तुलन भंग हो गया तथा युद्ध के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।
11. **बाल्कान युद्ध** (Balkan Wars)—प्रथम तथा द्वितीय बाल्कान युद्धों के परिणामस्वरूप यूरोप की स्थिति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। सर्बिया को काफी भूमि प्राप्त हुई जिसका अप्रत्यक्ष लाभ रूस को था। इन युद्धों से ऑस्ट्रिया एवं जर्मनी का पर्याप्त अहित हुआ। अत: स्पष्ट हो गया कि यदि ऑस्ट्रिया व जर्मनी अपने हितों को प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे तो युद्ध अवश्य होगा।
12. **विलियम कैसर द्वितीय की महत्त्वाकांक्षाएँ** (Ambitions of William Kaiser II)—जर्मनी के शासक कैसर द्वितीय को प्रथम विश्व युद्ध का जन्मदाता कहा जाता है। जब तक बिस्मार्क जर्मनी में शक्ति में रहा उसने सदैव फ्रांस को पृथक् रखने तथा इंग्लैण्ड से प्रतिस्पर्द्धा न करने की नीति का पालन किया। कैसर विलियम अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था तथा सैनिक शक्ति के आधार पर विश्व विजेता बनना चाहता था। उसकी थल सेना अत्यन्त शक्तिशाली थी, किन्तु इससे वह सन्तुष्ट न था। वह अपनी जल सेना को भी थल सेना के समान शक्तिशाली बनाना चाहता था। इंग्लैण्ड द्वारा जर्मनी की इस प्रकार की नीति पर चिन्तित होना स्वाभाविक ही था, किन्तु कैसर ने अत्यन्त अदूरदर्शिता से कार्य किया तथा अत्यन्त भाषण दिए। उसने कहा—"हमारा भविष्य समुद्र पर निर्भर है..... मैं उस समय तक चैन नहीं लूँगा जब तक कि मेरी जलसेना, थल सेना के समान शक्तिशाली नहीं हो जाती।" एक अन्य स्थान पर उसने कहा, "**हमको अधिक-से-अधिक नौसेना, थल सेना तथा बारूद की आवश्यकता है।**" इतना ही नहीं मित्र राष्ट्रों को स्पष्ट रूप से धमकी देते हुए उसने कहा, "यदि वे युद्ध चाहते हैं तो वे युद्ध प्रारम्भ कर सकते हैं। हम युद्ध से डरते नहीं।" इस प्रकार भाषणों से यूरोप का वातावरण अत्यन्त तनावपूर्ण हो गया। हैजन का विचार है कि इतनी उग्र व महत्त्वाकांक्षी नीति का कैसर विलियम द्वितीय द्वारा पालन करने पर इंग्लैण्ड से युद्ध होना आवश्यक था। इंग्लैण्ड प्रारम्भ में जर्मनी से मित्रता करना चाहता था, किन्तु कैसर विलियम ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहा—'**बर्लिन का रास्ता ऑस्ट्रिया होकर आता है।**' कैसर ने पूर्व की ओर विस्तार करना भी प्रारम्भ किया। उसने बर्लिन-बगदाद रेलवे लाइन बनाने का भी प्रयास किया। जर्मनी के पूर्व में अग्रसर होने से इंग्लैण्ड के पूर्वी उपनिवेशों के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता। अत: इंग्लैण्ड ने जर्मनी का विरोध किया। इस प्रकार कैसर विलियम की नीतियों के परिणामस्वरूप युद्ध होना निश्चित हो गया।
13. **समाचारपत्र** (News Papers)—विभिन्न देशों में प्रकाशित होने वाले समाचारपत्रों ने भी युद्ध को जन्म देने में प्रमुख भूमिका निभाई। इन समाचारपत्रों ने जनता की भावनाओं को भड़काया जिससे स्थिति बिगड़ती चली गई। इस विषय में फे ने लिखा है, "**युद्ध का एक कारण सभी बड़े देशों में समाचारपत्रों के द्वारा जनता की विचारधारा को दूषित करना था।**"
14. **युद्ध का तात्कालिक कारण** (Immediate Cause of the War)—प्रथम विश्व युद्ध के प्रारम्भ होने का तात्कालिक कारण सराजीवो हत्याकाण्ड का होना था। हंगरी का राजकुमार तथा ऑस्ट्रिया के साम्राज्य का उत्तराधिकारी 29 जून, 1914 ई० को सेना का निरीक्षण करके लौट रहा था, कि उसकी तथा उसकी पत्नी की एक बोसनियन युवक ने

TOUCH 'n PASS

हत्या कर दी। आर्क ड्यूक फर्डिनेण्ड एवं उसकी पत्नी का हत्यारा पान-स्लाव आन्दोलन का उग्रवादी समर्थक था। अत: ऑस्ट्रिया ने सर्बिया की सरकार को इस हत्याकाण्ड के लिए उत्तरदायी ठहराया। ऑस्ट्रिया इस अवसर का लाभ उठाकर बाल्कान प्रदेश में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता था। इस कार्य में उसे जर्मनी का समर्थन प्राप्त था। अत: 23 जुलाई, 1914 ई० को ऑस्ट्रिया ने सर्बिया को कठोर शर्तों वाला एक पत्र भेजा। सर्बिया को इसे स्वीकार करने के लिए 48 घण्टों का ही समय दिया गया था। सर्बिया के लिए यह अत्यन्त अपमानजनक था, किन्तु फिर भी सर्बिया ने इस पत्र की कुछ शर्तों को स्वीकार कर लिया। ऑस्ट्रिया इससे सन्तुष्ट न हुआ और 28 जुलाई, 1914 ई० को उसने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इंग्लैण्ड ने वैदेशिक मन्त्री सर एडवर्ड ग्रे ने युद्ध को टालने का अत्यन्त प्रयास किया, किन्तु असफल रहा। रूस ने सर्बिया के पक्ष में ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जर्मनी ने भी प्रत्युत्तर में रूस व फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इंग्लैण्ड अब तक इस युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ था तथा अभी भी निरन्तर युद्ध को टालने का ही प्रयत्न कर रहा था। ग्रे ने फ्रांस के राजदूत से भी यह कह दिया था कि इंग्लैण्ड इस युद्ध में भाग नहीं लेगा, क्योंकि उसका मुख्य कारण फ्रांस एवं रूस के हितों की समानता होगी जिसके विरुद्ध जर्मनी युद्ध लड़ सकता है। इसके पश्चात् ग्रे ने फ्रांस एवं जर्मनी ने बेल्जियम की तटस्थता को स्वीकार करने हेतु आश्वासन प्राप्त करना चाहा। फ्रांस ने तो वचन दे दिया, किन्तु जर्मनी ने कोई उत्तर न दिया। 31 जुलाई, 1914 ई० को एडवर्ड ग्रे ने शान्ति बनाए रखने के लिए विभिन्न देशों को सत्रह तार भेजे, किन्तु इसका कोई प्रभाव न हुआ। इसी मध्य जर्मनी ने इंग्लैण्ड के अनेक जहाजों को पकड़ा व उनका सामान छीन 1839 ई० में हुई लन्दन की सन्धि को भंग करते हुए 3 अगस्त, 1914 ई० को जर्मनी ने बेल्जियम की पवित्रता को सुरक्षित रखने तथा शक्तिशाली राष्ट्रों के अत्याचारों से शक्तिहीन राष्ट्रों की रक्षा हेतु, इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 4 अगस्त, 1914 को इंग्लैण्ड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया।

प्रथम विश्व युद्ध को प्रारम्भ करने के लिए दोनों पक्षों ने परस्पर एक-दूसरे को उत्तरदायी ठहराया। जर्मनी के चांसलर वैथमेन ने इंग्लैण्ड की वैदेशिक नीति को इस युद्ध का कारण बताया है। उसके अनुसार, 'इंग्लैण्ड की वैदेशिक नीति ही विश्व युद्ध का प्रारम्भ करने वाली थी। इसके विपरीत एडवर्ड ग्रे ने जर्मनी की नीति को उत्तरदायी बताते हुए कहा—'बिस्मार्क की मृत्यु के पश्चात् उसके त्रिगुट के विरुद्ध त्रि-दल की स्थापना हुई तथा दोनों दलों के मध्य प्रतिद्वन्द्विता, 1914 ई० के विश्व युद्ध का अनेक कारणों में से एक कारण बना। इस युद्ध ने जर्मन साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया।'' किन्तु विश्व युद्ध का उत्तरदायित्व किसी एक देश अथवा दल पर डालना उचित प्रतीत नहीं होता, दोनों ही दलों पर विश्व युद्ध प्रारम्भ करने का उत्तरदायित्व स्वीकार किया जाना चाहिए।

प्र.2. वर्साय की सन्धि में किन प्रावधानों को स्वीकार किया गया? स्पष्ट कीजिए।
What provisions were accepted in the treaty of Versailles? Explain.

उत्तर

वर्साय की सन्धि में स्वीकार किये गये प्रावधान
(Provisions Accepted in the Treaty of Versailles)

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि सन् 1919 ई० में की जाने वाली इस सन्धि ने प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त कर दिया था, परन्तु सन्धि ने उन समस्त समस्याओं का अन्त नहीं किया जिनके आधार पर सभी देशों के इतने झगड़े हुए थे। मैरियट ने लिखा है, ''कुछ महीनों तक सम्मेलन की मशीन बुरी तरह किरकिर करती रही। अनेक बार उसके पूर्ण रूप से भग्न होने की आशंका हुई, पर ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के दो मुख्य प्रतिनिधि निराश न हुए और राष्ट्रपति विल्सन की सहायता से उन्होंने सन्धि शर्तें तैयार कर लीं।''

6 मई, 1919 ई० को वर्साय सन्धि का प्रारूप बनकर तैयार हो गया। इसमें 439 धाराएँ तथा 80 हजार शब्द थे। इस सन्धि में 15 भाग थे। 7 मई, 1919 ई० को जर्मनी को 230 पृष्ठ का ड्राफ्ट दिया गया और उसे 3 सप्ताह का समय विचारार्थ दिया गया। जर्मन प्रतिनिधियों ने सन्धि-पत्र के सम्बन्ध में 443 पृष्ठ का एक विस्तृत स्मरण-पत्र मित्र राष्ट्रों को दिया, जिसमें संशोधन की याचना की गई। जर्मन प्रतिनिधि सन्धि-पत्र से 231वीं धारा के उस अनुच्छेद के निकाले जाने की बात कर रहे थे, जिसके अनुसार उन्हें युद्ध का उत्तरदायी ठहराया गया था, परन्त मित्र राष्ट्र इसके लिए तैयार नहीं थे। जर्मनी से कहा गया कि वह 5 दिन के भीतर सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर कर ले अन्यथा वह युद्ध के लिए तैयार रहे। अत: जर्मनी को विवश होकर सन्धि-पत्र हस्ताक्षर करने पड़े। वर्साय के शीशमहल को सन्धि हस्ताक्षर का स्थान चयनित किया गया, क्योंकि 50 वर्ष पूर्व इसी स्थान से प्रशा के राजा को सम्पूर्ण

जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया था। मूलर हतोत्साहित एवं पीला दिखाई दे रहा था। बेल उस समय शान्त एवं सीधा खड़ा था। जर्मन प्रतिनिधियों पर दबाव डाला गया कि वे सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करें। जर्मन प्रतिनिधि ने हस्ताक्षर करते हुए कहा था—'मैंने सन्धि पर हस्ताक्षर किए हैं, इसलिए नहीं कि मैं इसे एक सन्तोषजनक आलेख मानता हूँ, वरन् इसलिए कि यह युद्ध बन्द करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।'' आखिर इस सन्धि में ऐसी क्या व्यवस्थाएँ थीं जिनसे जर्मन प्रतिनिधि सन्तुष्ट न थे? सन्धि की व्यवस्थाएँ इस प्रकार थीं—

1. **सैनिक व्यवस्थाएँ**—वुड्रो विल्सन के 14 सूत्री कार्यक्रमों में सभी देशों के लिए नि:शस्त्रीकरण की दिशा में कदम उठाने का प्रावधान रखा गया था, परन्तु इस समय इसे जर्मनी तक ही लागू किया गया। जर्मनी की थल, नभ एवं जल सेना की कुल संख्या एक लाख निश्चित कर दी। इसी में उसके अधिकारियों की संख्या भी थी। उसी नौसेना की संख्या 1,500 सीमित कर दी गई। सैनिक अधिकारी कम-से-कम 25 वर्ष तक सेना में रह सकेंगे तथा साधारण सैनिकों को कम-से-कम 12 वर्षों तक रहना पड़ेगा। जर्मनी की अनिवार्य सैन्य-सेवा जो कि बिस्मार्क के समय लागू कर दी गई थी, समाप्त कर दी गई। चुंगी के अधिकारी, वन के रक्षकों तथा तट के रक्षकों की संख्या 1913 से ज्यादा नहीं होगी। पुलिस की संख्या जनसंख्या के अनुपात पर निर्भर रहेगी। जर्मनी 6 युद्धपोत, 6 हल्के क्रूजर, 12 तोपची जहाज और 12 टारपीडो नावें रख सकता था। उसे पनडुब्बी रखने का अधिकार नहीं दिया गया। युद्ध की सामग्री उत्पादन पर रोक लगा दी गई। राइन नदी के दायें तट पर 30 मील (50 किलोमीटर) तक स्थान का असैनिकीकरण कर दिया। होलीगोलैण्ड के बन्दरगाह की किलेबन्दी नष्ट करनी पड़ी और उसे आश्वासन देना पड़ा कि भविष्य में वह कभी इसकी किलेबन्दी नहीं करेगा। शिक्षण संस्थाएँ, विश्वविद्यालय, सेवामुक्त सैनिकों की संस्थाएँ, शिकार और भ्रमण के क्लब, अर्थात् सब प्रकार के संगठन चाहे उनके सदस्यों की आय कुछ भी हो, किसी प्रकार के सैनिक मामलों से कोई सम्बन्ध नहीं रखेंगे। कार ने कहा है, ''.....1924 तक जर्मनी का जितना नि:शस्त्रीकरण कर दिया गया था वह आधुनिक इतिहास में उल्लिखित किसी भी नि:शस्त्रीकरण से अधिक कठोर एवं पूर्ण था।''
2. **प्रादेशिक व्यवस्थाएँ**—जिस वृहद् जर्मन साम्राज्य का निर्माण बिस्मार्क ने रक्त और लौह की नीति से किया था, उसका विघटन कर दिया गया 1870-71 ई० के फ्रैंको-प्रशियन युद्ध के फलस्वरूप आल्सेस तथा लॉरेन जर्मनी ने फ्रांस से छीन लिए थे। **आल्सेस तथा लॉरेन के प्रदेश फ्रांस को लौटा दिए गए।** श्लेसविग का उत्तरी भाग डेनमार्क को और दक्षिणी भाग जर्मनी को दिया गया। मेमल लिथुआनिया को दे दिया गया। पोलैण्ड का पुन: निर्माण किया गया। बाल्टिक सागर तक पहुँचने का उसका मार्ग प्रशा से होकर दिया गया। अत: पूर्वी प्रशा शेष जर्मनी से अलग हो गया। पोसेन तथा पश्चिमी प्रशा पर पोलैण्ड का अधिकार माना गया। श्लेसविग का उत्तरी भाग डेनमार्क को और दक्षिणी भाग पर जर्मनी का अधिकार माना गया। माल्मेडी तथा यूपेन के नगर बेल्जियम को सौंप दिए गए। डैन्जिग को जर्मनी से अलग कर राष्ट्र संघ के संरक्षण में सौंपा गया। इस पर शासन करने के लिए जर्मन जनता के द्वारा एक प्रतिनिधि संस्था की बात रखी गई। सुदूर पूर्व में फिनलैण्ड को मान्यता दे दी गई। सन् 1870 ई० के पश्चात् जर्मनी जिन देशों से कलात्मक वस्तुएँ एवं झण्डे लाया था, उन्हें वापस करना होगा।
3. **क्षतिपूर्ति एवं आर्थिक व्यवस्था**—5 नवम्बर, 1918 ई० को जब जर्मनी ने आत्मसमर्पण किया था, उस समय मित्र राष्ट्रों के द्वारा जर्मनी को स्पष्ट रूप से बता दिया गया था कि युद्ध में हुई क्षति की क्षतिपूर्ति उससे लिया जाएगा। जहाँ एक ओर फ्रांस यह चाहता था कि जर्मनी से युद्ध का पूर्ण व्यय लिया जाए वहीं दूसरी ओर विल्सन क्षतिपूर्ति की रकम निश्चित करना चाहता था। अंतत: निश्चित किया गया कि एक क्षतिपूर्ति आयोग निर्मित किया जाए जो मई 1921 ई० तक अपनी रिपोर्ट पेश करे। रिपोर्ट पेश होने तक (1 मई, 1921 ई० तक) जर्मनी लगभग 40 खरब डॉलर अथवा 200 खरब स्वर्ण मार्क अथवा 100 करोड़ पौण्ड क्षतिपूर्ति कर देगा। इसके आगे जर्मनी कितना देगा यह आगे निर्धारित होना था। हैजन ने लिखा है, ''जर्मनी इस बात पर भी सहमत हो गया कि वह क्षतिपूर्ति के लिए अपने प्रत्यक्ष साधनों का प्रयोग करेगा, अर्थात् वह अपने जल-पोत, कोयला, रंग, रासायनिक उत्पादन, जीवित प्राणी तथा अन्य वस्तुएँ शत्रुओं को देने पर सहमत हो गया।''
मित्र राष्ट्र यह समझ चुके थे कि जर्मनी तत्काल नगद चुकाने में असमर्थ है। अत: जर्मनी को फ्रांस एवं इटली को 10 वर्ष तक कोयला देने का, फ्रांस व बेल्जियम को घोड़े, आदि पशु देने का आश्वासन देना पड़ा। मित्र राष्ट्रों ने उसके उपनिवेश

छीनकर उसे पूर्णतया पंगु बना दिया। सीरिया एवं लेबनान फ्रांस ने इराक, ट्रांसजार्डन तथा मीरोद्वीप फिलीस्तीन व इंग्लैण्ड ने कैमरून तथा तोजोलैण्ड, फ्रांस व इंग्लैण्ड ने न्यूजीलैण्ड बेल्जियम ने, भूमध्यरेखा के दक्षिण के समस्त द्वीप ऑस्ट्रेलिया ने तथा उत्तर के समस्त द्वीप पर जापान ने अपना कब्जा कर लिया। चीन, मोरक्को, मिस्र पर जर्मनी के विशेषाधिकार समापत कर दिए गए। जर्मनी के उपनिवेश छिन जाने से तेल, रबर, सूत का कच्चा माल उसे मिलना बन्द हो गया। उसके विभिन्न कारखानों में ताले पड़ गए।

यही नहीं, सार की घाटी का प्रदेश संघ को सौंप दिया गया। 15 वर्ष पश्चात् जनमत संग्रह द्वारा उसे जर्मनी या फ्रांस को देना था। इस प्रकार जर्मनी के समस्त आर्थिक स्रोत छीन लिए गए। कीन्स के अनुसार, "जर्मनी के विरुद्ध आर्थिक उपबन्ध अदा नहीं किए जा सकते थे और उसको पूरा कराने के प्रयत्न यूरोप के लिए घातक सिद्ध हुए।" ऐसी परिस्थिति में जैसा कि लैंगसम ने सत्य ही लिखा है, क्षतिपूर्ति पर अनुमति देना मानो जर्मनी के लिए रिक्त चेक पर हस्ताक्षर करना था।

4. **न्यायिक व्यवस्था**—सन्धि की 231वीं धारा का जिसके अनुसार जर्मनी को युद्ध प्रारम्भ करने का दोषी माना गया था जर्मनी ने विरोध किया था, परन्तु कैसर विलियम II पर युद्ध प्रारम्भ करने का आरोप लगाकर यह निर्णय किया गया कि उस पर 5 देशों के न्यायाधीशों की अदालत पर मुकदमा दर्ज किया जाए। जिन सैनिकों ने युद्ध में जर्मनी की ओर से भाग लिया था उन पर मुकदमा चलाने का आदेश दिया गया। हॉलैण्ड की सरकार से मित्रता के कारण कैसर विलियम II पर मुकदमा न चल सका।

इस प्रकार मैरियट के शब्दों में कहा जा सकता है, "जर्मन साम्राज्य ने जिसका निर्माण बिस्मार्क ने रक्त एवं लौह की नीति से किया था फिर तलवार खींच ली थी, तलवार से ही उसका विनाश हुआ।"

प्र.3. वर्साय की सन्धि की आलोचना किन बिन्दुओं के आधार पर की जाती है? स्पष्ट कीजिए।
On what points is the treaty of Versailles criticized?

उत्तर

वर्साय की सन्धि की आलोचना
(Criticism of the Treaty of Versailles)

वर्साय की सन्धि की आलोचना करते हुए जनरल फाश ने कहा था कि यह सन्धि-पत्र न होकर 20 वर्ष का विरामकाल है। जनरल फाश के कहे गए, ये शब्द सत्य सिद्ध हुए और 20 वर्ष उपरान्त ही विश्व को द्वितीय विश्व युद्ध की ज्वाला में जलना पड़ा, विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से इसका आलोचनात्मक विवरण दिया है—

1. **अपमान से पूर्ण एवं थोपी गई सन्धि**—वर्साय की सन्धि जर्मनी के लिए अपमान से पूर्ण एवं उस पर जबरदस्ती लादी गई थी, सम्मेलन में जर्मनी को न बुलाना तो अपमान था ही, किन्तु सबसे शर्मनाक बात तो यह थी कि जब हस्ताक्षर करने के लिए उसके प्रतिनिधि आए तो उन्हें नुकीले तारों से घिरे मकान में ठहराया गया, उनसे कैदियों जैसा व्यवहार किया गया। उन्होंने इसे अनिच्छा से स्वीकार किया। जर्मनी के प्रतिनिधियों को धमकी देकर सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर करवाए गए। कार महोदय ने लिखा है, "वह विजेताओं द्वारा विजितों पर लादी गई थी, आदान-प्रदान की प्रक्रिया के आधार पर परस्पर बातचीत तय नहीं हुई थी। वैसे तो युद्ध समाप्त करने वाली प्रत्येक सन्धि ही एक सीमा तक आरोपित शान्ति स्थापित करने वाली सन्धि होती है, क्योंकि एक पराजित राज्य अपनी पराजय के परिणामों को कभी स्वेच्छा से स्वीकार नहीं करता, किन्तु वर्साय की सन्धि में आरोपण की मात्रा आधुनिक युग की किसी भी पिछली शान्ति सन्धि की अपेक्षा अधिक स्पष्ट थी।" जर्मनी के लोगों ने इसे नैतिक बन्धन भी नहीं माना, सन्धि पर हस्ताक्षर करते हुए एक जर्मन प्रतिनिधि ने कहा, "हमारा देश दबाव के कारण आत्म-समर्पण कर रहा है, किन्तु जर्मनी यह कभी नहीं भूलेगा कि यह अन्यायपूर्ण सन्धि है।"
2. **बदले की भावना से भरी सन्धि**—कहा जाता है कि यह सन्धि प्रतिशोधात्मक सन्धि थी। क्लेमांसू ने चुनाव इस नारे से जीता था 'हम कैसर को फांसी दे देंगे तथा जर्मनी से युद्ध की पूरी क्षतिपूर्ति वसूल करेंगे। जर्मनी के प्रति की गई सन्धि को करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि यदि जर्मनी की जीत होती तो यूरोप की स्वतन्त्रता समाप्त हो सकती थी। विल्सन के उद्देश्यों की वास्तव में जितनी प्रशंसा की जाए कम है, किन्तु उनका पूर्ण एवं यथावत पालन नहीं किया जा सका जिसका मुख्य कारण मित्र राष्ट्रों की प्रतिशोधात्मक भावना थी। जैकसन ने ठीक ही लिखा है, "यह (विल्सन) मोजेज की भाँति पहाड़ से नियम की सारिका लेकर उतरा, परन्तु मोजेज की भाँति उसने देखा कि जिनका नेतृत्व करने वह

TOUCH 'n PASS

आया था वे युद्ध की पूर्ति के उपासक थे।'' नेहरू के शब्दों में, ''मित्र राष्ट्र घृणा और प्रतिशोध की भावना से भरे थे। वे माँस का पिण्ड ही नहीं चाहते थे, बल्कि जर्मनी के अर्द्धमृत शरीर से खून की आखिरी बूँद तक ले लेना चाहते थे।''

3. **कठोर शर्तें**—सन्धि की शर्तें अत्यन्त कठोर थीं। सन्धि का मुख्य उद्देश्य लॉयड जॉर्ज के इस वक्तव्य से स्पष्ट है, ''इस सन्धि की धाराएँ युद्ध में मृत शहीदों के खून से लिखी गई हैं। जिन लोगों ने इस युद्ध को शुरू किया था, उन्हें पुन: इसे ऐसा न करने की शिक्षा अवश्य देनी है।''
4. **एकपक्षीय निर्णय**—सन्धि में किए गए अनेक निर्णय एकपक्षीय थे। जर्मनी को केवल हस्ताक्षर के लिए ही बुलाया गया था। नि:शस्त्रीकरण केवल जर्मनी के लिए ही लागू किया गया। उसे अन्य राष्ट्रों पर लागू न किया गया। आत्मनिर्णय के सिद्धान्त को जर्मनी के लिए लागू न किया गया। यह इतिहास का एक निर्णय है कि सन्धि अपने आप में तभी पूर्ण होती है, जबकि सन्धि वाले देश आपस में जुड़ सकें और उनमें आदान-प्रदान हो सके। सन्धि का अर्थ ही मेल है। जब तक दोनों पक्षों की बातें आदान-प्रदान द्वारा पूर्ण नहीं हो जातीं तब तक सन्धि पूर्ण नहीं हो सकती।
5. **प्रादेशिक व्यवस्था के दोष**—गार्विन ने लिखा है कि ''सम्पूर्ण व्यवस्था ने यूरोप के बाल्कान की रियासतों के समान बना दिया।'' जिस प्रकार टर्की साम्राज्य के टुकड़े-टुकड़े करने के उपरान्त रियासतों को जन्म दिया था उसी प्रकार जर्मनी के राज्यों को भंग कर छोटी-छोटी रियासतें बना दी गईं। ये निर्बल रियासतें समय के अन्तराल में अपने को नियन्त्रित न कर पायीं और बड़ी शक्तियों की कठपुतली बन गईं। जब छोटी रियासतों की व्यवस्था की गई तो इनकी राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों की अवहेलना की गई। फलत: छोटी रियासतों की व्यवस्था की गई तो इनकी राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों की अवहेलना की गई। फलत: छोटी रियासतों की नींव ने यूरोप में कई समस्याएँ उत्पन्न कर दीं जिनके कारण यूरोप का शक्ति सन्तुलन ऊपर से नीचे को गया।

यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या यूरोप का बाल्कान की रियासतों के रूप में परिवर्तित हो जाना अनिवार्य था? इसका उत्तर है नहीं। यूरोप का बाल्कान की रियासतों के रूप में बदल पाना रुक सकता था, परन्तु यह तभी हो सकता था, जबकि शत्रु राष्ट्र के प्रति बदले की भावना के स्थान पर सहानुभूति बरती जाती। जर्मनी ने सबसे अधिक हानि उठायी थी। इसलिए उसने अपनी कोलोनियों को प्राप्त करने हेतु प्रत्येक कार्य किया जिसका परिणाम द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में देखा जा सकता है। **अत: यह भी कहा जा सकता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बीज वर्साय सन्धि में ही विद्यमान थे।**

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. वर्साय की संधि पर कब हस्ताक्षर हुए?
(a) 26 जून, 1919 (b) 27 जून, 1919 (c) 28 जून, 1919 (d) 29 जून, 1919

प्र.2. प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों में कौन शामिल था?
(a) अमेरिका (b) जापान (c) इटली (d) ये सभी

प्र.3. प्रथम विश्व युद्ध में केंद्रीय शक्तियों में कौन शामिल थे?
(a) जर्मनी (b) आस्ट्रिया (c) हंगरी (d) ये सभी

प्र.4. बर्लिन कब क्रांति हो गई तथा विलियम कैसर द्वितीय को सपरिवार हालैण्ड भागना पड़ा?
(a) 6 नवम्बर, 1818 (b) 7 नवम्बर, 1818
(c) 8 नवम्बर, 1818 (d) 9 नवम्बर, 1818

प्र.5. प्रथम विश्व युद्ध कब से कब तक चला?
(a) 1914-1920 (b) 1914-1918
(c) 1914-1916 (d) 1914-1921

प्र.6. अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन शांति स्थापना हेतु कितने सूत्रों का प्रतिपादन किया?
(a) 11 (b) 12 (c) 13 (d) 14

TOUCH 'n PASS

प्र.7. मित्र राष्ट्रों के साथ आस्ट्रिया की सेण्ट जर्मन की संधि कब हुई?
(a) 8 सितम्बर, 1919 (b) 9 सितम्बर, 1919
(c) 10 सितम्बर, 1919 (d) 11 सितम्बर, 1919

प्र.8. मित्र राष्ट्रों की केंद्रीय राष्ट्रों से कौन-सी संधि युग्म सही है?
(a) वुल्गारिया से — न्यूली की संधि
(b) हंगरी से — त्रिआनो की संधि
(c) टर्की से — सेव्रीस की संधि
(d) उपर्युक्त सभी

प्र.9. सेंट जर्मन की संधि से आस्ट्रिया को कौन-से देशों की स्वतंत्रता को मान्यता देनी पड़ी?
(a) हंगरी (b) यूगोस्लाविया
(c) चेकोस्लोवाकिया (d) ये सभी

प्र.10. सेंट जर्मन की संधि से यूगोस्लाविया का गठन निम्न में से किससे हुआ?
(a) बोस्निया (b) हर्जेगोविना
(c) कोरिया (d) ये सभी

प्र.11. न्यूइली की संधि में कौन-सी बात नहीं थी?
1. यूनान को थ्रेस का समुद्र तट दे दिया गया।
2. बुल्गारिया की जल सेना समाप्त कर दी गई।
3. बुल्गारियो पर 35 करोड़ डॉलर की क्षति पूर्ति लादी गई।
4. बुल्गारिया की सेना 30 हजार सीमित कर दी।

(a) 1, 2 (b) 2, 3, 4
(c) 1, 2, 3 (d) केवल 4

प्र.12. लोसाने की संधि टर्की से की गई, निम्न में कौन-सा प्रदेश उससे नहीं छीना गया।
(a) सूडान (b) आर्मीनिया
(c) मिस्र (d) अरब

प्र.13. ट्रियानो की संधि हंगरी से कब हुई?
(a) 4 जून, 1920 (b) 5 जून, 1920
(c) 6 जून, 1920 (d) 7 जून, 1920

प्र.14. यह कथन किसका है 'टर्की पहले से टर्की की एक छाया मात्र रह गई और उसका अस्तित्व एशियाई राज्य अंगोरा के आसपास बचा रहा''?
(a) पीगू (b) आर्नोल्ड टायनबी
(c) रैम्जेम्योर (d) बेन्स

प्र.15. जार्ज लायड इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री कब बना?
(a) 1916 (b) 1917 (c) 1918 (d) 1920

प्र.16. यह कथन किसका है ''जर्मनी के विरुद्ध आर्थिक उपबंध अदा नहीं किए जा सकते थे और उसको पूरा कराने के प्रयत्न यूरोप के लिए घातक सिद्ध हुए''?
(a) कीन्स (b) गूच (c) वेन्स (d) कैटलनी

प्र.17. प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण क्या था?
(a) जर्मनी का आस्ट्रिया पर आक्रमण (b) हंगरी के राजकुमार व उसकी पत्नी की हत्या
(c) इंग्लैण्ड का जर्मनी पर आक्रमण (d) जर्मनी का जापान पर आक्रमण

TOUCH 'n' PASS

प्र.18. आस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कब की?
(a) 27 जुलाई, 1914 (b) 28 जुलाई, 1914
(c) 29 जुलाई, 1914 (d) 30 जुलाई, 1914

प्र.19. इंग्लैण्ड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कब की?
(a) 3 अगस्त, 1914 (b) 4 अगस्त, 1914
(c) 5 अगस्त, 1914 (d) 6 अगस्त, 1914

प्र.20. प्रथम विश्व युद्ध की इतिश्री कब हुई?
(a) 11 नवम्बर, 1918 (b) 12 नवम्बर, 1918
(c) 13 नवम्बर, 1918 (d) 14 नवम्बर, 1918

प्र.21. वर्साय की संधि जर्मनी की थल, नभ एवं जल सेना कितनी निश्चित कर दी गई?
(a) 50 हजार (b) 1 लाख
(c) 1.50 लाख (d) 2 लाख

प्र.22. यह कथन किसका है ''जर्मनी इस बात पर भी सहमत हो गया कि हव क्षतिपूर्ति के लिए अपने प्रत्यक्ष साधनों का प्रयोग करेगा अर्थात् वह अपने जलपोत, कोयला, कोयला, रंग, रासायनिक उत्पादन, जीवित प्राणी तथा अन्य वस्तुएँ शत्रुओं को देने पर सहमत हो गया।''
(a) रैम्जेम्योर (b) आर्नोल्ड टायनबी
(c) हेजन (d) मार्शल

प्र.23. वर्साय की संधि से आल्सेस तथा लारेन प्रदेश किसे मिले?
(a) इंग्लैण्ड (b) फ्रांस
(c) जापान (d) इटली

प्र.24. प्रथम विश्व युद्ध का कौन-सा कारण था?
(a) गुप्त कूटनीति (b) राष्ट्रवाद की भावना
(c) सैनिकवाद की भावना (d) ये सभी

प्र.25. निम्न में कौन-सा प्रथम विश्व युद्ध का कारण नहीं था?
(a) आल्सेस एवं लॉरेन प्रदेश (b) अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव
(c) बोस्निया एवं हर्जेगोविना (d) इंग्लैण्ड का जर्मनी पर दबाव बनाना

उत्तरमाला

1. (c)	**2.** (d)	**3.** (d)	**4.** (c)	**5.** (b)	**6.** (d)	**7.** (c)	**8.** (d)	**9.** (d)	**10.** (d)
11. (c)	**12.** (b)	**13.** (a)	**14.** (d)	**15.** (a)	**16.** (a)	**17.** (b)	**18.** (b)	**19.** (b)	**20.** (a)
21. (b)	**22.** (c)	**23.** (b)	**24.** (d)	**25.** (d)					

TOUCH 'n' PASS

UNIT-VII

बोल्शेविक क्रांति

The Bolshevik Revolution

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. बोल्शेविक क्रांति से आप क्या समझते हैं?

What do you understand by Bolshevik revolution?

उत्तर रूस में 1917 में हुई क्रांति को ही बोल्शेविक क्रांति कहा जाता है, क्योंकि बोल्शेविक नामक राजनीतिक समूह ने इस क्रांति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और क्रांति की दशा एवं दिशा निर्धारित की थी। रूस के जार निकोलस द्वितीय का स्वेच्छाचारी शासन इस क्रांति के उत्तरदायी कारणों में सबसे महत्त्वपूर्ण था।

प्र.2. बोल्शेविक क्रांति के जनक कौन है?

Who was the father of Bolshevik revolution?

उत्तर बोल्शेविक क्रांति के जनक लेनिन हैं। व्लादिमीर लेनिन, जिसे व्लादिमीर इलिच लेनिन भी कहा जाता है, मूल नाम व्लादिमीर इलिच उल्यानोव रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के संस्थापक, प्रेरक और बोल्शेविक क्रांति के नेता (1917), वास्तुकार (1917-24) सोवियत राज्य के प्रमुख निर्माता है।

प्र.3. 1917 की बोल्शेविक क्रांति के क्या कारण थे?

What were the causes for the Bolshevik revolution of 1917?

उत्तर बोल्शेविक क्रांति का एक कारण रूस की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का खराब होना था, रूस में उच्च वर्ग के लोगों को सारे अधिकार प्राप्त थे और निम्न वर्ग के लोगों को किसी भी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे। निम्न वर्ग के लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी और इनकी इस स्थिति ने ही बोल्शेविक क्रांति को जन्म दिया।

प्र.4. बोल्शेविक क्रांति का विश्व पर क्या प्रभाव पड़ा?

What was the impact of the Bolshevik revolution on the world?

उत्तर रूसी क्रांति का प्रभाव समाजवाद के पक्ष में गया। बोल्शेविक निजी संपत्ति की व्यवस्था के पूरी तरह खिलाफ थे। ज्यादातर उद्योगों और बैंकों का नवंबर, 1917 में ही राष्ट्रीयकरण किया जा चुका था। उनका स्वामित्व और प्रबंधन सरकार के नियंत्रण में आ चुका था। जमीन को सामाजिक संपत्ति घोषित कर दिया गया।

प्र.5. बोल्शेविक क्रांति क्यों सफल हुई?

Why was the Bolshevik revolution successful?

उत्तर सरकार ने ग्रामीण इलाकों में भूमि के मुद्दे को हल नहीं किया और किसानों की अधिक भूमि पर नियंत्रण की इच्छा पूरी नहीं हुई। परिणामस्वरूप भूस्वामियों से भूमि की जब्ती व्यापक हो गई। जारी आर्थिक संकट ने अंतिम सरकार को बदनाम किया और बोल्शेविकों की अपील को मजबूत किया।

प्र.6. बोल्शेविक क्रांति की शुरुआत कैसे हुई?

How the Bolshevik revolution started?

उत्तर ब्लडी संडे नरसंहार ने 1905 की रूसी क्रांति को जन्म दिया, जिसके दौरान गुस्साए श्रमिकों ने पूरे देश में कई गंभीर हड़तालों का जवाब दिया। खेत मजदूर और सैनिक इस कार्य में शामिल हो गए, जिससे "सोवियत" नामक श्रमिक-प्रधान परिषदों का निर्माण हुआ।

TOUCH 'n PASS

प्र.7. रूसी क्रांति के मुख्य उद्देश्य क्या थे?
What were the main objectives of the Russian revolution?

उत्तर रूसी क्रांतिकायों का मुख्य उद्देश्य प्रथम विश्व युद्ध से रूस को हटाना। जमीनों को किसानों के नियंत्रण में देना। कारखाने पर मजदूरों का नियंत्रण होना और गैर-रूसी जातियों को समानता का दर्जा देना आदि कारण थे। जब 1917 में रूस की क्रांति हुई तब रूस पर जार का निरंकुश शासन था।

प्र.8. बोल्शेविक रूसी क्रांति में क्या चाहते थे?
What did the Bolsheviks want in the Russian revolution?

उत्तर बोल्शेविक एक क्रांतिकारी दल था, जो कार्ल मार्क्स के विचारों के प्रति प्रतिबद्ध था। उनका मानना था कि मजदूर वर्ग, किसी समय, शासक वर्गों के आर्थिक और राजनीतिक नियंत्रण से खुद को मुक्त कर लें।

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. लेनिन एवं स्टालिन के अन्तर्गत 1917 से 1921 के बीच रूस की विदेश नीति का उल्लेख कीजिए।
Mention the foreign policy of Russia between 1917 and 1921 under Lenin and Stalin.

उत्तर

लेनिन एवं स्टालिन के अन्तर्गत रूस की विदेश नीति
(Foreign Policy of Russia Under Lenin and Stalin)

1917 ई० में रूस में क्रांति हुई। क्रांति के परिणामस्वरूप रूस से जार के तानाशाही शासन का अन्त हुआ व बोल्शेविक सरकार की स्थापना हुई। इस सरकार के समय में रूस में साम्यवादी शासन को लागू किया गया। यूरोप के अन्य देशों के लिए यह एक चौंकाने वाली घटना थी, क्योंकि अधिकांश देश पूँजीवादी थे तथा वहाँ प्रजातान्त्रिक अथवा राजन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था विद्यमान थी। रूसी क्रांतिकारियों को विश्वास था कि उनकी क्रांति का प्रभाव विश्व के अन्य देशों पर भी पड़ेगा व वहाँ भी क्रांतियाँ होंगी। लेनिन ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए कहा था, "हम सभी राष्ट्रों से शान्ति का आह्वान करेंगे और सभी उपनिवेशों एवं अधीन राज्यों को स्वतन्त्र किए जाने की माँग करेंगे.....जर्मनी, इंग्लैण्ड और फ्रांस की सरकारें इन माँगों को स्वीकार नहीं करेंगी। अत: हमें संघर्ष के लिए तैयार रहना पड़ेगा। हम एशिया के उपनिवेशों एवं अधीनस्थ देशों की पीड़ित एवं शोषित जनता को विद्रोह करने के लिए सुनियोजित ढंग से प्रेरित करेंगे। हम समाजवादी सर्वहारा वर्ग को भी, अपनी-अपनी सरकारों के विरुद्ध विद्रोही बनाएँगे।" पूँजीवादी देशों ने इस प्रकार की रूसी नीति का घोर विरोध किया व प्रत्युत्तर में यूरोप में फासीवाद व नाजीवाद का जन्म हुआ, क्योंकि यूरोपीय देशों का विचार था कि साम्यवाद का जवाब अधिनायकवाद ही था। रूस में साम्यवाद व साम्यवादी विचारधाराओं को फैलने से रोकने के लिए यूरोप के पूँजीवादी देशों ने यथासम्भव प्रयास किया। इन परिस्थितियों में रूस के लिए किसी भी देश से सम्बन्ध बनाना कठिन था।

1917 ई० से 1945 ई० के बीच रूस को विभिन्न परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। अध्ययन की सुविधा के लिए रूसी विदेश-नीति को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) रूसी विदेश नीति (1917–1921 ई०)
(ii) रूसी विदेश नीति (1921–1934 ई०)
(iii) रूसी विदेश नीति (1934–1938 ई०)
(iv) रूसी विदेश नीति (1938–1939 ई०)
(v) रूसी विदेश नीति (1939–1941 ई०)
(vi) रूसी विदेश नीति (1941–1946 ई०)

प्रत्येक काल में रूसी वैदेशिक नीति का क्रमवार वर्णन निम्नवत् है—

(i) **रूसी विदेश नीति** (1917–1921 ई०) (Russian Foreign Policy)—1917 ई० के पश्चात् रूसी वैदेशिक नीति के दो प्रमुख उद्देश्य थे—प्रथम तो यह कि साम्यवादी (बोल्शेविक) क्रांति को विश्वव्यापी किस प्रकार बनाया जाए तथा दूसरा, पश्चिमी देशों द्वारा किए जा रहे साम्यवाद के विरोध का सामना किस प्रकार किया जाए। अपने इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए रूस ने अनेक कार्य किए। लेनिन का विचार था कि क्रांति साम्यवाद की सफलता का प्रथम चरण था व यह क्रांति शीघ्र ही अन्य देशों में भी फैलेगी। लेनिन ने कहा था, **"यूरोप में एक समाजवादी क्रांति होगी, यह एक वैज्ञानिक भविष्यवाणी है।"**

TOUCH 'n PASS

इस भविष्यवाणी को साकार रूस प्रदान करने के लिए साम्यवादियों ने "**विश्व के मजदूरो एक हो जाओ, तुम्हें अपने बन्धनों के अतिरिक्त और कुछ नहीं खोना है**" का प्रचार करना प्रारम्भ किया। इसी उद्देश्य के लिए मार्च 1918 ई० में 'तृतीय साम्यवाद अन्तर्राष्ट्रीय संगठन' (कामिन्टर्न) की स्थापना मास्को में की। इसका मुख्य कार्य विश्व क्रांति की योजना बनाना, पूँजीवादी देशों में साम्यवादी साहित्य भेजना, कृषकों व मजदूरों को क्रांति के लिए प्रेरित करना था। इसी कारण पूँजीवादी राष्ट्र कामिन्टर्न पर विशेष नजर रखते थे। कामिन्टर्न के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बानलाव ने लिखा है, "कामिन्टर्न की स्थापना के बाद क्रांतिकारी आन्दोलन, सोवियत संघ के वैदेशिक सम्बन्धों का एक स्थायी तत्त्व बन गया था।"

रूस के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप अनेक देशों में क्रांतियाँ तथा विद्रोह हुए। 1919 ई० में हंगरी में साम्यवादी (Communist) शासन की स्थापना हुई, किन्तु पूँजीवादी राष्ट्रों ने इसे असफल बना दिया। कामिन्टर्न ने 1919 ई० में बवेरिया में भी विद्रोह कराया। 1920 ई० में इटली के विभिन्न भागों में भी साम्यवादी आन्दोलन हुए। कामिन्टर्न द्वारा अनेक देशों में साम्यवादी आन्दोलन कराने के प्रयास किए गए, किन्तु वह सफल न हो सके।

3 मार्च, 1918 ई० को रूस द्वारा जर्मनी के साथ ब्रेस्टलिटोवस्क की सन्धि की गयी। इससे मित्र राष्ट्र रूस से नाराज हो गए, क्योंकि उन्होंने इसे इन्हें हराने के लिए उठाया हुआ एक कदम समझा। रूस की सरकार ने जार द्वारा पश्चिमी देशों से लिए गए ऋण को भी लौटाने से इन्कार कर दिया। इससे भी रूस व पश्चिमी देशों के सम्बन्ध 1917 ई० से 1921 ई० के मध्य अत्यन्त कटु बने रहे।

प्र.2. 1921 से 1938 तक रूस की विदेश निति का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
Briefly describe the foreign policy of Russia from 1921 to 1938.

उत्तर

रूसी विदेशी नीति (1921–1938)
Foreign Policy of Russia (1921-1938)

रूसी विदेश नीति के इस चरण में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। रूस अपनी आन्तरिक स्थिति व जर्जर आर्थिक स्थिति के कारण इस बात के लिए विवश हुआ कि वह अपनी नीति में परिवर्तन करे। शूमां ने लिखा है, "1921 ई० का वर्ष सोवियत रूस की आन्तरिक एवं बाह्य नीति में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन का समय था" रूस की वैदेशिक नीति के इस समय तीन प्रमुख उद्देश्य थे—

1. जर्मनी को पश्चिमी देशों के गुट में न जाने देना।
2. पश्चिमी देशों से कूटनीति सम्बन्ध स्थापित करना।
3. पश्चिमी राष्ट्रों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारना।

अपनी इस नीति के अन्तर्गत रूस ने अन्य देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया, किन्तु पश्चिमी देश ऐसा करने के लिए उत्सुक न थे। रूस के विदेशमन्त्री चिचेरिन के प्रयत्नों से जेनेवा में होने वाले सम्मेलन में आमन्त्रित किया गया। रूस ने इस सम्मेलन में पश्चिमी देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया, किन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सका। फिर भी अप्रैल, 1922 ई० में हुए इस जेनेवा सम्मेलन से रूस को अनेक लाभ हुए। रूस व इटली के मध्य एक व्यापारिक सन्धि हो गई। इससे अधिक महत्त्वपूर्ण जर्मनी के साथ 16 अप्रैल, 1922 ई० को हुई **रैपेलो की सन्धि** (Teraty of Rapallo) थी। इस सम्मेलन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए हार्डी ने लिखा है "इस सम्मेलन का एक-मात्र मूर्त परिणाम रूस और जर्मनी के बीच रैपेलो की सन्धि का होना था जिसने अन्य देशों के संशय व अविश्वास को और बढ़ा दिया।"

रैपेलो की सन्धि के द्वारा जर्मनी ने रूस को मान्यता (Recognition) प्रदान की व दोनों के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुए। इस प्रकार इस सन्धि से रूस को बहुत लाभ हुआ। लैंगसम ने इसके महत्त्व के विषय में लिखा है—"इस सन्धि ने रूस की लन्दन और पेरिस पर निर्भरता को कम कर दिया।" ई०एफ० कार ने भी इसके विषय में लिखा है, "दो अभिशक्त स्वाभाविक रूप से एक साथ मिल गए तथा रैपेलो की सन्धि ने दोनों को दस वर्षों से भी अधिक समय के लिए मित्र बनाए रखा।"

इसके अतिरिक्त भी रूस ने अनेक सन्धियाँ की। 1922 ई० में तुर्की, 1926 ई० में जर्मनी व लिथुआनिआ, 1927 ई० में ईरान, पोलैण्ड, लाटविया व 1932 ई० में इस्टानियों से सन्धि की। इसी बीच इंग्लैण्ड, फ्रांस व इटली ने रूस को मान्यता प्रदान कर दी। रूस यद्यपि पश्चिमी देशों से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा था, किन्तु कामिन्टर्न के कारण इस कार्य में कठिनाई होती थी। इस विषय में शूमां का उपर्युक्त कथन उल्लेखनीय है, "सोवियत राजनीतिज्ञ सहयोग की बातें करते, लेकिन कामिन्टर्न क्रांति का उपदेश देता था।"

रूसी विदेशी नीति (1934—1938 ई०) (Russian Foreign Policy)—यूरोप में इस काल में कुछ ऐसी घटनाएँ हुई जिन्होंने रूसी विदेश नीति को व्यापक रूप से प्रभावित किया। इसी काल में जर्मनी में हिटलर का उदय हुआ जो साम्यवाद का घोर दुश्मन था तथा साम्यवाद को जड़ से समाप्त करना चाहता था। हिटलर के अभ्युदय ने रूस में घोर संकट उत्पन्न कर दिया, क्योंकि

पश्चिमी राष्ट्र पहले से ही उसके विरोधी थे। अत: रूस के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह अपनी सुरक्षा के लिए पश्चिमी राष्ट्रों से मित्रता करे। शूमां ने तत्कालीन स्थिति के विषय में लिखा है, "फासीवाद के कारण रूस का समाजवादी व उदारवादी राष्ट्रों के साथ सहयोग अनिवार्य हो गया.....इसका परिणाम सोवियत कूटनीति में क्रांतिकारी परिवर्तन तथा अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद का पुनर्वाचन था।"

अत: रूस ने पोलैण्ड, ईरान, लाटविया, अफगानिस्तान, आदि के साथ समझौते किए। रूस ने राष्ट्र-संघ की सदस्यता भी ग्रहण कर ली व उसका घोर समर्थक बन गया। 1932 ई० में रूस ने फ्रांस के साथ परस्पर सहयोग की सन्धि की। फ्रांस भी जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति से भयभीत था, अत: वह इस सन्धि के लिए तैयार हो गया। इसी वर्ष रूस ने चेकोस्लोवाकिया से भी सन्धि की। रूस की इस नीति को फासिस्टवादी शक्तियों ने गम्भीरता से लिया व साम्यवाद के विरुद्ध **एण्टी कामिन्टर्न समझौता** (Anti-Comminterm Pact) किया।

इस प्रकार 1934–1938 ई० के मध्य यद्यपि रूस ने पश्चिमी देशों के साथ सहयोग की नीति अपनाई, किन्तु व्यावहारिक रूप में यह मित्रता वास्तविक न हो सकी। पश्चिमी देश फासिस्टवाद व साम्यवाद में परस्पर संघर्ष कराना चाहते थे, रूस से उन्हें कोई सहानुभूति नहीं थी। शूमां ने लिखा है, "इस उद्वेगपूर्ण मैत्री भाव में पारस्परिक विश्वास का अभाव था।" इस प्रकार पश्चिमी देश साम्यवाद व फासिस्टवाद दोनों को ही रोकना चाहते थे। इसी कारण 1938 ई० के म्यूनिख सम्मेलन में इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली व जर्मनी ने चेकोस्लोवाकिया का विभाजन कर दिया तथा रूस को इस सम्मेलन में आमन्त्रित भी नहीं किया गया। रूस के लिए यह अत्यन्त चिन्ता का विषय बन गया व उसे इंग्लैण्ड और फ्रांस पर विश्वास न रहा।

प्र.3. 1934 से 1945 तक रूस की विदेश नीति का उल्लेख कीजिए तथा स्टालिन का मूल्यांकन कीजिए।
Mention the foreign policy of Russia from 1934 to 1945 and evaluate stalin.

उत्तर

रूस की विदेश नीति (1934–1945)
Foreign Policy of Russia (1934-45)

म्यूनिख समझौते के कारण रूस की स्थिति अत्यन्त दुरूह हो गई। इस समझौते ने उसे पुन: मित्रविहीन कर दिया था। यूरोप में युद्ध की आशंका बढ़ती जा रही थी। रूस स्वयं को युद्ध से अलग रखना चाहता था। रूस को यह स्पष्ट हो गया कि युद्ध से बचने का एक मात्र रास्ता जर्मनी से सन्धि करने का था। अत: उसने इस दिशा में प्रयत्न किए व अगस्त, 1939 ई० में जर्मनी से उसने अनाक्रमण सन्धि कर ली।

रूस की विदेशी नीति (1939—1941 ई०) (Foreign Policy of Russia)—रूस व जर्मनी के मध्य हुई इस सन्धि ने पश्चिमी देशों को चिन्तित कर दिया। रूस व जर्मनी के मध्य सन्धि हिटलर की महान् उपलब्धि थी। इस सन्धि के होते ही जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया। रूस ने प्रारम्भ में इस युद्ध में भाग नहीं लिया व अपनी सैनिक शक्ति की वृद्धि करने में लगा रहा। जर्मनी की सेनाओं के पोलैण्ड में प्रवेश करने के बाद रूस ने भी पूर्वी पोलैण्ड पर अधिकार कर लिया। इसके बाद रूस ने एस्टोनिया, लाटविया तथा लिथुआनिआ पर जुलाई, 1940 में अधिकार कर लिया। रूस ने फिनलैण्ड के भी अनेक भागों पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् रोमानिया के भी कुछ-भू-भाग पर रूस ने अधिकार कर लिया। इस प्रकार इस अवधि में रूस ने अपनी सीमाओं को सुरक्षित किया, लेकिन रूस की बढ़ती हुई शक्ति ने हिटलर को चिन्ता में डाल दिया व वह रूस पर आक्रमण की योजना बनाने लगा, ताकि उसकी शक्ति को कुचला जा सके तथा उन स्थानों पर भी अधिकार किया जा सके जहाँ तेल व अनाज के भण्डार थे। जापान ने जर्मनी का विरोध किया व रूस के साथ 13 अप्रैल, 1941 ई० में अनाक्रमण की सन्धि कर ली।

रूस की विदेश नीति (1941—1945 ई०) (Foreign Policy of Russia)—22 जून, 1941 ई० को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के कारण रूस ने पुन: पश्चिमी देशों से मित्रता का हाथ बढ़ाया। रूस इस समय तक शक्तिशाली हो चुका था तथा मित्र राष्ट्रों को जर्मनी के विरुद्ध सहायता की आवश्यकता थी। अत: मई, 1941 में इंग्लैण्ड व जून में रूस की विशेष सहायता न की, तथापि रूस ने जर्मनी की सेनाओं को सफल न होने दिया। अन्तत: जर्मनी की पराजय हुई।

स्टालिन का मूल्यांकन (Evaluation of Stalin)

स्टालिन नि:सन्देह एक योग्य प्रशासक था। उसने वास्तविक अर्थों में रूस का निर्माण किया। जिस समय वह शक्ति में आया रूस की आन्तरिक स्थिति, आर्थिक स्थिति जर्जरित थी तथा विदेशों में सम्मान न था। रूस को एक पिछड़ा हुआ देश माना जाता था,

TOUCH 'n' PASS

किन्तु अपनी कुशल नीतियों के द्वारा न केवल उसने रूस को एक समृद्धशाली देश बनाया वरन् ऐसा संविधान भी प्रदान किया जो आज भी लगभग उसी रूप में विद्यमान है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उसने न केवल रूस के लिए सम्मान अर्जित किया वरन् रूस को विश्व के अग्रणी राष्ट्रों में ला खड़ा किया। स्टालिन के कार्यों का मूल्यांकन करते हुए वेन्स ने लिखा है, "1941 ई० में रूस नेतृत्व, जनशक्ति, सैन्य शक्ति, कृषि एवं औद्योगिक संसाधनों के कारण उस पर (रूस) होने वाले आक्रमण का सामना करने के लिए 1914 ई० की तुलना में कहीं अधिक सुसज्जित था। नि:सन्देह यह सब कुछ रूस को स्टालिन ने ही उपलब्ध कराया था।" 6 मार्च, 1953 ई० को स्टालिन की मृत्यु हुई।

प्र.4. लेनिन के युग एवं कार्यों का उल्लेख कीजिए।
Mention the age and works of Lenin.

उत्तर

लेनिन का युग (1917–1924)
The Age of Lenin (1917-1924)

1917 ई० की रूसी क्रांति तथा बोल्शेविकों द्वारा सत्ता प्राप्त करने में जिस व्यक्ति का सर्वाधिक योगदान रहा था, उसका नाम ब्लादिमिर इलियच यूलियानोव (Vladimir Ilyich Ulyanov) था, जो निकोलाई लेनिन के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। लेनिन का जन्म 1870 ई० में सिमविर्स्क में हुआ था। सिमविर्स्क का नाम अब लेनिन के नाम पर लैनिनिस्क रख दिया गया है। 17 वर्ष की आयु में लेनिन ने काजान विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया, किन्तु उग्रवादी गतिविधियों के कारण उसे विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिया गया, तब उसने सेण्ट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया तथा 1891 ई० में विधि की उपाधि प्राप्त की, किन्तु उसने अपनी आन्दोलनकारी प्रवृत्ति को न छोड़ा। अत: उसे दण्डस्वरूप 1897 ई० में साइबेरिया भेज दिया गया। साइबेरिया में उसे 1900 ई० तक रहना पड़ा। साइबेरिया में रहना भी लेनिन की विचारधारा को परिवर्तित न कर सका तथा वह पूर्ववत् मजदूरों के उत्थान के लिए कार्य करता रहा। अपने विचारों को रूस में कार्यान्वित न होता देखकर लेनिन स्विट्जरलैण्ड चला गया व वहाँ रहकर क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करता रहा। 1917 ई० में वह रूस आ गया व क्रांति का नेतृत्व कर पुरातन व्यवस्था व अत्याचारी शासन का अन्त करने में सफल हुआ।

लेनिन के कार्य (Works of Lenin)

बोल्शेविक क्रांति के पश्चात् लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक सरकार की स्थापना हुई। इस सरकार के समक्ष अनेक समस्याएँ थीं जिनका समाधान करना आवश्यक था। इन समस्याओं में प्रमुख रूस में शान्ति की स्थापना करना, साम्यवादी सिद्धान्तों के आधार पर रूस की सामाजिक एवं आर्थिक दशा में परिवर्तन करना तथा रूस में बाह्य शक्तियों के हस्तक्षेप को रोकना था। तत्कालीन सरकार के समक्ष विद्यमान समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए स्वयं लेनिन ने कहा था, "हमारा उद्देश्य किसानों को भूमि, भूखों को खाना, रूस को शक्ति एवं जर्मनी में शान्ति स्थापित करना है।" अत: उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के लिए लेनिन ने निम्नलिखित कार्य किए—

शान्ति की स्थापना (Peace in Russia)—7 नवम्बर, 1917 ई० को यद्यपि बोल्शेविकों ने सत्ता प्राप्त कर ली थी, किन्तु उन्हें आगामी तीन वर्षों तक गणतन्त्र विरोधियों से संघर्ष करना पड़ा। बोल्शेविकों के प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी मेन्शेविक थे, जिन्हें बाह्य देशों में सहायता प्राप्त हो रही थी। बोल्शेविकों ने इन शक्तियों का जमकर विरोध किया। अन्तत: 1920 ई० के अन्त तक बोल्शेविक रूस में शान्ति स्थापना करने में सफल हो गए।

नवीन संविधान (New Constitution)—बोल्शेविक सरकार ने एक नवीन संविधान की भी रचना की जिसे 1918 ई० की ग्रीष्मकालीन ऋतु से लागू कर दिया। इस संविधान के द्वारा ही **'रूसी साम्यवादी संघीय सोवियत गणतन्त्र'** की स्थापना हुई। इस संविधान के द्वारा रूस के सभी वयस्कों को मताधिकार प्रदान किया गया। शासन की समस्त सत्ता 'अखिल रूसी कांग्रेस' में निहित हो गई। कानूनों को पारित करने के लिए एक समिति का गठन किया गया जिसे 'अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति' कहा गया। इस समिति के सदस्यों का निर्वाचन 'अखिल रूसी कांग्रेस' द्वारा किया जाता था। इसके अतिरिक्त भी अनेक कांग्रेसी थी, उदाहरणार्थ, जिला कांग्रेस, काउण्टी कांग्रेस, मण्डलीय कांग्रेस तथा प्रान्तीय कांग्रेस। इन कांग्रेसों में एक 'पीपुल्स कमीसार कांग्रेस' प्रमुख थी व इसके कार्य व अधिकार 'कैबिनेट' (मन्त्रिमण्डल) के समान थे।

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. रूस की बोल्शेविक क्रांति से आप क्या समझते हैं? इस क्रांति की सफलता के कारणों एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
What do you understand by Bolshevik revolution? Throw light on the causes of the success of this revolution and importance.

उत्तर

बोल्शेविक क्रांति
(Bolshevik Revolution)

बोल्शेविकों ने प्रावदा (Pravada) नामक समाचार-पत्र के माध्यम से अपने विचारों का प्रचार एवं प्रसार शुरू कर दिया। सम्पूर्ण रूस में बोल्शेविकों का स्वर गूंज रहा था, "युद्ध समाप्त हो, किसानों को खेत मिलें तथा गरीबों की रोटी।" 3 अप्रैल को लेनिन पेट्रोगाड पहुँचा। मई, 1917 को ट्राट्स्की अमेरिका से पैट्रोगाड पहुँचा। ट्राटस्की ने जो कि एक अन्य दल का नेता था बोल्शेविक दल से सहयोग किया। जुलाई में करेन्स्की सरकार ने बोल्शेविकों को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। लेनिन भागकर फिनलैण्ड चला गया उसने वहीं से बोल्शेविकों को पत्र लिखकर उनका मार्ग दर्शन किया। उसने अपनी नीतियों एवं विचारों से उन्हें गुप्त पत्रों द्वारा अवगत कराया। लेनिन ने 23 अक्टूबर, को सशस्त्र क्रांति का दिन चुनने का आदेश दिया। सेना ने युद्ध करने से इंकार कर दिया। मजदूरों ने हड़ताल कर दी। 6 नवम्बर को लाल रक्षकों (Red Gaurds) ने पैट्रोगाड के रेलवे स्टेशनों, टेलीफोन केन्द्रों, सरकारी भवनों में अधिकार कर लिया। ये रेड गार्ड बोल्शेविक दल के स्वयं-सेवक थे। इनकी संख्या 25 हजार थी, परन्तु पैट्रोगाड की सेना का सहयोग प्राप्त होने से इनकी शक्ति अत्यधिक बढ़ गई थी। 7 नवम्बर को करेन्स्की रूस छोड़कर भाग गया। बिना रक्त बहाये रूस की राजधानी पर बोल्शेविक दल का अधिकार हो गया। ट्राटस्की ने सोवियत के पैट्रोगाड को जो अपनी रिपोर्ट भेजी थी उसने कहा था, "लोग कहते थे कि जब बलवा होगा तो क्रांति रक्त की नदियों से डूब जाएगी, परन्तु हमने एक भी व्यक्ति की मृत्यु की खबर नहीं सुनी। इतिहास में ऐसा कोई भी उदाहरण नहीं है कि किसी क्रांति में इतने लोग सम्मिलित हों और वह रक्तहीन हो।" 8 नवम्बर, 1917 को नई सरकार ने अपना मन्त्रिमण्डल बनाया। इस सरकार का अध्यक्ष लेनिन बना। ट्राटस्की को विदेश मन्त्रालय दिया गया और संविधान सभा के चुनाव की घोषणा की गई जो कि 15 नवम्बर को हुए, परन्तु बोल्शेविक दल को बहुमत न मिल पाने पर लेनिन ने इस सभा को प्रतिक्रियावादी सभा कहा और इसे भंग कर दिया। इस प्रकार रूस में पुर्णतया सर्वहारा वर्ग का अधिनायकतन्त्र स्थापित कर दिया गया।

डेरी और जारमेन के शब्दों में "युद्ध ने अवसर दिया और भाग्य ने लेनिन जैसा नेता पैदा किया। इस नेता की आत्मशक्ति और बुद्धि ने अवसर को परख कर परिस्थिति पर विजय पा ली।"

ब्रेस्ट लिटोवस्क की सन्धि (Treaty of Brest Litovsk)—बोल्शेविक सरकार ने तुरन्त ही रूस के युद्ध से हाथ खींच लिए जाने की घोषणा की। मित्र राष्ट्रों के उस ओर ध्यान न दिए जाने से लेनिन के प्रयत्नों से रूस ने जर्मनी के साथ 3 मार्च, 1918 ई० को ब्रेस्ट लिटोवस्क की सन्धि की। इस सन्धि के अनुसार—

(1) रूस ने एस्टोनिया, लिथुआनिया, लाटविया, फिनलैण्ड, आलैण्ड, पोलैण्ड, कोरलैण्ड से अपने अधिकार त्याग दिए। उसने यूक्रेन से अपनी सेनाएँ हटा लीं। रूस ने जर्मनी को तीन करोड़ पौण्ड युद्ध की क्षतिपूर्ति देने का वचन दिया।

हालाँकि यह सन्धि रूस के लिए अपमानजनक थी, परन्तु वह युद्ध से अलग हो गया और आन्तरिक समस्याओं की ओर अपना ध्यान दे सका। रूस में सरकार के विरोधियों की कमी न थी। रूस में तुरन्त ही गृह-युद्ध प्रारम्भ हो गया, किन्तु लेनिन ने बड़ी कार्यकुशलता से अपने विरोधियों को कुचल दिया और रूस को आर्थिक दृढ़ता प्रदान की।

बोल्शेविक क्रांति की सफलता के कारण
(Causes of the Success of the Bolshevik Revolution)

बोल्शेविक क्रांति की सफलता के निम्नलिखित कारण थे—

1. **युद्ध का विरोध**—1905 से 1917 ई० तक के समय में जारशाही नीतियों में कोई परिवर्तन न देखकर जनता सशंकित हो गई थी। अब उसका यह विचार बन चुका था कि जारशाही का अन्त करके ही रूसी सन्तुलन को ठीक किया जा सकता है। अत: जैसे-जैसे क्रांतिकारी भावनाएँ देश में बढ़ती गईं, जारशाही निरंकुश होती चली गई और अन्तत: रूस में अस्थायी सरकार की स्थापना हुई, किन्तु अस्थायी सरकार ने भी युद्ध जारी रखने की नीति अपनाई। कैटलबी ने लिखा है। "युद्ध और क्रांति दोनों को एक साथ जारी रखने के निष्फल प्रयास के पश्चात् करेन्स्की की नरम दल की सरकार नवम्बर,

1917 ई० में लेनिन और ट्राटस्की के नेतृत्व में बोल्शेविकों द्वारा पलट दी गयी। बोल्शेविक पार्टी का यद्यपि अल्पमत था, किन्तु उसकी स्थिति फ्रांस के जैकोबिनों के समान कार्य और निर्णय करने वालों की थी।"

2. **यूरोपीय राष्ट्रों का हस्तक्षेप नहीं**—प्रथम विश्व युद्ध जारी होने के कारण यूरोपीय राष्ट्र रूसी क्रांति में सशस्त्र हस्तक्षेप न कर सके।
3. **विरोधियों में फूट**—विरोधियों की दोषपूर्ण नीति एवं फूट का लाभ बोल्शेविकों ने उठाया।
4. **समय की अनुकूलता**—कठिन समय में भी बोल्शेविक गुपचुप अपना प्रचार अभियान चलाते रहे। वे लेनिन के निर्देशों का पालन करते रहे। बोल्शेविकों ने उचित समय में क्रांति करके सत्ता पर अधिकार कर सफलता प्राप्त की।
5. **जनता का समर्थन**—डेविड थॉमसन के अनुसार, "लेनिन द्वारा निर्मित बोल्शेविकों का **कार्यक्रम चार-सूत्रीय था**—(i) कृषकों को भूमि, (ii) भूखों को भोजन, (iii) सोवियतों को शक्ति, (iv) जर्मनी के साथ सन्धि।"
इस प्रकार की घोषणाओं से सेना, मजदूर, कृषक, आदि सभी बोल्शेविकों के समर्थक बन गए। लेनिन ने शासन सम्बन्धी सुधार करके रूस को समाजवादी सोवियतों का लोकतान्त्रिक देश बना डाला।

बोल्शेविक क्रांति का महत्त्व (Importance of Bolshevik Revolution)

फ्रांस की 1789 ई० की राज्य क्रांति के समान ही रूस की 1917 की रूसी क्रांति ने रूस को ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। क्रांति का महत्त्व तब स्वत: और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है जबकि हम देखते हैं कि क्रांति के सिद्धान्तों का अनुकरण करते हुए रूस आज विश्व की प्रमुख महाशक्ति है। रूस की 1917 की क्रांति के अग्र महत्त्वपूर्ण परिणाम निकले—

1. रूस की 1917 ई० की क्रांति ने 300 वर्षों से चले आ रहे निरंकुश एवं प्रतिक्रियावादी जार शासन की समाप्ति कर दी।
2. रूस में सर्वहारा वर्ग की सरकार की स्थापना हुई। इसने रूस में एक नये प्रकार का समाजवादी ढाँचा तैयार किया।
3. रूस में स्थापित हुई साम्यवादी सरकार ने पूँजीवाद का घोर विरोध किया। फलत: रूस में उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। जमींदारों व पूँजीपतियों को समाप्त कर दिया गया। कृषक वर्ग को उनकी जरूरत के अनुसार भूमि प्रदान की गई। इस प्रकार रूस ने जिस नई आर्थिक नीति का आह्वान किया, उसके सम्बन्ध में वेन्स के शब्दों में कहा जा सकता है, "रूस का वह आर्थिक जीवन एक राज्य समानता, सरकारी पूँजीवाद का एक विलक्षण चित्र था।"
4. रूस की क्रांति ने रूस में ही प्रभाव नहीं डाला, अपितु विश्व को भी प्रभावित किया। रूसी क्रांति का सबसे प्रथम परिणाम विश्वयुद्ध से रूस का हाथ खींच लेना था, जिसका सीधा सम्बन्ध 3 मार्च, 1918 ई० की ब्रेस्ट लिटोवस्क की सन्धि के रूप में देखा जा सकता है। हालाँकि इस सन्धि से रूस को अत्यधिक अपमान सहन करना पड़ा, किन्तु युद्ध से अलग होकर वह देश की आर्थिक व्यवस्था एवं पुनर्निर्माण की ओर ध्यान दे सका। रूस ने जिस नवीन पद्धति से कार्य किया, जिसे हम आज 'समाजवादी सोवियत गणतन्त्र संघ' के नाम से भी जानते हैं जो कि क्रांति की देन है, रूस को आज विश्व की महाशक्ति के रूप में स्थान दिया है। रूस का विचार था कि यूरोप में सर्वहारा वर्ग की सरकार स्थापित की जाएगी। अत: 1919 ई० में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल स्थापित किया गया। इसी कारण विश्व दो गुटों में बंट गया। एक गुट में पूँजीवादी देश आ गए और दूसरे में साम्यवादी। दूसरे शब्दों में, विश्व पुन: दो गुटों में विभाजित हो गया।
5. रूसी क्रांति की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि लेनिन का उदय भी कहा जा सकता है जिसने रूस की भावी नीति को पूर्णतया एक नई दिशा दे दी। आज भी रूस में लेनिन का बड़े आदर के साथ नाम लिया जाता है। अत: क्रांति के इसी क्रम में लेनिन की भूमिका का विवेचन करना अप्रासंगिक न होगा।

प्र.2. रूस की 1917 की क्रांति के कारणों का वर्णन कीजिए।
Describe the causes of the Russian revolution of 1917.

उत्तर

रूसी क्रांति के कारण
(Causes of the Russian Revolution)

क्रांति एक छोटे-से-छोटे समय का परिणाम नहीं होती, वरन् इसके पीछे लम्बे समय से चले आ रहे कुछ आधारभूत मौलिक कारण होते हैं। रूस में भी वस्तुत: क्रांति के लक्षण 1905 ई० से ही दृष्टिगोचर हो रहे थे, किन्तु जारशाही की निरंकुशता उन्हें

TOUCH 'n' PASS

दबाने में सफल रही। जहाँ एक ओर जार निकोलस ने प्रारम्भ में शासन सम्बन्धी सुधारों की घोषणा की और ड्यूमा की स्थापना का वचन देकर स्थिति को काबू में रखा, वहीं बाद में प्रतिक्रियावादी शासन लागू कर जनता को क्रोधित कर दिया। समय आने पर यह क्रोध 1917 ई० की महान क्रांति के रूप में प्रकट हुआ, जिसने रूस की नहीं, सम्पूर्ण विश्व को अपनी ज्वाला से प्रभावित किया। संक्षेप में रूसी क्रांति के निम्न कारण थे—

1. **निरंकुश राजतन्त्र** (Autocratic Monarchy)—रूस के शासक (जार) निरंकुशता के पक्षपाती थे। वे दैवीय अधिकार के सिद्धान्त पर विश्वास करते थे। जार एलेक्जेण्डर प्रथम एवं निकोलस प्रथम ने प्रतिक्रियावादी एवं दमनकारी नीतियों का मार्ग अपनाया। जार एलेक्जेण्डर II सुधार योजना का पक्षपाती था, किन्तु उसके द्वारा किए गए न्यायिक एवं स्थानीय शासन सम्बन्धी सुधारों का सामन्तों व जमींदारों ने विरोध किया। दूसरी ओर जनता उसके द्वारा किए गए सुधारों के कारण संवैधानिक सुधारों की आशा करने लगी, किन्तु जनता की आशा पर पानी फिर गया क्योंकि जार पुन: निरंकुश हो चुका था। निहिलिस्ट आन्दोलन का दमन कर दिया। जार निकोलस I की हत्या के बाद एलेक्जेण्डर III और फिर उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र निकोलस II रूढ़िवादिता के कट्टर समर्थक थे। जार निकोलस II के समय हुए रूस-जापान युद्ध में रूस की पराजय से जनता उखड़ चुकी थी और रूस क्रांति के दौर पर था। स्थिति पर नियन्त्रण करने के लिए निकोलस ने कुछ सुधार किए, किन्तु बाद में वह पुन: निरंकुश हो गया। हैजन ने लिखा है "कई मास तक विवाद, प्रकाशन (प्रेस) और भाषण की असाधारण स्वतन्त्रता रही जो बीच-बीच में जब-तब अधिकारियों द्वारा समाप्त कर दी जाती थी, परन्तु वह समाप्ति उसकी केवल पुन: स्थापना के लिए होती थी।"
   जारशाही की निरंकुशता इतनी बढ़ गई थी कि 1905 ई० में परिस्थिति को संभालने के लिए जार निकोलस ने ड्यूमा की स्थापना करने की घोषणा यह कहकर की थी कि ड्यूमा के सदस्य जनता द्वारा चुने जाएंगे और उसी की स्वीकृति से कानूनों का निर्माण होगा, विद्रोह के शान्त हो जाने पर ड्यूमा को संसद का प्रथम सदन माना गया। हैजन के अनुसार, ड्यूमा जो कि विधि निर्मात्री संस्था होनी थी तथा जिसको राज्याधिकारियों की देखभाल का अधिकार प्राप्त होना था, परन्तु इसके अधिवेशन आरम्भ होने के पूर्व ही इसके पर काट दिए गए।"
   साम्राज्य परिषद् नामक दूसरे सदन का निर्माण किया गया। प्रथम ड्यूमा को जुलाई, 1906 ई० और द्वितीय ड्यूमा को जून, 1907 ई० में भंग कर दिया गया। मताधिकार सीमित कर दिया गया। निर्वाचन विधि में परिवर्तन करते हुए लगभग 1,30,000 भूमिपतियों को अधिकांश सदस्यों के निर्वाचन का अधिकार दे दिया गया। हैजन ने लिखा है, "अब तक प्रदान की गई सांविधानिक स्वतन्त्रताओं का यह भी गम्भीर अतिक्रमण था, क्योंकि इन स्वतन्त्रताओं में इस बात का वचन दिया गया था कि ड्यूमा की सहमति के बिना निर्वाचन विधि में परिवर्तन नहीं होना चाहिए। परिणामस्वरूप तृतीय ड्यूमा में प्रतिक्रियावादी बड़े जमींदार चुने गए। अत: ड्यूमा नाममात्र की प्रतिनिधि संस्था रह गई।
2. **कृषकों की स्थिति** (Condition of Peasants)—औद्योगिक दौड़ में रूस यूरोप के प्रमुख राज्यों की तुलना में काफी पीछे था। रूस अभी तक कृषि प्रधान देश था, किन्तु कृषि-प्रधान देश होते हुए भी किसानों की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। दूसरे शब्दों में, किसानों को कृषि-दास की संज्ञा दी गई। उनकी स्थिति अर्द्धदासों की तरह थी। किसानों पर अनेक प्रतिबन्ध लगे हुए थे। फलत: 1902 ई० में पोल्टावा और हारकोव के कृषक-विद्रोह हुए। 1905 ई० में किसानों ने अनेक स्थानों पर दंगे भी किए। फलत: 1906 ई० और 1910 ई० में कुछ भूमि सम्बन्धी सुधार हुए, परन्तु ये भूमिहीनों की समस्या को सुलझा न सके। ड्यूमा के कैडट दल का विसम्पत्तिकरण का सुझाव शासन द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया। लेनिन ने कृषकों को समझाया कि, "हमें संसदीय गणतन्त्र की आवश्यकता नहीं है। हमें मध्यवर्गीय जनतन्त्र नहीं चाहिए। हमें मजदूरों, कृषकों एवं सैनिकों के द्वारा संगठित सरकार के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार की सरकार नहीं चाहिए।"
3. **मजदूर वर्ग व पूँजीवाद** (Labours and the Capitalism)—जार एलेक्जेण्डर के समय से रूस में औद्योगीकरण की गति तीव्र हो गई थी। औद्योगिक संस्थानों के मालिक धनाढ्य व्यक्ति थे। इससे पूँजीवाद को प्रोत्साहन मिला। पूँजीवाद का मुख्य उद्देश्य 'काम अधिक वेतन कम' रहा है। अत: श्रमिक वर्ग से अधिक-से-अधिक काम लिया जाता था और कम-से-कम वेतन दिया जाता था। भूमिहीन किसान रोजगार की खोज में औद्योगिक संस्थानों की ओर मुड़ रहे थे। इससे पूँजीपतियों को पूर्ण मनमानी का अवसर प्राप्त हुआ। श्रमिक गन्दी व तंग गलियों में रहते थे। वे कोई मजदूर संघ नहीं बना सकते थे। शासन हर सम्भव उद्योगपतियों का साथ दे रहा था। परिणामस्वरूप श्रमिकों पर समाजवादी सिद्धान्तों का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। श्रमिकों ने 1905 ई० में तो सेण्ट पीटर्सबर्ग में श्रमिकों की सोवियत तक बना डाली। फिशर के अनुसार, "इस

साम्यवादी प्रचार ने देश के श्रमिकों में जारशाही के प्रति घोर असन्तोष एवं घृणा उत्पन्न कर दी, जिसके कारण लोग जार के शासन का अन्त करने के लिए क्रांतिकारियों का साथ देने लगे।"

4. **अल्पसंख्यकों का विद्रोह** (Revolt of the Minorities)—रूस में यहूदी, पोल, फिन और अल्पसंख्यक जातियाँ निवास करती थी। ये सभी जातियाँ रूसी साम्राज्य के अधीन थी और पराधीनता का अनुभव करती थी। जार इन जातियों का रूसीकरण करना चाहता था। शिक्षा का माध्यम रूसी भाषा कर दिया गया। उच्च पदों पर रूसी नियुक्त किए गए। रूसी प्रशासन ने अल्पसंख्यक जातियों की राष्ट्रीय भावनाओं का दमन करने का प्रयत्न किया। यहूदियों व आर्मेनियनों पर भीषण अत्याचार किए गए। 1905 ई० में जार्जिया, पोलैण्ड और वाल्टिक प्रान्तों में विद्रोह हुए। इन्हें जिस तरह कुचला गया, ये सभी निरंकुश शासन के अन्त करने के पक्षपाती हो गए।
5. **प्रबुद्ध वर्ग का प्रभाव** (Impact of the Intellectuals)—टालस्टाय, वास्तोविस्की, तुर्गनेव, मैक्जिम गोर्की, मार्क्स और बाकुनिन के विचारों ने रूसी जनता को अत्यधिक प्रभावित किया। इनके विचारों ने रूसी जनता में बौद्धिक विप्लव पैदा कर दिया और रूसी जनता समाजवादी विचारों से प्रभावित हुई। वह निरंकुशता की समाप्ति चाहने लगी। जार ने साम्यवादी विचारों के देश में आगमन पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयत्न भी किया, किन्तु उसे सफलता प्राप्त न हो सकी।
6. **यूरोपीय लोकतन्त्रों का प्रभाव** (Impact of the Democratic Countries of Europe)—प्रथम विश्व-युद्ध में रूस इंग्लैण्ड तथा फ्रांस की ओर से लड़ा। इंग्लैण्ड और फ्रांस का युद्ध का नारा राष्ट्रीयता, स्वतन्त्रता एवं लोकतन्त्र की रक्षा करना था। वे इसी के लिए लड़ रहे थे। उनके इस प्रचार का रूस पर गहरा प्रभाव पड़ा। रूसी जनता ने देखा कि जब रूसी सेना राष्ट्रीयता, स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र के लिए लड़ रही है तो देश में निरंकुशता क्यों है? अत: वह देश में लोकतन्त्र की स्थापना की आकांक्षा करने लगी।
7. **समाजवाद का विकास एवं बोल्शेविक दल के प्रचार का प्रभाव** (Growth of Socialism)—कृषकों की दयनीय स्थिति ने, सामान्य जनता की अभावग्रस्त परिस्थितियों ने रूस में समाजवादी प्रवृत्ति के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। समाजवादी विचारों से प्रभावित होकर रूस में आन्दोलन चलाया गया जिसे बासेदनिकी कहा जाता था। आन्दोलनकारियों ने अपना आन्दोलन कृषकों की भूमिहीनता के विरुद्ध किया था। 1903 ई० में समाजवादी लोकतन्त्र—बोल्शेविक और मैन्शेविक दो दलों में विभक्त हो गया। प्रथम का नेतृत्व लेनिन ने किया। लेनिन सर्वहारा वर्ग का प्रभुत्व रूस में चाहता था, जबकि दूसरा दल अन्य वर्गों का सहयोग प्राप्त कर जनतन्त्र का पक्षपाती था, परन्तु जारशाही का अन्त इन दोनों का उद्देश्य था। अत: दोनों ने रूसी जनता को जारों के विरुद्ध शासन सुधारों के लिए प्रेरित किया।
8. **जार निकोलस II का व्यक्तित्व एवं भ्रष्ट शासन** (Corrupt Rule of Zar Nicholas II)—फिशर के अनुसार, "रूस का जार निकोलस द्वितीय बड़ा अन्धविश्वासी था और अयोग्य था। वह दुर्बल और हठी स्वभाव का मन्दबुद्धि था, जिसमें घटनाओं के महत्त्व और व्यक्तियों के चरित्र को समझने की शक्ति नहीं थी। उस पर महारानी अलैकजेण्ड्रा का विशेष प्रभाव था। वह स्वेच्छाचारी शासन की पक्षपाती थी। जारीना रासपुटिन नामक साधु के हाथ की कठपुतली बनी हुई थी।" रासपुटिन ने अपने व्यापक प्रभाव का लाभ उठाकर प्रशासन में हस्तक्षेप शुरू कर दिया। उच्च पदाधिकारियों की नियुक्ति एवं पदच्युति रासपुटिन के हाथ में आश्रित हो गई। इससे प्रशासन में बड़ी गड़बड़ी फैल गई। फलत: राजदरबार में रासपुटिन के विरोध में एक दल बन गया, जिसने दिसम्बर, 1916 ई० में रासपुटिन की हत्या कर दी। जार इससे अत्यन्त दु:खी हुआ उसने हत्यारों का पता लगाने के आदेश दिए, जिससे सम्पूर्ण दरबारी भी रुष्ट हो गए और वे भी उसके विरोधी बन गए।
9. **प्रथम महायुद्ध में रूस का प्रवेश एवं आर्थिक संकट** (First World War and the Economic Crisis)—अगस्त, 1914 ई० में प्रारम्भ हुए प्रथम विश्व-युद्ध में रूस ने मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ना स्वीकार किया। इसी समय संसद के लगभग सभी सदस्यों ने इसे स्वीकार भी किया, परन्तु जार व जारीना की विवेकहीनता, युद्ध कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप एवं कर्त्तव्यहीनता ने सेना के मनोबल को गिरा दिया। सैनिक युद्ध लड़ने गए, परन्तु उनके पास युद्ध सामग्री का अभाव रहा। युद्ध के प्रारम्भिक दो वर्षों में रूस को घोर पराजय का मुँह देखना पड़ा।

इधर वाल्टिक सागर एवं काले सागर के बन्द हो जाने से रूस पश्चिमी संसार से बिल्कुल अलग-थलग पड़ गया। फलस्वरूप अनाज का अभाव हो गया। महँगाई बढ़ गई। कीमतें आकाश छूने लगीं और 1917 ई० तक निर्वाह व्यय 1914 ई० की तुलना में लगभग 700 गुना बढ़ गया। **डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार** ने लिखा है, "रूस में अनाज, कपड़े और ईंधन के मूल्य इतने अधिक बढ़ गए थे कि निर्धन लोगों के लिए उन्हें खरीद पाना कठिन हो गया। लोग यह समझते थे

कि रूस में सब वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में हैं और पूँजीपतियों ने उन्हें अपने कब्जे में कर लिया है। इसी प्रकार लिप्सन ने लिखा है, "क्रांति का तात्कालिक कारण खाद्य सामग्री की कमी पर जनता का असन्तोष था। डबलरोटी खरीदने के लिए लोगों की लम्बी कतारें लगने लगीं, जिनके कारण हड़तालें और उपद्रव होने लगे और उन्होंने अचानक की युद्ध के और राजतन्त्र के विरुद्ध विद्रोह का रूप धारण कर लिया।

प्र.3. लेनिन की नवीन आर्थिक नीतियों का वर्णन कीजिए। लेनिन की इस नीति के कारणों एवं प्रमुख उद्देश्यों पर भी प्रकाश डालिए।

Explain the new economic policy of Lenin. Throw light on the causes and main objectives of this policy of Lenin.

उत्तर

लेनिन की नवीन आर्थिक नीति
(New Economic Policy of Lenin)

1917 ई० में बोल्शेविक सरकार के गठन के पश्चात् लेनिन ने जिस नीति को अपनाया, उसे 'राजकीय पूँजीवाद' या 'नियन्त्रित पूँजीवाद' (State Capitalism or Controlled Capitalism) कहा जाता है। यह नीति नवम्बर, 1917 ई० से जुलाई, 1918 ई० तक चलती रही तथा इसके अन्तर्गत सरकार द्वारा आर्थिक नियन्त्रण पूँजीपतियों से छीनकर अपने हाथों में ले लिया गया। उत्पादन पर भी इस नीति के अन्तर्गत नियन्त्रण रखा गया। इस व्यवस्था में उद्योगों का आंशिक प्रबन्ध अपने पास रखा था। इसी कारण इस नीति को 'नियन्त्रित पूँजीवाद' भी कहा गया। रूसी जनता की इच्छा थी कि सरकार को उद्योगों पर पूर्ण नियन्त्रण कर लेना चाहिए, अर्थात् जनता उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में थी। अत: रूस में गृह युद्ध प्रारम्भ हो गया जिसने अर्थव्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया। अत: रूस की सरकार ने नियन्त्रित पूँजीवाद की इस नीति का परित्याग कर 'यौद्धिक साम्यवाद' (War Communism) को अपनाया। इस नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रमुख कार्य किए गए—

1. नियन्त्रित पूँजीवाद को समाप्त कर दिया गया।
2. समाजवादी तथा साम्यवादी कार्यक्रम लागू किए गए।
3. कृषि की उन्नति पर विशेष ध्यान दिया गया।
4. राजकीय तथा सामूहिक फार्मों (Collective Farms) की स्थापना की गई।
5. सम्पूर्ण भूमि पर राज्य का अधिकार माना गया।
6. खाद्यान्नों के मूल्य निर्धारित किए गए।
7. उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

सरकार द्वारा उपर्युक्त कार्य किए जाने से स्थिति और भी खराब हो गई। किसान खेती छोड़कर सेना में भर्ती होने लगे, जिससे अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई। उद्योगों का भी ह्रास हुआ तथा उत्पादन क्षमता कम हो गई। इसी समय मुद्रा स्फीति के कारण मजदूरों की स्थिति अत्यन्त खराब हो गई। बोल्शेविक सरकार की यौद्धिक साम्यवाद की नीति पूर्णतया असफल प्रमाणित हुई। इससे रूस की स्थिति और भी खराब हो गई व सम्पूर्ण देश में असन्तोष की भावना प्रबल होने लगी। स्वयं लेनिन ने भी इस नीति के दोषों को स्वीकार करते हुए कहा था, "यह आर्थिक संकट और सैनिक समस्याओं का परिणाम था, किसी सिद्धान्त का नहीं। आवश्यकतावश एक ऐसी नीति का पालन करना पड़ा था जो पूँजीवाद के समाज से संक्रमण से पूर्णतया प्रतिकूल थी।" इस प्रकार 1918 ई० में लागू की गई यौद्धिक साम्यवाद की नीति का मार्च, 1921 ई० में परित्याग कर दिया गया।

इस प्रकार 1921 ई० में यौद्धिक साम्यवाद के असफल होने पर सरकार के समक्ष पुन: आर्थिक समस्या उत्पन्न हो गई। इस समय बोल्शेविकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि कृषकों को परिवर्तित करने की अपेक्षा अपनी ही नीति को बदलना उचित था। अत: लेनिन ने 1921 ई० में एक आर्थिक नीति की घोषणा की जिसे नवीन आर्थिक नीति (New Economic Policy) कहा गया।

नवीन आर्थिक नीति के कारण (Causes of the New Economic Policy)

1921 ई० में लेनिन द्वारा नवीन आर्थिक नीति अपनाने के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे—

1. रूस में राजकीय पूँजीवाद व यौद्धिक साम्यवादी नीतियाँ असफल हो चुकी थी, अत: एक नवीन आर्थिक नीति की आवश्यकता थी।
2. पिछली नीतियों द्वारा बोल्शेविक सरकार को यह स्पष्ट हो गया था कि समाजवाद की उतनी स्थापना की जानी चाहिए, जितने की आवश्यकता है। इस नीति के अन्तर्गत ऐसा ही किया गया था।

TOUCH 'n' PASS

3. मजदूरों व किसानों की खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह आवश्यक था कि नीतियों में परिवर्तन किया जाए।
4. व्यापारी वर्ग भी उद्योगों के राष्ट्रीयकरण से रुष्ट था।
5. कृषक विद्रोहों से बोल्शेविक सरकार चिन्तित थी, किन्तु मार्च, 1921 ई० में लाल नौ-सेना द्वारा विद्रोह किए जाने से सरकार के लिए तत्काल कोई कदम उठाना आवश्यक हो गया।

ग्राण्ट और टेम्परले ने नवीन आर्थिक नीति के विषय में लिखा है, "गृह युद्ध की समाप्ति पर देश को फिर भी अव्यवस्था, भय और दुर्भिक्ष पीड़ित देखकर कुछ हद तक निजी उद्योगों को पुन: प्रचलित किया गया। इसी को लेनिन की नई आर्थिक नीति कहा गया।"

आर्थिक नीति के प्रमुख उद्देश्य (Main Objectives of the New Economic Policy)

लेनिन की नवीन आर्थिक नीति का उद्देश्य मजदूर वर्ग तथा किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना, देश में रहने वाले श्रमजीवियों को रूस की अर्थव्यवस्था की उन्नति करने के लिए प्रोत्साहन देना तथा अर्थव्यवस्था के प्रमुख सूत्रों को शासन के अधिकार में रखते हुए आंशिक रूप से पूँजीवादी व्यवस्था को कार्य करने की अनुमति प्रदान करना था। लेनिन ने स्वयं ही अपनी आर्थिक नीति के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि वास्तव में मजदूर वर्ग और किसानों के सम्बन्धों पर और उनके संघर्ष व समझौते पर ही हमारी क्रांति के भाग्य का निर्णय होगा। मजदूर वर्ग और किसानों के हित अलग-अलग हैं। लेनिन का विचार था कि कृषकों के साथ समझौता होने से ही साम्यवादी (कम्युनिस्ट) क्रांति को सुरक्षित रखा जा सकता है। लेनिन का मानना था कि किसानों को आर्थिक दृष्टि से सन्तुष्ट रखना आवश्यक था।

लेनिन द्वारा आरम्भ की गई आर्थिक नीति के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य थे—

1. लेनिन की आर्थिक नीति का मुख्य उद्देश्य रूस के किसानों को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाकर उनमें व्याप्त असन्तोष को दूर करना था। इसके साथ ही मजदूर वर्ग को प्रोत्साहित कर रूसी क्रांति को सशक्त बनाना भी लेनिन का उद्देश्य था।
2. नवीन आर्थिक नीति का उद्देश्य उत्पादन को बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को लागू करना था ताकि श्रमिकों व किसानों की स्थिति में सुधार हो सके।
3. जनता का कल्याण करना भी इस नीति का उद्देश्य था।
4. लेनिन अपनी नवीन आर्थिक नीति के द्वारा रूस में मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed economy) की स्थापना करना चाहता था। इसी का पालन करने के लिए सीमित राष्ट्रीयकरण की नीति अपनाई गई।

पश्चिमी देशों ने रूस की इस नवीन आर्थिक नीति की आलोचना की। प्रसिद्ध रूसी इतिहासकार बर्नादस्की ने लिखा है, "उनकी (पश्चिमी देशों की) दृष्टि में नवीन आर्थिक नीति का अर्थ बोल्शेविकों का पूँजीवादी विश्व के सम्मुख आत्मसमर्पण मात्र था और लगभग निरपवाद रूप से उसे दुर्बलता का लक्षण माना गया। महाद्वीपीय लोग यह समझने लगे थे कि बोल्शेविकों की तथाकथित शक्तिहीनता से विदेशी हितधारियों को रूस के प्राकृतिक साधनों के उपयोग के अवसर प्राप्त होंगे।

प्र.4. लेनिन ने नवीन आर्थिक नीति के अन्तर्गत किन कार्यक्रमों को अपनाया? इस नीति का रूस पर क्या प्रभाव पड़ा?
What programmes did Lenin adopt under the new economic policy? What was the impact of this policy on Russia?

उत्तर

नवीन आर्थिक नीति के कार्यक्रम
(Programmes of New Economic Policy)

लेनिन ने नवीन आर्थिक नीति को लागू करने के उद्देश्य से अनेक कार्यक्रम अपनाए जिनमें प्रमुख निम्नवत् थे—

1. लेनिन ने इस नीति के अन्तर्गत सर्वप्रथम यौद्धिक साम्यवाद की आवश्यक अधिग्रहण की नीति को समाप्त कर दिया। इस प्रकार किसानों के अतिरिक्त उपज, जो पहले अनिवार्य रूप से वसूल की जाती थी बन्द कर दी गई। नवीन नीति के अन्तर्गत किसानों से कृषि उत्पादन कर लिया जाने लगा। बर्नादस्की ने लिखा है, "पहले कर वस्तु के रूप में लिया जाता था, बाद में वह राशि के रूप में चुकाया जाने लगा। अब कृषकों को यह अधिकार दे दिया गया कि वे अपनी अतिरिक्त फसल की व्यवस्था अपनी इच्छानुसार कर सकेंगे, अर्थात् उसे खुले बाजार (Open Market) में बेच सकते थे। उगाही के बदले कर की प्रतिस्थापना करने वाली प्राप्ति ने आर्थिक पद्धति के पूर्ण परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त कर दिया, क्योंकि इस प्रक्रिया से व्यापार की स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।" इस प्रकार गाँव व शहर आर्थिक रूप से परस्पर जुड़े।
2. नवीन कर प्रणाली के द्वारा आर्थिक स्थिति के अनुसार कर निर्धारित किया गया। धनी व्यक्ति से अधिक व गरीब से कम कर लिया जाता था।

TOUCH 'n PASS

3. कृषक-सहकारिता (Co-operative Farming) को भी प्रोत्साहित किया गया व किसानों को वेतन-भोगी श्रमिक रखने की सुविधा प्रदान की गई।
4. राजकीय व सहकारी व्यापार को भी प्रोत्साहित किया गया। इससे व्यापारियों की प्रतिस्पर्द्धा बढ़ी।
5. कृषि के समान उद्योगों में भी सुधार किया गया। बड़े उद्योगों को सरकार के अधीन रखा गया, किन्तु उनकी व्यवस्था में अनेक परिवर्तन किए गए। वस्तु-विनिमय (Barter System) को त्याग दिया गया व मुद्रा प्रणाली लागू की गई। उद्योगों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया गया।
6. छोटे उद्योगों को उद्योगपतियों के अधीन ही रहने दिया गया।
7. एक सहकारी बैंक की भी स्थापना की गई।
8. रूस में बड़े उद्योग लगाने के लिए विदेशियों को आमन्त्रित व प्रोत्साहित किया गया।
9. श्रमिकों की नियुक्ति के लिए रोजगार कार्यालयों की स्थापना की गई जहाँ से उन्हें उनकी योग्यतानुसार काम दिलाया जाता था।
10. निर्यात को बढ़ावा दिया गया। इसके लिए निजी व्यापारियों को विदेशी व्यापार करने की अनुमति दी गई। विदेशी व्यापार पर कर भी कम किया गया।

इस प्रकार लेनिन ने अपनी इस नीति के द्वारा रूस की अर्थव्यवस्था को एक नया रूप प्रदान किया। डेविड थॉमसन ने लिखा है, "लेनिन का नवीन प्रयोग, नवीन आर्थिक नीति यौद्धिक साम्यवाद की नीति के बिलकुल विपरीत था।"

नवीन आर्थिक नीति के प्रभाव (Impact of the New Economic Policy)

लेनिन की आर्थिक नीति से रूस को अत्यधिक लाभ हुआ। इस नीति ने मजदूर वर्ग तथा किसानों के आर्थिक गठबन्धन को मजबूत बनाया, उत्पादक शक्तियों को समाजवादी दिशा प्रदान की, समाजवादी अर्थव्यवस्था की भूमिका तैयार की तथा रूसी शासन को सुदृढ़ बनाया। इस नीति से उद्योग, कृषि, यातायात, वैदेशिक व्यापार, प्रति व्यक्ति आय तथा राष्ट्रीय आय में उल्लेखनीय उन्नति हुई। मात्र 4 वर्षों में राष्ट्रीय आय में 15% की वृद्धि हुई।

लेनिन की नवीन आर्थिक नीति की सबसे बड़ी उपलब्धि रूस का आर्थिक पुनर्निर्माण करना था। इस सन्दर्भ में डेविड थॉमसन का कथन उल्लेखनीय है, "इस नीति के सार्वधिक नाटकीय एवं दूरगामी प्रभावों में महत्त्वपूर्ण यह था कि इसके परिणामस्वरूप रूस का आर्थिक पुनर्निर्माण हुआ।" इस नीति द्वारा कृषि का पुनरुद्धार हुआ। यद्यपि 1921 ई० में रूस में अकाल पड़ा, किन्तु सरकार के सहयोग से किसानों ने इस स्थिति का सामना किया। 1922 व 1923 ई० में फसलों के अच्छे रहने के कारण स्थिति में सुधार हुआ। इसके साथ ही इस नीति के अन्तर्गत किसानों को दी गई सुविधाओं के कारण कृषि की स्थिति में व्यापक उन्नति हुई। विदेशों से भी कृषि मशीनों तथा विभिन्न उपकरणों का आयात कर कृषि-उत्पादन को बढ़ाया गया। परिणामस्वरूप रूस में कृषि क्षेत्र 1921 ई० की तुलना में 1927 ई० तक डेढ़ गुना हो गया।

कृषि के साथ-साथ नवीन आर्थिक नीति से उद्योगों का भी पुनरुद्धर हुआ। 1921 ई० में लेनिन ने अपने मित्र क्रजिजानोत्सकी को राष्ट्रीय योजना का अध्यक्ष नियुक्त किया। क्रजिजानोतसकी प्रसिद्ध ऊर्जा इंजीनियर था। अत: उसके प्रयासों से अनेक बिजलीघरों का निर्माण किया गया। इसके परिणामस्वरूप बड़े व छोटे उद्योगों का विकास द्रुत गति से हुआ। मानफ्रेद ने लिखा है कि राजकीय उद्यमों में अधिक कुशल और योग्य श्रमजीवियों को अधिक वेतन व पुरस्कार देने तथा उन्हें 'श्रमबीर' की उपाधि देने के निर्णय से उत्पादन बढ़ा। 1924-25 ई० में रूस में उत्पादन बढ़ाओं आन्दोलन (Increase Production Movement) चला जिससे उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। उत्पादन बढ़ाने में सरकार की नीति से प्रोत्साहित श्रमिकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। रूस की सर्वोच्च राष्ट्रीय अर्थ परिषद् के अध्यक्ष फेलिक्स दजेरजीस्की ने श्रमिकों की प्रशंसा करते हुए कहा, अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में हमारे मजदूरों व किसानों द्वारा दिखाया गया यह पराक्रम युद्ध के मोर्चे पर दिखाए गए पराक्रम से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है।

लेनिन की आर्थिक नीति से जहाँ रूस को भी अत्यधिक लाभ हुआ वहीं उसके समक्ष अनेक संकट उत्पन्न हुए। इन संकटों में प्रमुख—ईंधन संकट (Fuel Crisis), बिक्री संकट (Sales Crisis) तथा कैंची संकट (Scissors Crisis) थे। 1921 ई० में जब नवीन आर्थिक नीति को लागू किया गया था। उस समय रूस में ईंधन संकट विद्यमान था। इसको दूर किए बिना उद्योगों का विकास सम्भव न था। ईंधन संकट के कारण यातायात व उद्योगों की स्थिति खराब होती जा रही थी। रूसी सरकार ने इस संकट को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाए तथा इस संकट को 1922 ई० तक समाप्त कर दिया गया।

दूसरा संकट बिक्री से सम्बन्धित उत्पन्न हुआ। इस संकट के उत्पन्न होने के दो प्रमुख कारण थे। पहला, कार्यशील पूँजी (Working Capital) का अभाव होना व दूसरा बिक्री के लिए तैयार वस्तुओं का भण्डार हो जाना। इस समय कच्चे माल को

खरीदने के लिए धन की आवश्यकता थी। दूसरी ओर बने हुए माल का भण्डार अधिक होने के कारण शहरों व गाँवों के मध्य आर्थिक सन्तुलन को सुधारा। सरकार ने वितरण प्रणाली में भी सुधार किए। इसके अतिरिक्त अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औद्योगिक प्रतिष्ठानों को छोड़कर शेष को बन्द कर दिया। इस प्रकार यह संकट भी समाप्त हो गया।

इसी समय रूस में कैंची संकट उत्पन्न हो गया। इसके मूल में बिक्री संकट ही था। बिक्री संकट के कारण औद्योगिक वस्तुओं के मूल्य में भारी गिरावट आई थी। इसके विपरीत कृषि सम्बन्धी वस्तुओं के मूल्य अधिक हो गए। इस प्रकार अर्थव्यवस्था में विषय स्थिति हो गई। इस संकट में क्योंकि औद्योगिक व कृषि उत्पादनों के मूल्य एक-दूसरे के विपरीत (कैंची की दो पत्तियों के समान) थे, इस कारण, इस संकट को 'कैंची संकट' कहा गया। सन्तुलित अर्थव्यवस्था के लिए औद्योगिक व कृषि उत्पादनों में सन्तुलन बना रहना आवश्यक है, अत: सरकार को इस सम्बन्ध में आवश्यक कदम उठाने पड़े। जब अन्य सभी प्रयास असफल हो गए तो 'स्टालिन ने 'राशनिंग' (Rationing) के द्वारा मूल्यों पर नियन्त्रण कर इस संकट को समाप्त किया।

इन सब संकटों के पश्चात् भी लेनिन की नवीन आर्थिक नीति 1927 ई० तक चलती रही। लेनिन की इस आर्थिक नीति के विषय में बर्नादस्की ने लिखा है, "इस समय से 1927 ई० तक रूस में जो आर्थिक पद्धति प्रचलित रही वह संकर-योजना (Mixed Planning) थी। वह न तो समाजवादी, न पूँजीवादी; बल्कि इस दोनों के बीच की थी। वह नवीन आर्थिक नीति के तथा आरम्भ किए गए सभी सुधारों की सीमा तक वास्तविक समाजवादी पद्धति से भिन्न थी। वह पूँजीवादी स्वरूप से इसलिए भिन्न थी कि उसमें आर्थिक मामलों में विशेषक विदेशी व्यापार में, शासकीय नियन्त्रण अन्तर्निहित था।" लेनिन ने इस नवीन आर्थिक नीति के द्वारा अपनी उस घोषणा को सही प्रमाणित करने का प्रयास किया जो उसने क्रांति के तुरन्त पश्चात् की थी। उसने कहा था, "हम पुरातन-व्यवस्था को समाप्त कर उसके खण्डहरों पर अपना मन्दिर बनाएगे। यह एक ऐसा मन्दिर होगा जो सबके लिए खुशियाँ लाएगा।"

21 जनवरी, 1924, ई० को विश्व के इस महान् नेता की मृत्यु हो गई। हैजन ने लेनिन की अत्यधिक प्रशंसा की है। उनके शब्दों में, "जूलियस सीजर के समय से इतिहास का वह (लेनिन) सम्भवत: सबसे प्रभावशाली व्यक्ति था।"

प्र.5. स्टालिन के युग एवं गृह नीति की विवेचना कीजिए।
Discuss the age and domestic policy of Stalin.

उत्तर

स्टालिन का युग (1928–1953)
The Age of Stalin (1928-1953)

प्रारम्भिक जीवन (Early Life)—स्टालिन रूस के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व था। उसने अपनी नीतियों से न केवल रूस अपितु सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। स्टालिन का जन्म 1879 ई० में गोरी नामक गाँव में हुआ था। स्टालिन के पिता अपने पुत्र को पादरी बनाना चाहते थे, किन्तु स्टालिन प्रारम्भ से ही क्रांतिकारी विचारों का था, अत: युवा होते ही उसने क्रांतिकारियों का साथ देना प्रारम्भ कर दिया। उसकी क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण उसे अनेक बार गिरफ्तार किया गया। लेनिन के सम्पर्क में आकर उसने साम्यवादी दल (Communist Party) की सदस्यता ग्रहण कर ली।

स्टालिन व ट्राटस्की (Stalin and Trotsky)—21 जनवरी, 1924 ई० को लेनिन की मृत्यु हो गई। लेनिन के उत्तराधिकार के लिए दो प्रमुख दावेदार थे—ट्राटस्की (Trotsky Leon) व जोसेफ स्टालिन (Joseph Stalin) रूस की मार्च, 1917 ई० में हुई क्रांति के समय इन दोनों ही नेताओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अत: लेनिन की मृत्यु के पश्चात् दोनों में ही संघर्ष हुआ। यह संघर्ष 1924 ई० में 1929 ई० तक चलता रहा। दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद भी थे। ट्राटस्की का विचार था कि रूस को विश्व में बोल्शेविक क्रांति करने की आशा नहीं करनी चाहिए। उसका विचार था कि यदि रूस में यह क्रांति सफल हो जाएगी तो विश्व के देश स्वत: ही उसका अनुकरण करेंगे। इसके विपरीत स्टालिन का विचार था कि बोल्शेविक क्रांति अन्य देशों में कराने का प्रयास करना चाहिए। इसके अतिरिक्त ट्राटस्की पूँजीवाद का घोर विरोधी था व उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहता था, जबकि स्टालिन रूस का औद्योगिक विकास करना चाहता था तथा इसके लिए अन्य देशों से मशीनें मंगवाना चाहता था। ट्राटस्की भूमि पर राज्य का स्वामित्व रखने के पक्ष में था, जबकि स्टालिन चाहता था कि भूमि का स्वामित्व किसानों के पास होना चाहिए।

इस प्रकार ट्राटस्की व स्टालिन के मतों में भिन्नता होने के कारण, दोनों के मध्य 1929 ई० तक संघर्ष चलता रहा। 1929 ई० में ट्राटस्की को दल से निष्कासित कर दिया गया। अन्तत: ट्राटस्की रूस छोड़कर भागने के लिए विवश हो गया। इस प्रकार लेनिन की मृत्यु के कुछ वर्षों के पश्चात् स्टालिन रूस में सर्वेसर्वा बन बैठा।

स्टालिन की गृह नीति
(Domestic Policy of Stalin)

स्टालिन 1929 ई० में रूस का शासक तो बन गया, किन्तु उसके समक्ष अनेक समस्याएँ विद्यमान थी। स्टालिन रूस को प्रत्येक दृष्टि से उन्नत देखना चाहता था। स्टालिन ने 1931 ई० में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था, "हम (रूस) उन्नत देशों की तुलना से पचास अथवा कहना चाहिए सौ वर्ष पिछड़े हुए हैं। हमें हर हालत में इस खाई को दस वर्षों के अन्दर भरना है। या तो हम ऐसा करने में सफल हों अन्यथा वे (उन्नत देश) हमें कुचल देंगे।

आर्थिक सुधार (Economic Reforms)—स्टालिन के समक्ष सबसे बड़ी समस्या रूस का आर्थिक विकास करने की थी। स्टालिन का विचार था कि आर्थिक विकास करने के लिए योजनाबद्ध नीतियों का होना आवश्यक है, अत: 1925 ई० में स्टालिन ने रूस में योजना आयोग (Planning Commission) की नियुक्ति की। इस योजना आयोग के द्वारा पंचवर्षीय योजना (Five Years Plan) को प्रारम्भ किया जिसे रूस में 'प्यातीलेत्का' कहते थे। रूस की प्रथम पंचवर्षीय योजना 1929 ई० में लागू की गई। हैजन ने लिखा है कि, "यह एक विशद एवं विवरणपूर्ण योजना थी जिसको एक विशेषज्ञ मण्डल ने सावधानी से तैयार किया था और एक ठोस आर्थिक विकास कार्य के लिए बनाई थी।" रूस में लागू की गई इस प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कृषि व उद्योग दोनों के लिए ही विकास की योजना बनाई गई थी। इस योजना के द्वारा नवीन व्यापारिक विधियों का निर्माण, उत्पादक कारखानों की स्थापना, कृषि-सम्बन्धी उपकरणों के कारखानों की स्थापना, इस्पात कारखानों की स्थापना व रेल मार्गों का निर्माण किया जाना था। इस प्रकार इन उपायों के द्वारा देश के उद्योग की स्थिति सुधारने का प्रयास किया गया था। इसके साथ ही कृषि के विकास के लिए सामूहिक खेती व राजकीय फार्मों (Collective and State Farms) की संख्या में वृद्धि करना व उसका समाजीकरण करना निश्चित किया गया था। यह व्यवस्था व्यक्तिगत सम्पत्ति के सिद्धान्त पर आधारित थी तथा यह निश्चित किया गया कि बढ़ा हुआ उत्पादन कृषकों में विभाजित कर दिया जाएगा।

रूस में द्वितीय पंचवर्षीय योजना 1934 ई० में लागू की गई। इस योजना को पहली पंचवर्षीय योजना से भी अधिक कुशलता से तैयार किया गया। इसमें श्रम की उत्पादकता में वृद्धि और उत्पादन व्यय में कमी की ओर विशेष ध्यान दिया गया। यूरोप में उस समय हिटलर का भय बढ़ता जा रहा था, अत: युद्ध सामग्री के उत्पादन की ओर भी इस योजना में ध्यान रखा गया। भविष्य में, द्वितीय विश्वयुद्ध के समय, रूस को इस दूरदर्शी योजना के कारण बहुत लाभ हुआ। इस बात की पुष्टि इस तथ्य से होती है कि द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने के समय रूसी सेनाओं के पास अधिकांश सामान स्वदेशी था।

स्टालिन द्वारा लागू की गई पंचवर्षीय योजनाओं व इनके क्रियान्वयन से रूस की आर्थिक स्थिति में अद्‌भुत सुधार हुआ। इस दौरान रूस में अनेक औद्योगिक कारखाने, जल-विद्युत कारखाने, बाँध, मजदूरों के लिए मकान, कृषि सम्बन्धी कारखाने, इत्यादि बनाए गए थे जिससे वह रूस जो 1921 ई० में पिछड़े हुए देशों की गिनती में आता था, अब उन्नत देशों की बराबरी करने लगा। इन योजनाओं के कारण रूस यूरोप के प्रमुख देशों में से एक बन गया। हार्डी ने स्टालिन की इस नीति की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "स्टालिन की आन्तरिक विकास की विशाल योजना सम्बन्धी नीति विश्व के देशों के लिए दोहरे लाभ की प्रमाणित हुई। एक ओर तो इससे रूस द्वारा अन्य देशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का भय दूर हुआ वहीं विश्व शान्ति को बनाए रखने में भी यह नीति सहायक रही।"

सांस्कृति उन्नति (Cultural Development)—स्टालिन ने संस्कृति के क्षेत्र में भी उन्नति करने का प्रयत्न किया। रूसी जनता में अशिक्षितों की संख्या बहुत अधिक थी, अत: शिक्षा पर सरकार द्वारा बहुत अधिक ध्यान दिया गया। सरकार ने 3 वर्ष से 16 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा को अनिवार्य कर दिया। शिक्षा को नि:शुल्क भी बनाया गया। बोल्शेविक सरकार द्वारा तकनीकी शिक्षा पर भी ध्यान दिया गया। उच्चस्तरीय शोध-कार्यों के लिए प्रयोगशालाओं का भी निर्माण कराया गया। इस प्रकार बोल्शेविक सरकार के प्रयत्नों से शिक्षितों की संख्या में असाधारण गति से वृद्धि हुई। शिक्षा के साथ ही स्त्रियों पर लगे हुए अनेक प्रतिबन्धों को समाप्त कर दिया गया। स्त्रियों को भी पुरुषों के समान अधिकार प्रदान किए गए। रूस में वेश्यावृत्ति को समाप्त करने के लिए भी सरकार ने कदम उठाए। रूसी सरकार ने क्षेत्रीय भाषाओं (Regional languages) को भी प्रोत्साहित किया। भाषा को आधार मानकर प्रान्तों का पुनर्गठन किया गया। अनेक रूसी भाषाओं को लिपिबद्ध किया गया व प्रान्तीय भाषाओं में शिक्षा व कामकाज करने की अनुमति दी गई। रूसी सरकार के द्वारा मनोरंजन के साधनों का विकास भी किया गया। बच्चों के व बड़ों के लिए क्रीड़ागृह का निर्माण किया गया। नृत्यशालाओं व थिएटरों को भी बनवाया गया।

TOUCH 'n PASS

विरोधियों का दमन (Rebels were Punished)—रूस में अभी तक बोल्शेविक क्रांति के अनेक विरोधी विद्यमान थे। बोल्शेविक क्रांति को पूर्णतया प्रदान करने के लिए स्टालिन इन विद्रोहियों का दमन करना आवश्यक समझता था। अत: स्टालिन ने ढूंढ़-ढूंढ़कर इन विद्रोहियों को दण्डित किया व अनेक को मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार स्टालिन ने अपनी व सरकार की स्थिति को सुदृढ़ बनाया व रूस मे शान्ति की स्थापना की।

नवीन संविधान को लागू करना (1936 ई०) (New Constitution was Implemented)—रूस में 1917 ई० में क्रांति हुई थी, तत्पश्चात् 1918 ई० पुन: एक नए संविधान का निर्माण किया गया था। इन दोनों ही संविधानों से समाजवादी व्यवस्था पूर्णतया स्थापित नहीं हो सकी थी। इसके अतिरिक्त 1923 ई० के पश्चात् रूस में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो सके थे। अत: रूस में पूर्ण समाजवादी व्यवस्था लागू करने व नवीन परिस्थितियों के अनुरूप नवीन संविधन की आवश्यकता को स्टालिन ने अनुभव किया। अत: 1936 ई० में रूस में एक नवीन संविधान की रचना की गई, जिसे **'स्टालिन संविधान'** (Stalin Constitution) कहा जाता है।

इस संविधान के द्वारा रूस में संघ-राज्य (Federal Government) की स्थापना की गई। इस प्रकार इस नवीन संविधान के द्वारा बने देश को समाजवादी गणराज्य संघ (Union of Soviet Socialist Republic) कहा गया। इस संघ में 11 गणराज्य थे।

इस संविधान के द्वारा सर्वोच्च शक्ति सुप्रीम कौंसिल (Supreme Council) में निहित थी। सुप्रीम कौंसिल की एक कार्यकारिणी को 'प्रेसीडियम (Presidium) कहा गया। सुप्रीम कौंसिल की एक अन्य समिति को लोक प्रबन्धक परिषद् (Council of Peoples Commissar) कहा गया। संसद में दो सदन थे—(i) संघीय परिषद् (Council of Union) व (ii) राष्ट्रीयताओं की परिषद् (Council of Nationalities)। संघीय परिषद् जनता के प्रतिनिधियों की संस्था थी, जबकि राष्ट्रीयताओं की परिषद् में जातियों, व राष्ट्रों के प्रतिनिधि होते थे। इन दोनों ही परिषदों का कार्यकाल चार वर्ष था। संघीय परिषद् व राष्ट्रीयताओं की परिषद् को संयुक्त रूप से सुप्रीम कौंसिल (Supreme Council) कहते थे। शासन की सत्ता मन्त्रिमण्डल में निहित थी। प्रत्येक मन्त्री अपने विभाग के लिए संसद के प्रति उत्तरदायी था। जिस समय संसद का अधिवेशन न चल रहा हो तब मन्त्री प्रेसीडियम के प्रति उत्तरदायी होते थे।

इस संविधान के द्वारा रूस में विभिन्न स्तर के न्यायालयों की स्थापना की गई। सर्वोच्च न्यायालय 'संघीय सर्वोच्च न्यायालय' था, तत्पश्चात् गणराज्यों के सर्वोच्च न्यायालय, क्षेत्रीय न्यायालय, लोक न्यायालय तथा विशेष न्यायालय थे।

1936 ई० के संविधान के द्वारा नागरिकों के मौलिक अधिकारों की घोषणा की गई। इनके अन्तर्गत काम का अधिकार, नि:शुल्क चिकित्सा, वृद्धावस्था में आर्थिक सहायता, नि:शुल्क शिक्षा, आदि थे। प्रत्येक व्यक्ति को सीमित सम्पत्ति रखने का ही अधिकार था तथा श्रम का शोषण किए जाने का घोर विरोध किया गया था।

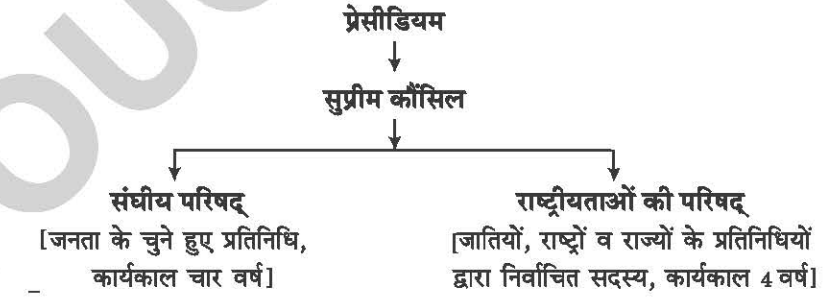

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. बोल्शेविक क्रांति कब हुई?

(a) 1915 (b) 1916 (c) 1917 (d) 1918

प्र.2. ब्लडी संडे नरसंहार कब हुआ?

(a) 1904 (b) 1905 (c) 1906 (d) 1907

TOUCH 'n' PASS

प्र.3. निम्न में कौन-सा रूसी क्रांति का कारण था?
(a) प्रथम विश्व युद्ध से रूस को हटाना (b) जमीनों को किसानों के नियन्त्रण में देना
(c) कारखानों पर मजदूरों का नियंत्रण (d) ये सभी

प्र.4. यह कथन किसका है "यूरोप में एक समाजवादी क्रांति होगी। यह एक वैज्ञानिक भविष्यवाणी है"?
(a) मार्क्स (b) लेनिन (c) स्टालिन (d) ट्राटस्की

प्र.5. हंगरी में साम्यवादी शासन की स्थापना कब हुई?
(a) 1919 (b) 1920 (c) 1921 (d) 1922

प्र.6. रूस द्वारा जर्मनी के साथ ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि कब की गई?
(a) 1 मार्च, 1918 (b) 2 मार्च, 1918 (c) 3 मार्च, 1918 (d) 4 मार्च, 1918

प्र.7. रूस व इटली के मध्य व्यापारिक संधि कब हुई?
(a) 1922 (b) 1923 (c) 1924 (d) 1925

प्र.8. रूस और जर्मनी के मध्य रैपलो की संधि कब हुई?
(a) 14 अप्रैल, 1922 (b) 15 अप्रैल, 1922
(c) 16 अप्रैल, 1922 (d) 17 अप्रैल, 1922

प्र.9. रूस द्वारा की गई संधि में कौन-सा युग्म सही नहीं है?
(a) रूस व तुर्की — 1922
(b) रूस व लिथुआनिया — 1926
(c) रूस व ईरान, पोलैण्ड — 1927
(d) रूस व इंग्लैण्ड — 1927

प्र.10. रूस ने इस्टानियों से संधि कब की?
(a) 1931 (b) 1932 (c) 1933 (d) 1934

प्र.11. रूस ने फ्रांस के साथ समझौता कब किया?
(a) 1931 (b) 1932 (c) 1933 (d) 1934

प्र.12. रूस ने एस्टोनिया, लाटविया और लिथुआनिया पर कब अधिकार कर लिया?
(a) 1938 (b) 1939 (c) 1940 (d) 1941

प्र.13. जर्मनी ने रूस पर कब आक्रमण किया?
(a) 20 जून, 1941 (b) 21 जून, 1941
(c) 22 जून, 1941 (d) 23 जून, 1941

प्र.14. यह कथन किसका है "1941 ई० में रूस नेतृत्व, जनशक्ति, सैन्यशक्ति, कृषि एवं औद्योगिक संसाधनों के कारण उस होने वाले आक्रमण का सामना करने के लिए 1914 ई० की तुलना में कहीं अधिक सुसज्जित धन निःसन्देह यह सब कुछ रूस को स्टालिन ने ही उपलब्ध कराया था।"
(a) रोज (b) बेन्स (c) कैटलनी (d) टायनबी

प्र.15. लेनिन को कब साइबेरिया भेज दिया गया?
(a) 1896 (b) 1897 (c) 1898 (d) 1899

प्र.16. यह कथन किसका है "हमारा उद्देश्य किसानों को भूमि, भूखों को खाना, रूस को शक्ति एवं जर्मनी में शान्ति स्थापित करना है"?
(a) बेन्स (b) रोज (c) मार्क्स (d) लेनिन

प्र.17. कब तक बोल्शेविक, मेन्शेविकों से संघर्ष कर जिन्हें विदेशी सहायता मिल रही थी, शांति स्थापना करने में सफल रहे?
(a) 1920 (b) 1921 (c) 1922 (d) 1923

TOUCH 'n PASS

प्र.18. बोल्शेविकों ने नया संविधान कब से लागू किया? इसके द्वारा ही रूसी साम्यवादी संघीय सोवियत गणतंत्र की स्थापना हुई?
(a) 1917 (b) 1918 (c) 1919 (d) 1920

प्र.19. बोल्शेविको के पत्र का नाम जिससे वे अपने विचारों का प्रसार करते थे?
(a) डॉन (b) एम्वर्ग (c) प्रावदा (d) रिवोल्यूशन

प्र.20. केरेन्स्की रूस छोड़कर कब भागा?
(a) 7 नवम्बर, 1917 (b) 8 नवम्बर, 1917 (c) 9 नवम्बर, 1917 (d) 10 नवम्बर, 1917

प्र.21. यह कथन किसका है ''युद्ध ने अवसर दिया और भाग्य ने लेनिन जैसा नेता पैदा किया। इस नेता की आत्मशक्ति और बुद्धि ने अवसर को परखकर अधिनायक तंत्र स्थापित कर दिया''?
(a) रोज (b) वेन्स (c) रैम्जेम्योर (d) डेरी और जारमेन

प्र.22. ब्रेस्ट लिटोवस्क संधि 3 मार्च, 1918 जो रूस एवं जर्मनी के मध्य हुई, इसमें कौनसी बात शामिल थी–
1. रूस ने एस्टोनिया, लिथुआनिया, लाटविया, फिनलैण्ड, पोलैण्ड, कोरलैण्ड से अपने अधिकार त्याग दिए।
2. उसने यूक्रेन से सेना हटा ली।
3. रूस ने जर्मनी को 3 करोड़ पौण्ड युद्ध की क्षतिपूर्ति देने का वचन दिया।
(a) 1, 2 (b) 2, 3 (c) केवल 1 (d) 1, 2, 3

प्र.23. बोल्शेनिक क्रांति की सफलता का कौन-सा कारण था?
(a) युद्ध का विरोध (b) यूरोपीय राष्ट्रों का हस्तक्षेप नहीं
(c) जनता का समर्थन (d) ये सभी

प्र.24. रूस की क्रांति ने कितने वर्षों से चले आ रहे प्रतिक्रियावादी और निरंकुश जार शासन को खत्म कर दिया?
(a) 250 (b) 300 (c) 350 (d) 400

प्र.25. रूस की क्रांति से कौन-सा परिणाम नहीं निकला?
(a) रूस में उद्योगों का राष्ट्रीयकरण (b) जमींदारी व पूँजीपतियों की समाप्ति
(c) कृषकों को जरूरत के अनुसार भूमि दी गई (d) मजदूरों को हर माह निश्चित राशि

प्र.26. कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की स्थापना कब की गई?
(a) 1919 (b) 1920 (c) 1921 (d) 1922

प्र.27. निम्न में कौन-सा कार्य जार निकोलस ने किया?
1. प्रथम ड्यूमा को 1906 में समाप्त किया।
2. द्वितीय ड्यूमा को 1907 में समाप्त किया।
3. लगभग 1,30,000 भूमिपतियों को अधिकांश सदस्यों के निर्वाचन का अधिकार दे दिया गया?
(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1, 2, 3 (d) केवल 3

प्र.28. पोल्टावा और हारकोव के कृषकों का विद्रोह कब हुआ?
(a) 1906 व 1909 (b) 1907 (c) 1906 और 1910 (d) 1912

प्र.29. निम्न में कौन-सा काम जारशाही के अंतर्गत हुआ?
(a) शिक्षा का माध्यम रूसी भाषा कर दिया गया।
(b) उच्च पदों पर रूसी नियुक्त हुए।
(c) 1905 में जार्जिया, पोलैण्ड और बाल्टिक प्रांतों के विद्रोह दबाए गए।
(d) उपर्युक्त सभी।

प्र.30. राजकाज में हस्तक्षेप करने वाले रासपुटिन जिसने सामग्री को कठपुतली बना लिया था, उसकी हत्या कब कर दी गई?
(a) 1915 (b) 1916 (c) 1917 (d) 1918

TOUCH 'n PASS

प्र.31. यौद्धिक साम्यवाद में कौन-सी बातें शामिल थीं?

1. राजकीय तथा सामूहिक फार्मों की स्थापना की गई?
2. नियंत्रित पूँजीवाद को समाप्त कर दिया गया।
3. सम्पूर्ण भूमि पर राज्य का अधिकार माना गया।
4. खाद्यान्नों के मूल्य नियंत्रित नहीं किए गए।
5. कृषि की उन्नति के विशेष प्रयास किए गए।

(a) 1, 2, 3, 5 (b) 1, 4, 5 (c) 2, 3, 4, 5 (d) 1, 2, 3, 4, 5

प्र.32. यौद्धिक साम्यवादी जो 1918 में लागू की गई, वह कब त्याग दी गई?

(a) 1920 (b) 1921 (c) 1922 (d) 1923

प्र.33. नवीन आर्थिक नीति में कौन-सी बातें शामिल थीं?

1. छोटे उद्योगों को उद्योगपतियों के अधीन ही रहने दिया।
2. एक सहकारी बैंक की स्थापना की।
3. धनी व्यक्ति से अधिक, गरीब से कम कर लिया गया।
4. किसान वेतन भोगी श्रमिक रख सकते थे।
5. कृषक सहकारिता पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
6. वस्तु विनिमय को त्याग दिया गया व मुद्रा प्रणाली लागू की गई।

(a) 1, 2, 3, 6 (b) 2, 3, 4, 5, 6 (c) 1, 2, 3, 4, 6 (d) 1, 2, 3, 4, 5, 6

प्र.34. रूस में उत्पादन बढ़ाओं आंदोलन कब चला?

(a) 1922-1923 (b) 1924-1925 (c) 1926-1927 (d) 1928-1929

प्र.35. किसने लेनिन की प्रशंसा में यह कहा ''जूलियस सीजर के समय से इतिहास का वह (लेनिन) सम्भवतः सबसे प्रभावशाली व्यक्ति था।

(a) वेन्स (b) रोज (c) हैजन (d) रैम्जेम्योर

प्र.36. लेनिन की मृत्यु कब हुई?

(a) 20 जनवरी, 1924 (b) 21 जनवरी, 1924 (c) 21 जनवरी, 1925 (d) 21 जनवरी, 1926

प्र.37. स्टालिन ने रूस में योजना आयोग की स्थापना कब की?

(a) 1923 (b) 1924 (c) 1925 (d) 1926

प्र.38. रूस की प्रथम पंचवर्षीय योजना कब लागू की गई?

(a) 1927 (b) 1928 (c) 1929 (d) 1930

प्र.39. रूस में कब एक नवीन संविधान बनाया गया जिसे 'स्टालिन संविधान' कहा जाता है?

(a) 1933 (b) 1934 (c) 1935 (d) 1936

प्र.40. 1936 के अन्तर्गत नागरिकों को मौलिक अधिकार दिए गए, इनमें कौन-से शामिल थे?

(a) काम का अधिकार (b) निःशुल्क चिकित्सा व शिक्षा
(c) वृद्धावस्था में आर्थिक सहायता (d) ये सभी

उत्तरमाला

1. (c)	**2.** (b)	**3.** (d)	**4.** (b)	**5.** (b)	**6.** (c)	**7.** (a)	**8.** (c)	**9.** (d)	**10.** (b)
11. (b)	**12.** (c)	**13.** (c)	**14.** (b)	**15.** (b)	**16.** (d)	**17.** (a)	**18.** (b)	**19.** (c)	**20.** (a)
21. (d)	**22.** (d)	**23.** (d)	**24.** (b)	**25.** (d)	**26.** (a)	**27.** (c)	**28.** (c)	**29.** (d)	**30.** (b)
31. (a)	**32.** (b)	**33.** (c)	**34.** (b)	**35.** (c)	**36.** (b)	**37.** (c)	**38.** (c)	**39.** (d)	**40.** (d)

TOUCH 'n' PASS

UNIT-VIII

द्वितीय विश्व युद्ध के लिए अग्रणी कारक
Factors Leading for Second World War

खण्ड-अ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. द्वितीय विश्व युद्ध कब और किसके बीच हुआ?
When and between whom did world war second take place?

उत्तर द्वितीय विश्व युद्ध साल 1939–45 के बीच होने वाला एक सशस्त्र विश्वव्यापी संघर्ष था। इस महाविनाश वाले युद्ध में दो प्रमुख प्रतिद्वंद्वी गुट धुरी शक्तियाँ (जर्मनी, इटली और जापान) और मित्र राष्ट्र (फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ) शामिल थे।

प्र.2. द्वितीय विश्व युद्ध का मुख्य कारण क्या था?
What was the main cause of second world war?

उत्तर इस युद्ध के कई प्रमुख कारण थे। जिसकी नींव प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद ही पड़ गई थी। वर्साय संधि की कठोर शर्तें, आर्थिक मंदी, तुष्टीकरण की नीति, जर्मनी और जापान में सैन्यवाद का उदय, राष्ट्र संघ की विफलता आदि इसके कारण प्रमुख कारणों में गिने जाते हैं।

प्र.3. द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम क्या हुए?
What were the results of second world war?

उत्तर द्वितीय विश्व युद्ध का आरम्भ 1 सितम्बर, 1939 को हुआ, जब हिटलर ने पोलैण्ड पर आक्रमण किया। यह युद्ध लगभग छः वर्ष तक चला। जापान के हिरोशिमा व नागासाकी नगरी पर अणु बम गिराये जाने (6 व 9 अगस्त, 1945) के बाद उसकी पराजय और आत्मसमर्पण (14 अगस्त, 1945) के साथ इसका अन्त आमतौर पर माना जाता है।

प्र.4. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना कब हुई?
When was the United Nations organization established?

उत्तर अमेरिकी राष्ट्रपति फैंकलिन डी० रुजवेल्ट के प्रयासों द्वारा 24 अक्टूबर, 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations Organization : UNO) की स्थापना हुई।

प्र.5. संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत कब शामिल हुआ था?
When did India join the United Nations organization?

उत्तर संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24 अक्टूबर, 1945 में हुई थी। भारत इसका संस्थापक सदस्य है। भारत ने 26 जून, 1945 में यूएन चार्टर पर हस्ताक्षर किए थे और 30 अक्टूबर, 1945 में संयुक्त राष्ट्र के चार्टर की पुष्टि के बाद भारत संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुआ।

प्र.6. संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?
Who was the first president of the United Nations organization?

उत्तर ट्रीगवी ली संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के पहले महासचिव थे। 1 फरवरी, 1946 को, संयुक्त राष्ट्र के पहले महासचिव के रूप में ट्रीगवी ली को चुना गया।

TOUCH 'n' PASS

प्र.7. संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य उद्देश्य क्या है?
What is the main aim of United Nations organization?

उत्तर संयुक्त राष्ट्र के मुख्य उद्देश्य हैं—युद्ध रोकना, मानवाधिकारों की रक्षा करना, अन्तर्राष्ट्रीय कानूनी प्रक्रिया, सामाजिक और आर्थिक विकास उभारना, जीवन स्तर सुधारना और बीमारियों की मुक्ति हेतु इलाज, सदस्य राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय चिन्ताएँ स्मरण कराना और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों को संभालने का मौका देना है।

प्र.8. राष्ट्र संघ की असफलता के क्या कारण थे?
What were the causes for the failure of the league of nations?

उत्तर राष्ट्र संघ को अमेरिका की आर्थिक और सैनिक शक्ति से वंचित होना पड़ा, जिससे उसकी शक्ति कम हो गई। अमेरिका के बाहर रहने से राष्ट्र संघ विश्व व्यापार संगठन नहीं बन सका। अमेरिका के सदस्य न बनने से जो राष्ट्र अपनी आशाएँ और इच्छाएँ पूरी नहीं कर पाए वे राष्ट्र संघ से अलग होने लगे।

प्र.9. राष्ट्र संघ का सबसे प्रमुख अंग कौन है?
Who is the main body of the league of nations?

उत्तर राष्ट्र संघ के प्रमुख अंग तीन थे जो निम्नलिखित थे—(1) सामान्य सभा, (2) परिषद्, (3) सचिवालय। इसके अतिरिक्त दो स्वायत्त अंग थे—(1) अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का स्थाई न्यायालय, (2) अंतर्राष्ट्रीय श्रम संघ।

प्र.10. द्वितीय विश्व युद्ध की भूमिका बताइए।
Describe the role of second world war.

उत्तर प्रथम विश्व-युद्ध 1914-18 ई० तक चला था तथा इसमें भाग ले रहे 36 राष्ट्रों को अपार जन-धन की हानि का सामना करना पड़ा था। युद्ध की समाप्ति पर पराजित राष्ट्रों तथा विशेष रूप से जर्मनी के साथ अत्यन्त कठोर व्यवहार किया गया जिससे उन राष्ट्रों में प्रतिशोध की भावना प्रबल होती गयी और बीस वर्ष पश्चात् पुनः युद्ध के बादल विश्व पर मंडराने लगे। इंग्लैण्ड की तुष्टीकरण की नीति से यह बादल और भी सघन होते गए और शीघ्र ही 1939 ई० में द्वितीय विश्व-युद्ध के रूप में प्रस्फुटित हो गए।

प्र.11. U.N.O. की सदस्यता एवं मुख्य बातों को संक्षेप में लिखिए।
Write in brief the membership and main features of U.N.O.

उत्तर संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में दो प्रकार के सदस्यों की व्यवस्था है। संघ के चार्टर में 3 से लेकर 6 अनुच्छेद तक सदस्यता का विस्तृत उल्लेख है। प्रथम प्रकार के सदस्यों को प्रारम्भिक सदस्य कहा जाता है। ये वे सदस्य राष्ट्र हैं जिन्होंने सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लिया था या चार्टर के विधान को स्वीकार किया था। दूसरे प्रकार के सदस्य निर्वाचित सदस्य कहलाते हैं। ये संघ के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों को स्वीकार करते हुए एक प्रार्थना पत्र देकर, बाद में संघ के सदस्य बने हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता सुरक्षा परिषद् के समर्थन एवं महासभा की स्वीकृति के पश्चात् सम्भव है। संघ किसी भी सदस्य राष्ट्र को यदि वह चार्टर के सिद्धान्तों का अतिक्रमण करती है तो सुरक्षा परिषद् के समर्थन एवं महासभा के निर्णय के अनुसार निष्कासित कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रधान कार्यालय न्यूयॉर्क में है। अंग्रेजी, चीनी, स्पेनिश, फ्रेंच एवं रूसी भाषाएँ संयुक्त राष्ट्र संघ की स्वीकृत भाषाएँ हैं।

प्र.12. U.N.O. की भूमिका बताइए।
State the role of U.N.O.

उत्तर प्रथम विश्व-युद्ध की समाप्ति के पश्चात् विश्व-शान्ति की स्थापना के उद्देश्य से राष्ट्र संघ की स्थापना की गई थी, परन्तु राष्ट्र-संघ शान्ति स्थापना करने में असफल रहा और विश्व को बीस वर्ष पश्चात् ही द्वितीय विश्व-युद्ध की विभीषिका का सामना करना पड़ा। यह प्रश्न अपने आप में अलग है कि राष्ट्र संघ की असफलता क्या उसके जन्म के साथ ही निश्चित हो चुकी थी? कुल मिलाकर राष्ट्र संघ की असफलता ने स्थायी शान्ति को सुरक्षित रखने वाले एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता का अनुभव करा ही दिया। प्रश्न यह उठा कि क्या राष्ट्र संघ को ही पुनर्जीवित कर नया रूप दिया जाए? किन्तु अमेरिका एवं पश्चिमी देश राष्ट्र संघ से पृथक् संगठन के पक्षपाती थे। अतः एक नई अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के गठन के प्रयास युद्ध काल में ही प्रारम्भ हो गए।

TOUCH 'n' PASS

खण्ड-ब लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. युद्धकालीन एकता के विघटन के कारणों का उल्लेख कीजिए।
Mention the causes of end of the war time unity.

उत्तर

युद्धकालीन एकता का विघटन
(End of the War Time Unity)

द्वितीय विश्व-युद्ध में अमेरिका, ब्रिटेन एवं फ्रांस ने अपनी पुरानी शत्रुता को भुलाकर धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली एवं जापान) का डटकर मुकाबला किया था। युद्ध के समय मित्र राष्ट्रों की इस एकता से ऐसा प्रतीत होता था कि युद्ध के पश्चात् शान्ति स्थापित होगी, किन्तु विश्व-युद्ध समाप्त होते ही यह आशा सही सिद्ध नहीं हुई। रूस एवं अमेरिका के रूप में दो महाशक्तियों का उदय हुआ। युद्धकालीन एकता का विघटन हो गया। संक्षेप में इस विघटन के निम्नलिखित कारण हैं—

1. **सोवियत संघ की समाजवादी व्यवस्था**—युद्धकालीन एकता के विघटन का महत्त्वपूर्ण कारण सोवियत संघ में समाजवादी व्यवस्था का विकास था। युद्ध के समय तो ब्रिटेन, फ्रांस एवं अमेरिका जैसे पूँजीवादी देशों की प्रमुख समस्या धुरी राष्ट्रों का दमन थी। अत: रूस को अपने खेमे में मिलाने के लिए उन्हें रूसी व्यवस्था पर प्रत्यक्षत: विशेष ध्यान नहीं दिया, परन्तु अप्रत्यक्ष रूस से वे रूस का इतना दमन करना चाहते थे कि रूसी साम्यवादी व्यवस्था पूँजीवाद के लिए खतरा न बन सके। यही कारण था कि 1941 ई० में जर्मनी द्वारा रूस पर आक्रमण करने पर इंग्लैण्ड एवं रूस के बीच हुए समझौते को सुदृढ़ करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। पश्चिमी देशों ने तो इसे 'निषेधात्मक मैत्री' की संज्ञा दी। रूस के इस अनुरोध को कि युद्ध का द्वितीय मोर्चा फ्रांस में खोला जाना चाहिए, चर्चिल ने यह कहकर खटाई में डालने का प्रयत्न किया कि दूसरा मोर्चा बाल्कान प्रदेश में खुलना चाहिए। स्तालिन के अनुरोध पर बहस 1942 ई० से 1944 ई० तक जारी रही। इस बीच जर्मनी की सेनाओं के लगातार प्रहार रूस पर हो रहे थे। पूँजीवादी मित्र देश चाहते भी यही थे कि रूस पर जर्मनी के इतने प्रहार हों कि रूस पुन: सिर न उठा सके। इस प्रकार पूँजीवादी देशों ने अपने मित्र देश रूस की पीठ में छुरा भौंकने का जो प्रयत्न किया उससे रूस का सशंकित होना स्वाभाविक ही था।
2. **सोवियत संघ का राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रति रूख**—पूँजीवादी एवं साम्राज्यवादी शक्तियों के चंगुल से अपने को आजाद करने के लिए एशिया एवं अफ्रीका के विभिन्न उपनिवेशों में जो राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहे थे उसे द्वितीय विश्व-युद्ध ने और अधिक भड़का दिया। रूस इस प्रकार के आन्दोलनों का पक्षपाती था, किन्तु ब्रिटेन ने इस प्रकार के आन्दोलनों को कुचलने का भरसक प्रयत्न किया। अत: रूस एवं ब्रिटेन के सम्बन्धों में दरार पड़नी प्रारम्भ हो गई।
3. **युद्ध काल में रूस के प्रति अविश्वास**—युद्ध काल में रूस के मित्र राष्ट्रों ने सदा ही उसके प्रति अविश्वास की धारणा रखी। 13 अगस्त, 1943 ई० को चर्चिल ने यूगोस्लाविया और यूनान में राजवंशों के पुनर्स्थापन की बात कही। मार्शल टीटो द्वारा इस बात का विरोध किए जाने पर चर्चिल ने उसे सहायता देना भी बन्द कर दिया। अब अमेरिका ने जापान पर एटम बम गिराया तो उसने ब्रिटेन को तो विश्वास में ले लिया, परन्तु रूस को इस विषय में कोई जानकारी तक नहीं दी।
4. **युद्धोत्तर समस्याओं में मतैक्य न होना**—जैसे ही द्वितीय विश्व-युद्ध समाप्त हुआ 5 मार्च, 1946 ई० को चर्चिल ने अमेरिका में फुल्टन (Fulton) नामक स्थापना पर सोवियत रूस को **लौह आवरण** (Iron Curtain) की संज्ञा देते हुए अपने भाषण में रूस का अपमान किया। सोवियत रूस जो कि युद्ध काल से ही स्थिति को जाँच एवं परख रहा था, अब अपने लिए एक ऐसी मजबूत आधारशिला खड़ी करना चाहता था जिस पर स्वयं खड़ा होकर गर्व कर सके। उसकी इस भावना को युद्ध के पश्चात् उत्पन्न समस्याओं के समाधान में अमेरिका एवं ब्रिटेन के रूसी विरोधी रुख ने और अधिक मजबूत बना दिया। फारस, टर्की, यूनान एवं जर्मनी की समस्याओं के समाधान के प्रश्न पर रूस का मतैक्य ब्रिटेन व अमेरिका से नहीं था। इसी समय सोवियत रूस को पृथक् कर यूरोप के एक संयुक्त राज्य की स्थापना की बात भी पूँजीवादी देश करने लगे थे। 10 अगस्त, 1945 में एक फ्रांसीसी दैनिक पत्र ने प्रकाशित किया कि "यदि यूरोप को सोवियत संघ के पंजों से बचाना है तो पश्चिमी देशों को एक हो जाना चाहिए।"

   इस प्रकार युद्ध काल में तथा काल के पश्चात् पश्चिमी पूँजीवादी राष्ट्रों द्वारा रूस के प्रति अपनाई गई नीतियों से क्षुब्ध होकर 20 सितम्बर, 1945 ई० को सोवियत समाचार पत्र इजवेस्तिया (Izvestia) ने लिखा है, "पश्चिमी गुट पश्चिम में

TOUCH 'n PASS

रूसी विश्वास को समाप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं।'' सन्देह एवं भय के वातावरण में रूस का अलग हो जाना स्वाभाविक ही था। अत: अब विश्व-इतिहास का एक नया दौर आरम्भ हुआ जिसे 'शीत-युद्ध का दौर' (Cold War Era) के नाम से जाना जाता है।

प्र.2. संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य एवं सिद्धान्त का उल्लेख कीजिए।
Mention the aims and principles of the united nations organization.

उत्तर

संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य एवं सिद्धान्त
(Aims and Principles of the United Nations Organization)

संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में 19 अध्याय, 111 धाराएँ एवं लगभग 10 हजार शब्द हैं। चार्टर के अनुच्छेद में उसके उद्देश्यों एवं चार्टर की दूसरी धारा में उसके सिद्धान्तों का उल्लेख है। इसके उद्देश्य एवं सिद्धान्त निम्नवत् हैं—

(अ) उद्देश्य (Aims)

संयुक्त राष्ट्र संघ के निम्नलिखित उद्देश्य थे—

1. अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा कायम रखते हुए युद्ध से मानव जाति की रक्षा करना तथा शान्ति भंग करने वाली आक्रामक कार्यवाहियों को रोकने के उपाय करना।
2. राष्ट्रों के समान अधिकारों एवं आत्म-निर्णय के आधार पर विश्व के राष्ट्रों के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का विकास एवं विश्व शान्ति को सुदृढ़ बनाने के उपाय करना।
3. विश्व की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मानवतावादी समस्याओं के निराकरण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना तथा मानव अधिकारों व आधारभूत स्वतन्त्रताओं के प्रति सम्मान भावना का विकास करना।
4. संयुक्त राष्ट्र संघ को एक ऐसे केन्द्र के रूप में लाना जो कि उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न राष्ट्रों द्वारा किए जाने वाले प्रयत्नों में सामंजस्य स्थापित कर सके।

(ब) सिद्धान्त (Principles)

संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धान्त निम्नवत् हैं—

1. संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य राष्ट्रों की सार्वभौमिकता और समानता अक्षुण्ण है।
2. सभी सदस्य राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र संघ के नियमों का पालन करेंगे।
3. पारस्परिक झगड़ों का निपटारा सभी सदस्य राष्ट्र शान्तिमय उपायों से करेंगे।
4. कोई भी सदस्य राष्ट्र किसी राष्ट्र की प्रादेशिक अखण्डता एवं राजनीतिक स्वतन्त्रता के विरुद्ध कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेगा जिससे उस राष्ट्र एवं संयुक्त राष्ट्र संघ का अपमान होता हो।
5. संयुक्त राष्ट्र संघ यह प्रयत्न करेगा कि संघ के सदस्य राष्ट्रों के अतिरिक्त भी अन्य राष्ट्र संघ के सिद्धान्तों का पालन करें।
6. संघ किसी भी राष्ट्र के आन्तरिक मामलों में दखल नहीं देगा।
7. सभी सदस्य राष्ट्र के सिद्धान्तों के अनुरूप संघ को उस समय पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे जबकि संघ किसी राष्ट्र के विरुद्ध कार्यवाही कर रहा हो।

प्र.3. राष्ट्र संघ की सदस्यता एवं महत्त्व का उल्लेख कीजिए।
Mention the membership and importance of the League of Nations.

उत्तर

राष्ट्र संघ की सदस्यता
(Membership of the League of Nations)

हैजन के अनुसार, ''प्रारम्भ में राष्ट्र संघ में दो वर्गों के राज्य सम्मिलित होने थे, प्रथमत:, सन्धि के मूल हस्ताक्षरकर्ता जिनकी कुल संख्या बत्तीस थी और द्वितीयत:, कुछ अन्य राज्य, जिनकी संख्या तेरह थी और जो आमन्त्रण को स्वीकार करने के पश्चात् सदस्य बनने थे।'' परन्तु समझौते पर प्रारम्भ में केवल 16 देश ही इसके सदस्य बने। सबसे विचारणीय एवं आश्चर्यजनक बात तो यह है

TOUCH 'n PASS

कि संयुक्त राज्य अमेरिका कभी भी इसका सदस्य नहीं बना। जर्मनी को इसकी सदस्यता 1926 में दी गयी जिसने 1933 में इसे छोड़ा। रूस 1933 में सदस्य बना, किन्तु उसे 1940 में वंचित कर दिया गया। जापान ने 1933 में और इटली ने 1937 में इसकी सदस्यता छोड़ दी।

सदस्यता के सन्दर्भ में यह बात उल्लेखनीय है कि असेम्बली का 2/3 बहुमत मिलने पर किसी भी देश को इसकी सदस्यता प्रदान की जा सकती थी, कौंसिल अपनी सर्वेसम्मति से किसी को भी सदस्यता से वंचित कर सकती थी। यह भी प्रतिबन्ध था कि यदि कोई देश स्वेच्छा से सदस्यता को छोड़ना चाहे तो उसे दो वर्ष का नोटिस देना होगा।

राष्ट्र संघ का महत्त्व (Significance of the League of Nations)

अपने कार्यकाल में विभिन्न असफलताओं के बावजूद भी लीग का महत्त्व स्वयं सिद्ध है। यह बात सत्य है कि 18 अप्रैल, 1946 ई० को लीग का अन्त हो गया, किन्तु यदि हम कहें कि राष्ट्र संघ के रूप में पुन: जन्म ले लिया तो अत्युक्ति न होगी। वास्तव में लीग के उद्देश्य एवं सिद्धान्त अपने आप में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण थे। लीग की असफलता का मुख्य दोष राष्ट्र संघ को नहीं, वरन् तत्कालीन राष्ट्रों की स्वार्थपरता को जाता है, जिन्होंने लीग के महान उद्देश्यों के प्रति आँखे बन्द कर ली।

सामाजिक, आर्थिक एवं मानवीय क्षेत्र में लीग के कार्य प्रशंसनीय रहे, जिसने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को नई दिशा दी, इसने विश्व को एक मंच पर लाकर विचारों के आदान-प्रदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। फिशर महोदय ने भी इसके महत्त्व का आकलन उक्त रूप में ही किया है।

प्र.4. राष्ट्र संघ का उदय कैसे हुआ?
How did the league of nations rise?

उत्तर

राष्ट्र संघ का उदय
(Rise of the League of Nations)

राष्ट्र संघ राष्ट्रपति विल्सन का आविष्कार नहीं कहा जा सकता। वास्तव में यह कतिपय शान्ति के पक्षधरों के मस्तिष्क की उपज का समागम था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान विश्व को जिन विभीषिकाओं का सामना करना पड़ा था, उसने विभिन्न देशों के शान्ति विचारकों एवं राजनीतिज्ञों को झकझोर कर रख दिया।

इंग्लैण्ड में लॉर्ड ब्राइस के नेतृत्व में फरवरी, 1915 में **'युद्ध टालने के लिए प्रस्ताव'** नामक लेख प्रकाशित हुआ। मई, 1915 में इंग्लैण्ड में **'लीग ऑफ सोसाइटी'** की स्थापना हो चुकी थी। टैफ्ट, जो कि अमेरिका का भूतपूर्व राष्ट्रपति था, की अध्यक्षता में अमेरिका में शान्ति स्थापित करने वाले संघ की स्थापना हुई। **न्यूयार्क** में स्वतन्त्र राष्ट्र संघ लीग नामक संस्था का निर्माण हुआ। इस प्रकार अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस एवं न्यूयार्क में इस तरह की विचारधारा के संगठन बन चुके थे। 22 जनवरी, 1917 को विल्सन ने अमेरिकन सीनेट में शान्ति हेतु विश्व संघ की बात कही थी। अत: कहा जा सकता है कि युद्ध की समाप्ति होते-होते एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना का माहौल पैदा हो चुका था।

जब पेरिस का सम्मेलन आयोजित हुआ तो उससे पूर्व ही ब्रिटिश विदेश विभाग द्वारा निर्धारित एक कमेटी ने जिसकी अध्यक्षता लार्ड फिलीमोर ने की, मार्च 1918 में राष्ट्र संघ की योजना की रूपरेखा तैयार की। कर्नल हाउस, स्टमस, विल्सन, लॉर्ड सेसिल ने भी अपने-अपने ढंग से रूपरेखाएँ बनायीं। 20 जनवरी, 1919 तक इन सभी के प्रारूपों में परिवर्तन होते गये और अन्तत: ब्रिटेन के रखे गये प्रारूप एवं विल्सन के अन्तिम प्रारूप को संयुक्त रूप से संशोधित कर एक नया प्रारूप बनाया गया जिसे शान्ति सम्मेलन के 19 सदस्यों के एक आयोग के अध्ययनार्थ रखा गया, जिसका अध्यक्ष विल्सन था। 28 अप्रैल, 1919 को संशोधित प्रारूप को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार अन्तत: 10 जनवरी, 1920 ई० को लीग ऑफ नेशन्स का वैधानिक रूप से जन्म हुआ।

राष्ट्र संघ का संविधान (Constitution of the League of Nations)

राष्ट्र संघ जिसे कि समझौते का नाम दिया गया था। 26 धाराओं तथा एक भूमिका वाले संविधान से युक्त था। संविधान की दसवीं, बारहवीं एवं सोलहवीं धाराएँ अत्यन्तपूर्ण हैं। इनमें प्रादेशिक अखण्डता, न्यायिक व्यवस्था, आर्थिक एवं सैन्य व्यवस्था का विवरण दिया गया है। मैरियट के अनुसार, "राष्ट्र संघ के नियमों की प्रतिलिपियाँ मित्र राष्ट्रों और साथियों तथा कुछ दिन पहले के शत्रुओं के बीच होने वाली सभी मुख्य सन्धियों के आदि में लगायी गयी थी।"

Touch 'n' PASS

खण्ड-स विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र.1. द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
Describe in detail the causes of the second world war.

उत्तर

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण
(Causes of the Second World War)

1939 ई० से 1945 ई० तक हुए इस युद्ध के प्रारम्भ होने के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे—

1. **प्रथम विश्व-युद्ध एवं वर्साय की सन्धि** (First World War and the Treaty of Versailles)—द्वितीय विश्व-युद्ध का एक प्रमुख कारण प्रथम विश्व-युद्ध में ही निहित था। द्वितीय विश्व-युद्ध के प्रारम्भ होने के वही कारण थे जिनके कारण प्रथम विश्व-युद्ध हुआ था। वर्साय की सन्धि, ऐसा प्रतीत होता है कि शान्ति सन्धि नहीं थी, अपितु बीस वर्षों के लिए युद्ध-विराम सन्धि थी। प्रथम विश्व-युद्ध सम्भवत: दोनों पक्षों की आकांक्षाओं को पूर्ण नहीं कर सका था। अत: इन अरमानों की पूर्ति हेतु द्वितीय विश्व-युद्ध हुआ।
   वर्साय की सन्धि (Treaty of Versailles) पर भी द्वितीय विश्व-युद्ध प्रारम्भ करने का उत्तरदायित्व है। प्रथम विश्व-युद्ध के समाप्त होने के पश्चात् 1919 ई० में जर्मन के साथ वर्साय की सन्धि की गयी थी। जर्मनी के साथ इसमें प्रतिशोध की भावना से अत्यन्त कठोर व्यवहार किया गया था, ताकि उसे स्थायी रूप से शक्तिहीन बनाया जा सके। इस सन्धि के द्वारा जर्मनी को अनेक भागों में विभक्त किया गया, उसके उपनिवेशों पर मित्र-राष्ट्रों ने अधिकार किया तथा खानों एवं कारखानों को मित्र-राष्ट्रों ने परस्पर वितरित कर लिया। जर्मनी पर युद्ध-हर्जाना भी इतना अधिक किया गया था कि उसे चुकाना जर्मनी के लिए असम्भव था। जर्मनी से इस सन्धि-पत्र पर बलपूर्वक हस्ताक्षर कराए गए। इस प्रकार मित्र-राष्ट्रों द्वारा अदूरदर्शिता का प्रदर्शन करती हुई, जर्मनी के साथ की गयी इस सन्धि ने जर्मन को इसे भंग करने एवं मित्र-राष्ट्रों से प्रतिशोध लेने के लिए बाध्य किया। इसी कारण द्वितीय विश्व-युद्ध को प्रतिशोधात्मक-युद्ध (War of Revenge) कहा जाता है।
2. **दलबन्दी** (Party System)—प्रथम विश्व-युद्ध से पूर्व यूरोप दो सैनिक खेमों त्रि-दल (Triple Alliance) तथा त्रि-मैत्री (triple Entente) में विभक्त हो गया था। इसी प्रकार द्वितीय विश्व-युद्ध के पूर्व भी यूरोप दो भागों में विभक्त हो चुका। द्वितीय विश्व-युद्ध में एक ओर जर्मनी, इटली व जापान थे जिन्हें धुरी शक्तियाँ (Axis Powers) कहते थे। धुरी शक्तियाँ वर्साय सन्धि की विरोधी तथा अधिनायकवाद की समर्थक थी। दूसरी ओर मित्र राष्ट्रों में फ्रांस, पोलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया तथा रोमानिया थे। युद्ध के प्रारम्भ होने के कुछ समय पश्चात् इंग्लैण्ड मित्र राष्ट्रों की तथा रूस धुरी शक्तियों की ओर हो गया। युद्ध काल में जर्मनी द्वारा रूस पर आक्रमण किए जाने से रूस भी मित्र-राष्ट्रों की ओर हो गया तथा पर्ल हार्बर पर आक्रमण होने पर अमरीका भी इसी दल में मिल गया। इस प्रकार पोलैण्ड व जर्मनी का झगड़ा विश्व-युद्ध में परिणत हो गया।
3. **सैनिकवाद** (Militarism) 1919 ई० की वर्साय की सन्धि के द्वारा जर्मनी को निर्बल बनाने के उद्देश्य से उसका नि:शस्त्रीकरण कर दिया गया था। इसके पश्चात् भी फ्रांस का जर्मनी के प्रति भय कम न हुआ। अत: वह सैनिक तैयारियाँ करता ही रहा। 1933 ई० में जर्मनी में हिटलर शक्ति में आया। हिटलर ने वर्साय की सन्धि की अवहेलना करके अपनी सैनिक शक्ति में वृद्धि करना प्रारम्भ कर दिया। उसने सैनिक सेवा अनिवार्य की तथा हथियारों के उत्पादन को बढ़ाया। हिटलर द्वारा निरन्तर सैनिक शक्ति में वृद्धि होते देखकर इंग्लैण्ड को भी इस ओर ध्यान केन्द्रित करना पड़ा। इंग्लैण्ड, जो प्रारम्भ में नि:शस्त्रीकरण के पक्ष में था, हिटलर की नीति को देखकर स्वयं की सैन्य-शक्ति में वृद्धि करने पर विवश हुआ। धीरे-धीरे जापान, इटली तथा रूस ने भी अपनी सैन्य-शक्ति, में वृद्धि करना प्रारम्भ किया। सभी देशों के द्वारा सैनिक तैयारियाँ करने पर युद्ध का होना स्वाभाविक ही था।
4. **राष्ट्र संघ की निर्बलता** (Weakness of League of Nations)—प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात् पारस्परिक समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाने के उद्देश्य से एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था राष्ट्र संघ की स्थापना की गयी थी, किन्तु

TOUCH 'n PASS

राष्ट्र-संघ अपने उद्देश्य में सफलता न प्राप्त कर सका। अनेक राष्ट्र, राष्ट्र-संघ से पृथक् हो गए तथा उन्होंने उसके प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया, किन्तु राष्ट्र संघ ऐसे देशों के विरुद्ध कार्यवाही न कर सका जिससे उसकी निर्बलता स्पष्ट हो गयी। अत: अन्य देशों को भी राष्ट्र संघ से सुरक्षा प्राप्त करने का विश्वास समाप्त हो गया।

5. **साम्राज्यवाद** (Imperialism)—प्रथम विश्व-युद्ध का भी एक प्रमुख कारण साम्राज्यवाद था। इस युद्ध के पश्चात् भी साम्राज्यवाद की भावनाएँ समाप्त न हो सकीं। जर्मनी एवं इटली वर्साय सन्धि का विरोध करते हुए बढ़ती हुई जनसंख्या को बसाने के लिए उपनिवेश स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हो गए। जापान भी साम्राज्यवादी नीति का समर्थक था तथा उसकी दृष्टि चीन पर लगी थी। इन देशों की साम्राज्यवादी नीति इंग्लैण्ड व फ्रांस के हितों से टकरा रही थी। अत: युद्ध होना आवश्यक भी था।
6. **तानाशाहों का उदय** (Rise of Dictators)—द्वितीय विश्व-युद्ध से पूर्व यूरोप के अनेक देशों में तानाशाहों का शासन स्थापित हुआ। जर्मनी में बीमर गणतन्त्र के शासन की असफलता के पश्चात् नाजी दल का नेता हिटलर (Hitler) शक्ति में आया। उसका प्रमुख उद्देश्य वर्साय सन्धि की अवहेलना करके जर्मनी के खोये हुए सम्मान को पुन: अर्जित करना था। अत: अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने सैन्य-शक्ति को बढ़ाया व आस्ट्रिया तथा चैकोस्लोवाकिया पर अधिकार कर लिया।
इटली में भी मुसोलिनी (Mussolini) नामक तानाशाह शक्ति में आया तथा इटली में फासीवाद की स्थापना करने में सफल हुआ। इटली का विचार था कि यद्यपि उसने मित्र-राष्ट्रों को प्रथम विश्व-युद्ध में सहयोग दिया तथापि उसे उचित इनाम नहीं दिया गया। अत: यह मित्र राष्ट्रों एवं वर्साय की सन्धि का विरोधी हो गया तथा उपनिवेश स्थापना के लिए प्रयत्नशील हो गया। स्पेन में भी तानाशाही की भावनाएँ शक्तिशाली होती गयी तथा शीघ्र ही जनरल फ्रैंको नामक व्यक्ति ने इटली एवं जर्मनी की सहायता से गणतन्त्र शासन के विरुद्ध विद्रोह किया तथा अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की।
इस प्रकार विभिन्न देशों में तानाशाहों का उदय हुआ, जिन्होंने शीघ्र ही अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने का प्रयास सैनिक शक्ति के आधार पर किया। ऐसी स्थिति में युद्ध होना स्वाभाविक ही था।
7. **दो विचारधाराओं का संघर्ष** (Struggle between two thought)—द्वितीय विश्व-युद्ध से पूर्व में दो प्रकार की विचारधाराएँ प्रचलित थी—जनतन्त्रात्मक एवं एकतन्त्रात्मक। जनतन्त्रात्मक विचारधारा इंग्लैण्ड, फ्रांस एवं अमरीका में प्रचलित थी जबकि इटली, जर्मनी एवं जापान एकतन्त्रात्मक विचारधारा के समर्थक थे। शीघ्र ही इन दोनों विचारधाराओं में संघर्ष प्रारम्भ हो गया। अत: दोनों में निर्णय होना निश्चित ही था जिसका एकमात्र रास्ता युद्ध ही था। इटली के तानाशाह मुसोलिनी ने एक बार कहा था—'दोनों विचारधाराओं के संघर्ष में समझौता होना असम्भव है। इस संघर्ष के कारण या तो हम रहेंगे अथवा वे ही रहेंगे।'
8. **राष्ट्रीय समाजवाद** (National Socialism)—जर्मनी में इस प्रकार की भावना जाग्रत हो गयी कि वे शुद्ध आर्य हैं। अत: मनुष्यों में श्रेष्ठ होने के कारण उन्हें ही शासन करने का अधिकार प्राप्त है। यह राष्ट्रीय समाजवाद की भावना भविष्य में अत्यन्त हानिकारक प्रमाणित हुई। प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात् जर्मनी को विभिन्न भागों में विभक्त कर दिया था जिसने जर्मन अलग-अलग राष्ट्रों के अधीन हो गए थे। आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया तथा पोलैण्ड में रहने वाले जर्मनों के कारण अत्यन्त गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गयी। हिटलर विदेशों में रहने वाले जर्मनों को जर्मनी से मिलाना चाहता था। जर्मनी ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शक्ति का सहारा लिया। फ्रांस व इंग्लैण्ड ने तुष्टीकरण की नीति के स्थान पर यदि इसी समय जर्मनी को आस्ट्रिया पर अधिकार करने से रोका होता तो सम्भवत: द्वितीय विश्व-युद्ध न होता।
9. **तुष्टीकरण की नीति** (Policy of Appeasement)—मित्र राष्ट्रों द्वारा तानाशाहों के प्रति तुष्टीकरण की नीति के परिणामस्वरूप तानाशाह अत्यधिक शक्तिशाली होते चले गए और विश्व-युद्ध का एक कारण बने। मित्र-राष्ट्रों द्वारा तुष्टीकरण की नीति का पालन करने का कारण मित्र-राष्ट्रों में पारस्परिक झगड़ों का होना था। इंग्लैण्ड और अमरीका जर्मनी के प्रति उदारता का व्यवहार करना चाहते थे, क्योंकि उनका मत था कि इस प्रकार के व्यवहार करने पर जर्मनी भविष्य में युद्ध नहीं करेगा। वहाँ इंग्लैण्ड में बने सामान की अत्यधिक माँग थी। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड रूस के साम्यवाद के प्रति अत्यन्त शंकित था तथा रूस के साम्यवाद को रोकने के लिए जर्मनी का उत्थान आवश्यक था। इंग्लैण्ड

TOUCH 'n' PASS

यूरोप के झगड़ों में पुन: पड़ना नहीं चाहता था। फ्रांस जर्मनी के प्रति कठोर नीति का पालन करना चाहता था। इस प्रकार मित्र-राष्ट्रों में परस्पर मतभेद से तानाशाहों ने लाभ उठाया। हिटलर ने आस्ट्रिया को अपने अधिकार में ले लिया तथा चैकोस्लोवाकिया को भी सेना भेजी। इटली ने भी अबीसीनिया पर अधिकार कर लिया। इंग्लैण्ड ने फिर भी कोई ठोस-कार्यवाही न की। तानाशाहों की महत्वाकांक्षाएँ मित्र-राष्ट्रों की तुष्टीकरण की नीति से बढ़ती गयी। अत: युद्ध का होना निश्चित हो गया।

10. **अनाक्रमण सन्धि** (Non-aggression Pact)—रूस की साम्यवादी नीति के कारण इंग्लैण्ड व रूस के सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो गया था। मित्र-राष्ट्र रूस पर विश्वास न करते थे तथा म्यूनिख सम्मेलन में भी रूस को आमन्त्रित नहीं किया गया था। रूस पश्चिम में जर्मनी एवं पूर्व में जापान से घिरा हुआ था। अत: मित्र-राष्ट्रों से मित्रता करना चाहता था। इंग्लैण्ड एवं फ्रांस भी जर्मनी के विरुद्ध रूस से सन्धि करना चाहते थे, किन्तु रूस की कुछ शर्तें थी जिन्हें इंग्लैण्ड स्वीकार करने के लिए तैयार न था। अत: रूस जो पहले से ही मित्र-राष्ट्रों से प्रसन्न न था, अब रुष्ट हो गया तथा उसने जर्मनी के साथ 1939 ई० में अनाक्रमण सन्धि (Non-aggression Pact) कर लिया। जर्मनी को इससे अत्यधिक लाभ हुआ, क्योंकि इसके उसकी पूर्वी सीमा सुरक्षित हो गयी।

इस प्रकार अपनी स्थिति को दृढ़ बनाकर जर्मनी ने 1 सितम्बर, 1939 ई० को पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। पोलैण्ड की सहायतार्थ इंग्लैण्ड व फ्रांस ने तथा जर्मनी की ओर से रूस ने हस्तक्षेप किया, परिणामस्वरूप द्वितीय विश्व-युद्ध प्रारम्भ हो गया।

प्र.2. द्वितीय विश्व युद्ध की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।
Describe the main events of the second world war.

उत्तर

द्वितीय विश्व युद्ध की घटनाएँ
(Events of the Second World War)

जर्मनी ने 1 सितम्बर, 1939 ई० को पोलैण्ड पर आक्रमण किया। पोलैण्ड ने यद्यपि अत्यन्त वीरतापूर्वक जर्मन सेनाओं का सामना किया, किन्तु जर्मन सेनाओं की सहायतार्थ रूस की सेनाओं के भी आ जाने पर पोलैण्ड परास्त हुआ तथा उस पर जर्मनी एवं रूस का अधिकार हो गया। रूस जर्मनी पर विश्वास नहीं करता था। अत: उसने फिनलैण्ड पर भी अधिकार किया तत्पश्चात् लाटविया, लिथुआनिया तथा एस्टोनिया पर अधिकार कर अपनी पश्चिमी सीमा को रूस ने सुरक्षित कर लिया।

1940 ई० के प्रारम्भ में जर्मनी ने डेनमार्क तथा नीदरलैण्ड पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् 1914 ई० की पराजय का प्रतिशोध लेने हेतु बेल्जियम होते हुए फ्रांस पर जर्मनी ने आक्रमण किया। कन्कर्क के स्थान पर घमासान युद्ध हुआ। जिसमें जर्मन सेना ने फ्रांस व इंग्लैण्ड की सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया। 22 जून, 1940 ई० को फ्रांस ने हथियार डाल दिए। इस विजय से फ्रांस के विस्तृत भाग पर जर्मनी का अधिकार हो गया। इसी वर्ष इटली भी फ्रांस के अधीन उसके क्षेत्र सेवाएँ, नाइस, कोर्सिका, आदि अधिकार करने के उद्देश्य से युद्ध में सम्मिलित हो गया। जर्मनी की सेना की सहायता से इटली यूनान को परास्त करने में भी सफल हो गया। जर्मनी ने क्रीट पर भी अधिकार कर लिया तथा पतझड़ के मौसम में इंग्लैण्ड पर हवाई आक्रमण किया। लन्दन व अन्य बड़े नगरों पर बमबारी की गयी जिसमें हजारों व्यक्ति मारे गए तथा अपार सम्पत्ति नष्ट हुई। इंग्लैण्ड ने भी जर्मनी के जहाजों को नष्ट करना प्रारम्भ किया तथा जर्मनी को विशेष सफल न होने दिया।

22 जून, 1941 ई० को जर्मनी ने 1919 की अनाक्रमण सन्धि को भंग करके बिना किसी चेतावनी के रूस पर आक्रमण कर दिया। यहाँ पर यह जानना आवश्यक है कि जर्मनी ने अचानक रूस पर आक्रमण क्यों कर दिया। जर्मनी द्वारा रूस पर आक्रमण करने के निम्नलिखित कारण थे—

1. जर्मनी रूस की बढ़ती हुई शक्ति से चिन्तित होने लगा था।
2. हिटलर का विचार था कि रूस जर्मनी को धोखा दे रहा था व किसी भी समय वह जर्मनी पर आक्रमण कर सकता था।
3. हिटलर को यह भी सन्देह था कि इंग्लैण्ड व अमेरिका ने रूस से सन्धि कर ली थी।

अत: हिटलर का विचार था कि इंग्लैण्ड को पराजित करने से पूर्व रूस की शक्ति कुचलना आवश्यक था, ताकि इंग्लैण्ड को रूस की मदद न मिल सके। इस विषय में लैंगसम का कथन उल्लेखनीय है, "नाजी नेता इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब तक उन्हें पूर्वी

सीमा पर जर्मन सेना एवं विमानों को रखना पड़ेगा तब तक इंग्लैण्ड को पराजित करना सम्भव न होगा। अत: उन्होंने पहले अचानक विद्युतगति से आक्रमण कर रूस को पराजित करने और फिर इंग्लैण्ड के विरुद्ध सम्पूर्ण शक्ति लगाने का निश्चय किया।'' वैसे भी हिटलर व साम्यवादी रूस मजबूरी में ही एक दूसरे का साथ दे रहे थे। रूस पर आक्रमण करते समय हिटलर ने मुसोलिनी को लिखा था। सोवियत के साथ मैत्री निभाना अत्यधिक कष्टप्रद हो गया था। इससे मुझे अत्यधिक मानसिक क्लेश हो रहा था। अब में शान्ति अनुभव कर रहा हूँ।'' हिटलर द्वारा रूस पर आक्रमण करना उसकी एक बड़ी भूल थी। हिटलर का विचार था कि वह रूस को सफलतापूर्वक परास्त कर लेगा, किन्तु रूसी सेना ने अत्यन्त वीरतापूर्वक जर्मन सेनाओं का सामना किया तथा हिटलर को उसके उद्देश्य पूर्ति में सफल न होने दिया। रूस पर जर्मनी द्वारा आक्रमण करने के परिणामस्वरूप रूस ने जुलाई, 1941 ई० में इंग्लैण्ड से सन्धि कर ली।

जापान का इस समय तक चीन से युद्ध चल रहा था, किन्तु दिसम्बर, 1941 ई० में जापान ने अमरीका के मध्य प्रदेश पर्ल हार्बर पर आक्रमण कर दिया। जर्मनी एवं इटली ने जापान को सहायता दी। अमरीका को भी विवश होकर युद्ध में कूदना पड़ा तथा वह भी मित्र-राष्ट्रों से मिल गया तथा चर्चिल एवं रूजवेल्ट ने 'एटलांटिक चार्टर' की घोषणा की।

उत्तरी अफ्रीका में भी भीषण लड़ाइयाँ लड़ी गयी। प्रारम्भ में जर्मनी तथा इटली की सेनाओं ने 1932 ई० में मिस्र, अल्जीरिया, त्रिपोली, आदि प्रदेशों पर अधिकार कर लिया, किन्तु 1943 ई० में स्थिति में परिवर्तन हो गया। अफ्रीका से इटली एवं जर्मनी का प्रभाव समाप्त करने में मित्र-राष्ट्रों की सेनाएँ सफल हुईं, तत्पश्चात् इटली पर आक्रमण किया गया तथा सिसली केपमेटापन, आदि पर विजय प्राप्त की। मित्र-राष्ट्रों ने शीघ्र ही सम्पूर्ण इटली पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार मुसोलिनी का पतन हो गया तथा उसे भागकर जर्मन जाना पड़ा।

इटली को परास्त करने के पश्चात् मित्र-राष्ट्रों ने जर्मनी पर आक्रमण किए। 1944 ई० में नार्वे पर अधिकार कर लिया गया तथा फ्रांस को जर्मनी से मुक्त कराया गया। इंग्लैण्ड व अमरीका की वायुसेना ने जर्मनी पर भीषण आक्रमण किए तथा जन-धन की अपार हानि हुई जर्मनी के कारखानों को भी हवाई आक्रमण से नष्ट कर दिया गया, तत्पश्चात् पश्चिम की ओर से अमरीका तथा इंग्लैण्ड की सेनाओं ने और पूर्व दिशा से जर्मनी पर रूस की सेना ने आक्रमण किया तथा निरन्तर सफलता प्राप्त की। अप्रैल, 1945 ई० में हिटलर ने आत्महत्या कर ली। अत: मई, 1945 ई० में जर्मनी की सेना ने हथियार डाल दिए।

जापान अब भी युद्ध में व्यस्त था। जापान के हिरोशिमा तथा नागासाकी नगरों पर अमरीका ने 6 व 9 अगस्त, 1945 ई० को परमाणु बम गिराए। जापान में अब और युद्ध करने का साहस न बचा था। अत: 14 अगस्त, 1945 ई० को जापान ने भी आत्मसमर्पण कर दिया।

इस प्रकार 1 सितम्बर, 1939 ई० को प्रारम्भ हुआ द्वितीय विश्व-युद्ध 14 अगस्त, 1945 ई० को समाप्त हुआ।

प्र.3. द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों पर प्रकाश डालिए।
Throw light on the results of the second world war.

उत्तर

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम
(Results of the Second World War)

लगभग 6 वर्षों तक लड़ा जाने वाला द्वितीय विश्व-युद्ध मानव इतिहास का सबसे भयावह एवं विनाशकारी युद्ध था, जिसने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। इसके प्रभाव इतने व्यापक थे कि विश्व-इतिहास में एक युग का ही अन्त हो गया और एक नये युग का प्रारम्भ हुआ, परन्तु इस नूतन युग में भय, चिन्ता, अनिश्चितता एवं तनाव की स्थिति पूर्ववत् ही बनी रही। संक्षेप में द्वितीय विश्व-युद्ध के परिणामों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है—

1. **युद्धरत देशों की क्षति**—द्वितीय विश्व-युद्ध में भाग लेने वाले देशों को गम्भीर क्षति उठानी पड़ी थी। सर्वाधिक क्षति रूस को उठानी पड़ी। केवल स्तालिनग्राड के युद्ध में मारे गए रूसी नागरिकों की संख्या तो सम्पूर्ण युद्ध में मारे गए अमरीकनों के लगभग बराबर हो थी। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि पश्चिमी मित्रों ने 1944 ई० तक धुरी राष्ट्रों के विरोध में कोई दूसरा मोर्चा नहीं खोला था। अत: जर्मनी के प्रहार को रूसी मोर्चे को ही सहना पड़ा था। युद्ध में रूस को 1 खरब 28 करोड़ डालर की सम्पत्ति का नुकसान सहना पड़ा। उसके 17 हजार नगर नष्ट हो गए और 70 लाख नागरिक काल-कवलित हो गए। ब्रिटेन को भी महान क्षति का सामना करना पड़ा। उसके 4 लाख 45 हजार नागरिक काल-कवलित हो गए। उसका अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पहले की अपेक्षा कम हो गया। कोयले एवं कपड़े के उत्पादन में कमी

TOUCH 'n' PASS

आ जाने से 41% गिरावट आ गयी। उसे 1946 ई० में संयुक्त राज्य अमेरिका से 3 अरब 75 करोड़ डालर कर्ज के रूप में लेना पड़ा। यह कर्ज उसे 2% ब्याज की दर पर 50 वर्ष में चुकाना तय हुआ था। फ्रांस को भी 3 लाख 80 हजार नागरिकों के हाथ धोना पड़ा। उसका कृषि का उत्पादन 38% कम हो गया और औद्योगिक उत्पादन 30% घट गया। स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी कि 1945 ई० में फ्रांस के रहन-सहन की वस्तुओं की कीमतों में 296% की वृद्धि हो गयी। इटली के युद्ध में 6 लाख 36 हजार 37 सैनिक काल-कवलित हो गए। उसकी राष्ट्रीय सम्पत्ति पूर्व की अपेक्षा अब मात्र 1/3 रह गयी। उसे लगभग 1 लाख खरब 'लिरा' की क्षति उठानी पड़ी। जर्मनी को भी भयंकर क्षति का सामना करना पड़ा। उसे 40 लाख जर्मन नागरिकों से हाथ धोना पड़ा। एक निरीक्षक के अनुसार, "1945 ई० में जर्मनी विशिष्ट नगरों, भयभीत व्यक्तियों और कल्पनातीत भयंकर दुर्दशाओं का देश था।" जर्मनी का विभाजन कर दिया गया। जापान का भी आर्थिक पराभव हुआ। हिरोशिमा एवं नागासाकी में गिराये गए एटम बम के कारण जापान का मनोबल टूट चुका था। जापान का प्रादेशिक प्रभुत्व भी पूर्व से कम हो गया। उसे विदेशी बाजारों एवं कच्चे माल के साधनों से वंचित होना पड़ा। जहाँ तक अमेरिका का सम्बन्ध है अमेरिका युद्ध में अन्त में कूदा था। न तो उसकी भूमि पर युद्ध लड़ा गया और न ही उसे भयंकर बम वर्षा का सामना करना पड़ा। अत: अमेरिका को कोई विशेष हानि नहीं उठानी पड़ी। उल्टे युद्ध के पश्चात् उसके उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। जहाँ तक छोटे-छोटे राष्ट्रों का सम्बन्ध था उन्हें भी अपार क्षति उठानी पड़ी। चेकोस्लोवाकिया के 2 लाख 50 हजार नागरिक मारे गए। पोलैण्ड को 60 लाख व्यक्तियों की बलि देनी पड़ी। हंगरी के 70 प्रतिशत कारखाने एवं मशीनें युद्ध काल में समाप्त हो गयी। यूगोस्लाविया, बुल्गारिया, यूनान एवं अल्बानिया भी आर्थिक संकट में फस गए।

2. **यूरोपीय प्रभुत्व की समाप्ति**—द्वितीय विश्व-युद्ध ने जिस नूतन युग को जन्म दिया वह युग यूरोपीय प्रभुत्व की समाप्ति का युग था। द्वितीय महायुद्ध ने यूरोपीय शक्तियों को इतना झकझोर दिया था कि युद्ध से पूर्व तक विश्व को अनुशासित करने का दावा करने वाला यूरोप (World Domination Europe) अब समस्या प्रधान यूरोप (Problem Europe) के रूप में सामने आ गया। धुरी राष्ट्रों ने अपना साम्राज्य खो दिया। ब्रिटेन, फ्रांस, आदि भी शक्तिहीन हो गए।
3. **दो महाशक्तियों का उदय**—यूरोप की प्रभुसत्ता विश्व के राजनीतिक रंगमंच पर क्षीण होते ही नये युग में दो महाशक्तियों का अभ्युदय हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका एवं रूस ये दो शक्तियाँ थीं। रूस को युद्ध के अन्त तक विशाल प्रदेश प्राप्त हो चुके थे। वह अपनी सीमाएँ पश्चिम में फैला ही चुका था। पोलैण्ड, रोमानिया, हंगरी, बुल्गारिया, अल्बानिया एवं चेकोस्लोवाकिया, आदि राष्ट्रों की सरकारें रूस के मित्र के रूप में सामने आयीं। जापान का पतन हो ही चुका था। ब्रिटेन आर्थिक रूस से जर्जरित हो गया। जर्मनी व इटली की शक्ति क्षीण हो गयी थी। चीन गृह युद्ध की अग्नि में तप रहा था। अत: रूस का मुकाबला करने वाली एक ही शक्ति बच गयी थी। वह शक्ति थी संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व के पूँजीवादी देशों के लिए अमेरिका उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए आशा बन गया था।
4. **शीत युद्ध का प्रारम्भ**—द्वितीय महायुद्ध में ब्रिटेन, फ्रांस एवं अमेरिका ने रूस के साथ मिलकर धुरी राष्ट्रों का विरोध किया था। इससे ऐसा लगता था कि युद्ध के पश्चात् इस मित्रतापूर्ण व्यवहार से शान्ति की स्थापना होगी। लैंगसम के शब्दों में, "आशावादी इस बात से निश्चित थे कि भविष्य में शान्ति निश्चित रूप से बनी रहेगी जैसे ही युद्ध समाप्त होगा विभिन्न राज्यों की एकता जो युद्ध के कठिन वर्षों में थी वह शान्ति बनाए रखेगी।" किन्तु यह आशा उस समय निराधार सिद्ध हुई जब विश्व के रंगमंच पर सोवियत संघ एवं संयुक्त राज्य अमेरिका दो महाशक्तियों के रूप में उभर कर सामने आए। दोनों की विचारधाराएँ एक-दूसरे से अलग थी। अत: दोनों विश्व के दो परस्पर विरोधी खेमों का प्रतिनिधित्व करने लगे। इससे दोनों के मध्य तनावपूर्ण वातावरण उत्पन्न हो गया जिसने 'शीत युद्ध' को जन्म दिया।
5. **साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद का विघटन**—द्वितीय विश्व-युद्ध का एक महत्त्वपूर्ण परिणाम साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद का विघटन भी था। मित्र राष्ट्रों ने धुरी राष्ट्रों के विरोध में केवल स्वतन्त्रता एवं आत्मनिर्णय के सिद्धान्त के आधार पर युद्ध किया था। अत: युद्ध की समाप्ति के पश्चात् साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद का विघटन होना स्वाभाविक हो चुका था, क्योंकि युद्ध में मित्र राष्ट्र विजयी हुए थे।
6. **उपनिवेशों में नव-जागरण**—द्वितीय विश्व-युद्ध का गम्भीर प्रभाव उन उपनिवेशों पर पड़ा जो कि पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियों के शिकार थे। जापान ने 'एशिया एशिया वालों के लिए' का जो नारा अपने हितों की दृष्टि से दिया

था, वह अप्रत्यक्ष रूप से भारत एवं चीन जैसे उपनिवेशों के लिए स्वतन्त्रता का प्रतीक बन गया। जापान ने जिस प्रकार पश्चिमी राष्ट्रों की साम्राज्यवादिता का अपने ढंग से विरोध किया था वह एशिया के उपनिवेशों के लिए एक ज्वलन्त प्रतीक था। द्वितीय महायुद्ध तो स्वतन्त्रता एवं आत्मनिर्णय की दुहाई पर धुरी राष्ट्रों के विरोध में ही लड़ा गया था। अत: बर्मा, भारत एवं चीन जैसे राष्ट्रों में राष्ट्रीयता का संचार होने लगा जिसने उपनिवेश व्यवस्था पर प्रबल आघात किया। 1945 से पूर्व तो विश्व की जनसंख्या का 33% उपनिवेशों में निवास करता था जबकि आज केवल 4% ही निवास करता है। यही कारण है कि चेस्टर बाउल्स ने लिखा है, "सम्पूर्ण महाद्वीप (एशिया) पर हुई क्रांति के धुएँ और अग्नि में उन दिनों का अन्त हो गया, जबकि एशिया के गुलाम लोग किसी पश्चिमी राष्ट्र की दी गई आवाज में नाच उठते थे।" एशिया एवं अफ्रीका के पराधीन राष्ट्र स्वतन्त्र होने लगे। स्मिथ ने ठीक ही लिखा है, "अब यह स्पष्ट हो गया कि भविष्य में यूरोपीय राष्ट्रों के सम्बन्ध और गैर यूरोपीय राष्ट्रों के सम्बन्ध सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होंगे।"

7. **मानवतावाद**—विश्व-युद्ध में कमजोर राष्ट्रों को साम्राज्यवादी शिकंजों का शिकार होना पड़ा था। युद्ध के पूर्व एवं युद्ध काल में अल्पसंख्यकों के अधिकारों को जिस प्रकार कुचला गया था उससे प्रभावित होकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने मानवीय अधिकारों का एक घोषणा पत्र प्रकाशित कर मानवता की पवित्रता कायम करने के लिए महत्त्वपूर्ण कदम उठाया।
8. **नि:शस्त्रीकरण के प्रयास**—द्वितीय विश्व-युद्ध में अणु बम के प्रयोग एवं उससे हुई विनाश लीला ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में नि:शस्त्रीकरण का प्रश्न खड़ा कर दिया, परन्तु नि:शस्त्रीकरण की दिशा में रूस एवं अमेरिका के मध्य मतभेदों के कारण नि:शस्त्रीकरण के लिए किए गए प्रयास कभी सार्थक न हो सके।
9. **प्रादेशिक संगठन**—शीत युद्ध की स्थिति को देखते हुए साम्यवादी रूस एवं गैरसाम्यवादी अमेरिका ने अपने-अपने प्रभाव की वृद्धि के लिए क्षेत्रीय या प्रादेशिक संगठनों का गठन प्रारम्भ कर दिया, जिसमें नाटो, वारसा पैक्ट, सीटो एवं ओ०ए०एस० विशेष उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि द्वितीय विश्व-युद्ध ने प्रथम महायुद्ध के सदृश ही अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दीं। यह ठीक है कि इस युद्ध के प्रभाव ने साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी प्रवृत्ति की समाप्ति में योगदान दिया और एशिया एवं अफ्रीका में राष्ट्रवाद हिलोरें लेने लगा, परन्तु जिस प्रकार एक नये विश्व का गठन हुआ उसमें दो महाशक्तियों के प्रादुर्भाव ने युद्धकालीन एकता का विघटन कर दिया।

प्र.4. संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न अंगों का विस्तृत विवरण दीजिए।
Describe in detail the various bodies of U.N.O.

उत्तर

संयुक्त राष्ट्र संघ के अंग
(Bodies of U.N.O.)

संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर की 7वीं धारा में उसके जिन 6 अंगों का उल्लेख है, उनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—

(1) साधारण सभा (General Assembly)

1. **संगठन**—साधारण सभा संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रमुख अंग है। साधारण सभा के सदस्य संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य राष्ट्र हैं। साधारण सभा के अधिवेशन में जो कि वर्ष में एक बार सितम्बर माह के बाद पड़ने वाले पहले मंगलवार से आरम्भ होता है, प्रत्येक सदस्य राष्ट्र अपने 5 प्रतिनिधि भेजने का अधिकारी है। विशेष परिस्थिति में यदि सुरक्षा परिषद् या संघ के आधे से अधिक सदस्य चाहें तो साधारण सभा का अधिवेशन कभी भी बुला सकते हैं।
2. **कार्य एवं शक्तियाँ**—चार्टर की धारा 10 से 17 तक सभा के कार्यों एवं शक्तियों का उल्लेख है। सभा को संयुक्त राष्ट्र संघ का बजट स्वीकार करने का अधिकार प्राप्त है। वह संरक्षण समिति को आदेश दे सकती है तथा उसके कार्यों का निरीक्षण कर सकती है। आर्थिक एवं सामाजिक सीमिति के सदस्यों का चयन एवं उनके कार्यों को स्वीकृत करने की शक्ति भी सभा के पास है। सुरक्षा परिषद् के सहयोग से वह संयुक्त राष्ट्र संघ के नये सदस्यों की भरती एवं अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय एवं कार्यालय में कुछ नियुक्तियाँ तथा संघ के विधान में परिवर्तन कर सकती है। यह ठीक है कि शान्ति एवं सुरक्षा स्थापित करने का कार्य सुरक्षा परिषद् का है, परन्तु साधारण सभा भी इस विषय में सीमित कार्यवाही कर सकती है,

TOUCH 'n PASS

परन्तु यदि विषय सुरक्षा परिषद् के विचाराधीन है तो वह इस विषय में कुछ नहीं कर सकती। 1950 ई० में शान्ति एवं सुरक्षा प्रस्ताव के पास हो जाने से साधारण सभा को यह अधिकार प्राप्त हो गया है कि यदि सुरक्षा परिषद् अपने सदस्यों के एकमत न होने पर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा स्थापित करने में असफल रहती है तो सुरक्षा एवं शान्ति के मामले पर वह विचार कर सकती है। यही नहीं, साधारण सभा उस समय सामूहिक कदम उठाने का अनुरोध कर सकती है, जबकि सुरक्षा परिषद् किसी समसया का समाधान नहीं कर पाती है। कोरिया के प्रश्न पर रूसी हस्तक्षेप के विरुद्ध साधारण सभा इस अधिकार का प्रयोग कर चुकी है।

संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उसकी प्रमुख समितियाँ

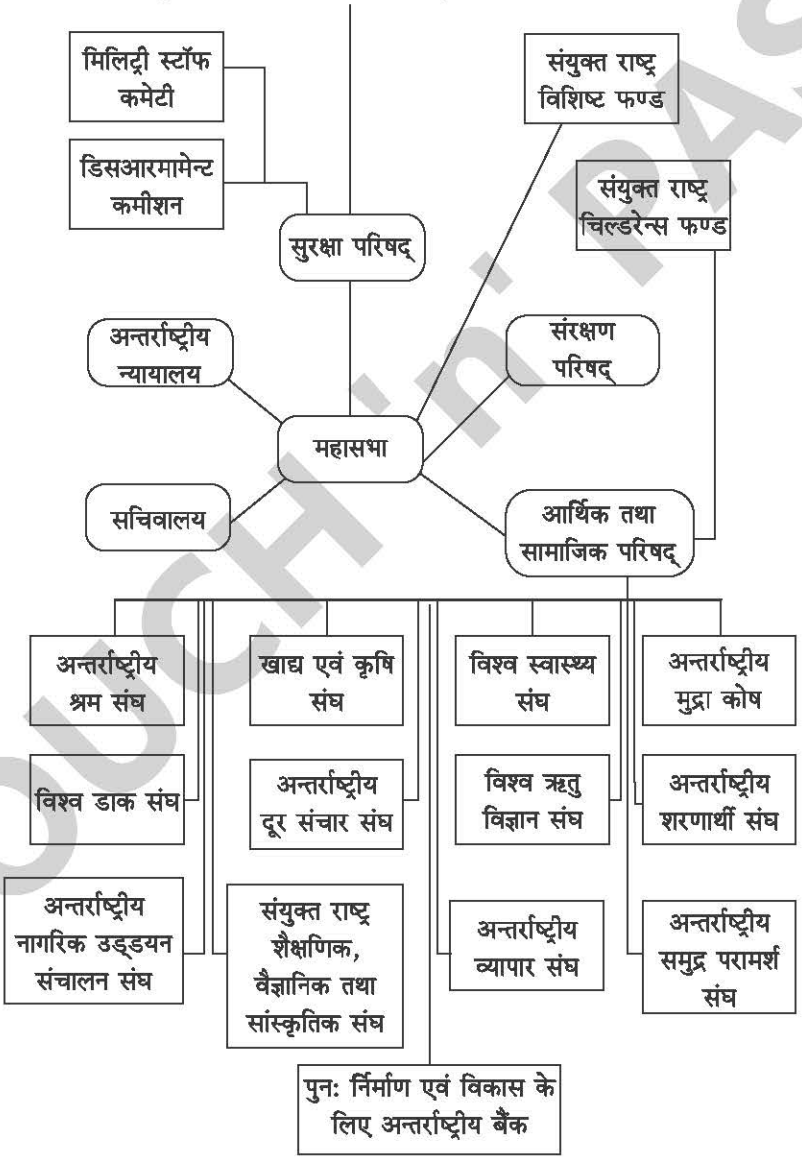

TOUCH 'n' PASS

(2) सुरक्षा परिषद् (Security Council)

सुरक्षा परिषद् के संगठन, मतदान कार्य एवं अधिकारों का उल्लेख संघ के चार्टर के पंचम अध्याय की धारा 23 से 32 में है। इसका विवरण निम्नवत् है—

1. **संगठन**—सुरक्षा परिषद् में 10 सदस्य अस्थायी तथा 5 स्थायी होते हैं। अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस एवं इंग्लैण्ड इसके स्थायी सदस्य हैं। अस्थायी सदस्यों का चयन साधारण सभा द्वारा दो वर्ष के लिए किया जाता है। इसके स्थायी सदस्यों के प्रतिनिधि स्थायी रूप से न्यूयार्क में रहते हैं, जो कि निरन्तर बैठकों में संलग्न रहते हैं, परन्तु दो बैठकों के बीच का अन्तराल 14 दिन का हो सकता है। सुरक्षा परिषद् के अधीन विश्व निःशस्त्रीकरण आयोग है जो कि 11 जनवरी, 1952 ई० में स्थापित किया गया था।
2. **मतदान**—सुरक्षा परिषद् किसी भी मामले में निर्णय सदस्यों का मतदान कराकर लेती है। प्रक्रिया सम्बन्धी मामले में तो स्थायी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य नहीं है, परन्तु महत्त्वपूर्ण मामलों में स्थायी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है। यदि स्थायी सदस्यों में से किसी ने भी निर्णय के विरुद्ध मत दे दिया तो निर्णय अमान्य माना जाता है। इसे सुरक्षा परिषद् के स्थायी परिषद् के स्थायी सदस्यों को प्राप्त वीटो का अधिकार करते हैं।
3. **वीटो का अधिकार**—यू०एन०ओ० के चार्टर की धारा 27 में सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्यों को निषेधाधिकार का अधिकार दिया गया है। इसका प्रयोग कर सुरक्षा परिषद् का कोई भी स्थायी सदस्य किसी भी महत्त्वपूर्ण मामले के निर्णय को रद्द कर सकता है। वास्तव में वीटो का अधिकार प्राप्त करने के स्थायी सदस्यों का (रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, चीन एवं फ्रांस) जो उद्देश्य था, वह यह था कि कहीं बहुमत के आधार पर रक्षा परिषद् के अन्य राष्ट्र उनकी शक्ति को सीमित न कर दें। ब्रायरले ने ठीक ही लिखा है, 'निषेधाधिकार वह मूल्य है जो संयुक्त राष्ट्र ने सामूहिक सुरक्षा के कार्य करने वाली संस्था की स्थापना के लिए चुकाया है, और यह भी स्पष्ट है कि वह मूल्य बहुत अधिक है।'' प्रश्न यह उठता है कि निषेधाधिकार समाप्त करने से क्या कोई लाभ होगा? श्लाइचर ने इसका सटीक उत्तर देते हुए कहा है, ''निषेधाधिकार तो असहमति का परिणाम है, न कि उसका कारण। अतः इसको समाप्त करने से कोई विशेष लाभ होगा।'' उल्लेखनीय बात तो यह है निषेधाधिकार ने विश्व-शान्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका तो निभाई ही है। कश्मीर के प्रश्न पर रूस ने वीटो की शक्ति का प्रयोग कर अमेरिका की इच्छा को पूर्ण होने से रोका तो 1964 ई० में रूस से ही सीरिया एवं इजरायल के प्रश्न पर वीटो का प्रयोग किया था।
4. **कार्य**—सुरक्षा परिषद् के कार्य अत्यन्त व्यापक है। संक्षेप में इनको निम्नवत् इंगित किया जा सकता है—
    1. चार्टर की धारा 24 के अनुसार सुरक्षा परिषद् का मुख्य कार्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की स्थापना है। इस सम्बन्ध में संघ के सभी सदस्य सुरक्षा परिषद् के निर्णय को मानने के लिए बाध्य है। सुरक्षा परिषद् समझौते द्वारा समस्या का समाधान न हो पाने पर सशस्त्र सैन्य बल का प्रयोग कर सकती है।
    2. अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के सम्बन्ध में लिए गए अपने निर्णयों को क्रियान्वित रूप देने का कार्य भी सुरक्षा परिषद् का ही है।
    3. सुरक्षा परिषद् शान्ति एवं सुरक्षा भंग होने की सम्भावना पर झगड़ों की जाँच कर इसकी रिपोर्ट साधारण सभा को देती है।
    4. सुरक्षा परिषद् जिन कार्यों को करती है उनकी योजना बनाना भी उसी का कार्य है।
    5. नये सदस्यों को संघ में प्रवेश कराने का कार्य भी सुरक्षा परिषद् के पास है।
    6. सुरक्षा परिषद् को अपनी वार्षिक रिपोर्ट साधारण सभा को प्रेषित करनी होती है।

इस प्रकार माना जा सकता है कि सुरक्षा संयुक्त राष्ट्र संघ का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। ई०पी० चैज ने ठीक ही लिखा है—''सुरक्षा परिषद् संयुक्त राष्ट्र संघ का हृदय है। संकट का समय हो या शान्ति का, संघ के दूसरे अंग कार्य कर रहे हों या न कर रहे हों, वर्ष का कोई भी समय हो.....सुरक्षा परिषद् अपना कार्य करती रहती है।''

TOUCH 'n PASS

(3) आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् (Economic and Social Council)

1. **संगठन**—आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् संयुक्त राष्ट्र का वह तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग है जो कि विभिन्न राष्ट्रों में शान्ति एवं मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। चार्टर की धारा 61 के अनुसार यह व्यवस्था की गयी है कि सामान्य सभा द्वारा निर्वाचित 18 सदस्यों से युक्त यह परिषद् होगी, परन्तु 1965 में हुआ प्रथम संशोधन द्वारा यह संख्या 27 कर दी गयी है। इसके 9 सदस्य प्रति तीन वर्ष के पश्चात् परिषद् के कार्य से मुक्त हो जाते हैं। परिषद् अपने अध्यक्ष का चयन स्वयं करती है। निर्णय का आधार बहुमत है। वर्ष में इसकी बैठक दो बार बुलाई जाती है। आवश्यकतानुसार विशेष परिस्थिति में भी इसकी बैठक आयोजित की जा सकती है।
2. **परिषद् के कार्य**—परिषद् के प्रमुख कार्य निम्नवत् हैं—
    1. सुरक्षा परिषद् की प्रार्थना पर किसी भी आक्रान्ता देश पर आर्थिक दण्ड लगाने में यह सुरक्षा परिषद् की सहायता करती है।
    2. संघ के अधीन कार्य करने वाली सभी संस्थाओं में आपस में सामंजस्य स्थापित कराना तथा संस्थाओं से परामर्श करना।
    3. सदस्य राष्ट्रों को आर्थिक सहायता प्रदान करना तथा तकनीकी सलाह देना।
    4. साधारण सभा, सुरक्षा परिषद् एवं न्याय परिषद् की प्रार्थना पर यह परिषद् उन्हें सहायता एवं सम्बन्धित सूचना देती है।
    5. अपनी कार्यप्रणाली एवं नियमों को स्वयं बनाकर उन्हें स्वयं ही कार्यान्वित करना तथा अपने कार्यक्षेत्र के भीतर किसी भी समय पर किसी भी समय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने का अधिकार भी इसे है।
    6. मानव अधिकारों तथा मौलिक स्वतन्त्रता के रक्षार्थ सम्मान रखते हुए इनके विकास एवं प्रसार के लिए कार्य करना, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए परिषद् विभिन्न समितियों एवं आयोगों का गठन कर सकती है। अब तक इसने सांख्यिकी आयोग (Statistical Commission), जनसंख्या आयोग (Population Commission), सामाजिक विकास आयोग (Commission for Social Development), मानव अधिकार आयोग (Commission on Human Rights), नारी अधिकार सम्बन्धी आयोग (Commission on Status of Women) एवं मादक पदार्थ आयोग (Commission on Narcotic Drugs) का निर्माण किया है।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय (International Court of Justice)

संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर की धारा 92 के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को संघ का महत्त्वपूर्ण अंग माना है। चार्टर के अध्याय 14 में धारा 92 से 96 तक इसके संगठन एवं क्षेत्राधिकार का उल्लेख है।

1. **संगठन**—अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग (हॉलैण्ड) में है। इस न्यायालय में 15 न्यायाधीश हैं। न्यायाधीशों का चयन साधारण सभा एवं सुरक्षा परिषद् संयुक्त रूप से 9 वर्ष के लिए करती है। न्यायाधीश अपने कार्यकाल में दूसरा कार्य नहीं कर सकता। किसी विवाद विशेष के उपस्थित हो जाने पर न्यायालय अस्थायी न्यायाधीशों की नियुक्ति कर सकता है, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में विवाद रहने तक अपने पद पर बने रहते हैं। न्यायालय अपने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं रजिस्ट्रार की नियुक्ति स्वयं करता है। जिस देश के विवाद के विषय में न्यायालय विचार कर रहा हो, उस देश का न्यायाधीश उस मामले में भाग नहीं ले सकता है।

2 **क्षेत्राधिकार**—हेग स्थित अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के क्षेत्राधिकार को सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—प्रथम ऐच्छिक क्षेत्राधिकार, द्वितीय अनिवार्य क्षेत्राधिकार एवं तृतीय परामर्शदात्री क्षेत्राधिकार। ऐच्छिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत न्यायालय अपनी संविधि की धारा 36 के अन्तर्गत उन सभी मामलों पर विचार कर सकता है, जो कि सम्बन्धित राष्ट्र द्वारा उसके सामने रखे गए हों। राज्य ही न्यायालय के विचारणीय पक्ष होते हैं, व्यक्ति नहीं। अनिवार्य क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत संविधा को स्वीकार करने वाला कोई भी राष्ट्र यह कह सकता है कि वह प्रस्तुत विवाद को अनिवार्य न्यायक्षेत्र में मानता है, परन्तु इसके लिए दोनों पक्षों की स्वीकृति अनिवार्य है। किसी भी सन्धि की व्याख्या, अन्तर्राष्ट्रीय कानून के क्षेत्र से सम्बन्धित सभी मामले एवं किसी अन्तर्राष्ट्रीय दायित्व के भंग होने पर क्षतिपूर्ति का रूप एवं राशि निर्धारित करने सम्बन्धी मामले न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। किसी भी राष्ट्र की इच्छा के विरुद्ध न्यायालय

TOUCH 'n PASS

में कोई अभियोग नहीं लगाया जा सकता। इसीलिए माना जाता है कि इसका राष्ट्रों पर अनिवार्य क्षेत्राधिकार नहीं है। परामर्शदात्री क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत साधारण सभा, सुरक्षा परिषद् तथा अन्य मान्यता प्राप्त संस्थाओं द्वारा सौंपे गए प्रश्नों पर अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय अपनी राय दे सकता है, परन्तु इस राय को मानने के लिए वे बाध्य नहीं है।

(5) सचिवालय (Secretariat)

संघ के अध्याय 15 में अनुच्छेद 97 से 101 तक सचिवालय का विस्तृत विवरण है। सचिवालय के प्रधान कार्यालय न्यूयार्क एवं जेनेवा में हैं। सचिवालय का एक महामन्त्री होता है जिसकी नियुक्ति सुरक्षा परिषद् के अनुमोदन पर साधारण सभा द्वारा की जाती है। महामन्त्री संघ का प्रशासनिक अधिकारी है। वह अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को छोड़कर संघ के सभी अंगों की बैठकों में भाग ले सकता है। वह सुरक्षा परिषद् को सुरक्षा एवं शान्ति में अवरोध उत्पन्न करने वाली स्थिति से अवगत करा सकता है तथा साधारण सभा के नियमों के अनुरूप सचिवालय के कर्मचारियों की नियुक्ति करता है। सचिवालय को सुविधा की दृष्टि से सुरक्षा परिषद् से सम्बद्ध विषयों का विभाग, सम्मेलन एवं सामान्य सेवाएँ, प्रशासकीय एवं वित्तीय सेवाएँ, आर्थिक विषयों से सम्बन्धित विभाग, सामाजिक विषयों से सम्बन्धित विभाग, न्याय विभाग, लोक सूचना विभाग एवं ट्रस्टीशिप विभाग—इस 8 भागों में विभक्त कर दिया गया है।

(6) न्यास परिषद् (Trusteeship Council)

यू०एन०ओ० के चार्टर के अध्याय 12 में अनुच्छेद 75 से 85 तक अन्तर्राष्ट्रीय न्यास व्यवस्था का वितरण है। अध्याय 13 के अनुच्छेद 86 से 91 तक न्यास परिषद् का विवरण है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने पिछड़े हुए क्षेत्रों अथवा राष्ट्रों के लिए न्यास पद्धति को अपनाया। इस पद्धति का तात्पर्य यह है कि उन्नत एवं विकसित राष्ट्र अव्यवस्थित एवं अविकसित प्रदेश का शासन धरोहर के रूप में देखें जिससे वहाँ की जनता में जागृति उत्पन्न हो। राष्ट्र संघ की मैण्डेट व्यवस्था के अन्तर्गत आने वाले प्रदेशों को न्यास परिषद् के अन्तर्गत ले लिया गया।

न्यास परिषद् के उद्देश्य भी निर्धारित हैं। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा की वृद्धि में सहयोग करना तथा न्यास क्षेत्रों के लोगों को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से विकसित कर उनमें स्वशासन एवं स्वतन्त्रता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना न्यास परिषद् का मूल उद्देश्य है।

न्यास परिषद् के कार्यों के विषय में स्पष्ट किया गया है वह संरक्षित क्षेत्रों का निरीक्षण कर यह पता लगाती है कि संरक्षक राष्ट्र न्यास पद्धति से शासन कर रहे हैं या नहीं। संरक्षक राष्ट्र से वह वार्षिक रिपोर्ट माँगती है तथा संरक्षण प्राप्त प्रदेशों की जनता की शिकायतें सुनकर उनका निराकरण करती है।

(7) अभिकरण एवं संस्थाएँ (Agencies and Institutions)

संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य अंग आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् के अन्तर्गत अनेक विशिष्ट अभिकरण एवं संस्थाएँ हैं। ये सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय कार्यों में संलग्न हैं। इनमें अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (I.L.O.), खाद्य एवं कृषि संघ (F.A.O.), संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संघ (U.N.E.S.C.O.), अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण तथा विकास बैंक (I.B.R.D.), अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (I.M.F.), विश्व डाक संघ (W.P.O.), अन्तर्राष्ट्रीय तार संचार संघ (I.T.U.), अन्तर्राष्ट्रीय शरणार्थी संघ (U.N.H.C.R.), अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संघ (I.D.A.O.) एवं विश्व स्वास्थ्य संघ (W.H.O) विशेष उल्लेखनीय हैं।

प्र.5. संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यों का वर्णन कीजिए।
Describe the functions of the U.N.O.

उत्तर

संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्य
(Functions of the U.N.O.)

संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यों को मूलत: दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम राजनीतिक कार्य जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को हल करना तथा विश्व शान्ति की स्थापना उल्लेखनीय है। द्वितीय मानवीय कार्य जिसमें मानव जाति के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नति के लिए प्रयत्न करना है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफलता एवं असफलता दोनों ही प्राप्त की हैं। इसका परीक्षण उक्त दोनों कार्यों के सन्दर्भ में अग्रवत् इंगित किया जा सकता है—

TOUCH 'n PASS

(1) राजनीतिक कार्य (विश्व शान्ति के सन्दर्भ में)
Political Functions (In the Context of World Peace)

संयुक्त राष्ट्र ने राजनीतिक क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य किए—

1. **इण्डोनेशिया का विवाद**—द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात् इण्डोनेशिया को जो कि विश्व-युद्ध के काल में जापान के आधिपत्य में आ गया था, जापान के आधिपत्य से मुक्ति मिल गयी और वहाँ पर स्वतन्त्र गणराज्य की स्थापना हो गयी, परन्तु हॉलैण्ड ने इस स्थिति को स्वीकार न करते हुए इण्डोनेशिया के विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया। भारत एवं आस्ट्रेलिया द्वारा संघर्ष की ओर सुरक्षा परिषद् का ध्यान आकर्षित कराने के पश्चात् सुरक्षा परिषद् के हस्तक्षेप से इण्डोनेशिया एवं हॉलैण्ड के मध्य 17 जून, 1948 ई० को एक समझैता हो गया। 18 दिसम्बर, 1948 ई० को हॉलैण्ड ने इस समझौते का अतिक्रमण कर इण्डोनेशिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस स्थिति में सुरक्षा परिषद् के आदेशानुसार हॉलैण्ड को युद्ध बन्द करना पड़ा और 27 दिसम्बर, 1949 को इण्डोनेशिया में स्वतन्त्र गणतन्त्रात्मक सरकार गठित हो गयी।
2. **यूनान का मामला**—द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान ब्रिटेन की सेनाएँ यूनान में प्रवेश कर गयी थी, परन्तु युद्ध के पश्चात् वहाँ से नहीं हटीं और वहाँ पर साम्यवादियों का दमन करने में लग गयी। अत: साम्यवादियों व ब्रिटिश सेना के मध्य संघर्ष आरम्भ हो गया। 21 फरवरी, 1946 ई० में रूस ने इस मामले को सुरक्षा परिषद् में उठाया। सुरक्षा परिषद् ने जाँच हेतु एक आयोग गठित किया जिसके प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया गया।
3. **सीरिया एवं लेबनान का प्रश्न**—सीरिया तथा लेबनान में ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी सेनाएँ जमी हुई थीं। 14 फरवरी, 1946 को सुरक्षा परिषद् में इन दोनों देशों ने फ्रांसीसी सेनाओं के हटाये जाने हेतु अपील की। सुरक्षा परिषद् के अनुरोध पर दोनों राष्ट्रों ने अपनी सेनाएँ हटा लीं।
4. **बर्लिन की नाकेबन्दी**—1948 ई० में पश्चिमी देशों ने पूर्वी बर्लिन में त्रिक्षेत्र की स्थापना करने के पश्चात् पोड्समाउथ समझौते की व्यवस्था का अतिक्रमण कर पश्चिमी जर्मनी में नयी मुद्रा का प्रचलन कर दिया। इससे पूर्व जर्मनी के व्यापार में बाधाएँ आने पर रूस ने 24 जून, 1848 ई० को पश्चिम बर्लिन की नाकेबन्दी कर दी। पश्चिमी भागों का मार्ग पूर्वी भाग से होकर जाता था। अत: पश्चिमी देशों को समस्या का सामना करना पड़ा। इस मामले में सुरक्षा परिषद् के हस्तक्षेप से मई, 1949 ई० को एक समझौते से शान्ति स्थापित हुई।
5. **फिलिस्तीन की समस्या**—फिलिस्तीन में मैण्डेट व्यवस्था कायम करने का अधिकार प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात् इंग्लैण्ड को दिया था। फरवरी, 1947 ई० में ब्रिटेन ने घोषणा कर दी कि उसके लिए अब फिलिस्तीन में मैण्डेट व्यवस्था कायम रखना सम्भव नहीं है। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि फिलिस्तीन में अरब एवं यहूदियों का संघर्ष अत्यन्त तीव्र हो गया था। यहूदी फिलिस्तीन को अपना धर्मस्थल मानते थे। अत: वे वहाँ पर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते थे। ब्रिटेन ने समस्या संयुक्त राष्ट्र संघ में उठा दी। संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयत्नों से अरब एवं इजराइल राष्ट्रों में सन्धियाँ अवश्य हो गयी हैं, परन्तु आज भी शान्ति पूर्णत: स्थापित नहीं हो पायी है।
6. **ब्रिटेन व ईरान में तेल का मामला**—ईरान की सरकार द्वारा मई, 1951 ई० में ऐंग्लोईरानियन आयल कम्पनी का राष्ट्रीकरण करने पर ब्रिटेन ने इसके विरोध में अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में अपील की और स्पष्ट कर दिया कि मामले पर जब तक अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय अपना निर्णय नहीं देता, तब तक कम्पनी कोई उत्पादन न करे। ईरान द्वारा इस घोषणा की अवमानना पर मामला सुरक्षा परिषद् में चला गया। सुरक्षा परिषद् ने इसे न्यायालय के निर्णय पर छोड़ दिया। 22 जुलाई, 1952 ई० में न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया कि वह इस समस्या पर विचार करने के लिए सक्षम नहीं है। अत: इंग्लैण्ड द्वारा ईरान के विरुद्ध की गयी शिकायत का कोई अस्तित्व नहीं रह गया।
7. **कोरिया का मामला**—द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात् कोरिया का विभाजन उत्तरी कोरिया एवं दक्षिणी कोरिया के रूप में हो गया। उत्तरी कोरिया में समाजवादी प्रभाव एवं दक्षिण कोरिया में अमेरिका का प्रभाव स्थापित हो गया। 25 जून, 1950 ई० में उत्तरी एवं दक्षिणी कोरिया के मध्य युद्ध होने पर संयुक्त राष्ट्र संघ के हस्तक्षेप से 1953 ई० में कोरिया का युद्ध समाप्त हुआ और कोरिया में शान्ति कायम हुई।
8. **स्वेज नहर विवाद**—1869 ई० में निर्मित स्वेज नहर का संचालन एक स्वेज नहर कम्पनी करती थी जिसमें ब्रिटेन व फ्रांस के शेयर थे। जुलाई, 1956 ई० में मिस्र के राष्ट्रपति कर्नल नासिर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इस पर

Touch 'n Pass

संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी। फ्रांस एवं ब्रिटेन की चाल पर इजरायल ने मिस्र के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। मामला संयुक्त राष्ट्र संघ तक चला। संघ ने इस विवाद को स्वेज नहर की व्यवस्था एक स्वतन्त्र निकाय को सौंपकर हल करने में सफलता प्राप्त की।

9. **कश्मीर की समस्या**—भारत विभाजन के सन्दर्भ में पाकिस्तान की जो माँग उठी थी, उसमें पाकिस्तान को कश्मीर दिए जाने की भी माँग थी, परन्तु भारत विभाजन कर जिस पाकिस्तान का निर्माण किया, उसमें उसे कश्मीर नहीं दिया था, क्योंकि कश्मीर के राजा ने भारत में कश्मीर को मिला दिया था। अत: पाकिस्तान तभी से कश्मीर पर अपने अधिकार का दावा करता चला आ रहा है। 22 अक्टूबर, 1947 ई० में उसने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया जो कि सुरक्षा परिषद् के हस्तक्षेप से समाप्त हुआ। 1965 एवं 1971 ई० में भी दो बार पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किए, परन्तु उसे पराजित होना पड़ा। सुरक्षा परिषद् के अनुरोध पर भारत ने युद्ध विराम किया था।

इस प्रकार उक्त विवादों को हल करने में संयुक्त राष्ट्र संघ का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, परन्तु इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि यू०एन०ओ० नि:शस्त्रीकरण की समस्या का समाधान करने में सफल नहीं रहा। यह भी विवेच्य है कि जब भी दो महाशक्तियों के विवाद से भरा प्रश्न उसके सम्मुख आया तो वह कुछ न कर सका। वियतनाम में अमरीकी हस्तक्षेप तथा बांग्लादेश में पाकिस्तान के कार्यों को रोकने में वह असफल रहा। दक्षिण अफ्रीका में रंग-भेद की नीति तथा पश्चिमी एशिया के संकट के स्थायी समाधान अभी भी नहीं हो पाए हैं, परन्तु फिर भी अनेक बार विश्व-शान्ति स्थापित करने में वह सफल रहा।

(2) मानवीय कार्य (Humanitarian Functions)

संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में मानवीय कार्यों को अत्यधिक प्रधानता दी गयी है। मानवीय कार्यों के सम्पादन हेतु राष्ट्र संघ के प्रयत्नों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है—

1. **आर्थिक क्षेत्र**—संघ के आर्थिक कार्यों के सम्पादन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, खाद्य एवं कृषि संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निकाय विशेष उल्लेखनीय हैं।
2. **संचार-साधन सम्बन्धी क्षेत्र**—संचार साधन सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सैनिकतर हवाई संगठन, सार्वभौमिक पोस्टल संघ, अन्तर्राष्ट्रीय दूर संचार संघ, विश्व ऋतु विज्ञानीय संगठन एवं अन्त:सरकारी सामुद्रिक परामर्शदाता संगठन की स्थापना की गयी।
3. **सांस्कृतिक एवं शिक्षा का क्षेत्र**—सांस्कृतिक एवं शिक्षा से सम्बन्धित कार्यों के लिए संघ ने संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक संगठन की स्थापना की। इसे प्रजातन्त्र का अग्रदूत माना जाता है।
4. **स्वास्थ्य सम्बन्धी क्षेत्र**—स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना की गयी। इसका मुख्य उद्देश्य 'विश्व के देशों की जनता द्वारा स्वास्थ्य की उच्चतम सम्भव दशा' प्राप्त करना है। इस संगठन के कार्यों की सफलता का अन्दाजा इस बात से लग जाता है कि यूनान में मलेरिया निवारण के कार्य में इसके प्रयत्नों से बीमारी का औसत 95% से घटकर 5% रह गया है। भारत में भी इसने क्षय रोग के उन्मूलन हेतु बी०सी०जी० वैक्सीन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करायी।

प्र.6. संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
Throw light on the background of the formation of U.N.O.

उत्तर

संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण की पृष्ठभूमि
(Background of the Formation of U.N.O.)

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना किसी एक दिन के प्रयत्न का परिणाम नहीं है। विश्व-युद्ध के काल से ही इसके गठन के प्रयास हेतु मित्र राष्ट्रों के मध्य वार्तालाप एवं विचारों का जो आदान-प्रदान हुआ, संयुक्त राष्ट्र संघ उसी की उपज है। इस प्रकार विश्व-युद्ध के दौरान से ही अनेक प्रयास इस सम्बन्ध में किए गए। अत: संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण की पृष्ठभूमि को लन्दन घोषणा से सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन तक मित्र राष्ट्रों के लिए गए प्रयासों के निम्नलिखित चरणों में इंगित किया जा सकता है।

1. **लन्दन घोषणा (14 जुलाई, 1941 ई०)**—युद्ध-काल में जुलाई, 1941 ई० में लन्दन में मित्र राष्ट्रों का एक सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन की घोषणा में विश्व में स्थायी शान्ति की बात कही गई। यह ठीक है कि इस घोषणा में अन्तर्राष्ट्रीय

सहयोग एवं शान्ति की घोषणा की गई थी, उसे दृष्टिगत रखते हुए लन्दन घोषणा को संयुक्त राष्ट्र संघ का बीजारोपण माना जाता है।

2. **अटलांटिक चार्टर (14 अगस्त, 1941 ई०)**—द्वितीय विश्व-युद्ध में अपना कदम रखने से पूर्व अमेरिका ने भाषण, धर्म, अभाव एवं भय की स्वतन्त्रता की बात कही थी। इस घोषणा के पश्चात् रूजवेल्ट ने इंग्लैण्ड की सहायता की थी। इसके तुरन्त पश्चात् रूजवेल्ट एवं चर्चिल ने समान हितों पर बात के लिए मुलाकात की और बातचीत के पश्चात् 14 अगस्त, 1941 ई० को एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गई जिसे 'अटलांटिक चार्टर' कहा जाता है। इस चार्टर में आक्रमण से सुरक्षा के प्रश्न पर विचार करते हुए यह स्पष्ट किया गया कि प्रत्येक राष्ट्र के लोग स्वेच्छा की शासन व्यवस्था अंगीकार करने के लिए स्वतन्त्र हैं। इस चार्टर में जिस प्रकार शक्ति स्थापना की बात कही गई, उसी को दृष्टिगत रखते हुए इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का प्रथम कदम माना जाता है।
3. **संयुक्त राष्ट्रों की घोषणा (1 जनवरी, 1942 ई०)**—1 जनवरी, 1942 ई० में मित्र राष्ट्रों एवं उनके सभी साथी राष्ट्रों ने वाशिंगटन में एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस घोषणा पत्र में जर्मनी एवं उसके साथी राष्ट्रों को पराजित करने पर जोर देते हुए अटलांटिक चार्टर को स्वीकार किया गया। साथ ही इस घोषणा में प्रथम बार 'संयुक्त राष्ट्र' शब्द का प्रयोग हुआ। लैंगसम ने यहीं से संयुक्त राष्ट्र संघ का श्रीगणेश माना है।
4. **मॉस्को सम्मेलन (30 अक्टूबर, 1943 ई०)**—संयुक्त राष्ट्रों की उपर्युक्त घोषणा को रूस एवं चीन ने बाद में स्वीकार कर लिया। अत: 30 अक्टूबर, 1943 ई० में इंग्लैण्ड, अमेरिका, चीन एवं रूस के प्रमुख प्रतिनिधियों की बैठक मॉस्को में हुई। 1 नवम्बर, 1943 ई० को, 'मॉस्को घोषणा' पर हस्ताक्षर कर मित्र राष्ट्रों ने स्वीकार किया कि युद्ध के पश्चात् एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना आवश्यक है। रूसी प्रतिनिधि एस०बी० क्राइलोब ने मॉस्को सम्मेलन के महत्त्व के विषय में लिखा है, "मॉस्को संयुक्त राष्ट्र संघ का जन्म स्थान बन गया, क्योंकि यह मॉस्को ही था, जहाँ पर अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की घोषणा की गई।"
5. **तेहरान सम्मेलन (दिसम्बर, 1943 ई०)**—मॉस्को सम्मेलन के पश्चात् तेहरान में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें चर्चिल, रूजवेल्ट एवं स्तालिन प्रथम बार एक साथ मिले। बैठक के पश्चात् 1 दिसम्बर, 1943 ई० को संयुक्त रूप से घोषणा की गई कि विश्व के सभी छोटे-बड़े राष्ट्रों को विश्व संगठन का सदस्य होने के लिए आमन्त्रित किया जाएगा।
6. **डम्बर्टन आक्स सम्मेलन (अगस्त-अक्टूबर, 1944 ई०)**—21 अगस्त, 1944 ई० से 7 अक्टूबर, 1944 ई० तक वाशिंगटन नगर के एक भवन 'डम्बर्टन आक्स' में अमेरिका, रूस, चीन एवं इंग्लैण्ड के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के प्रारम्भिक प्रस्तावों की रूपरेखा निर्धारित की गई। सम्मेलन के प्रस्तावों की घोषणा 9 अक्टूबर, 1944 ई० को करते समय अमरीकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने कहा था, "प्रस्तावित सामान्य सम्मेलन को मेहराव की मुख्य आधारशिला समझनी चाहिए। सुरक्षा एवं शान्ति की इमारत के नियोजन का कार्य अच्छी तरह से आरम्भ हो गया है। अब यह राष्ट्रों के लिए वांछनीय है कि वे रचनात्मक उद्देश्य और पारस्परिक विश्वास की भावनाओं के साथ इस निर्माण काय को पूर्ण करें।"
7. **याल्टा सम्मेलन (फरवरी 1945)**—डम्बर्टन आक्स सम्मेलन में उभरे मतभेदों के निराकरण हेतु फरवरी, 1945 ई० में याल्टा में एक सम्मेलन हुआ। इसमें अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, चीन एवं फ्रांस के वीटो (Veto) के अधिकार को स्वीकार करते हुए यह घोषणा की गई कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना हेतु 25 अप्रैल, 1945 ई० में सैनफ्रांसिस्को में एक सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।
8. **सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन (अप्रैल-जून, 1945 ई०)**—याल्टा सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना हेतु 1945 ई० में सैनफ्रांसिस्को में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें 50 देशों ने भाग लिया। इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ का मसविदा तैयार कर चार्टर को अन्तिम रूप प्रदान किया गया। 24 अक्टूबर, 1945 ई० को सुरक्षा परिषद् के पाँच स्थाई सदस्यों (अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस एवं चीन) तथा अन्य 24 राष्ट्रों का समर्थन पत्र प्राप्त होने पर संयुक्त राष्ट्र संघ का विधान लागू कर दिया गया। इसी दिन को संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस के रूप में मनाया जाता है।

TOUCH 'n PASS

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट के प्रयासों से कब हुई?
(a) 22 अक्टूबर, 1945 (b) 23 अक्टूबर, 1945
(c) 24 अक्टूबर, 1945 (d) 25 अक्टूबर, 1945

प्र.2. द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945 ई०) के कारण थे–
1. वर्साय की संधि
2. आर्थिक मंदी
3. जर्मनी व जापान में सैन्यवाद का उदय
4. तुष्टीकरण की नीति
5. राष्ट्र संघ की विफलता
(a) 1, 2, 3, 4 (b) 1, 3, 5
(c) 1, 2, 4, 5 (d) 1, 2, 3, 4, 5

प्र.3. भारत संयुक्त राष्ट्र संघ में कब शामिल हुआ?
(a) 29 अक्टूबर, 1945 (b) 30 अक्टूबर, 1945
(c) 1 नवम्बर, 1945 (d) 2 नवम्बर, 1945

प्र.4. संयुक्त राष्ट्रसंघ का कार्यालय न्ययॉर्क में है इसकी कौन-सी भाषा आधिकारिक नहीं है?
(a) अंग्रेजी (b) चीनी (c) हिन्दी (d) रूसी

प्र.5. राष्ट्र संघ की स्थापना कब की गई थी?
(a) 1919 (b) 1920 (c) 1921 (d) 1922

प्र.6. मित्र राष्ट्रों में कौन-सा शामिल नहीं था?
(a) अमेरिका (b) इटली
(c) ब्रिटेन (d) फ्रांस

प्र.7. धुरी राष्ट्रों में कौन शामिल था?
(a) जर्मनी (b) इटली
(c) जापान (d) ये सभी

प्र.8. चर्चिल ने सोवियत रूस को लौह आवरण कब कहा?
(a) 4 मार्च, 1946 (b) 5 मार्च, 1946
(c) 6 मार्च, 1946 (d) 7 मार्च, 1946

प्र.9. किसे संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का प्रथम कदम माना जाता है?
(a) लंदन घोषणा 14 जुलाई, 1941 (b) अटलांटिक चार्टर 14 अगस्त, 1941
(c) मॉस्को सम्मेलन 30 अक्टूबर, 1943 (d) तेहरान सम्मेलन, नवम्बर, 1943

प्र.10. किस घोषणा में सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया गया?
(a) याल्टा सम्मेलन (b) संयुक्त राष्ट्रों की घोषणा
(c) तेहरान सम्मेलन (d) डम्बर्टन आक्स सम्मेलन

प्र.11. कब मॉस्को घोषणा पर हस्ताक्षर कर मित्र राष्ट्रों ने स्वीकार किया कि युद्ध के पश्चात् एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना आवश्यक है?
(a) 1 नवम्बर, 1943 (b) 2 नवम्बर, 1943
(c) 3 नवम्बर, 1943 (d) 4 नवम्बर, 1943

TOUCH 'n PASS

प्र.12. तेहरान सम्मेलन कब हुआ?
(a) सितम्बर, 1943 (b) अक्टूबर, 1943
(c) नवम्बर, 1943 (d) दिसम्बर, 1943

प्र.13. किस सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय संगठन के प्रारम्भिक प्रस्तावों की रूपरेखा तैयार की गई?
(a) डम्बर्टन आक्स सम्मेलन 1944 (b) मास्को सम्मेलन, 1943
(c) याल्टा सम्मेलन, 1945 (d) इनमें से कोई नहीं

प्र.14. याल्टा सम्मेलन में निम्न में किस देश पर वीटो देने पर सहमति नहीं बनी?
(a) रूस (b) स्पेन
(c) ब्रिटेन (d) अमेरिका

प्र.15. सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन (1945) में कितने देशों ने भाग लिया?
(a) 48 (b) 49
(c) 50 (d) 51

प्र.16. संयुक्त राष्ट्र संघ का कौन-सा उद्देश्य है?
(a) अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा कायम रखना
(b) मानव जाति की युद्ध से रक्षा करना
(c) शांति भंग करने वाली आक्रमक कार्यवाहियों को रोकने के उपाय करना
(d) उपर्युक्त सभी

प्र.17. कब हिटलर जर्मनी की सत्ता में आया?
(a) 1931 (b) 1932 (c) 1933 (d) 1934

प्र.18. जनरल फ्रैंको ने किस देश का तानाशाह बनकर उभरा
(a) इटली (b) फ्रांस (c) स्पेन (d) जापान

प्र.19. निम्न कथन किसका है ''दोनों विचारधाराओं के संघर्ष में समझौता होना असम्भव है। इस संघर्ष के कारण या तो हम रहेंगे अथवा वे ही रहेंगे''?
(a) हिटलर (b) फ्रैंको (c) मुसोलिनी (d) चर्चिल

प्र.20. अबसीनिया पर किसने अधिकार कर लिया?
(a) जर्मनी ने (b) जापान ने (c) रूस ने (d) इटली ने

प्र.21. रूस ने जर्मनी से कब अनाक्रमण संधि की?
(a) 1937 (b) 1938 (c) 1939 (d) 1940

प्र.22. जर्मनी ने डेनमार्क तथा नीदरलैण्ड पर कब अधिकार किया?
(a) 1939 (b) 1940 (c) 1941 (d) 1942

प्र.23. जर्मनी के सामने फ्रांस ने कब हथियार डाले?
(a) 22 जून, 1940 (b) 23 जून, 1940
(c) 24 जून, 1940 (d) 25 जून, 1940

प्र.24. जर्मनी ने कब रूस पर आक्रमण कर दिया?
(a) 21 जून, 1941 (b) 22 जून, 1941
(c) 23 जून, 1941 (d) 24 जून, 1941

प्र.25. जापान ने अमेरिका के पर्ल हार्बर पर कब आक्रमण किया?
(a) अक्टूबर, 1941 (b) नवम्बर, 1941
(c) दिसम्बर, 1941 (d) 1 जनवरी, 1942

TOUCH 'n' PASS

प्र.26. मित्र राष्ट्रों ने नार्वे पर कब अधिकार कर लिया?
(a) 1941 (b) 1942 (c) 1943 (d) 1944

प्र.27. हिटलर ने कब आत्महत्या की?
(a) मार्च, 1945 (b) अप्रैल, 1945 (c) मई, 1945 (d) जून, 1945

प्र.28. जर्मन सेना ने कब हथियार डाल दिए?
(a) मई, 1945 (b) जून, 1945 (c) जुलाई, 1945 (d) अगस्त, 1945

प्र.29. जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर क्रमशः 6 व 9 अगस्त को किस देश ने परमाणु बम गिराए?
(a) ब्रिटेन (b) फ्रांस (c) रूस (d) अमेरिका

प्र.30. जापान ने कब आत्मसमर्पण किया और इसी दिन द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया?
(a) 11 अगस्त, 1914 (b) 12 अगस्त, 1914
(c) 14 अगस्त, 1914 (d) 15 अगस्त, 1914

प्र.31. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् कौन-सी दो महाशक्तियाँ उभरकर आयी हैं?
(a) रूस व ब्रिटेन (b) रूस व फ्रांस
(c) अमेरिका व ब्रिटेन (d) अमेरिका व रूस

प्र.32. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् निम्न में कौन-सा देश रूस के मित्र शक्तियों में शामिल था?
(a) पोलैण्ड (b) रोमानिया (c) बुल्गारिया (d) ये सभी

प्र.33. सुरक्षा परिषद् में 5 स्थायी सदस्य होते हैं निम्न में कौनसा शामिल नहीं है।
(a) रूस (b) फ्रांस (c) जापान (d) अमेरिका

प्र.34. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग (हालैण्ड) में है इसमें कितने न्यायाधीश होते हैं?
(a) 12 (b) 13 (c) 14 (d) 15

प्र.35. कर्नल नासिर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कब किया?
(a) 1969 (b) 1970 (c) 1971 (d) 1972

उत्तरमाला

1. (c)	**2.** (d)	**3.** (b)	**4.** (c)	**5.** (b)	**6.** (b)	**7.** (d)	**8.** (b)	**9.** (b)	**10.** (b)
11. (a)	**12.** (d)	**13.** (a)	**14.** (b)	**15.** (c)	**16.** (d)	**17.** (c)	**18.** (c)	**19.** (c)	**20.** (d)
21. (c)	**22.** (b)	**23.** (a)	**24.** (b)	**25.** (c)	**26.** (d)	**27.** (b)	**28.** (a)	**29.** (d)	**30.** (c)
31. (d)	**32.** (d)	**33.** (c)	**34.** (d)	**35.** (a)					

TOUCH 'n PASS

- यद्यपि इस पुस्तक को यथासम्भव शुद्ध एवं त्रुटिरहित प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास किया गया है, तथापि इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि अनिच्छाकृत ढंग से रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा सन्ताप के लिए लेखक, प्रकाशक तथा मुद्रक का कोई दायित्व नहीं होगा। सभी विवादित मामलों का न्यायक्षेत्र मेरठ न्यायालय के अधीन होगा।
- इस पुस्तक में समाहित सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री (रेखा व छायाचित्रों सहित) के सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं। अतः कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक का नाम, टाइटिल-डिजाइन तथा पाठ्य-सामग्री आदि को आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर प्रकाशित करने का प्रयास न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।
- इस पुस्तक में रह गई तथ्यात्मक त्रुटियों तथा अन्य किसी भी कमी के लिए विद्वत् पाठकगण से भूल-सुधार/सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमन्त्रित हैं। प्राप्त सुझावों अथवा त्रुटियों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा। किसी भी प्रकार के भूल-सुधार/सुझाव आप info@vidyauniversitypress.com पर भी ई-मेल कर सकते हैं।